# युगावतार

# के

# आह्वान

# राजाओं और विश्‍व के शासकों को सम्‍बोधितबहाउल्‍लाह की पातियां

#  विषय सूची

परिचय 3

सूरा-ए-हैकल 6

 पोप पायस नवम् 32

 नेपोलियन तृतीय 39

 ज़ार अलैक्जैंडर द्वितीय 47

 महारानी विक्टोरिया 50

 नसीरुद्दीन शाह / लौह-ए-सुल्तान 54

सूरा-ए-रईस 77

लौह-ए-रईस 86

लौह-ए-फुआद 93

सूरा-ए-मुलूक/ राजाओं को सम्बोधित 96

पद-टिप्पणियाँ 125

संकेतिका 130

# परिचय

एड्रियानोपल में बहाउल्लाह के आने के बाद के वर्ष राजाओं और विश्व के शासकों को सम्बोधित उनके संदेशों की घोषणा के माध्यम से, शोगी एफेन्दी के शब्दों में, उनके प्रकटीकरण की ”चरम गरिमा“ के साक्षी बने। बहाई धर्म के इतिहास की इस अपेक्षाकृत संक्षिप्त किन्तु उथल-पुथल भरी अवधि के दौरान, तथा उसके बाद 1868 में अक्का की दुर्ग-नगरी में उनके निष्कासन के आरम्भिक वर्षों में, उन्होंने पूर्व और पश्चिम के सम्राटों का सामूहिक रूप से और उनमें से कुछ का व्यक्तिगत रूप से, आह्वान किया कि वे ईश्वर के दिवस को पहचानें तथा अपने-अपने धर्मग्रंथों में प्रतिज्ञापित अवतार को स्वीकार करें। बहाउल्लाह ने कहा है कि ”संसार के आदिकाल से ही पहले कभी भी दिव्य संदेश की ऐसी स्पष्ट घोषणा नहीं की गई थी।“

पुस्तक के इस खंड में इन प्रमुख लेखों के प्रथम सम्पूर्ण और अधिकृत अनुवाद का संकलन प्रस्तुत किया गया है। उन्हीं में शामिल है सम्पूर्ण सूरा-ए-हैकल (मन्दिर का सूरा) जिसकी गणना बहाउल्लाह की अत्यंत चुनौतीपूर्ण कृतियों में की जाती है। मूल रूप से इसे एड्रियानोपल में उनके निर्वासन के दौरान और बाद में अक्का में उनके आगमन के बाद पुनःअंकित किया गया था। इस संस्करण में उन्होंने व्यक्तिगत राज्याध्यक्षों - पोप पायस नवम, नेपोलियन तृतीय, जार अलैक्जैंडर द्वितीय, रानी विक्टोरिया, एवं नसीरुद्दीन शाह - को शामिल किया।

इस समग्र कृति के पूर्ण हो जाने के तुरन्त बाद बहाउल्लाह ने इसे मानवीय मन्दिर को संकेतित करते हुए पंचपदीय रूप में लिखे जाने के निर्देश दिए। इसके उपसंहार के रूप में उन्होंने वह जोड़ा जिसका वर्णन करते हुए शोगी एफेन्दी ने लिखा है कि वे ”इन सन्देशों में निहित महत्व को प्रकट करने वाले शब्द थे और जो ओल्ड टेस्टामेंट की भविष्यवाणियों के साथ उनके प्रत्यक्ष सम्बंध को दर्शाते हैं“:

इस तरह हमने शक्ति और सामर्थ्‍य के हाथों मन्दिर का सृजन किया है, काश कि तुम इसे जान पाते। यह वह मन्दिर है जिसका वचन तुम्हें ग्रंथ में दिया गया है। अतः इसके समीप आओ। काश तुम समझ पाते कि तुम्हारे लिए यही लाभकारी है। ओ धरती के लोगों। निष्पक्ष बनो। कौन बेहतर है - यह अथवा वह माटी का बना मन्दिर? अपने मुखड़े इसकी ओर उन्मुख करो। संकटों में सहायक, स्वयंजीवी, परमेश्वर द्वारा तुम्हें इसी तरह आदेशित किया गया है।

अपने धर्मनेतृत्वकाल के अन्तिम वर्षों में बहाउल्लाह ने स्वयं ही प्रथम बार अपनी कुछ प्रमुख कृतियों के निश्चयात्मक संस्करणों के प्रकाशन की व्यवस्था की, और ऐसी कृतियों में ”सूरा-ए-हैकल“ को प्रमुख स्थान मिला।

”सूरा-ए-हैकल“ के अंग के रूप में सन्निहित अनेक लेखों में से एक का उल्लेख विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। किसी भी शासनाध्यक्ष को व्यक्तिगत रूप से सम्बोधित पातियों में सबसे लम्बी ”लौह-ए-सुल्तान“, जो कि नसीरुद्दीन शाह को सम्बोधित पाती है, अक्का में उनके अन्तिम निर्वासन के ठीक पहले के हफ्तों में प्रकट की गई थी। अंततः इसे बदी नामक एक सत्रह वर्षीय युवा द्वारा शाह को सौंपा गया। बदी ने बहाउल्लाह से आग्रह किया था कि उसे उनकी कोई विशिष्ट सेवा करने का गौरव प्रदान किया जाए। अपने इन प्रयासों के दम पर उसे शहादत का राजमुकुट धारण करने का अवसर मिला और उसका नाम सदा-सदा के लिए अमर हो गया। इस पाती में वह महान अनुच्छेद शामिल है जिसमें बहाउल्लाह ने उन परिस्थितियों का वर्णन किया है जिनमें उन्हें ईश्वर का आह्वान प्राप्त हुआ और बाद में उसके जो परिणाम प्रतिफलित हुए। यहाँ भी हम पाते हैं कि उन्होंने शाह की उपस्थिति में मुसलमान मुल्लाओं से मुलाकात करने का स्पष्ट प्रस्ताव सामने रखा है और यह कहा है कि नए धर्मावतरण के बारे में उन्हें जो भी निश्चयात्मक प्रमाण चाहिए वे उनके समक्ष रखे जाएँगे, किन्तु अपनी आध्यात्मिक अखंडता साबित करने की यह अग्नि-परीक्षा देने से वे लोग चूक गए जो कुरान के संदेश के विश्वस्त न्यासी होने का दावा करते थे।

साथ ही इस संकलन में ”सूरा-ए-मुल्क“ अथवा ”राजाओं के सूरा“ का प्रथम पूर्ण अनुवाद भी शामिल किया गया है जिसका वर्णन शोगी एफेन्दी ने यह कहकर किया है कि वह ”बहाउल्लाह द्वारा प्रकटित सबसे महत्वपूर्ण पाती है जिसमें उन्होंने पहली बार पूर्व और पश्चिम के तमाम सम्राटों को सामूहिक रूप से अपने निर्देश दिए हैं।“ इसमें बहाउल्लाह के मिशन के निरूपण के साथ ही न्याय के उन पैमानों की भी स्थापना की गई है जिनके आधार पर ही उन्हें ईश्वर के इस दिवस में अपना शासन चलाना होगा:

ओ धरती के सम्राटों! ईश्वर के भय को दरकिनार मत करो और सावधान रहो कि तुम सर्वशक्तिमान परमेश्वर द्वारा निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन न करो। उसके ग्रंथ में तुम्हारे लिए जो आज्ञाएँ निर्धारित की गई हैं उनका पालन करो और अतिशय सावधानी बरतो कि तुम उनकी मर्यादाओं का उल्लंघन न करो। सावधान रहो कि तुम किसी के साथ राई बराबर भी अन्याय न करो। तुम सदा न्याय-पथ का अनुसरण करो क्योंकि, वस्तुतः, वही सीधा रास्ता है।

इस पाती में ऐसी कुछ महान विषय-वस्तुओं का परिचय प्रस्तुत किया गया है जो कि अगले ढाई दशकों में बहाउल्लाह के लेखों में प्रमुखता के साथ उभरकर सामने आने वाली थीं, जैसेः उन लोगों के अनिवार्य कर्तव्‍य जिनके हाथों में ईश्वर ने न्याय के शासन की संस्थापना के लिए लोकसत्‍ता सौंपी है, हथियारों की होड़ कम करने की आवश्यकता, राष्ट्रों के बीच संघर्ष का समापन तथा इन शासकों की प्रजाओं को दरिद्रता की ओर धकेलने वाले अत्यधिक व्ययों का अंत।

बहाउल्लाह द्वारा दुनिया के सम्राटों और शासकों को भेजे गए उनके गरिमामय आह्वान की मुख्य सामग्रियों का अवलोकन करते हुए शोगी एफेन्दी ने लिखा है:

विषयवस्तु की विशालता और विविधता, तर्कों की सुस्पष्टता, भाषा की उदात्‍तता और निडरता हमारा ध्यान खींच लेती है और हमारे दिलो-दिमाग को चकित करके रख देती है। दुनिया के सम्राट, राजे-महाराजे और राजकुमार, चांसलर और मंत्री, स्वयं पोप, मठाधीश और दार्शनिकगण, ज्ञान-विज्ञान के विशारद लोग, सांसद और नायब, धरती के अमीर-उमराव, सभी धर्मों के अनुयायी और बहा के लोग - इन संदेशों के प्रणेता ने इन तमाम लोगों को अपने दायरे में समेटा और इनमें से हर किसी को अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार उपयुक्त सलाह और चेतावनी मिली। इन पातियों में जिन व्यापक विषयों का प्रतिपादन किया गया है वह भी कोई कम आश्चर्यजनक नहीं है। उनमें अज्ञेय और अपरम्पार ईश्वर की महिमा और एकता का स्तुति-गान किया गया है तथा उसके संदेशवाहकों की एकता की घोषणा पर बल दिया गया है। बहाई धर्म की विलक्षणता, सार्वजनीनता और क्षमता पर जोर दिया गया है तथा बाबी धर्म के उद्देश्य और उसकी प्रकृति पर प्रकाश डाला गया है।

इस सारांश में बहाउल्लाह द्वारा अपनी दृढ़ आवाज में मानवजाति की दुर्दशा के लिए मुख्य रूप से उसके नेताओं को जिम्मेवार ठहराने के तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया गया हैः

उनके धर्मनेतृत्व काल के विभिन्न चरणों के मार्मिक एवं अद्भुत विवरणों के वृतान्त प्रस्तुत किए गए हैं तथा सांसारिेक चमक-दमक, शोहरत, अमीरी और प्रभुसत्‍ता की क्षणभंगुरता के बारे में खास तौर पर बार-बार जोर दिया गया है। मानवीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों में महानतम सिद्धान्तों के प्रयोग के लिए आग्रहपूर्वक ज्यादा जोर देकर अपील की गई है और ऐसी कुप्रथाओं और कार्य-परम्पराओं को त्यागने के लिए कहा गया है जो मानवजाति की प्रसन्नता और उसकी प्रगति एवं एकता के मार्ग में बाधक हैं। राजाओं की आलोचना की गई है, प्रतिष्ठित धर्माधिकारियों की निन्दा की गई है, मंत्रियों और दूतों की खबर ली गई है तथा स्वयं ‘पिता’ के आगमन के साथ उनके धर्मावतरण की निर्विवाद पहचान स्थापित की गई है और बार-बार उसकी घोषणा की गई है। इनमें से कुछ राजाओं और सम्राटों के हिंसापूर्ण पतन की पूर्वघोषणा की गई है, उनमें से दो को निश्चितरूपेण चुनौती दी गई है, ज्यादातर को चेतावनी दी गई है तथा हर किसी से अपील की गई है, उन्हें शिक्षा दी गई है।

एक पाती में, जिसका मूल स्वरूप खो चुका है, बहाउल्लाह ऑटोमन सुल्तान अब्दुल-अजीज के कुशासन पहले ही कठोरतम शब्दों में भर्त्‍सना कर चुके थे। परन्तु वर्तमान खंड में तीन अन्य पातियाँ शामिल हैं जो कि सुल्तान के उन दो मंत्रियों को संबोधित हैं जिनके भ्रष्ट और स्वार्थपूर्ण प्रभाव ने बहाउल्लाह के बार-बार के निर्वासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ’सूरा-ए-रईस’ जो कि ऑटोमन साम्राज्य के प्रधानमंत्री अली पाशा को सम्बोधित किया गया है, अगस्त 1868 में उस समय प्रकट किया गया था जब निर्वासितों को एड्रियानोपल से गैलिपोली ले जाया जा रहा था। इस पाती में उस मंत्री द्वारा किए गए प्रशासनिक शक्ति के दुरुपयोग का बेवाक वर्णन किया गया है। ’लौह-ए-रईस’ में भी कुछ अनुच्छेद अली पाशा को सम्बोधित किए गए हैं और यह पाती बहाउल्लाह को अक्का के किले में कैद किए जाने के कुछ ही दिनों बाद प्रकट की गई थी, और इसमें उस मंत्री के चरित्र की घोर निन्दा की गई है। तीसरी पाती, ’लौह-ए-फुआद’, ऑटोमन मंत्री फुआद पाशा की मृत्यु के कुछ ही दिनों बाद 1869 में प्रकट की गई थी। इसमें उस मंत्री के षडयंत्रों का उल्लेख किया गया है, शक्ति का दुरुपयोग करने पर उसके आध्यात्मिक परिणामों का वर्णन किया गया है, और उसके साथी अली पाशा के निकट भविष्य में होने वाले पतन और खुद सुल्तान की तख्तापलट की भविष्यवाणी की गई है। इन भविष्यवाणियों का अच्दा-खासा प्रचार हुआ था और नाटकीय ढंग से उनके फलित होने के कारण बहाउल्लाह की प्रतिष्ठा खूब बढ़ी थी।

आज जबकि बहाउल्लाह का प्रभाव पूरे विश्व के वृहत्तर समाज के जीवन को और अधिक गहन रूप से आच्छादित कर रहा है, यह समुचित प्रतीत होता है कि व्यापक पाठक-वर्ग के लिए इन महान पातियों के सम्पूर्ण पाठ उपलब्ध कराए जाएँ। वह समिति जिसे ये अनुवाद कार्य करने और उसकी समीक्षा करने का दायित्व सौंपा गया था, उसके प्रति हम गहन आभार प्रकट करते हैं कि उसने इस कार्य को पूरी सावधानी और संवेदनशीलता के साथ सम्पन्न किया है। बहाई मित्र ऐसे कई प्रमुख अनुच्छेदों की पहचान कर सकेंगे जो शोगी एफेन्दी द्वारा पश्चिमी जगत के समक्ष प्रस्तुत किए गए थे। बहाई पवित्र लेखों के उन्होंने जो अंग्रेजी अनुवाद किए थे वे प्रभुधर्म की इन महान निधियों के अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत करने की चुनौती स्वीकार करने के लिए उद्यत होने वाले मित्रों के प्रयासों के लिए आज भी स्थायी आदर्श बने हुए हैं।

-विश्व न्याय मन्दिर

# सूरा-ए-हैकल

## यह है मन्दिर का सूरा जिसे परमात्मा ने आकाश और धरती के बीच अपने नामालंकरणों का दर्पणतथा दुनिया के लोगों के मध्य अपने सुमिरन का संकेत नियत किया है।

## वह है परम विलक्षण, सर्व - महिमामय!

1. महिमाशाली है वह जिसने उन लोगों के समक्ष अपने श्लोकों को प्रकट किया है जो बोध-सम्पन्न हैं। महामहिम है वह जो समझने वाले लोगों के लिए अपनी आयतें (अपने श्लोक) भेजता है। गौरवशाली है वह जो अपनी इच्छानुसार किसी को भी अपने पथ की ओर मार्गदर्शित करता है। सुनो मैं, वस्तुतः, उन सबके लिए परमेश्वर का पथ हूँ जो आकाश में हैं और जो धरती पर हैं। धन्य हैं वे जो इसकी ओर अग्रसर होते हैं!

2. महिमाशाली है वह जो उन लोगों के निमित्‍त अपने श्लोक प्रकट करता है जो समझते हैं। धन्य है वह जो अपने प्राकट्य के साम्राज्य से अपने वचन उच्चारता है और जो अपने सम्मानित सेवकों के सिवा हर किसी के लिए अज्ञेय है। गौरवशाली है वह जो अपने एक शब्द ”भव“ (हो जा) के उच्चारण से जिस किसी को भी चाहे जीवन की स्फूर्ति से भर देता है और वैसा ही हो जाता है। महामहिम है वह जो जिसे भी चाहे कृपा के दिव्य वितान तक उठने की शक्ति देता है तथा एक निर्धारित मात्रा में वहाँ से जो कुछ भी चाहे नीचे भेजता है।

3. धन्य है वह जो अपनी आज्ञा के एक उच्चार मात्र से जैसा चाहता वैसा करता है। वह, वस्तुतः, एकमेव सत्य है, अदृश्य पदार्थों का ज्ञाता। धन्य है वह जो अपनी अदम्य और अपरिक्षेय आज्ञा के माध्यम से जिसे भी चाहे उसे अपनी इच्छानुसार प्रेरणा से सम्बलित करता है। महिमावान है वह जो जिस किसी को भी चाहे उसे अपने अदृश्य देवदूतों के माध्यम से सहायता प्रदान करता है। सत्य ही, उसकी शक्ति उसके उद्देश्य के समतुल्य है और वह, यथार्थतः, सर्वमहिमावान, स्वयंजीवी है। गरिमाशाली है वह जो अपनी सार्वभौम शक्ति के बल पर जिस किसी को भी चाहे ऊँचा उठाता है तथा अपनी सद्कृपा के अनुसार जिस किसी को भी चाहे अपनी सम्पुष्टि प्रदान करता है। धन्य हैं वे जो समझते हैं!

4. महामहिम है वह जिसने अपनी सुसंरक्षित पाती में हर वस्तु की एक निर्धारित मात्रा सुनिश्चित की है। धन्य है वह जिसने अपने ‘सेवक’ के समक्ष वह प्रकट किया है जिससे लोगों के मन-मस्तिष्क आलोकित होंगे। महिमाशाली है वह जिसने अपने ‘सेवक’ पर ऐसी विपत्त्‍िायाँ भेजी हैं जिनसे अनन्तता के वितान तले निवास करने वाले लोगों के हृदय एवं अपने प्रभु के निकट आकर्षित हुए जनों की आत्माएँ द्रवित हो गई हैं। गरिमाशाली है वह जिसने अपने आदेश के बादलों के मध्य से अपने ‘सेवक’ पर यातनाओं के तीरों की बौछार की है और जो देखता है कि कैसे मैं धैर्य और दृढ़ता के साथ उन्हें झेल रहा हूँ। धन्य है वह जिसने अपने सेवक के लिए वह मुकर्रर किया है जैसा उसने और किसी के लिए नहीं किया। वह वस्तुतः एक है, अतुलनीय और स्वयंजीवी है।

5. महिमावान है वह जिसने अपने ‘सेवक’ के ऊपर शत्रुता के बादलों के बीच से, तथा अस्वीकार करने वाले लोगों के हाथों कष्टों और यातनाओं की बरछियों की बौछार की है और फिर भी हमारे हृदय को कृतज्ञता से भरा पाया है। धन्य है वह जिसने अपने सेवक के कंधों पर धरती और आकाश का भार रखा है - एक ऐसा भार जिसके लिए हम उसके प्रति अपार स्तुति से भरे हुए हैं, हालाँकि इसे बोध-सम्पन्न लोगों के सिवा और कोई नहीं समझ सकता। गरिमाशाली है वह जिसने अपने सौन्दर्य के मूर्तिमान स्वरूप को ईर्ष्‍यालु और दुष्ट जनों के चंगुल में रख दिया है - एक ऐसी नियति जिसके आगे हमने स्वयं को समर्पित कर रखा है हालाँकि इसे अंतर्दृष्टि-सम्पन्न लोगों के सिवा अन्य कोई नहीं समझ सकता। महिमावान है वह जिसने हुसैन को अपने शत्रुओं के बीच निवास करने के लिए छोड़ दिया है और उसके शरीर को चहुँ ओर से क्रोध और घृणा के भालों से बिंध जाने को रख दिया है। फिर भी उसने अपने ‘सेवक’ पर जो भी विपत्ति टूटना निर्धारित किया है उसके लिए हम धन्यवाद देते हैं उसे और यह ‘सेवक’ अपने कष्ट और यंत्रणा के क्षणों में उसी की ओर अभिमुख होता है।

6. इन्हीं यंत्रणाओं से घिरे हुए, मैंने अपने सिर के ऊपर से प्रतिध्वनित होती हुई एक अति विलक्षण, अतिशय मधुर आवाज सुनी। जब मैंने अपना मुखड़ा उस ओर किया तो अपने समक्ष एक अप्सरा को खड़ा पाया जो मेरे प्रभु के नाम-स्मरण का मूर्तिमंत स्वरूप लगती थी। वह अपनी आत्मा में इतनी आह्लादित थी कि उसकी मुखमुद्रा ईश्वर की सद्कृपा के आभूषण से प्रकाशमान थी और उसके कपोल उस सर्वदयालु की प्रखरता से भासमान थे। वह धरती और आकाश के बीच एक आह्वान सुना रही थी जो लोगों के मन-मस्तिष्क को विमोहित किए दे रहा था। वह मेरे अंतः और बाह्य अस्तित्व को ऐसी लहरों में डुबोए जा रही थी जिससे मेरी आत्मा तथा परमात्मा के सभी सम्मानित सेवकों की आत्माएँ आह्लादित हो उठी थीं।

7. अपनी उंगली से मेरे सिर की ओर संकेत करते हुए उसने आकाश और धरती के समस्त निवासियों को यह कहते हुए सम्बोधित किया: ईश्वर की सौगन्ध! यही है समस्त लोकों का सर्वप्रिय प्रियतम और फिर भी तुम समझते नहीं। यह है तुम्हारे बीच ईश्वर का सौन्दर्य और तुम्हारे मध्य उस परमेश्वर की सम्प्रभुता की शक्ति, काश कि तुम इसे समझ पाते। जो कोई भी प्रकटीकरण और सृष्टि के साम्राज्यों में निवास करते हैं उन सबके समक्ष यह परमात्मा का रहस्य और उसका कोषालय तथा ईश्वर का धर्म और उसकी महिमा का साक्षात स्वरूप है, बशर्ते कि तुम इस सत्य को समझने वाले लोगों में होते। यह वह है जिसकी उपस्थिति की उत्कट अभिलाषा अनन्तता की परिधि तथा गरिमा के वितान तले निवास करने वाली हर आत्मा को है और फिर भी तुम उसकी सुन्दरता से मुँह मोड़ रहे हो!

8. हे बयान के लोगों! यदि तुम उसकी मदद नहीं करोगे तो ईश्वर निस्संदेह आकाश और धरती की तमाम शक्तियों के माध्यम से उसे सहायता देंगे और अदृश्य देवदूतों द्वारा उसे बल प्रदान करेंगे - अपने इस आदेश ”भव“ के माध्यम से और फिर वैसा ही हो जाता है! वह दिन निकट आ रहा है जब ईश्वर अपनी इच्छा से एक ऐसी मानवजाति को खड़ा करेंगे जिसकी प्रकृति का अनुमान सर्वशक्तिमान, स्वयंजीवी परमेश्वर के सिवा और कोई भी नहीं लगा सकता। वह उन्हें निरर्थक कल्पनाओं और भ्रष्ट इच्छाओं के दोषों से मुक्त और पावन बनाएगा, उन्हें पावनता की ऊँचाइयों तक ऊपर उठाएगा और उन्हें धरती पर अपनी शक्ति और सम्प्रभुता के संकेतों को प्रकट करने वाला बनाएगा। सर्वमहिमामय, सर्वप्रेमी परमात्मा द्वारा ऐसा ही तय किया गया है।

9. हे बयान के लोगों! क्या तुम उससे इन्कार करोगे जिसकी उपस्थिति तुम्हारे सृजन का मूल ध्येय है और तुम निकम्मे की तरह अपनी शैय्या पर आनन्दमग्न लेटे रहोगे? क्या तुम उसी का उपहास करोगे, उसी से विवाद करोगे जिसके सिर का एक बाल भी ईश्वर की दृष्टि में आकाश और धरती की तमाम सम्पदाओं से श्रेयस्कर है? अतः, हे बयान के लोगों! वह प्रस्तुत करो जो तुम्हारे पास है ताकि मैं यह जान सकूँ कि अतीत में तुमने किस प्रमाण के माध्यम से ईश्वरीय धर्म के प्रकटावतारों की पहचान की थी, और अब भला तुम क्यों उपेक्षा दर्शा रहे हो?

10. सौगन्ध उसकी जिसने अपनी ही सुन्दरता के प्रभास से मेरी रचना की है! मैंने अब तक ऐसे किसी को नहीं देखा जो अज्ञान और लापरवाही में तुमसे बढ़कर हो। तुम अपने पास रखी पावन पातियों के माध्यम से ईश्वर में अपनी निष्ठा प्रमाणित करना चाहते हो लेकिन जब परमात्मा के श्लोक प्रकट किए गए और उसका दीपक जलाया गया तो तुम उसी में अविश्वास कर बैठे जिसकी लेखनी मात्र से ‘संरक्षित पाती’ में सभी वस्तुओं की नियति तय की गई है। तुम पवित्र श्लोकों का पाठ करते हो और उसी की अवहेलना करते हो जो उन श्लोकों का उद्गाता और प्रणेता है। इस तरह तुम्हारे कर्मों के कारण ईश्वर ने तुम्हारी आँखों पर पट्टी बाँध दी है, काश कि तुम इसे समझ पाते। तुम रात-दिन ईश्वरीय श्लोकों को अंकित करने में लगे रहते हो मगर फिर भी मानों एक पर्दे के कारण उसी से दूर हो जिसने उन श्लोकों को प्रकट किया है।

11. इस युग में स्वर्ग के सहचर तुम्हें अपने कुकृत्यों में निमग्न देख रहे हैं और तुम्हारी सोहबत से बचना चाह रहे हैं मगर फिर भी तुम समझ नहीं पा रहे हो। वे एक-दूसरे से पूछते हैं: ”ये मूर्ख आखिर किन शब्दों का प्रलाप कर रहे हैं और किस घाटी में विचरण करने को उत्सुक हैं?“ क्या वे उसी बात से इन्कार करना चाहते हैं जिनकी साक्षी स्वयं उनकी आत्माएँ हैं और उन्हीं वस्तुओं से आँखें मूँदे बैठे हैं जिन्हें वे स्पष्ट देख रहे हैं? मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, हे लोगों! वे लोग जो कि ईश्वर के नामों की नगरी में निवास करते हैं वे तुम्हारे कृत्यों के कारण विलाप कर उठे हैं और तुम हो कि एक झुलसी हुई बंजर भूमि में निरुद्देश्य और अचेतन भटक रहे हो।

12. हे सर्वोच्च की महालेखनी! पवित्र और ज्योतिर्मय स्थल पर स्थित दिव्य कल्पतरु से तुम्हारे प्रभु ने जो आह्वान किया है उस पर ध्यान दो, ताकि तुम्हारे उस सर्वदयालु प्रभु की सुमधुर स्वर-लहरियाँ तुम्हारी आत्मा को आनन्द और उत्कंठा के अतिरेक से भर सकें और मुझे सदा क्षमाशील के नाम से प्रवाहित होने वाले समीरण तुम्हारी उलझनों और चिन्ताओं को दूर कर सकें। अतः तू इस मन्दिर से ईश्वर की एकता के मन्दिरों का निर्माण कर ताकि वे सृष्टि के साम्राज्य में अपने स्वामी का सुसमाचार सुना सकें - उसका जो है परम उदात्‍त, सर्वमहिमामय - और वे उसकी आभा से प्रदीप्त हो सकें।

13. वस्तुतः, हमने इस ‘मन्दिर’ को नई सृष्टि में समस्त अस्तित्व का स्रोत सुनिश्चित किया है ताकि हर कोई निश्चित रूप से मेरी इस शक्ति के बारे में जान सके कि मैंने जो कुछ भी उद्दिष्ट किया है उसे मैं अपने एक शब्द ”भव“ (हो जा) के उच्चारण मात्र से पूरा कर देता हूँ और वह हो जाता है। इस ’मन्दिर’ के हर अक्षर की छाया में हम एक जन समुदाय खड़ा करेंगे जिसकी संख्या का अनुमान संकटों में सहायक, स्वयंजीवी परमेश्वर के सिवा अन्य कोई नहीं लगा सकेगा। बहुत ही जल्द ईश्वर अपने ‘मन्दिर’ से ऐसी आत्माओं को प्रकट करेंगे जो अवज्ञाकारी लोगों के उकसावों से तनिक भी प्रभावित नहीं होंगे और जो सदासर्वदा उस प्याले की मदिरा का पान करेंगे जो सचमुच जीवन है। ये लोग वास्तव में परमानन्दित लोगों में से हैं।

14. ये वे सेवक हैं जो अपने प्रभु की मृदुल कृपा के शरण तले निवास करते हैं और अपने पथ को बाधित करने वाले लोगों की कुचेष्टाओं से कतई विचलित नहीं होते। उनके चेहरों पर सर्वदयालु प्रभु के प्रकाश की प्रखरता देखी जा सकती है और उनके अंतस्तल से मेरे सर्वमहिमामय, अगम्य नाम का सुमिरन सुना जा सकता है। यदि वे अपने प्रभु की स्तुति आरम्भ करने लगते तो आकाश और धरती के निवासी उस गरिमा-गान में उनका साथ देते - मगर फिर भी कितने कम हैं जो सुन सकते हैं! और यदि वे अपने प्रभु की महिमा का बखान करते तो सृष्टि की सभी रचित वस्तुएँ उस स्तुति-गायन में उनके साथ शामिल होतीं। इस प्रकार ईश्वर ने अपनी सृष्टि की अन्य सभी वस्तुओं से उन्हें महान बनाया है और लोग हैं कि फिर भी असावधान हैं।

15. ये वे लोग हैं जो ईश्वर के धर्म के चतुर्दिक उसी तरह परिक्रमा करते हैं जैसे छाया सूर्य के चारों ओर घूमती है। अतः, हे बयान के लोगों! खोलो अपने नेत्रों को ताकि कदाचित तुम उन्हें देख सको। उनकी गतिविधि ही समस्त वस्तुओं की गतिविधि के मूल कारण हैं और उनकी स्थिरता हर वस्तु की विश्रान्ति की जड़ है, काश तुम इस बात के प्रति आश्वस्त हो पाते! उन्हीं के माध्यम से दिव्य एकता में विश्वास करने वाले जनों ने उसकी ओर अपने मुखड़े किए हैं जो सम्पूर्ण सृष्टि का आराध्य-बिंदु है, और उन्हीं के माध्यम से सदाचारी लोगों ने शांति और विश्रान्ति प्राप्त की है, काश तुम यह जान पाते! उन्‍हीं के माध्यम से यह धरती स्थापित की गई है, मेघों ने अपनी कृपा की फुहारें बरसाई हैं, और कृपा के आकाश से ज्ञान की रोटी भेजी गई है, काश तुम यह समझ पाते!

16. ये आत्माएँ इस धरती पर प्रभुधर्म का संरक्षण करने वाली आत्माएँ हैं जो निकम्मे ख्यालों और व्यर्थ कल्पनाओं की मैली धूल से इसकी रक्षा करेंगी। अपने प्रभु के पथ पर वे अपने जीवन को लेकर भयभीत नहीं होंगे, बल्कि एकबार जब वह परम प्रियतम, सर्वशक्तिमान, सर्वसामर्थ्‍यमय, सर्वमहिमामय, परम पावन प्रभु इस नामालंकरण के साथ प्रकट होगा तो उसके मुखड़े के दर्शन की उत्कंठा में वे अपना सर्वस्व त्याग देंगे।

17. हे जीवन्त मन्दिर! अपनी आत्मा की शक्ति से इस तरह जाग कि सृष्टि की समस्त वस्तुएँ तेरे साथ जाग उठने को तत्पर हो जाएँ। और तब उस उन्नायक सामर्थ्‍य के साथ अपने प्रभु की सहायता कर जो हमने तुझे प्रदान की है। सावधान रह कि उस युग में जबकि सभी सृजित वस्तुएँ विस्मय से भर उठेंगी तो तू हिचकिचाए नहीं, बल्कि तू मुझ संकटों में सहायक, स्वयंजीवी परमात्मा के नाम का प्रकटकर्ता बने। अपनी पूरी क्षमता भर अपने प्रभु की सहायता कर और दुनिया के लोगों की बातों पर ध्यान न दे क्योंकि उनकी बातों का मूल्य किसी अनन्त घाटी में मच्छर की भनभनाहट से ज्यादा नहीं है। मुझ सर्वकृपालु के नाम से तू जीवन-जल का छककर पान कर ले, और इस परम महान पद के अंतरंगों के बीच वह सुधामृत बाँट जो उन्हें अन्य सभी नामों से विरक्त कर दे और उन्हें इस आशीर्वादित एवं सबको आच्छादित करने वाली छाँह तले ला दे।

18. हे जीवन्त मन्दिर! तुम्हारे माध्यम से हमने आकाश और धरती की सभी सृजित वस्तुओं को एकसूत्रता में पिरोया है और इस संसार की रचना से पहले हमने उनके साथ जो संविदा स्थापित की थी, उसके लेखा-जोखा के लिए उन्हें आमंत्रित किया है। किन्तु हाय! थोड़े से ज्योतिर्मय मुखड़ों और मुखर वाणी-सम्पन्न लोगों को छोड़कर हमने अधिकांश लोगों को हतप्रभ पाया और उनकी आँखों को आतंकित।

 उन ज्योतिर्मय मुखड़ों और मुखर वाणी-सम्पन्न लोगों से हमने इस समस्त सृष्टि को उत्पन्न किया जो अस्तित्व में है और आगे भी रहेगा। ये वे लोग हैं जिनके मुखड़ों को परमात्मा ने कृपापूर्वक अविश्वासियों के मुखड़ों से मोड़ रखा है और जिन्हें उसने स्वयं अपने ही अस्तित्व के वृक्ष तले शरण दी है। ये वे लोग हैं जिनके हृदयों में उस प्रभु ने गम्भीर शांति का उपहार दिया है और जिन्हें उसने दृश्य और अदृश्य लोक की सेनाओं द्वारा सहायता और दृढ़ता प्रदान की है।

19. हे इस मन्दिर के नेत्रों! आकाश और उनमें निहित वस्तुओं की ओर न देख और न ही धरती और उसके निवासियों की ओर, क्योंकि हमने तेरी सृष्टि इसलिए की है कि तू हमारे सौन्दर्य की ओर देख। तो देख इसे अपने नयनों के सामने! उससे अपनी दृष्टि न चुरा और न ही सर्वमहिमावान, परम प्रियतम प्रभु के सौन्दर्य से स्वयं को वंचित कर। बहुत ही जल्द हम तेरे प्रखर और भेदक नयनों के माध्यम से उन्हें अस्तित्व प्रदान करेंगे जो अपने रचयिता के अनगिनत चिह्नों पर मनन करेंगे तथा लोगों के नजरिये से स्वयं को विमुख कर लेंगे। तेरे माध्यम से हम जिस किसी को चाहेंगे उसे दृष्टि की शक्ति प्रदान करेंगे और उनपर अपना शिकंजा कसेंगे जिन्होंने स्वयं को इस उदार कृपा से वंचित किया है। वे सचमुच ऐसे लोग हैं जिन्होंने भ्रम का आसव पी रखा है, भले ही उन्हें यह मालूम न हो।

20. हे इस मन्दिर की श्रवणेन्द्रियों! स्वयं को व्यर्थ के हर कोलाहल से मुक्त और पावन कर ले और अपने प्रभु की आवाज पर ध्यान दे। सत्य ही वह गरिमा के सिंहासन से तुम्हारे समक्ष यह प्रकट कर रहा है कि मुझ सर्वमहिमामय, सर्वशक्तिमान, संकटों में सहायक, स्वयंजीवी, परमात्मा के सिवा अन्य कोई परमेश्वर नहीं है। बहुत ही जल्द हम तुम्हारे माध्यम से ऐसे पवित्र एवं दोषरहित कानों वाले लोगों को उत्पन्न करेंगे जो ईश्वर के शब्दों तथा उसपर ध्यान देंगे जोकि तुम्हारे सर्वकरुणामय प्रभु की वाणी से प्रकट हुआ है। वे निस्संदेह परम आशीर्वादित एवं पवित्रतम स्थलों से निस्सृत दिव्य प्रकटीकरण के सुमधुर स्वरालाप को समझ सकेंगे।

21. हे इस मन्दिर की वाणी! हमने, वस्तुतः अपने सर्वकृपालु नाम के माध्यम से तेरा सृजन किया है, तुझे वह सब सिखलाया है जो ‘बयान’ में निगूढ़ था, और तुझ पर वाणी की शक्ति अभिसिंचित की है ताकि तू मेरी सृष्टि के बीच मेरे उदात्‍त आत्म-तत्व का बखान कर सके। अतः इस विलक्षण एवं शक्तिशाली ‘स्मरण’ की घोषणा कर और ‘दुष्ट’ के प्रकटीकरणों से न डर। मेरी इस प्रेरणास्पद और सर्व-बाध्यकारी आज्ञा के माध्यम से तुझे इसी उद्देश्य के लिए रचा गया था। जो कुछ भी सृजित हो चुका है उन सबकी व्याख्या के लिए, तेरे माध्यम से हमने दिव्य उद्घोष की वाणी को उन्मुक्त किया है और अपनी सार्वभौम शक्ति के माध्यम से हम पुनः उसे अस्तित्व की आगामी वस्तुओं की मीमांसा के लिए मुक्त करेंगे। बहुत ही जल्द हम तेरे माध्यम से ऐसे मुखर वाणी-सम्पन्न लोगों को अस्तित्व में लाएँगे जोकि उच्च स्वर्ग के सहचरों तथा दुनिया के लोगों के बीच मेरा गुणगान करेंगे। इस तरह ईश्वरीय श्लोकों को प्रकट किया जा चुका है तथा सभी नामालंकरणों के प्रभु द्वारा ऐसा ही आदेशित किया गया है। वस्तुतः, तुम्हारा प्रभु एकमेव सत्य है, वही है अदृश्य वस्तुओं का ज्ञाता। अपने सृष्टिकर्ता की महिमा का बखान करने में इन लोगों को कुछ भी बाधित नहीं कर सकेगा। उनके माध्यम से सभी सृजित वस्तुएँ नामालंकरणों के प्रभु के महिमा-गान के लिए उठ खड़ी होंगी और इस बात का साक्षी बनने के लिए कि मुझ सर्वशक्तिशाली, परम महिमावान, परम प्रियतम के सिवा और कोई ईश्वर नहीं है और मेरा उल्लेख करने वाले लोग ऐसा कुछ भी नहीं बोलेंगे जिसके लिए उन्हें इस महान स्थान से इस परम वाणी द्वारा उत्प्रेरित न किया गया हो। मगर बहुत थोड़े हैं वे लोग जो सचमुच समझते हैं। ऐसी कोई वाणी नहीं जो अपने प्रभु का गुणगान और उसके नाम का उल्लेख न करती हो। लेकिन लोगों के बीच वे हैं जो गुणगान करते और उसे समझते हैं और वे जो गुणगान करते किन्तु समझते नहीं हैं।

22. अरी, आभ्यांतरिक अर्थों की परी! आकाश और धरती के स्वामी परमेश्वर की अनुमति लेकर वाणी के प्रकोष्ठ से जरा बाहर निकल। और तब दिव्य साम्राज्य के परिधान से सुसज्जित स्वयं को प्रकट कर और अपनी माणिक जैसी अंगुलियों से दिव्य साम्राज्य की सुरा प्रस्तुत कर, ताकि कदाचित दुनिया के निवासी उस प्रकाश को पहचान सकें जो ईश्वर के साम्राज्य से तब चमक उठा था जबकि अनन्तता का दिवानक्षत्र महिमा के क्षितिज पर प्रकट हुआ था। शायद वे इस ‘युवा’ की प्रशंसा और उसका गुणगान करने धरती और आकाश के निवासियों के समक्ष उठ खड़े हों जिसने स्वयं उस सर्वपर्याप्त सहायक परमात्मा के नामालंकरण के सिंहासन पर आकाश के बीचोंबीच अपनी सत्‍ता स्थापित की है - जिसकी मुखभंगिमा पर सर्वकृपालु की प्रखरता आलोकित होती है, जिसकी दृष्टि से उस सर्वमहिमावान प्रभु की झलकियाँ दृष्टिगोचर होती हैं और जिसके तौर-तरीकों से सर्वसक्षम संरक्षक, सर्वशक्तिमान, सर्वप्रेमी परमेश्वर के प्रमाण और संकेत प्रकट होते हैं।

23. तेरे हिमधवल करों से यदि लालिमायुक्त मदिरा का पान करने और तेरे परम उदात्‍त, परमोच्च प्रभु के नाम पर उसे धारण करने वाला कोई न मिले तो शोक न कर - वह प्रभु जो एकबार फिर उस परम गरिमावान परमात्मा के नाम से प्रकट हुआ है। इन लोगों को उनके स्वयं के हाल पर छोड़ दे और गरिमा एवं भव्यता के वितान तले विश्राम कर जहाँ तुझे ऐसे लोग मिलेंगे जिनके मुखड़े दोपहर के सूर्य की तरह दमक रहे होंगे और जो उस नाम से अपने प्रभु की स्तुति करते हैं जिस नाम का अभ्युदय पूरी शक्ति और क्षमता के साथ स्वतंत्र सम्प्रभुता के सिंहासन पर आसीन होने के लिए हुआ है। उनके अधरों से तुझे मेरे गरिमा-गान और मेरी स्तुति के प्रवाह के सिवा अन्य कुछ भी सुनने को नहीं मिलेगा, इसका साक्षी है तेरा प्रभु। परन्तु इन लोगों का अस्तित्व उन सब लोगों की दृष्टि से छुपा रहा है जो अनन्त काल से ईश्वर के शब्द द्वारा सृजित किए गए हैं। इस तरह हमने अपना आशय सरल रूप से प्रकट किया है और अपने श्लोक निरूपित किए हैं, ताकि लोग कदाचित अपने प्रभु के चिह्नों और संकेतों पर विचार कर सकें।

24. ये वे लोग हैं जिन्हें आदम के समक्ष झुकने का कर्तव्‍य नहीं सौंपा गया था।1 वे कभी भी तेरे प्रभु के मुखड़े से विमुख नहीं हुए और हर क्षण उन्होंने पवित्रता के उपहारों और आनन्दों का आस्वाद ग्रहण किया है। इस तरह सर्वकृपालु की लेखनी ने अतीत और भविष्य की सभी वस्तुओं का रहस्य निरूपित किया है। काश दुनिया इसे समझ पाती! बहुत ही जल्द ईश्वर ऐसे लोगों को धरती पर प्रकट करेंगे और उनके माध्यम से प्रभु अपने नाम को उदात्‍त बनाएँगे, अपने संकेतों को प्रसारित करेंगे, अपनी वाणी गुंजरित करेंगे और अपने श्लोकों की घोषणा करेंगे - बावजूद उन लोगों के जिन्होंने परमेश्वर के सत्य का खंडन किया है, उसकी सम्प्रभुता को नकारा है और उसके संकेतों का उपहास किया है।

25. हे सर्वमहिमावान के सौन्दर्य! यदि तुम्हें इन लोगों से मिलने का अवसर मिले और उनका सत्संग प्राप्त हो तो उन्हें वह बताना जो कि इस ‘युवा’ ने स्वयं अपने बारे में तुम्हें बताया है और उन विपत्तियों के बारे में बताना जो उसपर टूट पड़ी थीं। ताकि वे यह जान सकें कि संरक्षित पाती में क्या अंकित किया गया था। उन्हें इस ‘युवा’ के सुसमाचारों से अवगत कराना और उन संकटों और आपदाओं से भी जो कि उसे झेलने पड़े थे, ताकि वे उन यातनाओं को याद रखें जो मुझे झेलनी पड़ीं और उन लोगों में से बन सकें जिनमें समझ-शक्ति है। अतः उन्हें यह बताना कि हमने अपने ही भाइयों में से एक (मिर्जा याहिया) को अपना कृपापात्र क्यों बनाया और किस तरह हमने उसे अपने ज्ञान के अथाह सागर से जल का एक ओसकण प्रदान किया, अपने नामालंकरणों में से एक का परिधान उसे पहनाया और उसे ऐसा परम पद प्रदान किया कि हर कोई उसकी स्तुति के लिए उत्कंठित हो उठा और किस तरह हमने उसे दुष्ट लोगों से मिलने वाले नुकसानों से बचाया कि कोई शक्तिशाली व्यक्ति भी उसका बाल बाँका न कर सका।

26. धरती और आकाश के लोगों के बीच हम उस समय उठ खड़े हुए थे जब हर किसी ने हमें मार डालने का निश्चय कर रखा था। उन सबके बीच निवास करते हुए, हमने सतत् रूप से अपने प्रभु का उल्लेख किया, उसकी स्तुति का समारोह मनाया और उसके धर्म में तबतक दृढ़ता से खड़े रहे जबतक ईश्वर के शब्द की सत्यता उसकी समस्त सृष्टि के बीच प्रमाणित न हो गई, उसके संकेत दूर-दूर तक न फैल गए, उसकी शक्ति की महत्‍ता न स्थापित हो गई और उसकी सार्वभौमिकता अपनी पूरी आभा के साथ न प्रकट हो गई। इसके साक्षी हैं उसके सभी सम्मानित सेवक। फिर भी जब मेरे भाई ने प्रभुधर्म की उठती हुई लपट देखी तो वह धृष्टता और अहंकार से भर उठा। तब वह छुपे हुए पर्दे से बाहर आ निकला, मेरे खिलाफ उठ खड़ा हुआ, मेरे श्लोकों के ऊपर उसने विवाद खड़े किए, मेरे प्रमाणों को नकार दिया और मेरे संकेतों का खंडन किया। तब भी उसकी भूख मानों तबतक न मिटने वाली थी जबतक वह मेरी बोटी-बोटी न चबा जाता और मेरा खून न पी जाता। इसके साक्षी हैं ईश्वर के ऐसे सेवक जो उसके निर्वासन के दौरान उसके साथ रहे थे और जिन्होंने उसकी निकटता का लाभ प्राप्त किया था।

27. इस उद्देश्य के लिए उसने मेरे ही एक सेवक2 को अनुगृहीत किया और उसे अपनी कपट-योजना में भागीदार बनाना चाहा। किन्तु परमात्मा ने मेरी सहायता के लिए दृश्य और अदृश्य जगत के सहचरों को भेजा, सत्य की शक्ति से मेरी रक्षा की और मेरे लिए वह सहायता भेजी जिससे उसका मकसद नाकामयाब रहा। इस तरह उनकी चालबाजियों का अंत हुआ जिन्होंने सर्वदयामय प्रभु के श्लोकों में अविश्वास किया था। वे सचमुच निरस्त किए हुए लोग हैं। जब इस बात की खबर फैली जिसके लिए मेरे भाई की स्वार्थवृत्ति ने उसे यह कोशिश करने को उकसाया था और जब मेरे निर्वासन के संगियों ने उसकी दुष्टतापूर्ण योजनाओं के बारे में जाना तो पूरे शहर में उनका दुःख और प्रतिशोध मुखरित हो उठा किन्तु हमने उन्हें आरोपों-प्रत्यारोपों से दूर रहने को कहा और धैर्य रखने की सम्मति दी ताकि उनकी गणना ऐसे लोगों में हो सके जो धीरता से सबकुछ झेलते हैं।

28. सौगन्ध ईश्वर की जिसके सिवा और कोई ईश्वर नहीं है! हमने धैर्यपूर्वक इन सभी अग्नि-परीक्षाओं को सहन किया और ईश्वर के सभी सेवकों को भी धैर्य एवं दृढ़ता प्रदर्शित करने को कहा। स्वयं को उन लोगों के बीच से अलग करते हुए हमने एक अन्य गृह में अपना आवास बनाया ताकि कदाचित मेरे भाई के हृदय में सुलगती ईर्ष्‍या की लपटें शान्त की जा सकें और उसे सही मार्गदर्शन प्राप्त हो सके। हमने न तो उसका विरोध किया और न ही दोबारा उससे कोई मुलाकात की, बल्कि हम अपने ही घर में रहे और अपनी समस्त आशाएँ हमने परमेश्वर की कृपा पर केन्द्रित कर दीं - वह जो कि संकटों में सहायक और स्वयंजीवी है। परन्तु जब उसे महसूस हुआ कि उसके कारनामे सबके समक्ष उजागर हो गए हैं तो उसने अपनिन्दा की कलम थाम ली और ईश्वर के सेवकों के नाम सम्बोधित अपने पत्रों में उसने जो कुछ स्वयं लिपिबद्ध किया था उसे मेरे अनुपम और अपकृत सौन्दर्य के नाम पर मढ़ दिया। उसका मकसद और कुछ नहीं बल्कि ईश्वर के सेवकों के बीच उपद्रव को उकसावा देना था तथा उन लोगों के दिलों में नफरत उकसाना था जिन्होंने परम महिमामय, सबको प्रेम करने वाले परमात्मा में अपनी आस्था प्रकट की थी।

29. जिसके हाथों में मेरी आत्मा है उस प्रभु की सौगन्ध! हम उसकी चालबाजी से हतप्रभ हो उठे, बल्कि यूँ कहें कि दृश्य और अदृश्य वस्तुएँ असमंजस में पड़ गईं और अपने मन में सुगबुगाते इरादों से उसे तबतक चैन नहीं मिला जबतक कि उसने ऐसे कृत्य को अंजाम न दे दिया जिसका वर्णन करने का साहस किसी लेखनी में नहीं हो सकता और जिसके माध्यम से उसने मेरे महान पद की प्रतिष्ठा धूमिल की और सर्वशक्तिमान, सर्वमहिमामय, सर्वप्रशंसित परमेश्वर की पावनता को कलुषित किया। यदि ईश्वर धरती के सभी महासागरों को स्याही में बदल देते और सभी सृजित वस्तुओं को लेखनी में तो भी उसके कुकृत्यों का विवरण देने के लिहाज से वे मेरे लिए पर्याप्त नहीं होते। इस तरह हम बखान करते हैं उन विपत्तियों का जो हमपर टूट पडी थी ताकि कदाचित तू उन लोगों में से बन सके जो समझते हैं।

30. हे अनन्तता की लेखनी! तुझपर जो संकट आ पड़े हैं उनके लिए तू व्यथित न हो क्योंकि यथाशीघ्र प्रभु ऐसे लोगों को उठ खड़ा करेंगे जो स्वयं अपनी आँखों से देखेंगे और तुम्हारी विपत्तियों का स्मरण करेंगे। अपनी लेखनी को अपने शत्रुओं के उल्लेख से बचा और उसे अनन्त सम्राट - परमात्मा - के स्मरण के लिए स्पंदित कर। सृष्टि की समस्त वस्तुओं को त्याग दे और मेरे स्मरण की अति विशुद्ध मदिरा का पान कर। सावधान रह कि कहीं तू ऐसे लोगों के उल्लेख में निरत न हो जाए जिनसे शत्रुता के दुरास्वाद के सिवा अन्य कुछ भी प्रकट नहीं हो सकता, जो नेतृत्व की लालसा के ऐसे गुलाम हो चुके हैं कि शोहरत हासिल करने और अपने नाम को अमर बनाने की कामना में अपने ही सर्वनाश से नहीं हिचकेंगे। अपनी ‘संरक्षित पाती’ में ईश्वर ने ऐसे लोगों का नाम केवल नामों की पूजा करने वाले लोगों की सूची में अंकित किया है। अतः तू उसका स्मरण कर जिसे तूने इस ‘मन्दिर’ के लिए उद्दिष्ट किया है ताकि इसके संकेतों और प्रतीकों को धरती पर प्रकट किया जा सके और इस ‘प्रकाश’ की चमक-दमक संसार के क्षितिजों को प्रभासित कर सके और धरती को नास्तिकों द्वारा फैलाई गई गन्दगियों से मुक्त कर सके। इस तरह हमने ईश्वर के श्लोकों को निरूपित किया है और समझदार लोगों के समक्ष अपने विषय को स्पष्ट किया है।

31. हे जीवन्त मन्दिर! अपने करों को उन सबके ऊपर फैला जो धरती पर और आकाश में हैं, तथा अपनी इच्छा की परिधि में आज्ञा की लगाम थाम ले। हमने, सत्य ही, तुम्हारी दाहिनी भुजा में समस्त वस्तुओं का साम्राज्य बसा रखा है। वैसा ही कर जैसा तू चाहता है और अज्ञानियों से डर मत। उस पाती तक अपनी पहुँच कायम कर जो तुम्हारे प्रभु की लेखनी के क्षितिज पर उदित हुआ है, और उसे इतनी दृढ़ता से थाम कि तुम्हारे माध्यम से धरती के सभी निवासियों के हाथ उसे दृढ़ता से थाम सकें। वस्तुतः, यही तुम्हारे लिए शोभनीय है बशर्ते कि तू उनमें से हो जो समझते हैं। मेरी कृपा के आकाश की ओर उठते हुए तुम्हारे हाथों के माध्यम से सृष्टि के सभी रचित जीवों के हाथ अपने प्रभु की ओर ललक उठेंगे - उस शक्तिशाली, सामर्थ्‍यवान, परम कृपालु प्रभु की ओर। बहुत ही जल्द, तुम्हारे ही हाथों, हम ऐसे हाथों को खड़ा कर देंगे जो शक्ति और सामर्थ्‍य से सम्बलित होंगे और हम उनके माध्यम से प्रकटीकरण और सृष्टि के साम्राज्य में निवास करने वाले हर प्राणी पर अपनी प्रभुसत्‍ता कायम करेंगे। इस तरह ईश्वर के सेवक इस सत्य को पहचान सकेंगे कि मुझ संकटों में सहायक, स्वयंजीवी के सिवा अन्य कोई परमेश्वर नहीं है। और फिर इन्हीं हाथों के माध्यम से हम अपनी कृपा प्रदान भी करेंगे और उसे स्थायित्व भी देंगे हालाँकि उसे कोई नहीं समझ सकेगा सिवाय उनके जो अंतःचेतना की नजरों से निहारते हैं।

32. सुनो हे लोगों! क्या तुम कभी ईश्वर की सार्वभौम सत्‍ता से बच निकलने की आशा कर सकते हो? ईश्वर की धर्म-परायणता की सौगन्ध! इस युग में तुझे कहीं शरण नहीं मिल सकती और कोई भी तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकता, सिवाय उनके जिनपर ईश्वर ने अपनी कृपा का वरदान उड़ेला है। वह, वस्तुतः, सदा-क्षमाशील और परम करुणावान है। सुनो: हे लोगों! तुम अपने आधिपत्य की हर वस्तु त्याग दो और अपने सर्वकृपालु प्रभु की छाँह तले प्रवेश करो। यह तेरे लिए अतीत और भविष्य के सभी कार्यों से अधिक सराहनीय है। ईश्वर से डरो तथा स्वयं को सभी नामों और विभूषणों के प्रभु के दिवसों की पावन सुरभियों से वंचित मत करो। सावधान रहो कि तुम कहीं ईश्वर की वाणी के मूल पाठ को विकृत या परिवर्तित न कर दो। ईश्वरीय भय के मार्ग पर विचरण करो और सदाचारियों में गिने जाओ।

33. सुनो: हे लोगों! यह ईश्वर की भुजा है जो हमेशा तुम्हारे हाथों से ऊपर रही है, काश कि तुम जान पाते! हमने इसके दायरे में आकाश और धरती के समस्त शुभ का इस तरह विधान किया है कि इससे व्युत्पन्न शुभ के सिवा अन्य कोई भी शुभ प्रकट नहीं हो सकता। इस प्रकार हमने इसे अतीत और भविष्य के समस्त शुभों का स्रोत और आगार सुनिश्चित किया है। सुनो: ईश्वर की पाती से प्रवाहित होने वाली दिव्यवाणी और प्रज्ञा की नदियाँ इस परम महासागर से निबद्ध हैं, काश कि तुम इसे समझ पाते और जो कुछ भी उसके ग्रंथ में निर्धारित हैं उनकी इस परम उदात्‍त वाणी में चरम परिणति हुई है - समस्त दृश्य और अदृश्य वस्तुओं को आनन्द से भर देने वाले इस प्रकटीकरण में सर्व महिमावान परमेश्वर की इच्छा के आकाश के क्षितिज के ऊपर चमकती हुई वाणी!

34. बहुत ही जल्द ईश्वर अपनी शक्ति के वक्षस्थल से सामर्थ्‍य और उन्नति के हाथ बाहर निकालेगा और ऐसे लोगों को खड़ा कर देगा जो इस युवा की विजय के लिए उठ खड़े होंगे और जो मानवजाति को भ्रष्ट और नास्तिक जनों से पवित्र और मुक्त करेंगे। ये हाथ प्रभुधर्म के पुरोधा के रूप में उठ खड़े होंगे और मुझ स्वयंजीवी, शक्तिमान परमात्मा के नाम पर धरती के सभी राष्ट्रों और स्वजनों को वशीभूत कर लेंगे। वे नगरों में प्रवेश करेंगे और उसके सभी निवासियों के दिलों में ईश्वरीय भय की भावना भर देंगे। ईश्वर की शक्ति के प्रमाण ऐसे ही हैं। कितनी उग्र, कितनी उद्वेलक है उसकी शक्ति और कितने न्यायपूर्ण तरीके से वह इस शक्ति को संभालता है! वह वस्तुतः धरती और आकाश के सभी निवासियों से कहीं उच्च है और वह उन सबका शासक है और एक निर्धारित मात्रा के अनुरूप, वह जो चाहता है प्रकट करता है।

35. यदि उनमें से किसी को भी समस्त सृष्टि का सामना करने को कहा जाता तो वह निश्चितरूपेण मेरी इच्छा की शक्ति से विजयी होता। यह वस्तुतः मेरी शक्ति का प्रमाण है हालाँकि मेरे रचित जीव इसे नहीं समझ पाते। यह वस्तुतः मेरी सम्प्रभुता का संकेत है हालाँकि मेरे लोग इसे जान नहीं पाते। यह सत्य ही मेरी आज्ञा का चिह्न है हालाँकि मेरे सेवक इसका बोध नहीं कर पाते। यह सत्य ही मेरी सर्वोच्चता का साक्ष्य है हालाँकि लोगों के बीच ऐसा कोई भी नहीं जो वास्तव में इसके लिए आभारी हो, सिवाय उनके जिनकी आँखों को ईश्वर ने अपने ज्ञान के प्रकाश से आलोकित किया है, जिनके हृदयों को उसने अपने प्राकट्य का कोषागार बनाया है और जिनके कंधों पर उसने अपने धर्म का भार सौंपा है। ये ही वे लोग हैं जो परमेश्वर के नाम रूपी परिधान से सर्वकृपालु की सुरभि ग्रहण करेंगे और सदासर्वदा अपने अपने प्रभु के संकेतों और श्लोकों में आनन्द का अनुभव करेंगे। जहाँ तक ईश्वर में विश्वास न करने वालों और उसके साथ भागीदार बनने का दावा करने वालों का सवाल है, वे वस्तुतः उसके कोपभाजन बनेंगे। आग में झोंक दिए जाएँगे वे और उन्हें इस अग्निकुंड की अतल गहराइयों में - व्याकुल और भयभीत - निवास करने को बाध्य होना होगा। इस तरह हम अपने श्लोकों की व्याख्या करते हैं और स्पष्ट प्रमाणों के साथ सत्य को बोधगम्य बनाते हैं ताकि, कदाचित, लोग अपने प्रभु के संकेतों पर विचार और मनन कर सकें।

36. हे जीवन्त मन्दिर! यथार्थतः हमने तुम्हें अतीत और भविष्य के सभी रचित जीवों के बीच अपनी महिमा का संकेत-चिह्न नियुक्त किया है तथा आकाश और धरती के मध्य तुम्हें अपने धर्म के प्रतीक के रूप में निर्धारित किया है - अपने शब्द ‘भव’ के माध्यम से और वह हो जाता है।

37. दिव्यता के सार-तत्व3 को संकेतित करने वाले, हे इस मन्दिर के प्रथम अक्षर! प्रकटीकरण और सृष्टि के साम्राज्यों में जो कोई भी हैं उन सबके लिए हमने तुम्हें अपनी इच्छा का कोषालय और अपने उद्देश्य का आगार बनाया है। यह उस संकटों में सहायक, स्वयंजीवी परमेश्वर की कृपा-संकेत के सिवा अन्य कुछ नहीं।

38. मुझ सर्वशक्तिमान के नाम को संकेतित करने वाले, हे इस मन्दिर के द्वितीय अक्षर! हमने तुम्हें अपने सार्वभौम साम्राज्य का प्रकट स्वरूप और अपने नामों का दिवानक्षत्र बनाया है। जो कुछ भी मेरी वाणी से प्रकट होता है उसे पूर्ण करने में मैं सर्वसमर्थ हूँ।

39. मुझ सर्वकृपालु के नाम को द्योतित करने वाले, हे इस मन्दिर के तृतीयाक्षर! अपने रचित जीवों के मध्य हमने तुम्हें अपनी कृपालुता का उदय-स्थल तथा अपने लोगों के बीच तुझे अपनी उदारता का जलस्रोत बनाया है। मैं शक्तिमान हूँ अपने साम्राज्य में। आकाश और धरती पर जिन वस्तुओं को रचा गया है उनमें से कुछ भी मेरे ज्ञान से बचकर नहीं जा सकता। मैं ही हूँ एकमेव सत्य, अदृश्य वस्तुओं का ज्ञाता।

40. हे लेखनी! अपनी उदारता के मेघों से वह बरसा जो सभी रचित जीवों को समृद्ध बना दे, तथा अस्तित्व के जगत पर अपनी कृपाओं को बरसने से न रोक। तू, सत्य ही, अपनी अनन्तता के स्वर्ग में सर्वदयामय है, तथा नामों के साम्राज्य में रहने वाले सबके लिए असीम करुणा का प्रभु। लोगों और उनके पास जो कुछ भी है उनपर दृष्टि न डाल, बल्कि अपने उपहारों और अपनी कृपाओं की विलक्षणता की ओर देख। अतः अपने सेवकों को समस्त मानवजाति को आच्छादित करने वाली अपनी छाया तले एकत्र कर। सम्पूर्ण सृष्टि पर अपनी कृपा का वरद-हस्त डाल और अस्तित्व की सभी वस्तुओं का अपने उपहारों की अंगुलियों से स्पर्श कर। यही तुम्हारे लिए शोभनीय है, हालाँकि लोग इसे समझ नहीं पाते। जो कोई भी तेरी ओर अपने मुखड़े को उन्मुख करता है, वह तेरी ही कृपा से ऐसा करता है, और यदि कोई तुझसे विमुख है, तो सत्य ही तुम्हारा प्रभु सृष्टि की सभी वस्तुओं से परे, स्वतंत्र है। इसके साक्षी हैं उसके सच्चे और समर्पित सेवक।

41. बहुत ही जल्द ईश्वर तुम्हारे माध्यम से अदम्य शक्ति से भरे करों और अजेय सामर्थ्‍य भरी भुजाओं को खड़ा कर देंगे जो पर्दें के पीछे से प्रकट होंगे, सर्वदयालु परमेश्वर को दुनिया के जनों के बीच विजयी बनाएँगे और इतनी सशक्त पुकार उठाएँगे कि सभी हृदय भय से भर उठेंगे। एक लिखित पाती में ऐसा ही निर्णय सुनाया गया है। ये आत्माएँ ऐसी उच्चता के चिह्न प्रदर्शित करेंगी कि धरती के सभी निवासी बेचैनी और घबराहट से भर उठेंगे।

42. सावधान, कहीं तू किसी का खून न बहा दे। वाणी की म्यान से अपनी जिह्वा की तलवार बाहर निकाल क्योंकि उसके माध्यम से तू लोगों के हृदय रूपी किलों को फतह कर सकेगा। हमने एक-दूसरे के खिलाफ़ धर्मयुद्ध या जेहाद छेड़ने का विधान समाप्त कर दिया है। वस्तुतः, ईश्वर की कृपा ने सभी रचित वस्तुओं को आच्छादित कर रखा है, बशर्ते कि तू इसे समझ सके। बोध की तलवार से अपने प्रभु, करुणा के परमेश्वर, की सहायता कर। वस्तुतः यह तलवार वाणी की तलवार से भी अधिक तीक्ष्ण और धारदार है, बशर्ते कि तू अपने प्रभु के शब्दों पर विचार कर सके। इस तरह उस संकटों में सहायक, स्वयंजीवी ईश्वर की आज्ञा से आदेश के स्रोत से दिव्य प्रकटीकरण के देवदूतों को यहाँ भेजा गया है और इस तरह उस सर्वमहिमामय, परम प्रियतम परमेश्वर द्वारा दिव्य प्रेरणा की सेनाओं को प्रकट किया गया है।

43. सुनो इस निगूढ़ एवं प्रकटित मन्दिर में सभी सृजित वस्तुओं का पैमाना नियुक्त कर दिया गया है - उस मन्दिर में जिसमें आकाश और धरती तथा अतीत और भविष्य के समस्त ज्ञान निहित हैं। इस पाती के ऊपर ईश्वर के शिल्प की अंगुलियों से वह अंकित किया गया है जिसकी थाह पाने में अत्यंत विवेकवान और परम ज्ञानी जन भी सक्षम नहीं हैं, और उसके अन्दर ऐसे गुह्य मन्दिरों की स्थापना की है जो स्वयं उसके आत्मत्व के अलावा अन्य किसी के लिए भी बोधगम्य नहीं है, काश तुम इस सत्य को जान पाते! धन्य है वह जो इसे पढ़ता है, जो इसकी विषय-वस्तुओं पर मनन करता है, और जिसकी गिनती समझदार लोगों में की जाती है!

44. सुनो मेरे मन्दिर में परमेश्वर के मन्दिर, मेरे सौन्दर्य में उस परमेश्वर के सौन्दर्य, मेरे अस्तित्व में उस परमेश्वर के अस्तित्व, मेरे आत्म में उस परमेश्वर के आत्म, मेरी गति में उस परमेश्वर की गति, मेरी सहमति में उस परमेश्वर की सहमति और मेरी लेखनी में उस परम सामर्थ्‍यवान, सर्व-प्रशंसित परमेश्वर की लेखनी के सिवा और कुछ भी नहीं दिखता। मेरी आत्मा में परम सत्य के सिवा और कुछ भी नहीं रहा है और मेरे अन्दर ईश्वर के सिवा और कुछ भी नहीं देखा जा सकता।

45. सावधान, कि कहीं तुम मेरे बारे में द्वयार्थक बातें न करने लगो। धरती के सभी अणु-परमाणु इसी बात की घोषणा करते हैं कि उस एकल, एकमेव, परम शक्तिमान, प्रेमी परमात्मा के सिवा और कोई ईश्वर नहीं है। उस आदिकाल से ही जिसका कोई आदि नहीं है, मैंने अनन्तता की परिधि से इस बात की घोषणा की है कि मैं ही ईश्वर हूँ, मुझ संकटों में सहायक, स्वयंजीवी के सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, और उस अंत तक जिसका कोई अंत नहीं है, मैं नामालंकरणों के साम्राज्य के मध्य यही घोषणा करूँगा कि मैं ही परमात्मा हूँ, मुझ सर्वमहिमामय, परम प्रियतम के सिवाय अन्य कोई ईश्वर नहीं है। सुनो: मेरा नाम ही प्रभुमयता है जिसके माध्यम से मैंने अस्तित्व के संसार में प्रकटीकरणों की रचना की है, जबकि हम स्वयं उन सबसे परे और पवित्र रहे हैं, काश कि तुम इस सत्य पर विचार कर पाते। और मेरा नाम ही परमात्म तत्व है जिसके द्वारा हमने ऐसे व्याख्याकारों को उत्पन्न किया है जिनकी शक्ति इस समस्त धरती के लोगों को आच्छादित करेगी और उन्हें परमेश्वर का सच्चा उपासक बना देगी, काश कि तुम इस तथ्य की पहचान कर पाते! यदि तुम अंतर्दृष्टि से सम्पन्न व्यक्ति हो तो हमारे सभी नामालंकरणों के बारे में तुम्हें ऐसा ही समझना चाहिए।

46. भव्यता के महागुण को संकेतित करने वाले, हे इस मन्दिर के चतुर्थाक्षर! धरती और आकाश के बीच हमने तुम्हें भव्यता का प्रकटावतार बनाया है। तुम्हीं से हमने इस क्षणभंगुर संसार में समस्त भव्यता का सृजन किया है और इस सबको हम तुम्हीं में लौट जाने देंगे। और अपनी आज्ञा के एक शब्द के माध्यम से तुम्हीं से हम उन्हें फिर प्रकट करेंगे। मैं जो कुछ भी चाहूँ उसे करने में सक्षम हूँ - अपने शब्द ”भव“ (हो जा) के माध्यम से और वह हो जाता है। अस्तित्व के इस संसार में दिखने वाली हर भव्यता तुम्हीं से उत्पन्न हुई है और तुम्हीं में वापस लौट जाएगी। वस्तुतः, यही है वह जिसका निर्धारण एक ऐसी पाती में किया गया है जिसे हमने गरिमा के पर्दें के पीछे संरक्षित कर रखा है और जिसे हमने संसार के लोगों की इन नश्वर आँखों से छुपा रखा है।

47. सुनो: इस युग में, ईश्वरीय अनुकम्पा की पोषक हवाएँ हर ओर से प्रवाहित कर दी गई हैं। इन हवाओं द्वारा वाहित क्षमताओं का दान हर रचित वस्तु को प्रदान कर दिया गया है। लेकिन फिर भी संसार के लोगों ने इस कृपा को नकार दिया है! हर वृक्ष को उसका मनचाहा फल प्रदान किया गया है, हर सागर को उसके प्रखरतम रत्नों से आभूषित कर दिया गया है। स्वयं मानव को भी बोध और ज्ञान के उपहार दिए गए हैं। इस समस्त ब्रह्मांड को परम कृपालु ईश्वर के प्रकटीकरण को प्राप्त करने वाला बनाया गया है और इस पूरी धरती को उन वस्तुओं का आगार जिनकी थाह परम सत्य एवं अदृश्य वस्तुओं के ज्ञाता परमेश्वर के सिवा अन्य कोई नहीं पा सकता। वह समय अब निकट आ रहा है जब हर रचित वस्तु अपना भार उतार कर फेंक देगी। महिमा हो उस ईश्वर की जिसने दृश्य और अदृश्य हर वस्तु को आच्छादित करने वाली अपनी यह कृपा सुनिश्चित की है! इस तरह हमने इस युग में पूरी धरती की रचना की है, किन्तु फिर भी अधिकांश लोग इससे अनभिज्ञ बने बैठे हैं। सुनो: ईश्वर की कृपा को कभी भी पर्याप्त रूप से नहीं समझा जा सकता, तो फिर स्वयं उस परमात्मा को कैसे जाना जा सकता है जो है संकटों में सहायक, स्वयंजीवी!

48. हे धर्म-मन्दिर! यदि तू अपने उपहारों को ग्रहण करने वाले किसी व्यक्ति को न पा सके तो शोक न कर। तेरी रचना मेरे निमित्‍त की गई थी, अतः स्वयं को मेरे सेवकों के बीच मेरे गुणगान में निमग्न कर। यही है वह बात जो कि संरक्षित पाती में तुम्हारे लिए सुनिश्चित की गई है। इस धरती पर अनेक कलुषित करों को देखकर मैंने तुम्हारे परिधान के छोर को उनके गंदे स्पर्श से बचाया और उसे अधार्मिकों की पहुँच से दूर कर दिया। अपने प्रभु के धर्म में तू धीरज रख क्योंकि बहुत ही जल्द वह ऐसी आत्माओं को उठ खड़ा करेगा जो हर दायरे से बाहर निकल कर सबको समेटने वाली, तुम्हारी अनन्त कृपा की ओर दौड़ी आएँगी।

49. हे ईश्वर के मन्दिर! सभी नामों और अलंकरणों के प्रभु के द्वारा जैसे ही दिव्य प्रकटीकरणों के समूहों को उसके संकेतों की ध्वजाओं के साथ इस धरती पर भेजा गया वैसे ही सन्देहों और कपोल-कल्पनाओं के व्याख्याकार भाग खड़े हुए। उन्होंने संकटों में सहायक, स्वयंजीवी ईश्वर के सुस्पष्ट संकेतों में अविश्वास किया था तथा विरोध और शत्रुता के साथ उसके खिलाफ उठ खड़े हुए। उनके बीच वे लोग थे जिन्होंने यह घोषणा की थी: ”ये ईश्वर के स्पष्ट श्लोक नहीं हैं और न ही उनका उद्भव किसी स्वतःस्फूर्त और आत्मज्ञात प्रकृति से हुआ है।“ इस तरह अविश्वासी लोग अपने हृदय की व्याधियों का उपचार करना चाहते हैं - इस बात से बिल्कुल बेखबर कि इस प्रकार से वे स्वयं को आकाश और धरा के समस्त निवासियों से स्वयं को शापित करते हैं।

50. सुनो: स्वयं पवित्र चेतना की उत्पत्ति इस परम महान चेतना द्वारा प्रकटित एकल अक्षर के अभिकरण मात्र से हुई है, बशर्ते कि तू उन लोगों में से हो जो समझते हैं। और वह स्वतःस्फूर्त तथा आत्मज्ञात प्रकृति अपने सार-तत्व में संकटों में सहायक, सर्वमहिमामय, परम प्रियतम परमेश्वर के श्लोकों द्वारा अस्तित्ववान बनाई गई है। सुनो: यह प्रकृति हमारे सर्वातीत सत्य से सम्बंधित होने में गर्वित होती है जबकि हम अपनी ओर से न तो इसमें गर्वित होते हैं न किसी अन्य चीज में, क्योंकि मेरे सिवा अन्य सब कुछ मेरे ही शब्द की क्षमता से प्रादुर्भूत है, काश तू इसे समझ पाता!

51. सुनो हमने नौ विभिन्न विधाओं में अपने श्लोक प्रकट किए हैं। उनमें से प्रत्येक के माध्यम से संकटों में सहायक, स्वयंजीवी ईश्वर की सम्प्रभुता प्रकट होती है। उनमें से एक भी आकाश और धरती के सभी निवासियों के लिए पर्याप्त प्रमाण-स्वरूप है, लेकिन फिर भी ज्यादातर लोग असावधानी में ही निरत रहना चाहते हैं। यदि हमारी इच्छा हो तो हम उन्हें और भी अनेक विधाओं में प्रकट करेंगे।

52. सुनो: हे लोगों! ईश्वर से डरो और अपनी जिह्वा को प्रपंचपूर्वक वह न बोलने दो जो उस परमेश्वर को अप्रसन्न कर दे। उसके सम्मुख जिसने पानी की एक बूंद से तुम्हारी रचना की है4, स्वयं को सजल बनाए रख। सुनो: आकाश में और धरती पर जो कुछ भी है उन सबको हमने ईश्वर-रचित प्रकृति में सृजित किया है। जो कोई भी इस आशीर्वादित मुखमुद्रा की ओर उन्मुख होगा, उस जन्मजात प्रकृति की क्षमताओं को प्रकट करेगा, और जो कोई भी उससे एक पर्दे के पीछे छिपा रहेगा, वह इस अदृश्य एवं सबको समेटने वाली करुणा से वंचित रहेगा। वस्तुतः, ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे हमारी कृपा प्राप्त न हुई हो, क्योंकि प्रत्येक के रूप-सृजन में हमने समानता की भावना दर्शाई है, और अपने मुख के एक शब्द से उन्हें अपने प्रेम का न्यास प्रदान किया है। जिन्होंने इसे स्वीकार कर लिया है, वे वास्तव में सुरक्षित हैं और उनकी गिनती ऐसे लोगों में की जाती है जिन्हें इस युग के आतंक छू भी नहीं सकते। परन्तु जिन्होंने इसे ठुकरा दिया है उन्‍होंने वास्तव में संकटों में सहायक, स्वयंजीवी, ईश्वर में अविश्वास किया है। इस तरह हम लोगों के बीच फर्क करते हैं और उनके प्रति अपना फैसला सुनाते हैं। वस्तुतः, हम बोधशक्ति-सम्पन्न हैं।

 53. सुनो: ईश्वर की वाणी को कभी भी भ्रमवश उसके रचित जीवों की वाणी नहीं समझा जा सकता। वह वस्तुतः समस्त वाणियों में श्रेष्ठ है, ठीक वैसे ही जैसे वह स्वयं भी सभी वस्तुओं का सार्वभौम स्वामी है और उसका धर्म उन सभी वस्तुओं से परे और श्रेष्ठ है जो वर्तमान में हैं और जो भविष्य में निहित हैं। हे लोगों! निश्चयात्मकता की नगरी में प्रवेश करो जहाँ तुम्हारे सर्वदयालु प्रभु का सिंहासन स्थापित है। अपनी अचूक कृपा के संकेतस्वरूप सर्वमहिमामयी की लेखनी तुम्हें ऐसा ही आदेश देती है ताकि, कदाचित, तुम उसके प्रकटीकरण को अपने बीच मतभेद का कारण न बना लो।

54. विश्वासघातियों की कतार में वे लोग हैं जिन्होंने उसके ‘आत्म स्वरूप’ का खंडन किया है और जो उसके धर्म के खिलाफ उठ खड़े हुए हैं, और उनका यह दावा है कि ये दिव्य श्लोक मनगढ़ंत हैं। पुराने समय में भी, अविश्वास करने वालों ने ऐसे ही आक्षेप लगाए थे - उन्होंने जो अब नरक की आग से निकलने के लिए याचना कर रहे हैं। सुनो: सत्यानाश हो तुम्हारा उन निरर्थक वाणियों के कारण जो तुम्हारे मुँह से निकलती हैं। यदि वस्तुतः ये श्लोक मनगढ़ंत हैं तो फिर किस प्रमाण के द्वारा तुमने ईश्वर में विश्वास किया है? उसे प्रस्तुत करो, यदि तुम बोध-सम्पन्न लोग हो। जब कभी भी हमने ऐसे लोगों के समक्ष अपने सुस्पष्ट श्लोकों को प्रकट किया है तब-तब उन्होंने उन्हें अस्वीकार किया और जब कभी उन्होंने ऐसे चमत्कारों को देखा जिन्हें धरती की सारी शक्तियाँ भी मिलकर प्रस्तुत नहीं कर सकती थीं तो उन्होंने उसे जादूगरी का नाम दिया।

55. आखिर क्या हो गया है इन लोगों को कि वे वह बोल रहे हैं जो वे समझते ही नहीं। वे वैसे ही आक्षेप लगा रहे हैं जैसे कभी कुरान के अनुगामियों ने लगाए थे - तब जबकि उनका स्वामी अपने नवधर्म के साथ उनके सम्मुख प्रकट हुआ था। वस्तुतः वे ऐसे लोगों में से हैं जिन्हें ख़ारिज किया जा चुका है। उन्होंने अन्य लोगों को उसके सम्मुख प्रकट होने से रोका जो प्राचीनतम सौन्दर्य हैं और उसके प्रियजनों के साथ उन्होंने जीवन-आहार को बाँटने से रोका। एक को तो यह भी कहते सुना गया कि ‘उनके पास मत जाना क्योंकि वे लोगों पर जादू-मंतर चला देते हैं और उन्हें वे संकटों में सहायक, स्वयंजीवी ईश्वर के पथ से दूर भटका देते हैं।’ एकमेव सत्य ईश्वर की धर्मपरायणता की सौगन्ध! वह जो हमारी उपस्थिति में कुछ भी बोल सकने में असमर्थ है, उसने ऐसे-ऐसे शब्द उचारे हैं जैसा पिछली पीढ़ी में कोई और नहीं कह सका था और वो ऐसे-ऐसे कारनामें कर गया है जैसा अतीत काल के किसी नास्तिक ने भी कभी नहीं किए होंगे।

56. इन लोगों की कथनी और करनी दोनों ही मेरे शब्दों के मुखर प्रमाण हैं बशर्ते तू निष्पक्ष न्याय करने वाला बन सके। जो कोई भी ईश्वर के श्लोकों को जादूगरी की संज्ञा देता है उसने उसके किसी भी संदेशवाहक में कभी विश्वास नहीं किया। वह व्यर्थ ही जिया, उसने व्यर्थ ही श्रम किया और उसकी गिनती ऐसे लोगों में होती है जो बिना जाने-समझे कुछ भी बोल दिया करते हैं। सुनो: हे सेवक! ईश्वर से डरो, जो सर्जक है, रूप-रचयिता है और उसके खिलाफ न जा। बल्कि निष्पक्षता से फैसला कर और न्याय का आचरण कर। जिन्हें ईश्वर ने ज्ञान-सम्पन्न बनाया है उन्हें अविश्वासियों द्वारा उठाई गई आपत्तियों में ही उनके दावों को खंडित करने और इस प्रकट प्रकाश के सत्य को पुष्ट करने वाले निर्णायक प्रमाण मिल जाएँगे। सुनो: क्या तुम वही बात दुहराओगे जो कि अपने प्रभु की ओर से एक सन्देश के आने पर अविश्वासियों ने दुहराई थी? वज्र टूटे तुझपर, हे मूर्खों के समुदाय! और नष्ट हों तुम्हारे समस्त कृत्य।

57. हे प्राचीन सौन्दर्य! अविश्वासियों की ओर से और उनके पास की हर वस्तु से मुँह फेर और सभी रचित वस्तुओं के ऊपर अपने उदात्‍त और महान प्रियतम के सुमिरन की मोहक सुरभि प्रवाहित कर दे। यह सुमिरन अस्तित्व के संसार को गतिमान कर देता है और सभी सृजित वस्तुओं के मन-मन्दिर को नूतन बना देता है। सुनो: उसने स्वयं को वस्तुतः शक्ति और गरिमा के सिंहासन पर स्थापित कर लिया है। जो कोई भी उसकी मुखमुद्रा निहारना चाहता हो, उसे अपने ऊपर आसीन देख ले। धन्य है वह प्रभु जिसने स्वयं को इस प्रकाशित और जाज्वल्यमान सौन्दर्य में प्रकटित किया है। यदि कोई भी उसके सुमधुर आलापों को सुनना चाहता हो तो वे आलाप उसके भास्वर और विलक्षण अधरों से गुंजायमान हो रहे हैं और जो कोई भी उसके प्रकाश की आभाओं से आलोकित होना चाहता हो उससे कहो: उस प्रभु की उपस्थिति के दरबार की तलाश करो क्योंकि ईश्वर ने समस्त मानवजाति पर अपनी कृपा के प्रतीक स्वरूप को उसके पास तक जाने की अनुमति प्रदान की है।

58. सुनो: हे लोगों! तुम्हारे और अपने बीच ईश्वर को साक्षी रखते हुए हम पूरी सत्यता के साथ तुझसे एक सवाल करेंगे - वह वस्तुतः सच्चरित्र जनों का रखवाला है। अतः उसकी गरिमा के सिंहासन के समक्ष उपस्थित हो और न्याय तथा निष्पक्षता के साथ जवाब दो। अपने उद्देश्य को प्राप्त करने की क्षमता ईश्वर में है या तुझमें ? कौन है सचमुच स्वाधीन - क्या ईश्वर जैसाकि तुम कहा करते हो कि वह जैसा चाहता है वैसा ही करता है और उससे उसके कर्मों का हिसाब नहीं लिया जाएगा, या तुझमें है ऐसी शक्ति जो केवल अंधानुकरण के बल पर ऐसी गर्वोक्ति कहा करता है, ईश्वर के हर अवतार के आगमन पर तुम्हारे पूर्वजों द्वारा की गई गर्वोक्ति की तरह।

59. यदि वह सत्य ही अबाधित है तो यह देख कि कैसे उसने ऐसे श्लोकों के साथ अपने धर्म के प्रकटावतार को भेजा है जिन्हें आकाश में या धरती पर कुछ भी नहीं रोक सकता। उनका प्रकटीकरण इस तरह किया गया है कि इस अस्तित्व के संसार में उनकी न कोई तुलना है न कोई मेल। जब विश्व का दिवानक्षत्र इराक के क्षितिज पर अपने प्रकट साम्राज्य के साथ चमका था तो तूने स्वयं यह देखा-सुना था। दिव्य श्लोकों में हर वस्तु अपनी परिपूर्णता को प्राप्त करती है और ये वास्तव में ईश्वर के श्लोक हैं - उसका जो सर्वसम्प्रभु स्वामी है, संकटों में सहायक, सर्वमहिमामय और सर्वशक्तिमान है। इससे भी बढ़कर, उसे एक ऐसे धर्म का संवाहक बनाकर प्रकट किया गया है जिसकी प्रभुत्वपूर्ण शक्ति को सभी रचित वस्तुओं ने स्वीकार किया है। इस बात से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता, सिवाय उनके जो पापी और नास्तिक हैं।

60. सुनो: हे लोगों! क्या तुम्हारी इच्छा सूर्य की सुन्दरता को अपनी स्वार्थपूर्ण लालसाओं के आवरण तले छुपा देना है अथवा उस ‘चेतना’ को पवित्र और ज्योतिर्मय वक्षस्थल पर अपने मधुरालाप छेड़ने से रोक देना है? ईश्वर से डरो और उससे विवाद न करो जो ईश्वरत्व का प्रतिनिधि है। उससे बहस मत करो जिसकी आज्ञा से ‘ब’ अक्षर की रचना की गई थी और उसे उसके शक्तिमान आधार से जोड़ा गया था।5 ईश्वर के सन्देशवाहकों और उसकी संप्रभु शक्ति में तथा परमात्मा के ‘स्व’ और उसकी महिमा में आस्था रखो। उन लोगों का अनुसरण न करो जिन्होंने उसी का खंडन किया है जिसमें उन्होने कभी विश्वास किया था और जिन्होंने अपनी कोरी कल्पना के अनुसार अपने लिए एक पद की कामना की है। वे वस्तुतः ईश्वर-विहीन लोग हैं। तू उसका साक्षी बन जिसका साक्षी स्वयं ईश्वर बना है ताकि उसके कृपा-प्राप्त जन तुम्हारे अधरों से निस्सृत शब्दों से प्रकाशित हो सकें। सुनो: हम वस्तुतः उसमें विश्वास करते हैं जिसे पूर्वयुग के प्रभुदूतों के समक्ष प्रकट किया गया था और उसमें जिसे सत्य की शक्ति से अली (दिव्यात्मा बाब) के सामने प्रकट किया गया था और उसमें जो कि अब उसकी गरिमा के सिंहासन से प्रकट किया जा रहा है। इस तरह अपनी कृपा के संकेत-स्वरूप और समस्त विश्वों को आच्छादित करने वाली अपनी करुणा के चिह्नस्वरूप तुम्हारा प्रभु तुम्हें निर्देशित करता है।

61. हे इस मन्दिर के चरण! हमने सत्य ही तुम्हें लोहे से निर्मित किया है। अपने प्रभु के धर्म में ऐसी स्थिरता से खड़े रह कि हर वियुक्त आत्मा उस सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ परमेश्वर के पथ पर दृढ़ता प्राप्त कर सके। सावधान रह कि कहीं शत्रुता या घृणा की आँधियां या असमानता फैलाने वाले लोगों के विस्फोटक कार्य तुम्हें डिगा न दें। अपने ईश्वर के धर्म में अचल रह और विचलित न हो। हमने वस्तुतः उस ‘नाम’ के नाम पर तुम्हारा आह्वान किया है जो प्रत्येक दृढ़ता का स्रोत-बिंदु है, और अपने परमोत्कृष्ट नामों में से प्रत्येक की करुणा से तुम्हें बुलाया है जिसे आकाश और धरती के सभी निवासियों के समक्ष प्रकट किया गया है। बहुत ही जल्द तुम्हारे माध्यम से हम ऐसे अन्य दृढ़ एवं सुस्थिर चरणों को सामने लाएँगे जो अविचलित भाव से हमारे पथ पर चलेंगे - भले ही अतीत और भविष्य की सभी पीढ़ियों की सम्मिलित शक्तियों की विशाल सेना ही उनपर आक्रमण क्यों न कर दे। सत्यतः, अपने हाथों की अंजलि मात्र में हमने समस्त करुणा को धारण कर रखा है और अपनी कृपा के अनुसार उसे अपने कृपाप्राप्त सेवकों पर अभिसिंचित करते हैं। हमने बार-बार अपनी कृपाएँ तुम्हें प्रदान की हैं ताकि तुम अपने प्रभु के प्रति वह आभार प्रकट कर सको कि सृष्टि की सभी वस्तुओं की जिह्वाओं से मुझ सर्वकरुणामय, परम दयामय प्रभु का गुणगान प्रवाहित हो उठे।

62. हे जीवन्त मन्दिर! इस धर्म की सेवा करने के लिये ऐसी शक्ति और क्षमता से उठ खड़ा हो जो स्वयं हमसे उत्पन्न है। अतः ईश्वर के सेवकों के समक्ष उस सर्वप्रभुतामय स्वामी, अतुलनीय, सर्वमहिमामय, सर्वप्रज्ञ परमेश्वर की चेतना द्वारा तुझे प्रदत्‍त सबकुछ प्रकट कर दे। सुनो: हे लोगों! क्या तुम उससे विमुख होगे जो अनन्त सत्य है और उसके बदले उसका चयन करोगे जिसे हमने बस मुट्ठी भर धूल से निर्मित किया है? ऐसा करना स्वयं पर भीषण अत्याचार करने जैसा होगा, बशर्ते कि तू उन लोगों में से हो जो अपने प्रभु के श्लोकों पर विचार करते हैं। सुनो: हे लोगों! अपने हृदय और नेत्रों को पवित्र कर ले ताकि इस पावन और ज्योर्तिमय परिधान में तू अपने सृष्टिकर्ता को पहचान सके। कहो: स्वर्गिक युवा गरिमा के सिंहासन पर विराजमान है, उसने अपनी स्वतंत्र सम्प्रभुता को प्रकट कर दिया है और अब अत्यंत मधुर और विलक्षण स्वर-भंगिमा के साथ आकाश और धरा के बीच अपना यह आह्वान सुना रहा है: ”हे धरती के लोगों! क्योंकर तुमने अपने उस सर्वदयालु प्रभु में अविश्वास किया है और उससे विमुख हो गए हो जो सर्वमहिमामय परमेश्वर का परम सौन्दर्य है? ईश्वर की सच्चरित्रता की सौगन्ध! यह उसका गुप्त रहस्य है जो सृष्टि के दिवास्रोत से प्रकट हुआ है और यह उसका चिरसंचित सौन्दर्य है जो इस परम उदात्त पद के क्षितिज के ऊपर जगमगाया है - वह परम पद जो संकटों में सहायक, सर्वमहिमामय, सर्वदमन, सर्वशक्तिमय ईश्वर की सम्प्रभुता से सम्पन्न है।’’

63. हे पावनता के मन्दिर! हमने सत्य ही तुम्हारे अंतस्तल को लोगों के कुप्रलापों से मुक्त कर दिया है और उसे सांसारिक मायाजाल से परे, पावन बना दिया है ताकि उसके अन्दर मेरे सौन्दर्य का प्रकाश प्रकट होकर सारे संसार के दर्पणों में प्रतिबिम्बित हो सके। इस तरह हमने तुम्हें आकाश और पृथ्वी की सभी रचित वस्तुओं तथा प्रकटीकरण और सृष्टि के साम्राज्य में जो कुछ भी निर्णीत किया गया है उन सबसे अलग रूप में चुना है और इस प्रकार हमने तुम्हारा चयन स्वयं अपने लिए किया है। यह उस कृपा का एक प्रमाण है जो कि परमात्मा ने तुझे प्रदान किया है, एक ऐसी कृपा जो उस दिवस तक बनी रहेगी जिसका इस क्षणभंगुर संसार में कोई अंत नहीं है। यह कृपा तब तक बरकरार रहेगी जब तक उस राजाधिराज, संकटों में सहायक, परम शक्तिमान, परम विवेकी ईश्वर का अस्तित्व बना रहेगा। क्योंकि ईश्वर के दिवस का अर्थ होता है स्वयं उस ईश्वर का आत्मस्वरूप जो सत्य की शक्ति के साथ अवतरित हुआ है। यह वह दिन है जिसके बाद कभी रात नहीं आएगी और न ही इसे किसी प्रशंसा से बाँधा जा सकेगा - काश तुम यह समझ लेते!

64. हे इस मन्दिर के अंतस्तल! सत्य ही, हमने सभी वस्तुओं को तुम्हारा यथार्थ प्रतिबिम्बित करने को उत्प्रेरित किया है और तुम्हें हमने स्वयं अपना दर्पण बनाया है। अतः, सभी रचित वस्तुओं के वक्षस्थल पर अपने प्रभु की आभा बिखेर, ताकि वे समस्त भ्रमों और सीमाओं से मुक्त हो सकें। इस तरह से प्रभासित हुआ है विवेक का सूर्य अनन्त सम्राट की लेखनी के क्षितिज के ऊपर। धन्य हैं वे जो इसे समझते हैं। तुम्हारे ही माध्यम से हमने अन्य पवित्र अंतस्तलों का सृजन किया है, और तुम्हारे तथा अपने प्रिय सेवकों के प्रति अपनी कृपा के प्रतीक के तौर पर हम उन्हें पुनः तुम तक लौटने देते हैं। बहुत ही शीघ्र हम तुम्हारे माध्यम से पवित्र एवं ज्योतिर्मय आत्मा वाले लोगों को सृजित करेंगे जिनकी दृष्टि में मेरे सौन्दर्य के सिवा अन्य किसी भी वस्तु का अस्तित्व नहीं होगा और जो मेरे मुखमंडल के ज्योतिर्मय प्रकाश के सिवा अन्य कुछ भी नहीं झलकाएँगे। वे वस्तुतः सभी रचित वस्तुओं के बीच मेरे नामालंकरणों के दर्पण होंगे।

65. हे पावनता के देवालय! सत्य ही, हमने तुम्हारे अंतर्तम को अतीत और भविष्य के समस्त ज्ञान का कोषालय और स्वयं हमारे उस ज्ञान का उदयस्थल बनाया है जिसे हमने आकाश और धरती के निवासियों के लिए निर्धारित किया है ताकि यह पूरी सृष्टि तुम्हारी कृपा का आस्वाद पा सके और तुम्हारे ज्ञान के कौतुक के माध्यम से उस उदात्‍त, शक्तिशाली, महान परमेश्वर के अभिज्ञान को प्राप्त कर सके। वास्तव में, वह ज्ञान जो कि स्वयं मेरे अपने सार-तत्व से सम्बंध रखता है, वह ऐसा ज्ञान है कि जिसे कभी कोई नहीं पा सका और न कभी पा सकेगा और न ही कोई हृदय इसका भार वहन करने में सक्षम हो सकेगा। यदि हम इस ज्ञान का एक शब्द भी प्रकट कर देते तो सभी लोगों के हृदय व्याकुल हो उठते, सभी वस्तुओं के मूल प्रकम्पित हो धराशायी हो जाते और अत्यंत बुद्धिमान व्यक्ति के चरण भी फिसल जाते।

66. हमारे विवेक के कोषालय में एक ऐसा ज्ञान निहित पड़ा है जिसके एक शब्द को भी यदि हमने मानवजाति के समक्ष प्रकट करना तय किया होता तो प्रत्येक मनुष्य ईश्वर के प्रकटावतार को पहचानने और उसकी सर्वज्ञता को स्वीकार करने के लिए बाध्य हो जाता, हर कोई प्रत्येक विज्ञान के रहस्यों को जानने में सक्षम हो जाता और ऐसे परम पद को पा लेता कि वह स्वयं को अतीत और भविष्य के समस्त ज्ञान से बिल्कुल स्वतंत्र पाता। हमारे पास और भी ज्ञान हैं जिसका एक अक्षर भी हम प्रकट नहीं कर सकते और न ही हम मानवजाति को उनके अर्थ की ओर किए गए तनिक संकेत को भी सुन पाने में सक्षम पाते हैं। इस तरह हमने तुम्हें उस ईश्वर के ज्ञान के बारे में सूचित किया है जो सर्वज्ञ और सर्वप्रज्ञ है। यदि हमने सुयोग्य पात्रों को पा लिया होता तो हम उनमें निगूढ़ अर्थों के खजाने भर पाते और उन्हें ऐसा ज्ञान प्रदान करते जिसके एक अक्षर में ही यह समस्त सृष्टि परिव्याप्त हो जाती।

67. हे इस मन्दिर के अंतस्तल! हमने तुम्हें अपने ज्ञान का उदयस्थल बनाया है तथा धरती और आकाश के सभी वासियों के लिए अपने विवेक का दिवास्रोत। तुमसे ही हमने सभी विज्ञानों का उद्गम नियत किया है और हम उन्हें तुम्हारे ही पास लौट जाने देंगे। और फिर तुम्हीं से हम दोबारा उन्हें उद्भूत करेंगे। वस्तुतः, यही है हमारा वचन और हम अपने उद्देश्य को पूरा करने में सक्षम हैं। बहुत ही जल्द हम तुम्हारे माध्यम से नए और विलक्षण विज्ञानों तथा सक्षम एवं प्रभावी शिल्पकलाओं के प्रणेताओं को अस्तित्व में लाएँगे और उनके माध्यम से कुछ ऐसा प्रकट करेंगे जिसे आजतक हमारा कोई भी सेवक समझ नहीं पाया है। इस तरह हमने जिसे जो भी चाहा है प्रदान किया है और जिसे हमने जो भी कभी पहले प्रदान किया था उसे हम अपनी इच्छानुसार वापस ले लेते हैं। इस तरह हम जो भी चाहते हैं अपनी आज्ञा से निर्धारित करते हैं।

68. सुनो: यदि किसी क्षण हम सभी वस्तु रूपी दर्पणों के ऊपर अपनी स्नेहिल दूरदर्शिता की दीप्ति झलकाना चाहें और दूसरे ही क्षण अपने प्रकाश की आभाएँ उनके ऊपर से हटा लेना चाहें तो यह, वस्तुतः, हमारी शक्ति के दायरे में आता है और किसी को भी ”क्यों“ या ”किसलिए“ यह सवाल पूछने का अधिकार नहीं है। क्योंकि हम सत्य ही अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सक्षम हैं और जो कुछ भी हमारे द्वारा घटित किया जाता है उसके लिए हमें कारण बताने की जरूरत नहीं होती। इसपर उसके सिवा और कोई विवाद नहीं कर सकता जो ईश्वर के साथ भागीदार होने का दावा करता हो और उसके सत्य पर संदेह करता हो। सुनो: हमारी सामर्थ्‍य की शक्ति के आगे कुछ भी नहीं टिक सकता और न हमारी आज्ञा के मार्ग में अवरोध बन सकता है। अत्युच्च शक्ति और गरिमा के साम्राज्य में हम अपनी इच्छानुसार जिस किसी को भी उदात्‍त पद प्रदान करते हैं और यदि हमारी इच्छा हो तो उसे हम पतन के रसातल में गिरा सकते हैं।

69. हे धरती के निवासियों! क्या तुम इस बात पर विवाद करोगे कि यदि हम किसी आत्मा का पालन सद्रतुल-मुन्तहा में करेंगे तो वह हमारी सम्प्रभुता और हमारे साम्राज्य की सत्‍ता से बाहर हो जाएगा? नहीं, स्वयं मेरी सौगन्ध! यदि हम चाहेंगे तो पलक झपकते ही उसे धूल-धूसरित कर देंगे। ज़रा एक पेड़ के बारे में विचार करो: हम उसे एक बगीचे में रोपते हैं, उसे अपनी स्नेहिल देखभाल की फुहारों से अभिसिंचित करते हैं और जब वह लम्बा तथा विशाल बन जाता है और फलों और पत्तियों से लकदक हो जाता है तो हम अपने निर्णय का प्रबल झंझावात भेज देते हैं, उसे उसकी जड़ से उखाड़ फेंकते हैं और धराशायी करके रख देते हैं। हर वस्तु के साथ हम ऐसा ही करते आए हैं और आज के युग में भी ऐसा ही होगा। वास्तव में, हमारे अकाट्य विधान के अद्भुत आश्चर्य इसी तरह के हैं - एक ऐसा विधान जो सदा से सभी वस्तुओं पर शासन करता आया है और करता रहेगा, बशर्ते तूम उन लोगों में से हो जो समझते हैं। परन्तु सर्वशक्तिमान, सर्वसमर्थ, सर्वप्रज्ञ ईश्वर के सिवा और कोई भी इसके रहस्य को नहीं समझता।

70. हे लोगों! तुम्हारी आँखें जिस तथ्य को देखती हैं क्या उसका तुम खंडन करोगे? धिक्कार है तुम पर, हे अस्वीकार करने वाले जनों! वह जो परिवर्तन से अछूता रहने वाला एकमात्र परम तत्व है वह है स्वयं वह आत्मन्, सर्वकृपालु, सर्वकरुणामय, जबकि अन्य सभी वस्तुएँ एक उसकी इच्छा मात्र से परिवर्तनीय हैं, काश कि तुम यह अपनी अंतर्दृष्टि से निहार पाते!

71. हे लोगों! मेरे धर्म के बारे में विवाद न करो, क्योंकि तुम कभी भी अपने प्रभु के अपरिमित विवेक की थाह नहीं पा सकोगे, न ही तुम कभी उसके ज्ञान की गहराइयों को माप सकोगे जो है सर्वगरिमामय, सर्वव्याप्त। जो कोई भी उसके परम तत्व को जान लेने का मिथ्या दावा करता है वह निस्संदेह दुनिया के सबसे अज्ञानी लोगों में से है। ब्रह्मांड का एक-एक अणु-परमाणु ऐसे व्यक्ति को पाखंडी करार देगा और इसकी साक्षी है मेरी वाणी जो सत्य के सिवा और कुछ भी उच्चारित नहीं करती। मेरे धर्म का विशाल रूप दिखाओ और मेरी शिक्षाओं और आज्ञाओं का प्रसार करो क्योंकि इसके सिवा अन्य कोई भी कार्य तुम्हारे लिये उपयुक्त नहीं होगा और इसके सिवा अन्य कोई भी पथ तुम्हें उस परमेश्वर तक नहीं पहुँचा सकेगा। काश तुम मेरे परामर्श पर ध्यान देते!

72. हे जीवन्त मन्दिर! हमने तुम्हें अपने सर्वोत्कृष्ट नामोपाधियों में से प्रत्येक का दिवास्रोत, अपने भव्यतम गुणों का उदयस्थल तथा धरती और आकाश के निवासियों के बीच अपनी अगणित विभूतियों में से हरेक का निर्झर-स्रोत बनाया है। तदुपरांत हमने तुम्हें आकाश और धरती के बीच स्वयं अपनी छवि के रूप में साकार किया है और प्रकटीकरण और सृष्टि के साम्राज्य में जो भी जीव हैं उन सबके मध्य तुम्हें अपनी महिमा का संकेत बनाया है, ताकि मेरे सेवक तेरे पदचिह्नों पर चल सकें और उन लोगों में बन सकें जिन्हें सही मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। हमने तुम्हें आकाश और धरती दोनों ही के निवासियों के लिए करुणा और कृपालुता का महावृक्ष नियुक्त किया है। धन्य हैं वे जिन्हें तेरी छाँह की तलाश है और जो स्वयं तेरे निकट खिंचे आते हैं - तू जो कि ब्रह्मांडों का सर्वशक्तिमान संरक्षक है।

73. सुनो: हमने अपने नामालंकरणों में से प्रत्येक को एक ऐसा स्रोत बनाया है जिनसे हमने दिव्य प्रज्ञा और ज्ञान के फव्वारों को फूटकर अपने धर्म के उद्यान में प्रवाहित होने को प्रेरित किया है - वे फव्वारे जिनकी संख्या की गणना तेरे परम पावन, सर्वशक्तिमान, सर्वदर्शी, सर्वप्रज्ञ परमात्मा के सिवा अन्य कोई नहीं कर सकता। उसी बिंदु से हमने सभी ‘अक्षरों’ को व्युत्पन्न किया है और उन्हें उसी बिंदु की ओर वापस लौटने को प्रेरित किया है। और हमने ‘उसे’ पुनः मानव मन्दिर के रूप में सृजित किया है। सर्वमहिमा हो इस अतुलनीय एवं विलक्षण शिल्प के प्रणेता की। बहुत ही जल्द हम अपने सर्वमहिमाशाली नाम से उसे उद्घाटित करेंगे और उसकी व्याख्या करेंगे। यह वास्तव में हमारी करुणा का संकेत है और मैं, वस्तुतः, परम कृपालु हूँ, दिवसाधिक प्राचीन।

74. हम समस्त आलोकों को अपने ‘एकमेव सत्य नाम के प्रकाशवृत्‍त’ से सामने लाए हैं और उन्हें उसी तक लौट जाने को उत्प्रेरित किया है और पुनः उन्हें मानव मन्दिर के स्वरूप में प्रकट किया है। समस्त महिमा हो उसकी जो शक्ति का प्रभु है, सामर्थ्‍य और बल का स्वामी है। मेरी इच्छा के कार्य-संचालन या मेरी शक्ति के मार्ग में कोई भी अवरोध उत्पन्न नहीं कर सकता। मैं वह हूँ जिसने अपने मुख के एक शब्द से सभी जीवों का सृजन किया है और मेरी शक्ति, वस्तुतः, मेरे उद्देश्य के समतुल्य है।

75. सुनो: यदि हमारी इच्छा हो तो यह हमारी सामर्थ्‍य है कि हम एक क्षण में सृष्टि की सभी वस्तुओं को विनष्ट कर दें और, अगले ही क्षण, उन्हें पुनः जीवन के स्पंदन से भर दें। किन्तु उसका ज्ञान केवल ईश्वर के पास है, जो है सर्वज्ञाता, सर्वसूचित। यदि हमारी मर्जी हो तो यह हमारी सामर्थ्‍य के दायरे में है कि क्षण भर की देर में हम एक उड़ते हुए धूलकण को अनन्त, अकल्पनीय आभा वाले सूर्यों को जन्म देने की क्षमता से भर दें, एक छोटे से ओसकण को विशाल और अगाध महासागर में बदल दें, एक अक्षर मात्र में इतनी शक्ति भर दें कि वह अतीत और भविष्य के समस्त ज्ञान को उद्घाटित कर सके। यह {मेरे लिए} वस्तुतः बहुत ही आसान कार्य होगा। आदिकाल से लेकर अंतहीन अनन्तकाल तक मेरी शक्ति के ऐसे ही प्रमाण रहे हैं। लेकिन फिर भी मेरे सृजित जीव मेरी सामर्थ्‍य को भूल गए, उन्होंने मेरी सम्प्रभुता का खंडन किया, और मुझ सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ के ’आत्म’ से ही विवाद किया।

76. सुनो: धरती और आकाश के बीच जो कुछ भी विद्यमान है, उनमें से कुछ भी मेरी आज्ञा के बिना नहीं हिल सकता और मेरे साम्राज्य तक मेरी आज्ञा के बिना कोई भी नहीं पहुँच सकता। परन्तु फिर भी मेरे रचित जीव मेरी शक्ति और सम्प्रभुता से अनजाने बने रहे हैं और उनकी गिनती असावधानों में की गई है। सुनो: मेरे प्रकटीकरण में और कुछ नहीं बल्कि ईश्वर का प्रकटीकरण दिखता है, और मेरी शक्ति में उस प्रभु की शक्ति प्रकटित है, बशर्ते कि तुम इसे जान पाते। सुनो: मेरे रचित जीव एक पेड़ की पत्तियों की तरह हैं। वे इसी पेड़ से व्युत्पन्न हैं और अपने अस्तित्व के लिए इसी पर निर्भर हैं, मगर फिर भी वे अपनी जड़ और अपने उद्गम को भुलाए बैठे हैं। अपने विवेकी सेवकों के लिए हमने ऐसी तुलनाएँ गढ़ी हैं कि वे कदाचित् वृक्ष जैसे तुच्छ अस्तित्व के स्तर से ऊपर उठकर इस अबाध्य एवं अचल धर्म में सच्ची परिपक्वता हासिल कर सकें। सुनो: मेरे जीव अतल गहराईयों में विचरती मछलियों की तरह हैं। उनका जीवन जल पर निर्भर है, मगर फिर भी वे उसी से अनभिज्ञ हैं जो कि सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की कृपा से उनके अस्तित्व मात्र को ही अवलम्बन देता है। वस्तुतः वे इतने असावधान हैं कि यदि उनसे उस जल और उसके गुणों के बारे में पूछा जाए तो वे निरे अनजाने साबित होंगे। इस तरह हम उपमाएँ और तुलनाएँ निर्धारित करते हैं कि कदाचित लोग उस परमेश्वर की ओर उन्मुख हो सकें जो केन्द्रबिंदु है समस्त सृष्टि की आराधना का।

77. हे लोगों! ईश्वर से डरो और उसमें अविश्वास न करो जिसकी कृपा ने सबको परिव्याप्त कर रखा है, जिसकी करुणा ने इस ईश्वराधीन जगत को आच्छादित कर रखा है और जिसके धर्म की सार्वभौम क्षमता ने तुम्हारे आंतरिक और बाह्य अस्तित्व को अपनी परिधि में समेट रखा है। अपने प्रभु से त्रास खाओ और सच्चरित्र लोगों में से बनो। सावधान रहो कि तुम्हारी गिनती ऐसे लोगों में से न हो जो ईश्वरीय श्लोकों को अनसुना कर देते हैं और उसे पहचान नहीं पाते। ऐसे लोग सचमुच दिग्भ्रमित लोगों में से हैं।

78. सुनो: क्या तुम उसकी आराधना करोगे जो न देखता है और न सुनता और जो वस्तुतः ईश्वर के सभी सेवकों में सबसे अधम और दीन है? आखिर तुम क्योंकर उस प्रभु की आराधना करने से चूक गये जो परम उदात्‍त, परम महान, ईश्वर का सुसमाचार लिए, दिव्य आज्ञा के स्रोत से तुम्हारे पास आया है? हे लोगों! तुम उनकी तरह न बनों जो हमारे सिंहासन के समक्ष उपस्थित तो हुए किन्तु फिर भी हमें जान न सके और न समझ सके। सचमुच ये लोग बड़े ही घृणित लोग हैं। हमने उनके सामने उन श्लोकों का गायन किया जो दिव्य साम्राज्य के निवासियों और उच्च लोक के साम्राज्य के सहचरों को आनन्दित कर देते, मगर फिर भी वे उससे मानों ओट किए हुए निकल गए और उसके बदले उसकी आवाज पर कान लगा बैठे जो ईश्वर का सेवक मात्र है और उसकी इच्छा की कठपुतली मात्र है। इस तरह हम तुम्हें वह तत्व प्रदान करते हैं जो तुम्हें ईश्वर के प्रियपात्रों के पथ की ओर मार्गदर्शित करेगा।

79. स्वर्ग-सौंध में प्रवेश करने वाले और उस आसन तक जहाँ ईश्वर का राजसिंहासन स्थापित किया गया है पहुँचने वाले और वे न जाने कितने लोग जो उस परम उदात्‍त, परम महान प्रभु के सम्मुख खड़े हुए, केवल चार ‘द्वारों’ या इस्लाम धर्म के इमाम के ही बारे में पूछकर रह गए! ऐसी ही स्थिति थी इन लोगों की, काश तुम समझदार लोगों में होते! आज के युग में भी हम ऐसा ही देखते हैं: जिन लोगों ने परमात्मा में अविश्वास किया है और उसके साथ स्वयं को ‘भागीदार’ समझ लिया है, वे हमारे नामालंकरणों में से बस एक से ही चिपके बैठे हैं और उसे पहचानने से वंचित कर दिए गए हैं जो सभी नामालंकरणों का रचयिता है। हम साक्षी देते हैं कि ऐसे लोग नरकाग्नि में धधकने वाले लोगों में से एक हैं। वे सूरज से कहते हैं कि वह छाया के शब्दों की व्याख्या कर दे और उस एकमेव सत्य से चाहते हैं कि वह अपने रचित जीवों की वाणी का अर्थ प्रकाशित करे, काश कि तुम इसे समझ पाते! सुनो: हे लोगों! सूर्य स्वयं अपनी ही ज्योति की प्रखरता और उसके प्रकाश में प्रकटित वस्तुओं के सिवा अन्य कुछ भी नहीं झलकाता, जबकि अन्य सभी वस्तुएँ उसकी किरणों के प्रकाश की मोहताज हैं। ईश्वर से डरो और अज्ञानियों में से न गिने जाओ! उन लोगों में ऐसे लोग भी थे जिन्होंने प्रकाश में निहित अंधकार के बारे में सवाल किए। सुनो: खोल लो अपने नयन, ताकि तुम प्रत्यक्ष रूप से इस धरती को आच्छादित करने वाले प्रखर आलोक की झलक देख सको! वस्तुतः, यह वह प्रकाश है जो अपनी चमक प्रकट करते हुए, दिव्य ज्ञान के दिवास्रोत के क्षितिज पर उदित और प्रकाशित हुआ है। क्या तुम यहूदियों से यह पूछोगे कि क्या प्रभु यीशु वस्तुतः ईश्वर की ओर से आए हुए सत्य-स्वरूप थे, या मूर्तियों से यह सवाल करोगे कि पैगम्बर मुहम्मद अपने प्रभु के दूत थे, या कुरान के अनुगामियों से उसके बारे में प्रश्न पूछोगे जो परम उदात्‍त, परम महान परमात्मा का स्मरण था?

80. सुनो: हे लोगों! इस प्रकटीकरण की आभाओं के समक्ष अपनी हर सम्पदा त्याग दो और ईश्वर ने तुम्हें जिस पर गौर करने की आज्ञा दी है उसका दामन थामो। तुम्हारे लिए उसका ऐसा ही आदेश है और वह आदेश देने में, वस्तुतः सर्वाधिक समर्थ है। मेरे सौन्दर्य की सौगन्ध! इन शब्दों को प्रकट करने के पीछे मेरा मकसद सभी जनों को उस परम गरिमामय, सर्व-प्रशंसित परमेश्वर के निकट लाना है। सावधान! कहीं तुम मेरे साथ भी वही व्यवहार न कर बैठो जो तुमने मेरे अग्रदूत के साथ किया था। जब मेरी कृपा के दरबार से तुम्हारे पास ईश्वरीय श्लोकों को भेजा जाए तो उन पर यह कहते हुए आपत्तिन करो कि ”ये अंतःप्रेरित और सहज प्रकृति से उद्भूत नहीं हैं“, क्योंकि वह प्रकृति स्वयं ही मेरी वाणी द्वारा सृजित है और वह मेरी परिक्रमा करती है, बशर्ते कि तुम उन लोगों में से हो जो इस सत्य को समझते हैं। अपने सर्वदयालु प्रभु की वाणी से आभ्यंतरिक अर्थों के परिधान की मोहक सुरभि ग्रहण करो, जिसे समस्त सृष्टि में प्रसारित किया जा चुका है और जिसकी सुवास सभी रचित वस्तुओं पर प्रवाहित कर दी गई है। खुश हैं वे लोग जो इसे समझते हैं और दीप्तिमान हृदय के साथ अपने प्रभु की ओर तेजी से अग्रसर होते हैं।

81. हे जीवन्त मन्दिर! वस्तुतः, हमने तुझे नामालंकरणों के साम्राज्य का एक दर्पण बनाया है ताकि तुम समस्त मानवजाति के बीच मेरी सम्प्रभुता का संकेत, मेरी उपस्थिति की ओर ले जाने वाला, मेरे सौन्दर्य की ओर आह्वान करने वाला और मेरे सीधे एवं सुस्पष्ट मार्ग की ओर मार्गदर्शित करने वाला बन सको। अपनी उपस्थिति की ओर से एक कृपालुता के रूप में हमने अपने सेवकों के बीच तेरे नाम को उदात्‍त बनाया है। मैं वस्तुतः सर्वकृपालु हूँ, दिवसाधिक प्राचीन। और फिर हमने तुझे अपने ही आत्मत्व के अलंकरण से विभूषित किया है और तुझपर अपनी वाणी अभिसिंचित की है ताकि इस ईश्वराधीन जीवन में जो भी तुझे इच्छित हो वह तुम निर्धारित कर सको और वह सबकुछ पूरा कर सको जो तुम्हारी मर्जी है। हमने आकाश और धरती का समस्त शुभ तेरे लिए निर्धारित कर दिया है और यह निर्णय दिया है कि कोई भी व्यक्ति उसके अंशमात्र को प्राप्त नहीं कर सकता बशर्ते कि वह तेरी छाया तले विराजमान न हो ले, जैसाकि तेरे प्रभु, उस सर्वज्ञाता, सर्वसूचित द्वारा आदेशित है। हमने तुझे राजदंड से और निर्णय की पाती से विभूषित किया है ताकि तू हर आज्ञा के अंतर्निहित विवेक को जाँच सके। तेरे प्रभु, उस करुणा के परमेश्वर के स्मरण में हमने तेरे हृदय से आभ्यंतरिक अर्थ और व्याख्या के महासागरों को उमड़ाया है ताकि तुम ईश्वर के प्रति आभार और प्रशंसा प्रकट कर सको और सच्चे कृतज्ञ जनों में से बन सको। हमने तुझे अपने सभी रचित जीवों से विशिष्ट बनाया है और आकाश और धरती के सभी निवासियों के प्रति तुझे स्वयं अपने ‘आत्म’ का प्रकटावतार नियुक्त किया है।

 82. अतः हमारी आज्ञा से ऐसे प्रखर दर्पणों और उदात्‍त अक्षरों को अस्तित्व प्रदान कर जो तेरे साम्राज्य और तेरी सम्प्रभुता के साक्षी बन सके, तेरी शक्ति और गरिमा के गवाह हो सकें और मानवजाति के बीच तेरे नामालंकरणों के प्रकटीकरण हो सकें। पुनः, हमने तुझे सभी दर्पणों का जनक और रचयिता बनाया है, ठीक वैसे ही जैसे हमने पहले उन्हें तुझ से सृजित किया था। और जिस तरह हमने आरम्भ में तेरा आह्वान किया था वैसे ही हम तुझे अपने ‘आत्म’ में वापस बुला लेंगे। वस्तुतः, तेरा प्रभु अप्रतिबंधित, सर्वशक्तिमान, सर्वबाध्यकारी है। अतः इन दर्पणों के प्रकट होने पर उन्हें सचेत कर दे कि जब उनका सृजनकर्ता, उनका रूप-रचयिता उनके बीच प्रकट हो तो वे उसके समक्ष अभिमान से न फूलें, अथवा कहीं नेतृत्व के मोहपाश उन्हें उस सर्वशक्तिमान, सर्वसौन्दर्यमय परमात्मा के समक्ष समर्पित भाव से विनत होने से न रोक दें।

83. सुनो: हे दर्पणों के समुदाय! तुम कुछ और नहीं बल्कि मेरी इच्छा की सृष्टि हो और मेरी आज्ञा से अस्तित्व में आए हो। सावधान! कहीं तुम मेरे प्रभु के पवित्र श्लोकों से मुँह न मोड़ लेना और ऐसे लोगों में से न बन जाना जिन्होंने अन्याय किया है और जो नष्टप्रायः लोगों में गिने गए हैं। सावधान, कि तुम अपने अधिकार की वस्तुओं के प्रति आसक्त न हो लेना और न ही अपने नाम और अपनी शोहरत का घमंड करना। तुम्हारे योग्य यह है कि तुम अपने आप को आकाश और धरती की सभी वस्तुओं सें पूर्णतः विरक्त कर लो। इसी तरह आदेशित किया है उसने जो सर्वशक्तिमान, सर्वसामर्थ्‍यवान है।

84. हे मेरे धर्म के मन्दिर! सुनो: यदि किसी एक क्षण में सभी वस्तुओं को मैं अपने नामालंकरणों के दर्पण में रूपांतरित कर देना चाहूँ तो निश्चित ही यह मेरी शक्ति के दायरे में है, तो फिर मेरे प्रभु की सामर्थ्‍य के दायरे में यह कितना अधिक होगा जिसने अपनी सर्वबाध्यकारी और अपरिक्षेय आज्ञा के माध्यम से मुझे अस्तित्व प्रदान किया है। और यदि मैं पलक झपकते मात्र इस सम्पूर्ण सृष्टि को आंदोलित कर देना चाहूँ तो यह भी निस्संदेह मेरे लिए सम्भव है, तो फिर मेरे प्रभु और समस्त लोकों के प्रभु परमेश्वर की इच्छा में निहित उस सार्वभौम ‘उद्देश्य’ के लिए यह कितना अधिक सम्भव होगा!

85. सुनो: हे तुम मेरे नामों के प्रकटीकरण! यदि तुम प्रभु-पथ पर अपना सर्वस्व - नहीं, बल्कि अपना समस्त जीवन - समर्पित कर दो और इतनी बार उस प्रभु का आह्वान करो जितने कि बालू के कण हैं, या बरसात की बूंदें हैं और समुद्र की लहरें हैं। यदि तुम उसके धर्म के प्रकटीकरण के अवतार लेने पर उसका विरोध करो तो तुम्हारे कार्य की ईश्वर के समक्ष कभी गिनती नहीं की जाएगी। दूसरी ओर, तुम सदाचार के हर कार्य की उपेक्षा करो किन्तु इस युग में उस अवतार में आस्था रखो तो शायद ईश्वर तुम्हारे पापों को नज़रअंदाज कर देगा। वह, वस्तुतः, सर्वमहिमावान है, सर्वकृपालु। इस तरह परमेश्वर तुम्हें अपने उद्देश्य के बारे में सूचित करता है ताकि तुम कदाचित उसके समक्ष अभिमान से न फूल उठो जिसके माध्यम से अनन्त काल से प्रकटित हर वस्तु को सत्यापित किया गया है। प्रसन्न है वह जो इस ‘परमोच्च विचारदृष्टि’ को प्राप्त करता है और अफसोस है उस पर जो इससे विमुख होता है!

86. न जाने कितने हैं ऐसे लोग जिन्होंने ईश्वर के पथ पर अपनी समस्त सम्पदा व्यय कर डाली है और जिन्हें हमने उस प्रभु रूप के प्रकटीकरण की बेला में दुष्टता और विद्रोह से भरा पाया है! न जाने कितने हैं ऐसे लोग जो दिन में उपवास रखते हैं - वो भी उसके प्रति विरोध जताते है जिसकी आज्ञा मात्र से पहली बार उपवास का विधान रचा गया था। ऐसे लोग वास्तव में अज्ञानी हैं। और न जाने कितने ऐसे लोग हैं जो रूखी-सुखी रोटी खाकर गुजारा करते और घास-फूस पर विराजते हैं और जो हर तरह की कठिन तपस्या करते हैं, सिर्फ इसलिए कि लोगों के बीच अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर सकें! इस तरह हम उनकी करनी का पर्दाफाश करते हैं ताकि दूसरे लोग इससे सबक सीख सकें। ये ऐसे लोग हैं जो अपनी शोहरत कायम रखने के लिए, दूसरे लोगों के समक्ष स्वयं को हर प्रकार की कठोरता का पात्र बनाते हैं, जबकि हकीकत यह है कि आकाश और धरती के निवासियों के अभिशापों के सिवा उनका कहीं कोई उल्लेख नहीं बचेगा।

87. सुनो: जैसाकि तुम्हारे मंसूबे हैं, यदि तुम्हारा नाम बचा भी रहे तो उससे तुझे लाभ क्या होगा? नहीं, सभी लोकों के प्रभु की सौगन्ध! क्या ‘उज्जा’ की प्रतिमा इससे जरा भी महान बन सकी कि नामों की उपासना करने वालों के बीच उसका नाम जीवित रहा ? नहीं, उसकी सौगन्ध जो सर्वमहिमामय, सर्वबाध्यकारी ईश्वर का आत्मरूप है! यदि तुम्हारे नाम की स्मृति हर नश्वर मन-मस्तिष्क से मिट जाए लेकिन यदि ईश्वर तुमसे प्रसन्न रहें तो वस्तुतः तुम्हारी गणना उसके नामालंकरणों के परम निगूढ़ खजाने में की जाएगी। इस तरह हमने अपने श्लोकों को प्रकट किया है ताकि वे तुम्हें सभी ‘प्रकाशों के स्रोत’ तक ले जा सकें, और तुम्हें अपने सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ प्रभु के उद्देश्य से परिचित करा सकें। अतः उन सब बातों से परहेज करो जिसके लिए ग्रंथ में तुम्हें निषेध किया गया है और तुम्हारे जीवन-यापन के लिए ईश्वर ने जिन विधि-सम्मत आहारों की व्यवस्था की है, उन्हें ग्रहण करो। स्वयं को उस ईश्वर के शुभ पदार्थों से वंचित मत करो क्योंकि वह वास्तव में अत्यंत उदार है, अपार करुणा का स्वामी। स्वयं पर अत्यधिक कठोरताएँ न लादो बल्कि उस मार्ग का अनुसरण करो जिसे हमने अपने ज्योतिर्मय श्लोकों और स्पष्ट प्रमाणों के माध्यम से तुम्हारे लिए सरल बनाया है।

88. हे धर्मगुरुओं के समुदाय! यदि तुम मदिरा के सेवन अथवा ऐसे ही अन्य अतिक्रमणों से परहेज करो जिनके लिए धर्मग्रंथ में तुम्हें मना किया गया है तो इसके लिए तुम्हें शेखी बघारने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यदि तुम ऐसे कार्य करोगे तो फिर लोगों की निगाह में तुम्हारे पद की गरिमा ही धूमिल होगी, तुम्हारे ही कार्य बाधित होंगे और तुम्हारा नाम बदनाम होगा। नहीं, बल्कि तुम्हारी सच्ची और स्थायी गरिमा उसकी वाणी के प्रति समर्पित हो जाने में है जो अनन्त सत्य है, तथा सर्वबाध्यकारी, सर्वशक्तिमान ईश्वर के सिवा अन्य सब के प्रति अन्दर और बाहर से अनासक्त हो जाने में है। महान है उस धर्मगुरु की पावनता जिसने अपने ज्ञान को स्वयं तथा उसके बीच जो समस्त ज्ञान का स्रोत है, पर्दा नहीं बन जाने दिया है और जो उस ‘स्वयंजीवी’ के अवतरित होने पर दीप्तिमान मुखड़े के साथ उसकी ओर अभिमुख हुआ है। सचमुच उसी की गिनती ज्ञानियों में होती है। स्वर्ग के सहचर उसकी साँसों की कृपा तलाशते फिरते हैं, और उसका प्रदीप आकाश और धरती के सभी निवासियों पर अपनी प्रभा बिखेरता है। वास्तव में, उसकी गिनती ईश्वरीय अवतारों के उत्‍तराधिकारियों में की जाती है। जिस किसी ने उसे निहार लिया, उसने वस्तुतः उस एकमेव सत्य ईश्वर को देख लिया और जो कोई भी उसकी ओर उन्मुख हो गया वह सचमुच सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ परमात्मा की ओर मुड़ गया।

89. हे तुम ज्ञान के उदय-स्थलों! सावधान कि तुम कहीं स्वयं को बदल न जाने दो, क्योंकि यदि तुम बदल गए तो उसी तरह अधिकांश लोग भी बदल जाएँगे। यह वास्तव में तुम पर तथा अन्य लोगों पर अन्याय है। बोध और अंतर्विवेक से सम्पन्न हर व्यक्ति इसका साक्षी है। तुम एक फव्वारे की तरह हो। यदि फव्वारा ही बदल गया तो उससे फूटने वाले स्रोत भी परिवर्तित हो जाएँगे। ईश्वर से डरो और ईश्वरीय लोगों में गिने जाओ। इसी तरह, यदि मनुष्य का हृदय भ्रष्ट हो जाए तो उसके अंग-प्रत्यंग विदूषित हो जाएँगे। और फिर इसी रीति से, यदि किसी पेड़ की जड़ ही सड़ जाए तो फिर उसकी शाखाएँ और टहनियाँ, फल और पत्तियाँ भी सड़ जाएँगी। इस तरह हमने तुम्हारे निर्देश के लिए उपमाओं की रचना की है ताकि तुम कदाचित अपनी भौतिक सम्पदाओं के कारण उसे प्राप्त करने से वंचित न हो जाओ जिसे उस सर्वमहिमामय, परम कृपालु परमेश्वर ने तुम्हारे लिए निर्दिष्ट किया है।

90. यह वास्तव में हमारी सामर्थ्‍य के अन्दर है कि हम एक मुट्ठी धूल लेकर उसे अपने नामालंकरणों के परिधान से सुसज्जित कर दें। लेकिन यह हमारी कृपा का संकेत होगा, न कि उस धूल में अंतर्निहित किसी योग्यता का सूचक। इस तरह वस्तुतः उसके द्वारा प्रकट किया गया है जो सार्वभौम प्रकटकर्ता है, सर्वज्ञ है। ‘काले पत्थर’ के बारे में विचार करो जिसे ईश्वर ने सबके उन्मुख होने के लिए आराधना का बिंदु बनाया है। क्या यह कृपा उसे उसकी अंतर्निहित श्रेष्ठता के कारण मिली है? नहीं, स्वयं मेरी सौगन्ध! अथवा क्या यह विशिष्टता उसके भीतर छिपी मूल्यवत्‍ता का परिणाम है? नहीं, मेरे अपने अस्तित्व की सौगन्ध, जिसके सार-तत्व को समझने में परम विवेकी, परम बोध-सम्पन्न लोग भी असफल रहे हैं।

91. और फिर, अक्सा की मस्जिद तथा अन्य स्थानों के बारे में विचार करो जिन्हें हमने हर भूमि, हर प्रदेश के लोगों के लिए अभयस्थल के रूप में निर्मित किया है। उन्हें जो सम्मान और विशिष्टता प्राप्त है वह किसी भी रूप में उनके अपने गुण के कारण नहीं है, बल्कि वह हमारे उन प्रकटावतारों के साथ सम्बंधित होने के कारण है जिन्हें हमने मानवजाति के बीच अपने प्राकट्य के दिवास्रोत नियुक्त किये है, काश कि तू इसे समझ पाता! इसमें एक ऐसा विवेक अंतर्निहित है जो ईश्वर के सिवा अन्य सब के लिए अबोधगम्य है। जिज्ञासा कर, ताकि वह भव्यतापूर्वक तुझे सरल रूप में अपना उद्देश्य बता सके। वस्तुतः, उसका ज्ञान सबको अपने दायरे में समेटने वाला है। हे लोगों! स्वयं को इस संसार और इसके मिथ्याभिमान से विरक्त कर लो, और ऐसे लोगों की पुकार न सुनो जिन्होंने ईश्वर में अविश्वास किया है और स्वयं को उसका भागीदार समझ रखा है। अपने सर्वदयालु स्वामी की प्रशंसा और उसके गुणगान के लिए वाणी के क्षितिज पर उदित हो। ईश्वर ने तुम्हारे लिए यही उद्देश्य नियत किया है, धन्य हैं वे जो यह समझते हैं।

 92. सुनो: हे लोगों! अपनी पातियों में हमने तुम्हें यह आदेश दिया है कि प्रतिज्ञापित अवतार के प्रकटीकरण की बेला में अपनी आत्मा को सभी नामों से परे, तथा आकाश में और धरती पर रचित हर वस्तु से पावन बनाने का जतन करो, ताकि उस आत्मा में उस सत्य के सूर्य की प्रभा फैल सके जो तुम्हारे सर्वशक्तिमान, परम महान परमेश्वर की इच्छा के क्षितिज पर चमकता है। और फिर हमने तुम्हें अपने हृदयों को सांसारिक लोगों के प्रति प्रेम या घृणा के लवलेश मात्र से मुक्त और पावन करने की आज्ञा दी है ताकि वे तुम्हें किसी मार्ग से विचलित और किसी अन्य मार्ग की ओर आकृष्ट न कर दें। वस्तुतः यह मेरे मांगलिक ग्रंथ में प्रदत्‍त सर्वाधिक महत्वपूर्ण परामर्शों में से एक है, क्योंकि जो कोई भी प्रेम या घृणा इन दोनों में से किसी भी भावना के प्रति आसक्त होगा वह हमारे धर्म को समुचित रूप से समझ पाने में बाधित हो जाएगा। हर न्यायनिष्ठ और बोध-सम्पन्न आत्मा इसकी साक्षी है।

 93. परन्तु तुमने ईश्वर की संविदा का भंजन कर दिया है, उसका प्रमाण भुला बैठे हो और अन्ततः तुमने उसी से मुँह फेर लिया जिसके प्राकट्य ने दिव्य एकता में आस्था रखने वाले हर सच्चे व्यक्ति की आँखों को चैन दिया है। अपनी दृष्टि पर पट्टी बने बैठे इन आवरणों को हटा तथा अवतारों और प्रभुदूतों के प्रमाणों पर जरा विचार कर, ताकि इस दिवस में जबकि प्रतिज्ञापित अवतार अपनी शक्तिमान सम्प्रभुता के साथ पदार्पण कर चुका है, तू कदाचित प्रभुधर्म को पहचान सके। ईश्वर से डर, और स्वयं को उससे दूर न कर जो ईश्वर के संकेतों का दिवास्रोत है। वास्तव में, इससे स्वयं तेरा ही भला होगा, क्योंकि जहाँ तक तुम्हारे प्रभु की बात है, तो वह, वस्तुतः, अपने सभी रचित जीवों के बिना भी रह सकता है। अनन्त काल से वह अकेला था, उसके सिवा अन्य कोई भी न था। वही है वह जिसके नाम पर दिव्य एकता की पताका दृश्य और अदृश्य लोकों के सिनाय पर्वत पर फहराई गई है और यह घोषणा की गई है कि मुझ अनुपम, भव्य, अतुलनीय के सिवा अन्य कोई परमात्मा नहीं है।

94. मगर फिर भी जरा यह देखो कि वे लोग जो उस परमेश्वर की आज्ञा और इच्छा की सृष्टि के सिवा और कुछ भी नहीं हैं, उसकी ओर से विमुख हो गए हैं और ईश्वर के सिवा उन्होंने किसी और को अपना प्रभु और स्वामी बना लिया है। सचमुच ये दिग्भ्रमित लोग हैं। उनके ओठों पर तो सदैव उस सर्वदयालु का नाम रहता है लेकिन जब वह सत्य की शक्ति के साथ सचमुच उनके समक्ष प्रकट हुआ तो वे उसीके खिलाफ युद्ध का बिगुल बजा बैठे। सचमुच, बड़ी दुर्दशा होगी उनकी जो उस परम पावन, सर्वज्ञ और सर्वप्रज्ञ परमात्मा की इच्छा के क्षितिज पर विश्व के जाज्वल्यमान नक्षत्र के जगमगाने पर भी अपने प्रभु की संविदा तोड़ बैठे। ईश्वर के नहीं तो और किसके खिलाफ खींची थीं उन्होंने ईर्ष्‍या और घृणा की तलवारें, मगर फिर भी वे समझते ही नहीं। मुझे लगता है कि वे अपनी स्वार्थपूर्ण इच्छाओं की कब्र में मृतप्राय पड़े हुए हैं, हालाँकि ईश्वरीय बयार सभी प्रदेशों से होकर बह चुकी है। वे सचमुच एक घने, भयावह आवरण में ढँके पड़े हैं। और यद्यपि ईश्वरीय श्लोक उन्हें बार-बार सुना दिए गए हैं मगर फिर भी वे हैं कि अपनी अहंकारपूर्ण उपेक्षा में ही निरत हैं। लगता है मानो उन्हें कोई बोध और ज्ञान ही नहीं, अथवा उन्होंने परम उदात्‍त, सर्वज्ञ ईश्वर की पुकार कभी सुनी ही नहीं।

95. सुनो: खेद है तुझपर! कैसे तुम अपने आप को धर्मानुयायी कह सकते हो जबकि तुम सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ परमेश्वर के ही श्लोकों से इन्कार करते हो? सुनो: हे लोगों! अपने मुखड़े अपने सर्वदयालु प्रभु की ओर कर लो। सावधान, कि कहीं तुम ‘बयान’ में प्रकटित बातों के सिवा अन्य किसी बात से बाधित न हो जाओ। वस्तुतः, यह मुझ सर्वशक्तिमान, परमोच्च प्रभु के नामोल्लेख के सिवा किसी अन्य उद्देश्य से प्रकटित नहीं किया गया था और मेरे सौन्दर्य के सिवा इसका अन्य कोई भी लक्ष्य नहीं था। यह समस्त संसार मेरे ही प्रमाणों से भरा है, बशर्ते कि तुम निष्पक्ष निर्णय करने वाले जनों में से हो।

96. तुम्हारे दावे के मुताबिक, यदि उस ‘आदिम बिन्दु’ का लक्ष्य मेरे सिवा कोई अन्य होता और यदि वे मेरी उपस्थिति में रहे होते तो, वास्तव में, वे स्वयं को मुझसे कदापि अलग नहीं होने देते, बल्कि हमारे इस युग में हम दोनों परस्पर साथ रहकर आनन्द पाते। वस्तुतः, मुझसे दूर रहने के कारण उन्होंने काफी आँसू बहाए थे। वे मुझसे पहले आए थे ताकि लोगों को मेरे साम्राज्य के पास बुला सकें, क्योंकि ‘पातियों’ में कुछ ऐसा ही अंकित था, काश कि तुम समझ पाते! काश सुनने में सक्षम ऐसे लोग मिल पाते जो ‘बयान’ में उनके इस विलाप के स्वर सुन पाते कि इन असावधान लोगों के कारण मुझ पर क्या विपदाएँ आ पड़ी थीं और फिर मुझसे उनके बिछोह के विलाप-स्वर और मुझ अनुपम तथा शक्तिमान के साथ एकाकार हो सकने की उनकी अभिलाषा भरे स्फुट क्रन्दन। सचमुच, इस क्षण में भी वे उन लोगों के बीच अपने परम प्रियतम को निहार रहे हैं जिन लोगों को उस ईश्वरावतार के युग के लिए रचा गया था, और उनके समक्ष स्वयं को नतमस्तक करने के लिए, और फिर भी जिन लोगों ने अपना दमन-चक्र चलाकर उन्हें इतनी यातनाएँ दीं कि उनका वर्णन करने में लेखनी भी असमर्थता व्यक्त करती है।

97. सुनो: हे लोगों! अपने पिछले प्रकटीकरण के दौरान हमने, वस्तुतः, इस अपरिमेय गरिमा के दृश्यस्थल, इस अकलुषित पावनता के आसन के निकट, तुम्हारा आह्वान किया था और तुम्हें ईश्वरीय युग के आगमन की घोषणा सुनाई थी। लेकिन जब उस महा-आवरण को छिन्न-भिन्न किया गया और वह ‘पुरातन सौन्दर्य’ ईश्वरीय निर्णय के बादल तले से तुम्हारे समक्ष प्रकट हुआ तो तुमने उसी को मानने से इन्कार कर दिया जिसमें पहले तुमने अपनी आस्था प्रकट की थी। दुर्भाग्य टूटे तुम पर, हे विश्वासघातियों के समुदाय! ईश्वर से डरो और अपनी धन-सम्पदा की खातिर सत्य की अवहेलना मत करो। जब सभी विभूषणों और नामालंकरणों के सम्राट की लेखनी के क्षितिज से दिव्य श्लोकों के नक्षत्र तुम पर अवतरित हों तो सभी लोकों के स्वामी अपने परमेश्वर के समक्ष दंडवत कर! क्योंकि स्तुति-भावना के साथ उस परमेश्वर के द्वार पर झुकना तुम्हारे लिए दोनों ही संसारों की आराधना से कहीं श्रेयस्कर है और उसके प्रकटीकरण के सामने स्वयं को समर्पित कर देना तुम्हारे लिए आकाश और धरती पर सृजित सभी वस्तुओं से भी बढ़कर लाभदायक है।

98. सुनो: हे लोगों! मैं तुम्हें ईश्वर के निमित्‍त ही चेतावनी देता हूँ, और मुझे तुमसे किसी पुरस्कार की आशा नहीं। मेरा पुरस्कार तो उस परमेश्वर के पास है जिसने मुझे अस्तित्व दिया है, जिसने सत्य की शक्ति से मेरा सृजन किया है, और अपने रचित जीवों के बीच मुझे अपने सुमिरन का स्रोत बनाया है। इस दिव्य और गौरवमय ‘दर्शन’ और उस ‘स्थल’ के अवलोकन हेतु शीघ्रता करो जिस पर ईश्वर ने अपना आसन स्थापित किया है। उन बातों के पीछे न भाग जिन्हें शैतान तुम्हारे दिलों में संकेतित करता है, क्योंकि वह वास्तव में तुम्हें तुम्हारी लालसाओं और लोलुप इच्छाओं की ओर दुष्प्रेरित करता है, और सबको अपने दायरे में समेटने वाले इस सर्वबाध्यकारी प्रभुधर्म द्वारा प्रशस्त किए गए सीधे मार्ग पर चलने से तुम्हें रोकता है।

99. सुनो: शैतान का प्राकट्य कुछ इस तरह हुआ है कि सृष्टि की आंखों ने ऐसा कभी देखा ही नहीं। और उसी तरह, उस सर्वदयामय परमेश्वर का ‘सौन्दर्य’ भी ऐसे अद्भुत अलंकरणों के साथ प्रकट कर दिया गया है जैसाकि अतीत में कभी देखा भी नहीं गया। उस सर्वदयामय का आह्वान सुना दिया गया है और उसके पीछे शैतान की ध्वनि भी गूंज उठी है। धन्य हैं वे जो ईश्वर की पुकार पर ध्यान देते हैं और परम पावन तथा आशीर्वादित ‘दर्शन’ के लिए जो उसके सिंहासन की ओर उन्मुख होते हैं। क्योंकि जो कोई भी अपने हृदय में मेरे सिवा किसी अन्य का प्रेम पालता है, भले ही वह राई मात्र ही क्यों न हो, वह मेरे साम्राज्य में कभीभी प्रवेश नहीं पा सकेगा। इसका साक्षी है वह जिससे ‘अस्तित्व की पुस्तक’ की भूमिका अलंकृत हुई है, काश कि तुम यह समझ पाते! सुनोः यह वह युग है जिसमें ईश्वर की सर्वाधिक महान कृपाएँ प्रकट कर दी गई हैं। जो कोई भी उच्च स्वर्गों और नीचे इस धरती के निवासी हैं, वे सब मेरे नाम का गुणगान करते हैं, और वे सब मेरी स्तुति करते हैं, काश कि तुम सुन पाते!

100. हे दिव्य प्रकटीकरण के मन्दिर! बजा दे तुरही मेरे नाम से! हे दिव्य रहस्यों के मन्दिर! अप्रतिबाधित प्रभु का शंखनाद कर। अरी स्वर्ग की सहचरी! अपनी अलका के कक्ष से जरा बाहर आकर दुनिया के लोगों के बीच उद्घोषित कर देः परमेश्वर की धर्म-परायणता की सौगन्ध! वह जो कि विश्व का परम प्रियतम है - वह जो कि सदैव हर बोध-सम्पन्न हृदय की अभिलाषा रहा है, जो आकाश और धरती के सभी निवासियों की आराधना का केन्द्र है, और जो पथदर्शक ध्रुवतारा है अतीत और वर्तमान की सभी पीढ़ियों का - वह पधार चुका है।

101. सावधान रह कि वह प्रकाशमय सौन्दर्य जब अपनी अपार सार्वभौम शक्ति और गरिमा के साथ प्रकट हो तो उसकी पहचान कर पाने में तू असमंजस में न पड़ जाए। वह, वस्तुतः, एकमेव सत्य परमेश्वर है और उसके सिवाय जो कुछ भी है वह उसके एक सेवक के समक्ष भी शून्य मात्र है, और जब उसे उस प्रभु के आभामंडल के समक्ष खड़ा किया जाएगा तो उसकी छवि शून्य में ही धूमिल हो जाएगी। अतः शीघ्रता कर और उसकी करुणा की जीवन्त जलधारा को प्राप्त कर और असावधान लोगों में से न बन। जो कोई रंचमात्र भी हिचक दिखाएगा, वस्तुतः, ईश्वर उसके सारे कृत्यों को निरर्थक कर देंगे और उसे परमात्मा के कोप का भागी बनना होगा। वास्तव में, जो असमंजस में पड़े हुए हैं, बड़ा दुःखपूर्ण हश्र है उनका।

102. **पोप पायस नवम्** हे पोप! सारे पर्दों को छिन्न-भिन्न कर दे। वह जो कि प्रभुओं का प्रभु है वह बादलों की छाँह में आया है और सर्वशक्तिमान, अप्रतिबाधित प्रभु का निर्णय फलीभूत हो चुका है। अपने प्रभु की शक्ति के बल से धुंधों का यह आवरण चीर डाल और उसके नामों और गुणों के साम्राज्य की ओर प्रयाण कर। इस तरह परमोच्च की लेखनी ने तुझे आदेशित किया है, तुम्हारे सर्वशक्तिमान, सर्वबाध्यकारी प्रभु की आज्ञा से। जैसे वह प्रथम बार अवतरित हुआ था वैसे ही पुनः अपने स्वर्ग से उसका पदार्पण हुआ है। सावधान कि कहीं तू उसके साथ वैसे ही विवाद न कर बैठे जैसे फारसियों ने स्पष्ट प्रमाणों के न होते हुए भी उसके साथ विवाद किया था। उसकी दाहिनी भुजा की ओर कृपा की जीवन्त जलधाराएँ बहती हैं, उसकी बाईं ओर न्याय की विशुद्ध मदिरा और उसके सामने उसके संकेतों की ध्वजाएँ फहराते हुए स्वर्ग के देवदूतों का प्रयाण होता है। सावधान कि कहीं कोई नाम तुझे स्वर्ग और धरती के सृजनहार परमेश्वर से बाधित न कर दे। संसार को त्याग और अपने प्रभु की ओर उन्मुख हो जिसके माध्यम से यह सारी धरती प्रकाशित की गई है।

103. हमने साम्राज्य को अपने सर्वगरिमामय नाम से सुसज्जित किया है। सभी वस्तुओं के रूप-रचयिता परमेश्वर ने ऐसा ही आदेश दिया है। सावधान रह कि जब तुम्हारे शक्तिमान, दयालु प्रभु की वाणी के क्षितिज पर निश्चय का सूर्य प्रदीप्त हो उठे तो तुम्हारी निरर्थक कल्पनाएँ कहीं बाधक न बन जाएँ। एक ओर जब वह प्रकटीकरण का सम्राट अत्यंत बियावान गृहों में निवास कर रहा हो तब भी तुम महलों में पड़े हो? त्याग दो उन महलों को उनके लिए जिन्हें उनकी कामना हो और आनन्द के साथ प्रभु साम्राज्य की ओर उन्मुख हो।

104. सुनो: हे धरती के जनों! शक्ति और आश्वस्ति के हाथों उपेक्षा के घरों को नष्ट कर डालो और अपने दिलों में सच्चे ज्ञान के महल खड़े करो, ताकि वह सर्वकृपालु उन पर अपने प्रकाश की दमक बिखेर सके। यह तुम्हारे लिए सूर्य से प्रकाशित किसी भी वस्तु से कहीं बेहतर है और इसका साक्षी है वह जिसके हाथों में है अन्तिम निर्णय की लगाम। अपनी परम गरिमा के साथ उस ‘सबकी अभिलाषा’ के प्राकट्य के साथ ही ईश्वरीय बयार पूरी दुनिया के ऊपर प्रवाहित कर दी गई है और एक-एक पत्थर, हर मिट्टी पुकार उठी है: ”प्रतिज्ञापित अवतार आ चुका है, साम्राज्य ईश्वर का है, जो शक्तिमान है, कृपालु है, क्षमाशील है।“

105. सावधान कि कहीं मानवीय ज्ञान तुझे उससे बाधित न कर दे जो समस्त ज्ञान का परम ध्येय है, अथवा कहीं यह संसार तुझे उसी के अभिज्ञान से वंचित न कर दे जिसने इसकी सृष्टि की है और इसे गतिमान बनाया है। धरती के लोगों के बीच अपने प्रभु, उस करुणामय परमात्मा के नाम से उठ खड़े हो और आत्मविश्वास के हाथों जीवन की प्याली थाम ले। पहले तू स्वयं उसका पान कर, फिर सभी धर्मों के ऐसे लोगों को प्रदान कर जो उसकी ओर उन्मुख होते हैं। इस तरह उदित हुआ है वाणी का चन्द्रमा विवेक और बोध के क्षितिज के ऊपर।

106. मानवीय ज्ञान के आवरणों को छिन्न-भिन्न कर दे ताकि वह तुझे कहीं उससे बाधित न कर दे जो मुझ स्वयंजीवी का नामालंकरण है। उनका स्मरण कर जो ईश्वर की चेतना थे और जब उनका पदार्पण हुआ तो स्वयं उन्हीं के देश के महान विद्वानों ने उनके खिलाफ अपना फैसला सुना दिया, लेकिन जो एक मामूली मछुआरा था उसने उनमें अपनी आस्था प्रकट की। अतः, हे बोध-सम्पन्न जनों! ध्यान दे, तू, वस्तुतः, ईश्वर के नामालंकरणों के स्वर्ग के अनगिनत सूर्यों में से एक है। अपनी रक्षा कर कि कहीं अंधकार तुझे अपने दायरे में न समेट ले और परमेश्वर के प्रकाश से तुझे विलग न कर दे। अतः, उस पर विचार कर जो कि तेरे सर्वशक्तिमान, सर्वकृपालु प्रभु द्वारा उसके ग्रंथ में प्रकटित है।

107. सुनो: हे धर्मगुरुओं के समुदाय! अपनी लेखनियों के स्पंदन को जरा विराम दो, क्योंकि ‘गरिमा की लेखनी’ की मुखर ध्वनि धरती और स्वर्ग के बीच गुंजरित कर दी गई है। तुम्हारे पास जो कुछ भी है उसका परित्याग कर दे और दृढ़तापूर्वक उसका दामन थाम जिसे हमने शक्ति और प्राधिकार के साथ तुम्हारे समक्ष प्रकट किया है। वह घड़ी आ गई है जो ईश्वर के ज्ञान की परिधि में निगूढ़ थी और जबकि धरती के सभी परमाणुओं ने यह घोषणा कर दी है: ”वह ‘दिवसाधिक प्राचीन’ अपनी परम गरिमा के साथ पधार चुका है! हे धरती के लोगों! विनम्र और पश्चाताप भरे हृदय से उसके पास पहुँचने की शीघ्रता कर।“ सुनो: सत्य ही, हमने तुम्हारे अपने जीवन के लिए स्वयं को न्योछावर कर दिया है, लेकिन, अफसोस! जब हम दोबारा आए तो हमने तुम्हें हमसे ही बचकर भागते देखा और यह देखकर मेरी स्निग्ध करुणा अपने इन जनों पर विलाप कर उठी। हे बोध-सम्पन्न जनों! ईश्वर से डरो।

108. उनके बारे में विचार करो जिन्होंने उस ‘सूर्य’ का विरोध किया, जब वह सम्प्रभुता और शक्ति के साथ उनके समक्ष प्रकट हुआ। न जाने कितने फारसी उसके दर्शन की प्रतीक्षा में थे और उससे वियोग के कारण विलाप कर रहे थे! किन्तु जब उन पर उसके पदार्पण की सुरभि बिखेरी गई, और उसका सौन्दर्य अनावृत किया गया, तो वे उससे विमुख हो गए और उससे विवाद कर बैठे। इस तरह, हम तुझे पवित्र पुस्तकों और ग्रन्थों में निहित बातें बता रहे हैं। सत्‍ता और शक्ति से हीन चन्द लोगों को छोड़कर कोई भी उसके मुखड़े की ओर उन्मुख नहीं हुआ। लेकिन फिर भी आज शक्ति और सम्प्रभुता से सम्पन्न हर व्यक्ति उसके नाम पर गौरवान्वित है! इसी तरह, यह विचार करो कि आज न जाने कितने साधु-संत हैं जो मेरे नाम से अपने गिरजाघरों में एकाकी जीवन बिता रहे हैं, लेकिन जब नियत घड़ी आई और हमने अपना सौन्दर्य प्रकट किया तो उन्होंने हमें पहचाना ही नहीं, हालाँकि सुबह-शाम वे मेरा ही नाम पुकारते रहे थे। हमने देखा कि वे मेरे नाम से चिपके थे और फिर भी मेरे ‘आत्म-रूप’ से ओझल। सचमुच, यह बड़ी विचित्र बात है।

109. सुनो: सावधान रहो कि तुम्हारी श्रद्धा-भक्ति कहीं तुम्हें उसी के पास पहुँचने से न रोक दे जो सभी श्रद्धाओं का केन्द्र है, अथवा तुम्हारी आराधना तुम्हें उससे न बाधित कर दे जो समस्त आराधना का ध्येय-बिन्दु है। अपनी कपोल कल्पनाओं के आवरणों को चीर डाल! वह जो इस संसार को नई स्फूर्ति से भरने और धरती के सभी निवासियों को एकजुट करने आया है, वह तुम्हारा प्रभु ही तो है - सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ। हे लोगों! प्रकटीकरण के दिवास्रोत की ओर उन्मुख हो और क्षण मात्र के लिए भी असमंजस में मत पड़ो। तुम ईशवाणी का पाठ करते हो और फिर भी सर्वगरिमामय प्रभु को मानने से इन्कार करते हो? हे विद्वानों! यह वास्तव में तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं है।

110. सुनो: यदि तुम इस प्रकटीकरण से इन्कार करते हो, तो किस प्रमाण के द्वारा तुमने ईश्वर में विश्वास किया है? उसे प्रस्तुत करो। इस प्रकार सर्वोच्च की लेखनी से तुम्हारे परम भव्य प्रभु के आदेश द्वारा इस पाती में जिसके क्षितिज से उसकी ज्योति प्रकाशित हुई है, तुम्हें ईश्वर का आह्वान सुना दिया गया है। न जाने कितने मेरे सेवक हैं जिनके कर्म स्वयं उनके और उनकी आत्माओं के बीच पर्दे बन गए हैं और जो उन पर्दों के कारण उस परमेश्वर के करीब आने से वंचित कर दिए गए हैं जिसके कारण पवन प्रवाहित हो रहे हैं।

111. हे संन्यासी समुदाय! सर्वकृपालु की सुरभि समस्त सृष्टि के ऊपर प्रवाहित कर दी गई है। धन्य है वह व्यक्ति जिसने अपनी अभिलाषाओं को त्याग दिया है और मार्गदर्शन का दामन कस कर पकड़ लिया है। वास्तव में, वह उन लोगों में से है जिन्होंने इस युग में प्रभु का सान्निध्य पा लिया है - वह युग जब धरती के निवासियों में खलबली मच गई है और सब के सब आतंकित हो उठे हैं - सिवाय उनके जिन्हें सबका दर्प-दलन करने वाले ईश्वर ने इस आतंक से मुक्त कर दिया है।

112. एक ओर जब अस्वीकार करने वाले लोगों की घृणा से ईश्वर का परिधान रक्तरंजित है तो तुम अपने शरीर के अलंकरण में तल्लीन हो? आ, अपने आवासों से बाहर निकल और लोगों को न्याय-दिवस के प्रभु उस परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करने का आह्वान कर। ईशपुत्र ने जिस ‘वाणी’ को निगूढ़ रखा था, उसे प्रकट कर दिया गया है। आज के युग में उसे मानव-स्वरूप रूपी मन्दिर बनाकर भेजा गया है। धन्य है वह स्वामी, वह परम पिता! वस्तुतः, अपनी परम महिमा के साथ राष्ट्रों के मध्य अवतरित हुआ है। हे सदाचारी गण! उसकी ओर उन्मुख हो।

113. हे सभी धर्मों के अनुयायियों! हम तुम्हें त्रुटियों के बियावान में विस्मृत भटकते देख रहे हैं। तुम इस महासागर की मछलियाँ हो। तो फिर तुम स्वयं को अपने ही जीवनदाता से क्यों कर दूर कर रहे हो? देखो, यह सिन्धु तुम्हारी आँखों के सामने लहरें मार रहा है। सब ओर से उसकी तरफ शीघ्रता से बढ़ चल। यह वह दिवस है जब ‘चट्टान’ भी चिल्ला कर पुकार रही है और यह कहते हुए अपने सर्वसम्पदामय, परमोच्च प्रभु का स्तुति-गान कर रही है कि ”देखो, पिता का आगमन हो चुका है, और प्रभु-साम्राज्य में तुम्हें जो वचन दिया गया था उसे पूरा कर दिया गया है!“ यह वह ‘शब्द’ है जिसे गरिमा के आवरणों के पीछे संरक्षित रखा गया था और जिसने, उस दिव्य वचन के पूरा होने पर, स्पष्ट संकेतों के साथ दिव्य इच्छा के क्षितिज से अपनी प्रभा बिखेरी।

114. मेरी देह ने कारागार का बंधन इसलिए स्वीकार किया कि तुम्हारी आत्माएँ दासता से मुक्त हो सकें, और हमने यह अधम स्थिति इसलिए अपनाई कि तू ऊपर उठ सके। महिमा और साम्राज्य के स्वामी का अनुगमन कर, न कि नास्तिक आततायियों का। मेरी देह उस सर्वकृपालु प्रभु के पथ पर सूली पर चढ़ने को ललक रही है और मेरा सिर बरछे से बिंध जाने के लिए लालायित है ताकि यह संसार अपने अतिक्रमण के पापों से मुक्ति पा सके। इस तरह प्रकाशित हुआ है दिव्य प्राधिकार का सूर्य उस प्रभु के प्राकट्य के क्षितिज से जो सभी नामों और अलंकरणों का स्वामी है।

115. कुरान के अनुगामी हमारे खिलाफ उठ खड़े हुए हैं, और उन्होंने हमें ऐसी यातनाएँ दी हैं कि पवित्र चेतना विलाप कर उठी है, और मेघ-गर्जना हो उठी है, तथा हमारे लिए बादलों का रुदन फूट पड़ा है। इन विश्वासघातियों में वह है जिसने यह मन्सूबा बना रखा है कि संकटों के कारण बहा को वह दायित्व निभाने से रोका जा सकेगा जो कि समस्त वस्तुओं के रचयिता ईश्वर ने उसके लिए उद्दिष्ट किया है। सुनो: नहीं, उसकी सौगन्ध जो मेघों के बरसने का कारण है! उसके प्रभु के स्मरण से उसे कुछ भी नहीं रोक सकता!

116. ईश्वर की धर्मपरायणता की कसम! यदि वे उसे महाद्वीप पर प्रज्वलित आग में भी फेंक दें तो भी वह निश्चित रूप से महासिंधु के बीचोंबीच से अपना सिर उठाकर यह घोषणा करेगा: ”प्रभु है वह उन सबका जो स्वर्ग में और धरती पर हैं!“ और यदि वे उसे किसी अंधेरे गह्वर में भी फेंक दें तो भी वे उसे धरती की उत्‍तुंग ऊँचाइयों पर विराजमान देखेंगे और वह उच्च स्वर से समस्त मानवजाति को यह आह्वान सुना रहा होगा: ”देखो, विश्व की अभिलाषा अपनी भव्यता, सम्प्रभुता और अपना अनुपम साम्राज्य लेकर पदार्पण कर चुकी है!“ और यदि उसे धरती की अतल गहराइयों में दफना दिया जाए तो भी स्वर्ग की उत्‍तुंगता की ओर उड़ान भरती हुई उसकी चेतना यह आह्वान गुंजरित करेगी: ”देखो उस गरिमा का आविर्भाव, निहारो उस परम पावन, भव्य, सर्वशक्तिमान परमात्मा का साम्राज्य!“ और यदि वे उसकी जान ले लेंगे तो उसके खून की हर बूंद पुकार उठेगी और उस नाम से ईश्वर का आह्वान कर उठेगी जिसके माध्यम से उसके परिधान की सुरभि हर दिशा में प्रवाहित की गई है।

117. अपने शत्रुओं की तलवारों से धमकाए जाने पर भी हम सभी मानवों को परमात्मा के निकट आने का आह्वान सुनाते हैं, वह जो कि स्वर्ग और धरती का रूप रचयिता है और हम उस परमेश्वर को ऐसी सहायता प्रदान करते हैं जिसे न तो अत्याचारियों की फौज द्वारा ही रोका जा सकता है और न ही गलत लोगों के वर्चस्व द्वारा ही। सुनो: हे धरती के लोगों! अपने प्रभु, उस सर्वमहिमामय, सर्वज्ञ के नाम पर अपनी कपोल कल्पनाओं की मूर्तियों को छिन्न-भिन्न कर दो और इस युग में जिसे ईश्वर ने युगों का अधिराज बनाया है उस प्रभु की ओर उन्मुख हो।

118. हे सर्वोच्च धर्मगुरु! जर्जर होती अस्थियों के रूप रचयिता के माध्यम से उस परम महान नाम द्वारा ध्वनित किए गए परामर्शों पर ध्यान दे। अपने सभी अलंकृत विभूषणों को बेच डाल और उन्हें उस ईश्वर के मार्ग पर व्यय कर दे जो रात के बाद दिन और दिन के बाद रात के चक्र का सर्जक है। अपने राज्य को राजाओं के लिए छोड़ दे और अपने मुखड़े को प्रभु-साम्राज्य की ओर किए हुए तथा समस्त विश्व के प्रति विरक्ति का भाव लिए हुए अपने प्रासाद से बाहर निकल और उसके बाद धरती और स्वर्ग के बीच अपने प्रभु की स्तुति का गान कर। तुम्हारे उस सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ प्रभु की ओर से ऐसा ही आदेश दिया है तुझे उसने जो सभी नामालंकरणों का स्वामी है। तुम सभी राजाओं को अपना आह्वान सुनाते हुए कहो: ”लोगों के साथ औचित्यपूर्ण व्यवहार करो। सावधान कि कहीं तुम ग्रन्थ में निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन न करना।“ यही तुम्हारे लिए उपयुक्त है। सावधान कि कहीं तुम सांसारिक वस्तुओं और धन-सम्पदाओं की लालसा में न डूब जाओ। उन चीजों को उन्हीं लोगों के लिए छोड़ दो जिन्हें उनकी कामना है और तुम उन बातों का दामन थामो जो तुम्हारे लिए उसके द्वारा आदेशित है जो प्रभु है इस सम्पूर्ण सृष्टि का। यदि कोई धरती का समस्त साम्राज्य भी तुम्हारे समक्ष समर्पित करे तो उस ओर देखने से भी मना कर दो। तू वैसा ही बन जैसाकि तुम्हारा स्वामी था। इस तरह प्रकटीकरण की वाणी ने वह कहा है जिसे ईश्वर ने सृष्टि की पुस्तक का अलंकरण बनाया है।

119. जरा मोती के बारे में विचार कर जो कि अपने ही अंतर्निहित स्वभाव से चमक बिखेरता है। यदि उसे रेशम से ढ़क दिया जाए तो उसकी प्रभा और सुन्दरता भी छिप जाएगी। इसी तरह, मनुष्य की विशिष्टता उसके आचरण की उत्कृष्टता में और उस वस्तु को आत्मार्पित करने में झलकती है जो उसकी महत्‍ता के अनुरूप है, न कि बचकानी बातों और आमोद-प्रमोद में। यह जान कि तेरा सच्चा आभूषण ईश्वर के प्रति प्रेम में और उस परमेश्वर के सिवा अन्य सबसे अनासक्ति में है, न कि उन विलासिताओं में जिन्हें तूने समेट रखा है। उन्हें उन्हीं लोगों के लिए त्याग दे जिन्हें उनकी तलाश है और तू ईश्वर की ओर अभिमुख हो, जिसने नदियों को उनका प्रवाह दिया है।

120. उस दिव्य ‘पुत्र’ की जिह्वा से जो कुछ भी निकला वह शिक्षाप्रद कहानियों (पैरेबुल्स) के रूप में प्रकट हुआ परन्तु आज के युग में जो सत्य की घोषणा करने अवतरित हुआ है वह उन कहानियों के बिना ही अपनी बात कहता है। सावधान रह कि कहीं तू व्यर्थ कल्पनाओं की डोर न पकड़े रह और उन चीजों से कहीं स्वयं को दूर न कर ले जो कि सर्वशक्तिमान, सर्वकृपालु परमेश्वर के साम्राज्य में निर्धारित की गई हैं। जब तुझे मेरे श्लोकों की मदिरा का नशा उन्मत्‍त कर दे और तू धरती तथा स्वर्ग के रचयिता अपने प्रभु के सिंहासन के समक्ष स्वयं को प्रस्तुत करने का इरादा कर ले तो मेरे प्रेम को ही अपना वस्त्र बना लेना, मेरे स्मरण को अपना रक्षा कवच और सर्वशक्तियों के उद्गाता ईश्वर पर निर्भरता को ही अपना पाथेय।

121. हे प्रभु-पुत्र के अनुयायी गण! हमने जॉन को एक बार फिर से तुम्हारे पास भेजा है और वह ‘बयान’ के बियावान में पुकार उठा है: हे दुनिया के लोगों। अपनी आँखों को पवित्र करो। वह दिवस जबकि तुम प्रतिज्ञापित अवतार को देख सकते हो और उसका सत्संग पा सकते हो, नजदीक आ गया है। हे ईशवाणी के अनुयायी! मार्ग तैयार करो! ’भव्य प्रभु’ के अवतरण का दिवस निकट आ चुका है! प्रभु-साम्राज्य में प्रवेश करने के लिए तैयार हो जा। ऊषा की लालिमा को प्रकट करने वाले परमेश्वर की ऐसी ही आज्ञा है।

122. अनन्तता का कपोत दिव्य कल्पतरु की टहनियों पर जो मधुर गायन कर रहा है उस पर ध्यान दोः हे धरती के लोगों! वह जिसका नाम जॉन था उसे हमने जल से तुम्हारा बपतिस्मा करने को भेजा था, ताकि तुम्हारे शरीर उस मसीहा के आगमन के लिए तैयार हो जाएँ। और अब उन दिनों के आगमन की प्रत्याशा में जबकि सर्वकरुणामय प्रभु ने अपनी स्नेहमयी कल्याण-भावना के हाथों तुम्हें जीवन रूपी जल से स्वच्छ करने का उद्देश्य रखा है, वह मसीहा तुम्हें प्रेम की अग्नि और चेतना के जल से पवित्र करता है। यही है वह ‘पिता’ जिसके बारे में इसाईया ने पहले बताया था और वह शांतिदाता जिसके बारे में दिव्य चेतना ने तुम्हारे साथ एक संविदा स्थापित की थी। हे बिशप समुदाय! अपनी दृष्टि जरा खोल तो लो, ताकि तुम अपने प्रभु को शक्ति और गरिमा के सिंहासन पर आसीन देख सको।

123. सुनो: हे सभी धर्मों के अनुयायीगण! उन लोगों के मार्गों का अनुगमन न करो जिन्होंने फारसियों का अनुसरण किया और स्वयं को दिव्य चेतना से ओझल कर लिया। वे सचमुच भटक गए हैं और भ्रमित हैं वे। वह पुरातन सौन्दर्य अपने परम महान नाम के साथ अवतरित हुआ है और वह समस्त मानवजाति को अपने पवित्रतम साम्राज्य के दायरे में लाना चाहता है। जो शुद्ध हृदय के लोग हैं वे उसके मुखड़े के समक्ष ईश्वरीय साम्राज्य को प्रकट देख रहे हैं। उस ओर बढ़ने की शीघ्रता कर तथा निष्ठाहीनों और नास्तिकों का अनुसरण न कर। यदि तुम्हारी आँखें उस साम्राज्य के दर्शन का विरोध करती हों तो उन्हें नोच कर फेंक दे। समस्त सृष्टि के स्वामी के आदेश से उस ‘दिवसाधिक प्राचीन’ की लेखनी ने ऐसा ही आदेशित किया है। हे धरती के लोगों! वस्तुतः, उसने पुनः अवतार लिया है ताकि तू अपने बन्धनों से मुक्त हो सके। क्या तुम उसी की जान लोगे जो तुम्हें अनन्त जीवन देने का अभिलाषी है? हे अंतर्दृष्टि सम्पन्न लोगों! ईश्वर से डरो।

124. हे लोगों! उस बात पर ध्यान दो जो तुम्हारे सर्वमहिमामय स्वामी द्वारा प्रकट की गई है और अपने मुखड़ों को ईश्वर की ओर अभिमुख करो जो स्वामी है इस लोक और परलोक का। समस्त मानवजाति के रूप रचयिता के आदेशानुसार इस प्रकार आज्ञा देता है तुम्हें वह जो कि उदयस्थल है दिव्य-प्रेरणा के सूर्य का। हमने, वस्तुतः, तुम्हारा सृजन प्रकाश के लिए किया है, और हम तुम्हें आग में झोंक देना नहीं चाहते। हे लोगों! दिव्य नियति के क्षितिज पर भाः समान इस सूर्य की कृपा से अपने अंधेरों से बाहर निकले और पवित्र हृदयों तथा आश्वस्त आत्मा, दृष्टि-सम्पन्न नयनों और कांतिमान मुखमंडल के साथ उसकी ओर उन्मुख हो। अपनी परम भव्य महिमा के आसन से वह परम नियन्ता तुम्हें यही परामर्श देता है। कदाचित् उसके आह्वान से तू उसके नामालंकरणों के साम्राज्य के निकट आ सके।

125. धन्य है वह जो ईश्वर की संविदा के प्रति वफादार रहा है, और वज्रपात हो उस पर जिसने यह संविदा तोड़ी है और उसमें अविश्वास किया है जो ज्ञाता है रहस्यों का। सुनो: यह कृपा का दिवस है। अपने आप को आंदोलित करो ताकि मैं तुम्हें अपने साम्राज्य में सम्राट बना दूँ। यदि तुम मेरा अनुसरण करोगे तो तुम्हें वह देखने को मिलेगा जिसका तुम्हें वचन दिया गया था और मैं तुम्हें अपनी गरिमा की परिधि में अपना सखा और अपनी शक्ति के स्वर्ग में सदा-सदा के लिए अपने सौन्दर्य का अंतरंग मित्र बना दूँगा। यदि तुम मुझसे विद्रोह करोगे, तो मैं अपनी सौम्यता के कारण धैर्यपूर्वक उसे सहन करूँगा कि कदाचित तुम असावधानी की शैय्या से जाग उठोगे। इस तरह मेरी करुणा ने तुम्हें घेर रखा है। ईश्वर से डरो और उनके मार्गों पर न चलो जिन्होंने उस प्रभु से अपना मुखड़ा फेर लिया है, हालाँकि वे दिन-रात उसके नाम का आह्वान करते रहते हैं।

126. वस्तुतः, समाहरण का दिवस आ चला है, और हर वस्तु को एक-दूसरे से अलग किया जा चुका है। उसने उसका अलग से संग्रह कर दिया है जिसे उसने न्याय के पात्रों में चुना है, और जो वस्तुएँ उस योग्य हैं उन्हें आग में झोंक दिया गया है। इस प्रतिज्ञापित युग में तुम्हारे उस शक्तिमान, स्नेहिल प्रभु द्वारा ऐसा ही आदेशित किया गया है। वह, वास्तव में, जैसा चाहता है, करता है। उसके सिवा और कोई ईश्वर नहीं है - वह जो सर्वशक्तिमान, सर्ववशकारी है। उस ‘दिव्य विश्लेषक’ की इच्छा रही है मेरे स्वयं के लिए हर अच्छी वस्तु का संग्रह करना। तुम्हें मेरे धर्म से सुपरिचित कराने और उस ईश्वर के मार्ग की राह दिखाने के सिवा जिसके उल्लेख से सभी पवित्र ग्रंथ विभूषित हैं, उसने और कुछ भी नहीं कहा है।

127. हे ईसाई समुदाय! एक पिछले अवसर पर हमने स्वयं को तुम्हारे समक्ष प्रकट किया और तुमने मुझे पहचाना ही नहीं। और अब यह दूसरा अवसर तुम्हें प्रदान किया गया है। यह ईश्वर का दिवस है, उसकी ओर उन्मुख हो। वस्तुतः वह स्वर्ग से अवतरित हुआ है, जैसेकि वह पहली बार अवतरित हुआ था और वह तुझे अपनी करुणा की छाँव तले बसेरा देना चाहता है। वह वस्तुतः उदात्‍त है, शक्तिमान, परम सहायक। वह परम प्रियतम यह नहीं चाहता कि तुम अपनी कामनाओं की आग में ही स्वाहा हो जाओ। यदि तुम एक पर्दे की तरह उससे ओझल हो जाओ तो इसका कारण तुम्हारी अपनी पथभ्रष्टता और अज्ञान के सिवा और कुछ नहीं हो सकता। तुम मेरा उल्लेख भी करते हो और मुझे जानते भी नहीं। तुम मेरा आह्वान करते हो और मेरे ही प्रकटीकरण के प्रति असावधान हो - यह न समझते हुए कि मैं पूर्व-अस्तित्व के स्वर्ग से अपार गरिमा लेकर तुम्हारे समक्ष आया। मेरे नाम से और मेरी सम्प्रभुता की शक्ति से इन आवरणों को छिन्न-भिन्न कर दे ताकि तू अपने प्रभु की ओर ले जाने वाला पथ तलाश सके।

128. गरिमा का सम्राट महिमा और भव्यता के शिविर से अपना आह्वान सुनाते हुए कह रहा है: हे ईश्वरीय वाणी में विश्वास करने वाले जनों! जो लोग इस ‘साम्राज्य’ में नहीं थे उन्होंने अब इसमें प्रवेश किया है जबकि हम तुम्हें अभी भी इस युग में द्वार पर असमंजस में खड़े देख रहे हैं। अपने सर्वशक्तिमान, सर्वकरुणामय प्रभु की शक्ति से तू इन पर्दों को छिन्न-भिन्न कर डाल और फिर मेरे नाम से मेरे साम्राज्य में प्रवेश कर। वह जो तेरे लिए अनन्त जीवन चाहता है, तुम्हें इस तरह आदेशित करता है। उसकी शक्ति सचमुच हर वस्तु पर है। धन्य हैं वे जिन्होंने इस ‘प्रकाश’ को पहचान लिया है और जो शीघ्रता से इसकी ओर बढ़ चले हैं। सचमुच वे प्रभु-साम्राज्य में निवास करते हैं और ईश्वर के चुने हुए जनों के खान-पान का आस्वाद ग्रहण करते हैं।

129. हे प्रभु-साम्राज्य की सन्तानों! हम तुम्हें अंधकार में निमग्न देख रहे हैं। वस्तुतः, यह तुम्हें शोभा नहीं देता। क्या प्रकाश के सम्मुख तुम अपनी करनी के कारण भयभीत हो? अपने आप को उस प्रभु की ओर ले चलो। तुम्हारे सर्वमहिमामय प्रभु ने अपने चरणों से अपनी भूमियों को धन्य किया है। इस तरह हम तुम्हारे समक्ष उसके पथ को स्पष्ट और सरल बनाते हैं जिसके आगमन की पूर्व-घोषणा उस ‘ईश्वर की चेतना’ द्वारा की गई थी। मैं वस्तुतः उसकी साक्षी देता हूँ, ठीक वैसे ही जैसे उसने मेरी साक्षी दी थी। उसने सत्यतः यह कहा था कि ”तुम मेरे पीछे आओ और मैं तुम्हें लोगों को पकड़ने वाला मछुआरा बना दूँगा।“ परन्तु इस युग में हम यह कहते हैं कि ”मेरे पीछे आओ, ताकि हम तुम्हें लोगों को जीवन्तता से भर देने वाला बना सकें।“ इस तरह प्रकटीकरण की लेखनी द्वारा विधि-निर्णय अंकित किया गया है।

130. हे परमोच्च की लेखनी! इस आशीर्वादित और ज्योतिर्मय ग्रन्थ में तू अन्य राजाओं के स्मरण से स्फुरित हो ताकि कदाचित् वे असावधानी की शैय्या से उठ खड़े हों और ध्यान दें उस गायन पर जो कि दिव्य बुलबुल स्वर्गिक कल्पतरु की टहनियों पर गा रही है और इस परम विलक्षण तथा उदात्‍त प्रकटीकरण के युग में ईश्वर की ओर शीघ्रता से बढ़ चलें।

131. **नेपोलियन तृतीय** हे पेरिस के सम्राट! पुजारियों से कहो कि अब वे और अधिक घंटानाद न करें। एकमेव सत्य ईश्वर की सौगन्ध! उसके स्वरूप में जो कि महानतम नाम है, परम महान घड़ियाल प्रकट हो चुका है, और तुम्हारे परम उदात्‍त, महानतम प्रभु की इच्छा की उंगुलियाँ उस सर्वमहिमामय के नाम से अमरता के स्वर्ग में उसे बजा रही हैं। इस तरह तुम्हारे प्रभु के शक्ति-सम्बलित श्लोक तेरे पास भेजे जा चुके हैं ताकि इन दिनों में जबकि धरती की समस्त प्रजातियाँ विलाप कर उठी हैं और नगरों की आधारशिलाएँ काँप उठी हैं और धर्महीनता का गुबार हर किसी को ढक चुका है सिवाय उनके जिन्हें सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ ईश्वर ने अपनी कृपा से इससे उबार दिया है, तू धरती और स्वर्ग के रचयिता अपने परमेश्वर का स्मरण करने उठ खड़ा हो। सुनो: प्रकाश के बादलों तले उस ‘अप्रतिबाधित’ का पदार्पण हो चुका है ताकि वह अपने परम कृपालु नाम की मृदुल बयारों से इस विश्व को स्फूर्ति से भर सके और इसके सभी लोगों को स्वर्ग से प्रेषित इस स्वर्गिक ‘मेज’ के इर्द-गिर्द एकत्रित कर सके। सावधान, ईश्वर की कृपा भेजे जाने के बाद कहीं तू इससे इन्कार न कर बैठे। यह तुम्हारे लिए तुम्हारी समस्त सम्पत्तियों से श्रेयस्कर है, क्योंकि जो कुछ भी तेरे पास है वह तो नाशवान है जबकि जो ईश्वर के पास है वह सदा अक्षुण्ण रहेगा। सत्य ही, वह जैसा चाहता है वैसा ही आदेशित करता है। वस्तुतः, तुम्हारे प्रभु, उस करुणा के परमात्मा की ओर से क्षमा का मृदुल समीरण प्रवाहित किया जा चुका है। जो कोई उसकी ओर उन्मुख होगा वह अपने पापों, दुःखों और व्याधियों से मुक्त और पावन बना दिया जाएगा, और वज्र टूटे उस पर जो इससे विमुख है।

132. यदि तू समस्त सृजित वस्तुओं की ओर अपने कान लगा पाता तो तुम्हें यह सुनाई पड़ता: ”वह दिवसाधिक प्राचीन प्रभु अपनी परम महिमा के साथ पधार चुका है!“ हर वस्तु अपने प्रभु के गुणगान का उत्सव मना रही है। कुछ ने ईश्वर को जाना है और वे उसका स्मरण करते हैं जबकि कुछ ऐसे हैं जो उसका स्मरण करते हैं मगर उसे जानते नहीं। इस तरह अपनी एक सुस्पष्ट पाती में हमने अपना निर्णय अंकित किया है।

133. हे सम्राट! उस वाणी पर ध्यान दे जो अनन्त नगरी से बहुत दूर, इस पावन और हिम धवल स्थल पर खड़ा किए गए सिनाय पर्वत पर हरबहार ‘वृक्ष’ में प्रज्वलित अग्नि से पुकार रहा है: ”वस्तुतः, मुझ सदा-क्षमाशील, परम कृपालु परमेश्वर के सिवा अन्य कोई ईश्वर नही है!“ हमने सचमुच उसे भेजा है जिसे हमने पवित्र चेतना द्वारा सहायता प्रदान की थी, ताकि वह तेरे समक्ष इस प्रकाश की घोषणा कर सके जो तुम्हारे परम उदात्‍त, सर्वगरिमामय प्रभु की इच्छा के क्षितिज से जगमगाया है और जिसके संकेत पश्चिम में भी प्रकट हो चुके हैं। इस दिवस में तू अपने मुखड़े उसकी ओर कर जिसे ईश्वर ने अन्य सभी दिनों से अधिक उदात्‍त बनाया है और जिसमें सर्वकृपालु ईश्वर ने अपनी प्रखर महिमा की आभा उन सब पर बिखेरी है जो स्वर्ग में हैं और धरती पर। तू ईश्वर की सेवा करने और उसके धर्म की सहायता के लिए उठ खड़ा हो। वह वस्तुतः अपने दृश्य और अदृश्य देवदूतों की सहायता से तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हें उस सबका सम्राट बना देगा जहाँ सूर्य का उदय होता है। तुम्हारा प्रभु, वास्तव में, सर्वशक्तिमान, सर्वसामर्थ्‍यमय है।

134. परम कृपालु की बयारें सभी सृजित वस्तुओं के ऊपर प्रवाहित हो चुकी हैं। धन्य है वह व्यक्ति जिसने उनकी सुरभि को खोज लिया है और स्वस्थ हृदय के साथ उनकी ओर उन्मुख हो चुके हैं। अपने अस्तित्व के मन्दिर को मेरे नामालंकरण से विभूषित कर, अपनी वाणी को मेरे स्मरण से, और अपने हृदय को मुझ सर्वशक्तिमान मुझ परम महान के प्रेम से। हमने तुम्हारे लिए तुम्हारी सम्पदाओं और धरती के सभी खजानों से बढ़कर सिर्फ वही चाहा है जो तुम्हारे लिए बेहतर है। तुम्हारा स्वामी, वस्तुतः, ज्ञाता और सर्वसूचित है। मेरे सेवकों के बीच मेरे नाम से उठ खड़ा हो और कह दे: ”हे धरती के लोगों। तू स्वयं को उसकी ओर उन्मुख कर जो तेरी ओर उन्मुख हुआ है। वस्तुतः, वह तुम्हारे बीच ईश्वर का मुखड़ा, उसका प्रमाण है और तुम्हारे लिए उसका मार्गदर्शक दूत। वह तुम्हारे बीच ऐसे संकेतों के साथ प्रकट हुआ है जिन्हें और कोई भी प्रस्तुत नहीं कर सकता।“ ‘प्रज्वलित झाड़ी’ की ध्वनि विश्व के बीचोंबीच गूँजा दी गई है, और ‘पवित्र चेतना’ राष्ट्रों के बीच यह आह्वान सुना रही है: ”देखो, वह सबका ‘इष्ट’ अपने प्रकट साम्राज्य के साथ आ चुका है!“

135. हे सम्राट! ज्ञान रूपी स्वर्ग के सितारे टूट कर गिरे हैं, जो अपनी सम्पदाओं के माध्यम से मेरे धर्म के सत्य की स्थापना करना चाहते हैं और जो मेरे नाम से ईश्वर के नाम का उल्लेख करते हैं। और तिस पर भी जब मैं अपनी गरिमा के साथ उनके समक्ष आया तो वे विमुख हो गए। वे, वास्तव में, गिर चुके हैं। वास्तव में, यही है वह जिसके बारे में ‘ईश्वर की चेतना’ ने तब घोषित किया था जब वह अपने सत्य के साथ तुम्हारे समक्ष प्रकट हुआ था, वह प्रभु जिससे यहूदी सिद्धान्तकारों ने विवाद किया था और अंत में उन्होंने ऐसा कारनामा किया कि वह पावन चेतना विलाप कर उठी और ईश्वर के निकटस्थ जनों की आँखों से आँसू बह उठे। जरा विचार करो कि किस तरह एक पाखंडी ने जिसने सत्‍तर सालों तक ईश्वर की आराधना की थी उसने ईश्वर-पुत्र के अवतरित होने पर उसकी अवहेलना कर दी, जबकि एक-दूसरा जो कि व्याभिचारी रहा था प्रभु-साम्राज्य में प्रवेश पा गया। इस तरह, अनन्त सम्राट के आदेश से, उसकी ‘लेखनी’ तुम्हें चेतावनी देती है ताकि तू वह जान सके जो पूर्वकाल में घटित हो चुका है और इस युग में ऐसे लोगों में गिना जा सके जो सच्चे विश्वासी हैं।

136. सुनो! हे महन्तों! स्वयं को अपने मठों और गिरजाघरों में बन्द न कर। मेरी आज्ञा से तू बाहर आ और स्वयं को ऐसे कार्यों में लगा जिनसे तुझे और सबको लाभ हो। इस तरह आदेशित करता है तुझे वह जो ‘न्याय-दिवस का स्वामी’ है। बन्द करना है तो स्वयं को मेरे प्रेम के दुर्ग में बन्द कर। यही वास्तव में सच्ची एकान्तप्रियता है जो तेरे योग्य है, काश कि तुम जान पाते। जो स्वयं को अपने घर की चारदीवारी में कैद करता है वह मृतक समान है। मनुष्य के लिए शोभनीय यह है कि वह कुछ ऐसा झलकाए जिससे मानवजाति को लाभ मिले। जो कोई भी फल उत्पन्न नहीं करता वह आग में झोंके जाने योग्य है। इस तरह सावधान करता है तुम्हें तुम्हारा प्रभु। वह, वस्तुतः, शक्तिशाली और कृपालु है। तू विवाह कर, ताकि तेरे बाद अन्य कोई तेरी जगह उठ खड़ा हो सके। हमने, वस्तुतः, तुम्हें लम्पट प्रवृत्त्‍ि से बचने को कहा है, उससे नहीं जो वफादारी को बढ़ाने वाली बात है। क्या तुम अपनी प्रकृति के ही उकसावों में पड़े रहे और ईश्वर के नियमों से विमुख हो गए? ईश्वर से डरो और मूर्ख न बनो। मेरी धरती पर मनुष्य के सिवा और कौन मेरा स्मरण करेगा और मेरे नाम तथा गुण कैसे प्रकट होंगे? इस पर विचार करो और उन लोगों में से न बनो जिन्होंने स्वयं को मानो एक आवरण से उससे दूर कर रखा है और घोर निद्रा में निमग्न लोगों में शुमार हो गए हैं। छली-प्रपंची लोगों के कारनामों के कारण उसे, जिसने कोई विवाह नहीं किया था, रहने को कोई घर नहीं मिल सका और न अपना सिर टिकाने को कोई ठिकाना। वह ‘प्रभुदूत’ उन बातों में नहीं था जिसमें तुमने यकीन किया और जिसकी तुमने कल्पना की, बल्कि उन चीजों में था जो ‘हमारी’ थीं। याचना करो कि तुम्हें उसके उस महान पद से अवगत कराया जा सके जो धरती के सभी लोगों की कपोल कल्पनाओं से कहीं परे हैं। धन्य हैं वे जो समझते हैं।

137. हे सम्राट! हमने वे शब्द सुने जो तुमने युद्ध के बारे में लिए गए निर्णय के सम्बंध में रूस के ज़ार को अपने उत्‍तर के रूप में कहे थे। तुम्हारा स्वामी सचमुच सब कुछ जानने वाला है, सर्वसूचित है। तुमने कहा था: ”जब काले सागर में डुबो दिए गए अत्याचार-पीड़ितों के विलाप ने मुझे जगाया तो मैं अपनी शैय्या पर सोया पड़ा था।“ हमने तुम्हें यही कहते सुना था और मैं जो कह रहा हूँ, सचमुच, तुम्हारा प्रभु उसका साक्षी है। हम साक्षी हैं कि जिस बात से तुम जाग उठे थे वह उनका विलाप नहीं बल्कि स्वयं तेरी प्रबल इच्छाएँ थीं क्योंकि हमने तुम्हारी परीक्षा ली और तुझमें कमी देखी। मेरे शब्दों का अर्थ समझ और विवेकवान बन। हमारी इच्छा यह नहीं है कि हम तुम्हें निन्दा के शब्द सुनाएँ क्योंकि इस नश्वर जीवन में हमने तुम्हें इज्जत से नवाजा। वस्तुतः, हमने सौजन्यता को चुना है और इसे उन लोगों की सच्ची निशानी बनाया जो उस परमात्मा के निकट हैं। शिष्टाचार या सौजन्यता वास्तव में एक ऐसा परिधान है जो वृद्ध या युवा हर किसी के लिये उपयुक्त है। अतः धन्य है वह जो अपने अस्तित्व के मन्दिर को इससे सुशोभित करता है और ख़ेद है उस पर जो इस महान कृपा से वंचित है। यदि तुम अपने शब्दों के प्रति सच्ची निष्ठा रखते तो तुम ईश्वर के ग्रंथ को तब तिलांजलि नहीं देते जब उस सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ द्वारा वह तुम्हारे पास भेजा गया था। उसके माध्यम से हमने तुम्हें कसौटी पर कसा और पाया कि तुम वह नहीं हो जो होने का दावा करते हो। उठो और उनकी भरपाई करो जिन्हें पाने से तुम रह गए। बहुत ही जल्द यह दुनिया और तुम्हारी सारी सम्पदा नष्ट हो जाएगी और साम्राज्य रहेगा ईश्वर के पास जो तुम्हारा प्रभु है और तुम्हारे प्राचीन पूर्वजों का प्रभु। तुम्हारे लिए यह शोभा देता है कि अपनी इच्छाओं की कठपुतली बनकर काम न करो। इस ‘प्रवंचित’ की आहों से भय खाओ और उन लोगों से उसकी रक्षा करो जो अन्यायपूर्ण आचरण करते हैं।

138. जो कुछ तुमने किया है उसके कारण तुम्हारा साम्राज्य ऊहापोह की गर्त में डूब जाएगा और तुम्हारी करनी के दंडस्वरूप तुम्हारा राज्य तुम्हारे हाथों से खिसक जाएगा। तब तुम समझ पाओगे कि कैसे तुमने निरी भूल की है। यदि तुम इस धर्म की सहायता के लिए न उठ खड़े हुए और तुमने उसका अनुगमन न किया जो इस सीधे-सरल मार्ग पर ‘ईश्वर की चेतना’ है तो उस भूभाग के सभी लोगों में खलबली मच जाएगी। क्या तुम्हारी शान-ओ-शौकत ने तुम्हें घमंडी बना दिया है? मेरे जीवन की सौगन्ध! यदि तुमने इस दृढ़ रज्जु को नहीं थाम लिया तो यह टिकेगा नहीं, बल्कि शीघ्र चला जाएगा। हम पतन को बड़ी तेजी से तुम्हारी ओर बढ़ते देख रहे हैं और तुम असावधान पड़े हो। तुम जब गरिमा के आसन से आह्वान करती उसकी वाणी को सुन रहे हो तो तुम्हारे लिए शोभनीय है कि अपना सर्वस्व त्याग दो और यह पुकार उठो: ”ये रहा मैं, हे धरती और स्वर्ग की हर वस्तु के स्वामी!“

139. हे राजन्! जब बिछोह की बेला आई तो हम इराक में थे। इस्लाम के सम्राट के आदेश पर हमने इस दिशा में अपने कदम बढ़ाए। वहाँ पहुँचने पर दुष्ट लोगों के हाथों हमारे ऊपर वह आन पड़ा जिसका वर्णन दुनिया की पुस्तकें कभी भी पर्याप्त रूप से नहीं कर सकतीं। तभी तो स्वर्ग की सहचरियाँ और पावनता के अंतःपुरों के निवासी विलाप कर उठे, किन्तु फिर भी लोग हैं कि एक गहन आवरण में निमग्न पड़े हैं। सुनो: क्या तुम उससे इन्कार करते हो जो ईश्वर और उसके संकेतों के स्पष्ट प्रमाणों के साथ तुम्हारे समक्ष अवतरित हुआ है? ये बातें उसकी ओर से नहीं हैं। नहीं, बल्कि उनका प्रादुर्भाव उस परमात्मा से हुआ है जिसने उसे सृजित किया है, सत्य की शक्ति से उसे भेजा है और समस्त मानवजाति के लिए उसे अपना प्रदीप बनाया है।

140. दिन पर दिन, बल्कि यूँ कहें कि घड़ी-दर-घड़ी हमारी स्थिति गम्भीर होती चली गई और तब वे हमें हमारे कारागार से निकालकर घोर अन्याय के साथ महानतम कारागार में ले गए। और जब कोई उनसे यह पूछता है कि ”किस अपराध के लिए उन्हें कैद किया गया?“ तो वे जवाब देते: ”वस्तुतः, वे हमारे धर्म की जगह एक नए धर्म का बीजारोपण करना चाहते थे।“ यदि प्राचीन बातों को ही हम प्राथमिकता दिए रहते तो हमने ‘टोराह’ और ‘इवैंजेल’ में प्रकटित बातों को क्यों त्याग दिया? इसे स्पष्ट करो, ऐ लोगों! मेरे जीवन की सौगन्ध! इस युग में तुम्हारे बच निकलने के लिए कहीं कोई ठौर नहीं है। यदि यही मेरा अपराध है तो मुझसे पहले ईश्वर के दूत मुहम्मद और उनसे भी पहले वे जो ‘ईश्वर की चेतना’ थे यह अपराध कर चुके हैं और उनसे भी पहले उसने जिसने ईश्वर से वार्तालाप किया था। और यदि मेरा अपराध यह है कि मैंने ईश्वर की वाणी का गौरव-गान किया है तो सचमुच मैं अधम पापियों में से हूँ! ऐसे पाप के बदले मुझे धरती और आकाश के साम्राज्य भी नहीं चाहिए।

141. इस कारागार में आने के बाद, हमने राजाओं के समक्ष उनके सर्वशक्तिमान, सर्व-प्रशंसित ईश्वर का संदेश रखने का निश्चय किया। हालाँकि अपनी कई पातियों में हमने उनके समक्ष वह प्रकट कर दिया है जिसका आदेश हमें दिया गया था लेकिन ईश्वर की करुणा के प्रतीक स्वरूप हम एकबार पुनः यह काम कर रहे हैं। कदाचित वे उस ईश्वर को पहचान जाएँ जो अपनी स्पष्ट सम्प्रभुता के साथ बादलों की छाँह में प्रकट हुआ है।

142. एक ओर मेरी यातनाएँ बढ़ती गईं तो दूसरी ओर परमेश्वर और उसके धर्म के प्रति मेरा प्रेम भी कुछ इस कदर बढ़ता गया कि दिग्भ्रमित लोगों की ओर से बरपाए जाने वाले सारे संकट मुझे मेरे उद्देश्य से रोकने में असफल साबित हुए। यदि वे मुझे धरती की गहनतम कंदराओं में भी दफना दें तो भी वे मुझे बादलों पर सवार और शक्ति तथा सामर्थ्‍य के प्रभु परमेश्वर का नाम पुकारते हुए देखेंगे। मैंने स्वयं को ईश्वर के मार्ग पर उत्सर्ग कर दिया है और उसके प्रति अपने प्रेम में पगा हुआ और उसकी सद्कृपा के निमित्‍त मैं संकटों की अभिलाषा करता हूँ। इसके साक्षी हैं वे दुःख जो मैं भोग रहा हूँ, ऐसे दुःख जो कभी किसी मनुष्य ने नहीं भोगे हैं। मेरे सिर का एक-एक बाल पुकार कर वह कह रहा है जो कभी ‘प्रज्वलित झाड़ी’ ने सिनाय पर्वत पर उचारे थे, और मेरे शरीर की हर शिरा परमेश्वर का आह्वान करते हुए यह कह रही है - ”काश कि तेरे पथ पर मुझे काट डाला जाता ताकि यह संसार स्फूर्ति से भर उठता और इसके सब लोग एकता में बँध जाते।“ इस तरह आदेशित किया है उसने जो सर्वज्ञ, सर्वसूचित है।

143. तू यह सत्य जान कि तेरी प्रजा तेरे बीच ईश्वर की धरोहर हैं। अतः तू उनका वैसे ही ध्यान रख जैसे तू स्वयं अपना ध्यान रखता है। सावधान कि कहीं तुम भेड़ियों को बाड़े के गड़ेरिये न नियुक्त कर दो या कहीं तुम्हारे अहंकार और छल गरीबों और परित्यक्तों के पास जाने में बाधक न बन जाएँ। यदि तुम अपने सर्वकृपालु प्रभु की वाणी से रहस्यमय मदिरा का स्वाद चख पाते तो तुम वह सब कुछ त्याग देते और समस्त मानवजाति के समक्ष मेरे नाम का उद्घोष करते। अतः अनासक्ति के जल से अपनी आत्मा को स्वच्छ बना। वस्तुतः यह वह स्मरण है जो सृष्टि के क्षितिज पर जगमगाया है और जो तुम्हारी आत्मा को संसार के मैल से मुक्त करके पावन बना देगा। अपने महलों को कब्रों में सोए लोगों के लिए त्याग दे और अपना साम्राज्य उनके लिए जो इसके अभिलाषी हैं और प्रभु-साम्राज्य की ओर उन्मुख हो। यही है वह जो ईश्वर ने तुम्हारे लिए चुना है बशर्ते कि तुम ईश्वर की ओर उन्मुख होने वालों में से होते। जो कोई भी इस प्रकटीकरण के युग में ईश्वर की मुख-मुद्रा की ओर उन्मुख होने से चूक गए हैं वे वस्तुतः जीवन से ही वंचित हैं। वे अपनी स्वार्थ भरी लालसाओं के मारे विचरने वाले लोगों में से हैं और वास्तव में उनकी गिनती मृतकों में की गई है। यदि तुम अपने साम्राज्य का भार ढोना ही चाहते हो तो प्रभुधर्म की सहायता के लिए यह भार ढोओ। धन्य है यह महान पद, इसे जिस किसी ने भी पा लिया है उसने वह समस्त शुभ पा लिया है जो उस सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ ईश्वर से उत्पन्न है।

144. मेरे नाम पर तुम त्याग के क्षितिज पर उठ खड़े हो और शक्ति तथा सामर्थ्‍य के स्वामी, अपने प्रभु के नाम पर अपने मुखड़े परमात्मा के साम्राज्य की ओर कर लो। मेरी सम्प्रभुता की शक्ति के माध्यम से दुनिया के निवासियों के समक्ष उठ खड़े हो और यह बोल: ”हे लोगों! वह दिवस आ चुका है और परमात्मा की सुरभि सम्पूर्ण सृष्टि पर प्रवाहित कर दी गई है। जो लोग उसके मुखड़े से विमुख हो गए हैं वे अपनी भ्रष्ट अभिरुचियों के लाचार शिकार बनकर रह गए हैं। वे सचमुच उन लोगों में से हैं जो अपने पथ से भटक गए हैं।’’

145. अपनी साम्राज्य रूपी काया को मेरे नाम के परिधान से सुशोभित कर और तब मेरे धर्म की शिक्षा देने उठ खड़े हो। यह तुम्हारे लिए तुम्हारी समस्त सम्पदाओं से भी श्रेयस्कर है। उसके माध्यम से ईश्वर सभी सम्राटों के बीच तेरे नाम को गौरव प्रदान करेंगे। उसकी शक्ति सभी वस्तुओं पर है। ईश्वर के नाम पर और उसकी शक्ति के बल पर लोगों के बीच विचरण करो ताकि धरती के लोगों के बीच तुम उस प्रभु के संकेतों को झलका सको। इस अमर्त्‍य अग्नि की लौ के साथ प्रखर होकर जलो जिसे सर्वकरुणामय ईश्वर ने सृष्टि के मध्य में सुलगाई है, ताकि तुम्हारे माध्यम से उसके प्रेम की ताप उसके कृपा-प्राप्त जनों में संचारित हो सके। मेरे मार्ग का अनुगमन करो और लोगों के दिलों को मुझ सर्वशक्तिमान, परम उदात्‍त के नाम से आह्लादित कर दो।

146. सुनो: आज के युग में जिस किसी से भी उसके सर्वकरुणामय प्रभु के स्मरण की मधुर सुरभि का संचार न हो रहा हो वह वास्तव में मनुष्य का दर्ज़ा दिए जाने योग्य नहीं है। वह वस्तुतः ऐसे लोगों में से है जिसने अपनी निपट लालसाओं का अनुसरण किया है और बहुत ही जल्द वह स्वयं को घोर क्षति की स्थिति में पाएगा। क्या यह तेरे लिए शोभनीय है कि तू स्वयं को उससे सम्बंधित माने जो करुणा का परमात्मा है और फिर भी ऐसे कार्य करे जो शैतान ने किए हैं? नहीं, सौगन्ध उसकी सुन्दरता की जो सर्व-महिमावान है, काश कि तुम यह जान पाते। अपने हृदयों को इस संसार के प्रेम से मुक्त पावन कर ले, अपनी वाणी को निन्दा से और अपने अंगों को उन सबसे जो तुम्हें शक्तिमान, सर्व-प्रशंसित परमात्मा के पास आने से रोकता हो। सुनो: संसार से मतलब है उससे जो तुम्हें दिव्य प्रकटीकरण के उदयस्थल से दूर करता हो और तुम्हें उस ओर उन्मुख करता हो जो तुम्हारे लिए लाभदायक नहीं है। वस्तुतः, आज के युग में जो वस्तु तुम्हें ईश्वर से विमुख करती हो वह सारभूत रूप से सांसारिकता ही है। उससे बच और परम श्रेष्ठ दृष्टि के पास आ, इस प्रखर और भास्वर आसन के निकट। धन्य है वह व्यक्ति जो अपने और अपने परमात्मा के बीच किसी भी वस्तु को हस्तक्षेप नहीं करने देता। निस्संदेह, उसे कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकता यदि वह न्यायोचित रूप से इस संसार के लाभों को ग्रहण करे क्योंकि हमने ये सभी वस्तुएँ अपने ऐसे ही सेवकों के लिए रची हैं जो सचमुच ईश्वर में विश्वास करते हैं।

147. हे लोगों! यदि तुम्हारी कथनी ओर करनी में अन्तर हो तो तुझमें और उनमें भला क्या अन्तर होगा जो अपने प्रभु, परमात्मा, में अपनी आस्था प्रकट करते हैं और जब वह बादलों की छाँह में उनके पास आया तो उन्होंने उसे अस्वीकृत कर दिया और उस अतुल्य, सर्वदर्शी परमात्मा के समक्ष अहंकार से फूल उठे? हे लोगों! किसी का खून न बहाओ और न ही किसी के बारे में गलत निर्णय करो। इस तरह आदेश देता है तुझे वह जो सब कुछ जानने वाला है, जिसे हर बात की खबर है। जो कोई भी किसी सुव्यवस्थित भूभाग में अव्यवस्था फैलाते हैं वे सचमुच उन लोगों में से हैं जिन्होंने ‘ग्रंथ’ में निहित मर्यादाओं का उल्लंघन किया है। मर्यादा लाँघने वाले इन लोगों का हश्र बड़ा बुरा होगा।

148. ईश्वर ने हर किसी को यह कर्तव्‍य सौंपा है कि वे उसके धर्म की शिक्षाओं का प्रसार करें। जो कोई भी इस कर्तव्‍य को पूरा करने उठे, उसे चाहिए कि उसके संदेश की घोषणा करने से पहले वह स्वयं को उच्च और प्रशंसनीय चरित्र से विभूषित करे ताकि उसके शब्द ग्रहणशील लोगों के हृदयों को आकर्षित कर सकें। इसके बिना वह अपने श्रोताओं को प्रभावित करने की कदापि आशा नहीं कर सकता। इस तरह ईश्वर तुम्हें निर्देशित करता है। वह वास्तव में सदा क्षमाशील है, परम दयावान।

149. जो लोग दूसरों को न्यायनिष्ठ होने का उपदेश देते हैं और स्वयं अनुचित कार्य करते हैं, वे स्वर्गिक साम्राज्य के सहचरों तथा उनके द्वारा जो अपने सर्वशक्तिमान, उपकारी प्रभु की परिक्रमा करते हैं, अपने झूठी वाणी के कारण मिथ्याचारी घोषित किए जाते हैं। हे लोगों! ऐसे कृत्य न करो जो लोगों के बीच तुम्हारे तथा प्रभुधर्म के पावन नाम पर बट्टा लगाएँ। सावधान, तू उन चीजों के निकट न जा जिनसे तुम्हारा मनोमस्तिष्क घृणा करता है। ईश्वर से डरो और उन लोगों का अनुगमन न करो जो पथभ्रष्ट हो चुके हैं। अपने पड़ोसियों की सम्पदाओं के प्रति छलपूर्ण व्यवहार न करो। तुम धरती पर विश्वसनीय व्यक्ति बनो और परमात्मा ने कृपापूर्वक जो वस्तुएँ तुम्हें प्रदान की हैं उनसे गरीबों को वंचित न करो। वह, वस्तुतः, तुम्हें दोगुना लाभ प्रदान करेगा। वह सत्य ही सर्वकृपालु, परम उदार है।

150. सुनो: हमने यह नियत किया है कि हमारे धर्म का संदेश वाणी की शक्ति से दिया जाए। सावधान, तू किसी से व्यर्थ विवाद में न उलझे। जो कोई भी पूर्ण रूप से ईश्वर के निमित्‍त उसके धर्म का संदेश देने उठ खड़ा होगा, पावन चेतना उसे दृढ़ता प्रदान करेगी और उसे उन प्रेरणाओं से सम्पन्न करेगी जिनसे सम्पूर्ण विश्व का हृदय प्रकाशित हो सकेगा, तो फिर उन हृदयों का तो कहना ही क्या जिन्हें उस परमात्मा की तलाश है। हे बहा के जनों! लोगों के हृदय रूपी किलों पर विवेक और वाणी की तलवार से विजय प्राप्त करो। जो लोग अपनी लालसाओं की कठपुतली बनकर विवाद करते रहते हैं वे, सत्य ही, एक स्पष्ट आवरण में निमग्न पड़े हैं। सुनो: विवेक की तलवार ग्रीष्म की ताप से भी ज्यादा गर्म है और इस्पात की ब्लेड से भी ज्यादा धारदार, काश कि तुम समझ पाते। मेरे नाम से और मेरी सामर्थ्‍य के बल पर यह तलवार बाहर निकाल और इससे उन लोगों के हृदय रूपी नगरों को जीत जिन्होंने स्वयं को अपनी भ्रष्ट इच्छाओं के किले में कैद कर रखा है। दिग्भ्रमित जनों की तलवारों के तले आसीन उस सर्व-गरिमामय की लेखनी तुझे इस तरह आदेश देती है।

151. यदि तुम किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किए गए पापपूर्ण आचरण के बारे में जान जाओ तो उसे छुपा लो ताकि ईश्वर भी तुम्हारे पाप को छुपा लें। वह सचमुच छुपाने वाला है, अपार कृपा का स्वामी। हे धरती के धनवानों! यदि तुझे कोई गरीब मिले तो उससे घृणा का व्यवहार न कर। इस पर विचार कर कि तू स्वयं कैसे उत्पन्न हुआ? तुझमें हर एक की रचना एक अधम कीट से की गई है। तेरे योग्य यह है कि तू सत्य का पालन कर जिससे तुम्हारे अस्तित्व रूपी मन्दिर को सुशोभित बनाया जा सके, तुम्हारा नाम गौरवान्वित किया जा सके, लोगों के बीच तुम्हारा रूतबा ऊँचा उठाया जा सके और परमात्मा के सम्मुख तुम्हारे लिए पर्याप्त पुरस्कार सुनिश्चित किया जा सके।

152. हे धरती के जनों, सर्व राष्ट्रों के प्रभु की लेखनी द्वारा तुम्हें जो आदेश दिया जाता है उस पर ध्यान दो। तू यह निश्चित जान कि इस महानतम महासागर से निकले हुए विधान में अतीत के धर्मयुगों ने अपना उच्चतम और चरम प्रतिफल पा लिया है। हमारी आज्ञा से तू उसकी ओर शीघ्रता से बढ़। हम, वस्तुतः, जैसा चाहते हैं, वैसा निर्धारित करते हैं। इस संसार को तू विभिन्न व्याधियों से ग्रस्त एक मानव-शरीर की तरह समझ जिसका आरोग्य इस शरीर के सभी घटक तत्वों के आपसी तालमेल के साथ काम करने पर निर्भर है। तू उसके चारों ओर एकत्रित हो जिसकी हमने प्रस्तावना की है और विवाद उत्पन्न करने वालों का अनुगमन न कर।

153. सभी सहभोजों की चरम परिणति दो महानतम उत्सवों तथा उन दो अन्य उत्सवों में हो गई है जो युग्म दिवसों में पड़ते हैं। इनमें से पहले महानतम उत्सव के अंतर्गत वे दिन शामिल हैं जबकि परमात्मा ने धरती और स्वर्ग में सभी निवासियों के ऊपर अपने उत्कृष्ट नामालंकरणों की प्रखर गरिमा बिखेरी है, और दूसरा वह दिन जब हमने उसे उत्पन्न किया जिसने लोगों के समक्ष इस महानतम घोषणा के समाचार घोषित किए। वह जो कि सामर्थ्‍यवान और शक्तिमान है, उसके ग्रंथ में यही विहित किया गया है। इन चार चरम दिनों के अलावा अन्य दिनों में स्वयं को अपने दैनिक कार्य-व्यवसाय में व्यस्त रख और स्वयं को अपने शिल्प और व्यापार में निरत रहने से न रोक। इस तरह आदेश जारी कर दिया गया है और नियम प्रकट हो चुका है, उससे जो तुम्हारा स्वामी है, सर्वज्ञ और सर्वप्रज्ञ।

154. सुनो: हे पुरोहित और संन्यासी समुदाय! ईश्वर ने जो कुछ भी तुम्हारे निमित्‍त विधि-सम्मत बनाया है उसे खाओ-पियो और मांस से परहेज न करो। एक संक्षिप्त अवधि के सिवा ईश्वर ने, अपनी कृपा के संकेत-स्वरूप, तुम्हें उसे ग्रहण करने की आज्ञा दी है। वह, सत्य ही, सामर्थ्‍यवान है, दयालु है। तू वह सब कुछ त्याग दे जो तुम्हारे अधिकार में है और उसका दामन थाम जिसे ईश्वर ने उद्दिष्ट किया है। यही है वह जो तेरे लिए लाभदायक होगा बशर्ते कि तू उनमें से हो जो समझते हैं। हमने एक अत्यंत संतुलित मौसम में उन्नीस दिनों के लिए उपवास की एक अवधि निर्धारित की है और इस प्रदीप्त एवं प्रकाशित धर्मयुग में इससे अधिक उपवास से मुक्त किया है। इस तरह हमने तुम्हारे समक्ष वह निरूपित तथा स्पष्ट किया है जिसका पालन करने की तुझे आज्ञा दी गई है, ताकि तुम ईश्वर की आज्ञाओं का अनुसरण कर सको और उस सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ ईश्वर ने तुम्हारे लिए जो निर्धारित किया है तू उसमें एकता के साथ रह सके। वह जो कि तुम्हारा प्रभु, सर्वदयालु है, उसके हृदय की चिर अभिलाषा यही है कि वह सम्पूर्ण मानवजाति को एक आत्मा और एक शरीर के रूप में देख सके। इस युग में, जो कि सृष्टि के अन्य सभी युगों से श्रेयस्कर है, ईश्वर की कृपा और करुणा में से अपना अंश ग्रहण करने के लिए शीघ्रता कर। उस व्यक्ति को मिलने वाला आनन्द कितना महान होगा जो ईश्वरीय सम्पदाओं को प्राप्त करने की अभिलाषा में अपना सर्वस्व त्याग देता है। मैं साक्षी देता हूँ कि ऐसा मनुष्य ईश्वर के आशीर्वादित जनों में से है।

155. हे राजा! तू उसका साक्षी बन जिसका साक्षी ईश्वर स्वयं और स्वयं के निमित्‍त स्वर्ग और धरती की सृष्टि से पूर्व रह चुका है कि मुझ एक और एकमेव, परम उदात्‍त, अतुलनीय अगम्य के सिवा और कोई ईश्वर नहीं है। अपने सर्वगरिमावान प्रभु के धर्म के लिए अत्यंत दृढ़ता के साथ उठ खड़े हो। इस विलक्षण पाती में तुम्हें इस तरह आदेश दिया गया है। हमने वस्तुतः धरती की सभी वस्तुओं की तुलना में सिर्फ वही चाहा है जो तुम्हारे लिए श्रेयस्कर है। इसकी साक्षी हैं सृष्टि की सारी वस्तुएँ और उनसे भी बढ़कर यह सुस्पष्ट ग्रंथ।

156. संसार और इसके लोगों की दशा पर विचार कर। वह जिसके निमित्‍त इस संसार को अस्तित्व प्रदान किया गया उसे दुष्ट जनों के कारनामों के कारण घोर एकान्त नगरी (अक्का) में बन्दी बनाकर रखा गया है। अपनी उस कारानगरी के क्षितिज से वह उदात्‍त और महान परमात्मा के दिवास्रोत की ओर मानवजाति का आह्वान करता है। तू अपने खजानों के दम्भ में चूर है, यह जानते हुए भी कि वे नाशवान हैं। तू इस बात से मगन है कि धरती के एक टुकड़े पर तेरा राज है जबकि बहा के जनों की दृष्टि में इस सारी दुनिया का मूल्य एक मरी हुई चींटी की आँख की पुतली से बढ़कर कुछ नहीं है! तू इसे उन्हीं लोगों के लिए त्याग दे जिन्होंने अपना मोह उस पर टिका रखा है और तू स्वयं उसकी ओर उन्मुख हो जो इस लोक की कामना है। कहाँ गए वे अभिमानी लोग और उनके राजमहल? जरा तू उनकी कब्रों में तो निहार ताकि उनके उदाहरण से तेरा कुछ भला हो सके क्योंकि इसे हमने हर देखने वाले के लिए एक सबक निर्धारित किया है। यदि इस प्रकटीकरण की मृदुल बयारें तुझे वशीभूत कर पातीं तो तू इस संसार को त्याग कर प्रभु-साम्राज्य की ओर उन्मुख होता और अपनी सारी सम्पदा व्यय कर देता ताकि तू इस महान दृष्टि के करीब आ पाता।

157. हम आम मनुष्यों को नामों की उपासना में और अपने नामों को सनातन बनाए रखने मात्र की आशा में स्वयं को घोर संकटों में डालने की प्रवृत्ति में निरत देखते हैं जबकि हर समझदार व्यक्ति इस बात का गवाह है कि मृत्यु के बाद उसके नाम से कुछ भी नहीं होना है सिवाय इसके कि वह सर्वमहान, सर्व-प्रशंसित ईश्वर से सम्बंधित हो। इस तरह, उन्होंने अपने हाथों से जो कारनामे किए हैं उसके प्रतिशोध-स्वरूप उनकी कपोल-कल्पनाओं ने उन्हें अपने चंगुल में जकड़ रखा है। लोगों के मनो-मस्तिष्क की क्षुद्रता पर विचार करो। अपनी पूरी शक्ति से वे उसे पाने के लिए तत्पर होते हैं जिससे उन्हें कोई लाभ नहीं मिलने वाला, और फिर भी यदि तुम उनसे यह पूछते कि ”तुम्हारी अभिलाषा से क्या कोई लाभ है?“ तो तुम उन्हें बिल्कुल निरुत्‍तर पाते। यदि कोई सही मस्तिष्क का व्यक्ति मिलता तो कहता: ”लोकों के प्रभु की सौगन्ध! नहीं, कोई लाभ नहीं।“ ऐसी ही स्थिति है लोगों की और उन चीजों की जो उनके अधिकार में हैं। उन्हें उनकी मूर्खता में निमग्न रहने दे और तू अपनी दृष्टि परमात्मा की ओर कर। वास्तव में यही तेरे लिए शोभनीय है। अतः, अपने प्रभु की सलाह पर ध्यान दे और कहः हे आकाश और धरती के सभी निवासियों के ईश्वर! गुणगान हो तेरा!

158. **ज़ार अलैक्जैंडर द्वितीय** हे रूस के ज़ार! परमेश्वर की वाणी पर ध्यान दे, वह जो कि परम सम्राट है, पवित्र है, और तू स्वर्ग की ओर उन्मुख हो - वह स्थल जहाँ वह रहता है जो परमोच्च स्वर्ग के सहचरों के बीच परमोत्कृष्ट नामालंकरणों का धारणकर्ता है और जिसे सृष्टि के साम्राज्य में परमात्मा के नाम से पुकारा जाता है, वह जो प्रकाशमय है, सर्वमहिमामय है। सावधान, कहीं तुम्हारी अभिलाषाएँ तुम्हें उस दयावान, अत्यंत करुणामय प्रभु की ओर उन्मुख होने से रोक न दें। हमने सचमुच यह सुना है कि तुम अपनी एकान्त प्रार्थना के क्षणों में किस वस्तु के लिए अपने प्रभु से याचना करते हो। तभी तो मेरी स्नेहमयी दया की मृदुल बयारें प्रवाहित हो उठीं और मेरी करुणा का सिन्धु उमड़ पड़ा और हमने वास्तव में तुझे उत्‍तर दिया। तुम्हारा ईश्वर वास्तव में सर्वज्ञ और सर्वप्रज्ञ है। जब मैं कारागार में जंजीरों और बेड़ियों में जकड़ा हुआ था तो तुम्हारे एक मंत्री ने मेरी सहायता की। ईश्वर ने तुम्हें किसलिए यह रुतबा प्रदान किया है इसे किसी भी व्यक्ति के ज्ञान से नहीं मापा जा सकता, सिवाय उस ईश्वर के ज्ञान से। सावधान कि कहीं तुम इस महान पद का विनिमय तुच्छ वस्तुओं से न कर लो। वस्तुतः. तुम्हारा प्रभु जैसा चाहता है वैसा करता है। ईश्वर जैसा चाहता है वैसा वह अस्वीकृत या अनुमोदित करता है, और सभी वस्तुओं का ज्ञान उसके पास एक संरक्षित पाती में निहित है।

159. सावधान कि कहीं तुम्हारी सम्प्रभुता तुम्हें उससे विरत न कर दे जो सर्वोच्च सम्प्रभु है। वह, वस्तुतः अपने साम्राज्य के साथ आया है और एक-एक कण यह पुकार उठा है: ”देखो, परम महिमा के साथ प्रभु का पदार्पण हुआ है!“ वह जो कि पिता है उसका आगमन हो चुका है और पवित्र घाटी में पुत्र यह वाणी गुंजार चुका है: ”यहाँ हूँ मैं, यहाँ हूँ मैं, हे प्रभु, मेरे परमेश्वर!“ और सिनाय पावन गृह की परिक्रमा कर रहा है और ज्वलंत झाड़ी उच्च स्वर से पुकार उठी है: “वह सर्वदयालु बादलों पर सवार होकर आ चला है! धन्य है वह जो उसके निकट पहुँचता है और ख़ेद है उन पर जो अत्यंत दूर हैं।“

160. इस सर्व-बाध्यकारी धर्म के नाम पर तू लोगों के बीच उठ खड़ा हो और फिर सभी राष्ट्रों को उदात्‍त और महान ईश्वर के पास आने का आह्वान कर। तुम उन लोगों में से न बनना जिसने ईश्वर के एक नाम से उसे पुकारा और जब वह प्रकट हुआ जो सभी नामों का ध्येय-बिंदु है तो उसने उसे मानने से इन्कार कर दिया, उससे विमुख हो गया और, अंत में, घोर अन्यायपूर्वक उसने उसे सजा सुना दी। विचार करो और उन दिनों को याद करो जब ईश्वर की चेतना का आविर्भाव हुआ था और हेरोड ने उसके खिलाफ अपना फैसला सुनाया था। लेकिन ईश्वर ने अपने अदृश्य सहचरों के माध्यम से उसे सहायता दी और अपने सत्य की शक्ति से उसकी रक्षा की। उसने अपने वचन के अनुसार उसे एक दूसरे भूभाग में भेज दिया। सत्य ही, वह जैसा चाहता है वैसा निर्धारित करता है। तुम्हारा प्रभु सत्य ही उसकी रक्षा करता है जिसकी रक्षा वह करना चाहता है चाहे वह समुद्र की लहरों के बीच ही क्यों न हो या फिर साँप के मुँह में, अथवा आततायी की तलवार के तले।

161. धन्य है वह राजा जिसे गरिमा के आवरणों ने सौन्दर्य के दिवानक्षत्र की ओर उन्मुख होने से नहीं रोका है और जिसने ईश्वर की सम्पदाओं को पाने की अभिलाषा में अपना सर्वस्व त्याग दिया है। वस्तुतः, वह ईश्वर की दृष्टि में उत्‍तम लोगों में गिना जाता है और उसकी प्रशंसा करते हैं स्वर्ग के अंतरंग सहचर तथा वे सब जो सुबहो-शाम सर्वोच्‍च स्थित सिंहासन की परिक्रमा करते हैं।

162. मैं पुनः कहता हूँ: मेरे कारागार से उठती मेरी पुकार पर ध्यान दो ताकि मैं तुझे उन चीजों से परिचित करा सकूँ जो मेरे सौन्दर्य पर आन पड़ी हैं और वो भी उन लोगों के हाथों जो मेरी ही महिमा के प्रकट स्वरूप हैं और तुम यह जान सको कि अपनी परम शक्ति के बावजूद मेरा धैर्य कितना महान था और अपनी अपार सामर्थ्‍य के बावजूद मैंने कितना कुछ झेला। मेरे जीवन की सौगन्ध! यदि तुम मेरी लेखनी से निस्सृत बातों को जान पाते और मेरे धर्म के खजानों तथा मेरे नामों के महासिंधु और मेरे शब्दों की मधुप्याली में निगूढ़ मेरे रहस्यों के मोती को ढूँढ़ पाते तो मेरे नाम के प्रति अपने प्रेम के वशीभूत, तथा मेरे भव्य और महान साम्राज्य के लिए अपनी उत्कट कामना से, मेरे पथ पर तुम अपना जीवन उत्सर्ग कर देते। तुम यह जान लो कि भले ही मेरा शरीर मेरे दुश्मनों की तलवारों के तले पड़ा हो और मेरे अंग-प्रत्यंग अनगिनत पीड़ाओं से आक्रान्त हों तो भी मेरी चेतना एक ऐसे आनन्द से भरी है जिसकी तुलना धरती के सभी आनन्द मिलकर भी नहीं कर सकते।

163. अपना हृदय उसकी ओर उन्मुख कर जो इस विश्व का आराध्य-बिंदु है और कह: ”हे धरती के लोगों! क्या तुमने उसी को मानने से इन्कार कर दिया है जिसके पथ पर वह जो तुम्हारे उदात्‍त और महान परमेश्वर की घोषणा लिए हुए सत्य के साथ आया था, शहीद हो गया?“ सुनो: यह वह घोषणा है जिससे अवतारों और संदेशवाहकों के हृदय आनन्दित हो उठे हैं। यही है वह जिसे विश्व का हृदय स्मरण करता है और जो ईश्वर के ग्रंथों में प्रतिज्ञापित है, वह जो कि सामर्थ्‍यवान है, सर्वप्रज्ञ है। मुझसे मिलन की अभिलाषा में अवतारों के हाथ उस शक्तिमान, गौरवमय परमात्मा की ओर ललक उठे थे। इसका साक्षी है वह जो कि पावन धर्मग्रंथों में उसके द्वारा प्रकटित है जो प्रभु है सामर्थ्‍य और शक्ति का।

164. कुछ ऐसे थे जो मुझसे बिछुड़कर विलाप कर उठे, औरों ने मेरे पथ पर कठिनाइयाँ झेलीं, तथा अन्य भी कुछ लोगों ने मेरे सौन्दर्य के निमित्‍त अपना जीवन न्योछावर कर दिया, काश कि तुम जान पाते। सुनो: सत्य ही मैंने स्वयं अपना गुणगान नहीं बल्कि ईश्वर का गुणगान करना चाहा है काश कि तुम निष्पक्ष न्याय कर पाते! मुझमें ईश्वर और उसके धर्म के सिवा और कुछ भी नहीं देखा जा सकता, काश कि तुम इसे समझ पाते! वह मैं ही हूँ जिसका गुणगान किया था इसाइया की वाणी ने, वह मैं ही हूँ जिसके नाम से ‘टोराह’ और ‘इवैंजेल’ दोनों सुशोभित हुए थे। इस तरह निर्णय दिया गया है प्रभु के धर्मग्रंथ में, जो परम कृपालु है। सत्य ही, वह मेरा साक्षी रहा है, जैसेकि मैं उसका साक्षी रहा हूँ। और मेरे शब्दों की सत्यता का साक्षी स्वयं परमात्मा है।

165. सुनो: ईश्वरीय ग्रंथों को मेरे स्मरण के सिवा अन्य किसी भी उद्देश्य से नहीं भेजा गया है। जो कोई भी उन ग्रन्थों के आह्वान के प्रति ग्रहणशील है वह उनसे मेरे नाम और मेरे गुणगान की मधुर सुरभि को पहचान लेगा, और जिसके अंतर्तम हृदय के कान अबाधित हैं उसे उनके प्रत्येक शब्द से यह सुनाई देगा: ”वह एकमेव सत्य आ चुका है! वह, वस्तुतः, सब लोकों का प्रियतम है।“

166. सिर्फ ईश्वर के निमित्‍त मेरी वाणी तुम्हें परामर्श देती है और मेरी लेखनी गतिशील होकर तेरा उल्लेख करती है, क्योंकि धरती के समस्त लोगों का द्वेष और अस्वीकार मेरी कोई हानि नहीं कर सकता और न ही सम्पूर्ण सृष्टि की निष्ठा से ही मुझे कोई लाभ होने वाला है। हम, वस्तुतः, तुम्हें उसी बात का उपदेश देते हैं जिसकी हमें आज्ञा दी गई है, और तुमसे इस बात के सिवा और कोई कामना नहीं करते कि तुम उन बातों को अपनाओ जिनसे इस लोक और परलोक दोनों में तुम्हें लाभ मिले। सुनो: क्या तुम उसे मार डालोगे जो अनन्त जीवन की ओर तुम्हारा आह्वान करता है? ईश्वर से डरो, और हर दुराग्रही अत्याचारी का अनुसरण न करो।

167. हे धरती के अभिमानियों! एक ओर जब प्रकटीकरण का सम्राट घोर एकाकी निवास-स्थलों में रह रहा हो तो क्या तुम महलों में रह पाने का विश्वास करते हो? नहीं, मेरे जीवन की सौगन्ध! तुम कब्रों में निवास कर रहे हो, काश कि तुम यह समझ पाते! वस्तुतः!, आज के दिनों में जो ईश्वर के समीरण से हिन्दोलित होने से चूक जाएगा वह सभी नामालंकरणों और गुणों के स्वामी परमात्मा की दृष्टि में मृतक ही माना जाएगा। अतः, उठो, स्वार्थ और लालसा की कब्रों से बाहर निकलो और उस परमात्मा के साम्राज्य की ओर उन्मुख हो जो आकाश और धरती के राज-सिंहासनों का स्वामी है, ताकि तुम वह निहार सको जिसके बारे में तुम्हारे सर्वज्ञ प्रभु ने तुम्हें वचन दिया था।

168. क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारी इन सम्पदाओं से तुम्हें कोई लाभ मिलेगा? बहुत ही जल्द वो दूसरों की हो जाएँगी और तुम खाक में मिल जाओगे। कोई भी तुम्हारा सहारा नहीं होगा। ऐसे जीवन से क्या फायदा जो मृत्यु का ग्रास बन सके, ऐसे अस्तित्व से क्या लाभ जो एकदिन मिट जाए, या ऐसी समृद्धि से जो परिवर्तनशील हो? अपने अधिकार की हर वस्तु त्याग दे और अपना मुखड़ा ईश्वर की उन कृपाओं की ओर उन्मुख कर जिन्हें इस विलक्षण नाम से भेजा गया है।

169. इस प्रकार, तुम्हारे सर्वगरिमामय प्रभु से अनुमति पाकर सर्वोच्‍च की लेखनी तुझे अपना कलरव गान सुना रही है। उन्हें सुनने और उनका पाठ करने के बाद तू यह बोल: ”गुणगान हो तेरा, हे सर्वलोकों के स्वामी! क्योंकि तूने उसकी वाणी के माध्यम से जो तुम्हारे ही आत्म का प्रकटावतार है, मेरा उल्लेख किया है, एक ऐसे समय में जबकि वह महानतम कारा में कैद था, ताकि यह सम्पूर्ण विश्व सच्ची स्वतंत्रता को प्राप्त कर सके।“

170. धन्य है वह राजा जिसकी सम्प्रभुता उसे अपने सार्वभौम स्वामी की ओर बढ़ने से नहीं रोक पाई है और जो अपने हृदय से परमात्मा की ओर उन्मुख हुआ है। वस्तुतः, उसकी गिनती ऐसे लोगों में की जाती है जिन्होंने शक्तिमान, सर्वप्रज्ञ ईश्वर द्वारा इच्छित वस्तु को पा लिया है। बहुत ही जल्द ऐसा व्यक्ति स्वयं को प्रभु-साम्राज्य के लोकों के सम्राटों में गिना जाता हुआ पाएगा। वस्तुतः, तुम्हारे प्रभु की शक्ति हर वस्तु पर है। वह जिसे जो चाहता है देता है और जिसे जिस चीज से चाहता है उससे वंचित रखता है। वह, वस्तुतः, सर्वशक्तिमान, सर्वसामर्थ्‍यमय है।

171. **महारानी विक्टोरिया** हे लन्दन की महारानी! समस्त मानवजाति के स्वामी, अपने प्रभु की पुकार पर ध्यान दे जो दिव्य कल्पतरु से तुम्हें यह आह्वान सुना रहा है: सत्य ही, मुझ सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ के सिवा और कोई परमात्मा नहीं है! इस धरती पर जो कुछ है वह सब त्याग दे और अपने साम्राज्य के मस्तक को अपने उस सर्वमहिमावान प्रभु के स्मरण रूपी मुकुट से सुशोभित कर। वस्तुतः, वह अपनी महान गरिमा के साथ इस संसार में आया है, और ईशवाणी ‘गॉस्पल’ में कही गई हर बात पूरी हो चुकी है। सीरिया की भूमि अपने प्रभु के पदचापों से सम्मानित की जा चुकी है - वह प्रभु जो कि सभी लोगों का स्वामी है - और उसकी उपस्थिति की मदिरा ने उत्‍तर और दक्षिण दोनों को मतवाला बना दिया है। धन्य है वह आदमी जिसने परम कृपालु की सुरभि ग्रहण की है, और जो इस ज्योतिर्मय प्रभात में उसके सौन्दर्य के उदयस्थल की ओर अभिमुख हुआ है। अक्सा की मस्जिद अपने सर्वगरिमामय प्रभु की बयारों से स्पंदित हो उठी है जबकि ‘बथा’ उस उदात्‍त, परमोच्च परमात्मा की आवाज से काँप रही है। उनकी एक-एक ईंट इस ‘महान नाम’ के माध्यम से प्रभु की स्तुति का उत्सव मना रही है।

172. अपनी इच्छाओं को त्याग दो और फिर अपने हृदय को अपने दिवसाधिक प्राचीन प्रभु की ओर उन्मुख करो। हम ईश्वर के निमित्‍त तुम्हारा उल्लेख करते हैं और यह चाहते हैं कि आकाश और धरती के रचयिता परमेश्वर के स्मरण के माध्यम से तुम्हारा नाम ऊँचा हो। वस्तुतः, वह परमेश्वर मेरे कथन का साक्षी है। हमें यह सूचित किया गया है कि तुमने पुरुषों और स्त्रियों दोनों के दास-व्यापार को निषिद्ध कर दिया है। वस्तुतः, यह एक ऐसी बात है जिसकी परमात्मा ने इस विलक्षण प्रकटीकरण में आज्ञा दी है। ईश्वर ने सचमुच तुम्हारे लिए एक पुरस्कार निर्धारित किया है। वह परमात्मा अच्छे कार्य करने वालों को उसका उचित पुरस्कार प्रदान करेगा बशर्ते कि तुम उस सर्वज्ञ, सर्वसूचित द्वारा तुम्हारे लिए भेजे गए आदेशों का अनुसरण करो। और ‘संकेतों के प्रकटकर्ता’ द्वारा स्पष्ट संकेतों को भेजे जाने के बावजूद जो कोई इससे विमुख होगा और घमंड जताएगा, ईश्वर उसके कार्यों को खाक में मिला देगा। वस्तुतः, उसकी शक्ति हर वस्तु के ऊपर है। लोगों के कार्य उस प्रकटीकरण को पहचान लेने के बाद ही स्वीकार्य हैं। जो कोई भी उस सच्चे परमात्मा से विमुख होता है, वास्तव में उसकी गिनती उसके सृजित जीवों में सबसे ज्यादा पर्दे में ढके व्यक्ति के रूप में होती है। वह जो कि शक्तिमान और परम सामर्थ्‍यवान है उसके द्वारा ऐसा ही आदेशित किया गया है।

173. हमने यह भी सुना है कि तुमने परामर्श की बागडोर जन-प्रतिनिधियों के हाथों में सौंप दी है। तुमने सचमुच यह बहुत ही अच्छा कार्य किया है क्योंकि इस माध्यम से तुम्हारे कार्यकलापों की आधारशिलाएँ मजबूत होंगी, और जो लोग तुम्हारी छत्रछाया में निवास कर रहे हैं - चाहे वे निचले तबके के लोग हों या ऊँचे - उनके जीवन में शान्ति आएगी। परन्तु उनके लिए यह योग्य है कि वे परमात्मा के सेवकों के बीच विश्वासपात्र बनें और वे स्वयं को धरती के सभी निवासियों का प्रतिनिधि समझें। उस सर्वप्रज्ञ ‘शासक’ द्वारा इस पाती में उन्हें यही परामर्श दिया गया है। और उनमें से कोई भी जब ‘संसद’ की ओर उन्मुख हो तो अपनी आँखें वह परमोच्च क्षितिज की ओर करे और कहे: ”हे मेरे ईश्वर! तुम्हारे परम महिमामय नाम से मैं तुमसे याचना करता हूँ कि मुझे तू उन कार्यों में सहायता कर जिनसे तुम्हारे सेवकों के कार्य-व्यवहारों में समृद्धि आए, और तुम्हारे नगरों की श्री-वृद्धि हो। तुम्हारी शक्ति, वस्तुतः, सभी वस्तुओं पर है।“ धन्य है वह जो परमेश्वर के निमित्‍त उस ‘संसद’ में प्रवेश करता है, और लोगों के बीच विशुद्ध न्याय-भावना के साथ न्याय करता है। वह, वस्तुतः, धन्य है।

174. हे हर भूभाग के निर्वाचित जनप्रतिनिधि गण! तुम परस्पर मिलकर परामर्श करो और तुम्हारा सरोकार सिर्फ उन्हीं बातों से होना चाहिए जिनसे मानवजाति का लाभ होता हो और उसकी स्थिति बेहतर होती हो, बशर्ते कि तुम उन लोगों में से हो जो सावधानीपूर्वक छानबीन करते हैं। इस संसार को एक ऐसा मानव-शरीर समझो जो यद्यपि अपने सृजन के समय पूर्ण और समग्र था लेकिन जो विभिन्न कारणों से गम्भीर विकृतियों और रोगों से ग्रस्त हो गया है। इसे एक दिन के लिए भी आराम नहीं मिला, बल्कि उन नीम-हकीमों के हाथ पड़ने के कारण इसकी बीमारी और अधिक गम्भीर होती चली गई जिन्होंने अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को खुली छूट दे दी और इस तरह जिन्होंने घोर भूल की है। और यदि किसी सुयोग्य चिकित्सक के उपचार के कारण कभी उस शरीर का एक अंग स्वस्थ हो भी गया तो बाकी पहले की तरह ही रुग्ण बने रहे। इस तरह सूचित करता है तुझे वह जो सर्वज्ञाता है, सर्वज्ञ है।

175. हम आज यह देख रहे हैं कि अहंकार में उन्मत्‍त शासक स्वयं अपना सर्वश्रेष्ठ लाभ तो समझ ही नहीं सकते तो फिर ऐसे विस्मयकारी, चुनौतीपूर्ण प्रकटीकरण को पहचान पाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। और उनमें से किसी ने यदि इसकी दशा सुधारने का प्रयास भी किया है तो घोषित या अघोषित रूप से उसका लक्ष्य रहा है सिर्फ अपनी स्वार्थ साधना, और एक सुयोग्य इरादे के अभाव में उसकी सुधार करने की क्षमता ही पंगु बनकर रह गई।

176. विश्व के आरोग्य के लिए प्रभु ने जो सार्वभौम उपचार और सबसे सशक्त साधन निर्धारित किया है वह है एक सामान्य वैश्विक धर्म में लोगों का एकीकरण। इस लक्ष्य को एक कुशल, सर्वशक्तिशाली और दिव्य प्रेरणा-सम्पन्न ‘चिकित्सक’ की शक्ति के सिवा अन्य किसी भी तरह से प्राप्त नहीं किया जा सकता। वस्तुतः, यही सत्य है और बाकी सब कुछ असत्य। हर बार जब वह सबसे सशक्त साधन अवतरित हुआ है, और पुरातन दिवानक्षत्र से वह ‘प्रकाश’ चमका है, तो अज्ञानी नीमहकीम बादलों की तरह उसके और इस संसार के बीच आ खड़े हुए। इसलिए, वह स्वस्थ नहीं हो सका और आजतक इसकी बीमारी बनी हुई है। वास्तव में, वे इसकी रक्षा करने या इसका उपचार करने में असमर्थ थे जबकि वह जो कि लोगों के बीच ‘शक्ति का प्रकटावतार’ था, उसे इन अज्ञानी नीमहकीमों के कारनामों के कारण अपना उद्देश्य पाने से रोक दिया गया।

177. इन दिनों पर विचार करो जबकि वह जो कि ‘पुरातन सौन्दर्य’ है, महानतम नाम के रूप में प्रकट हुआ है ताकि वह इस विश्व को स्फूर्ति से भर सके और इसके जनों को एकता के सूत्र में पिरो सके। लेकिन फिर भी वे धारदार तलवारों के साथ उसके खिलाफ उठ खड़े हुए और ऐसे कार्य किए कि ‘निष्ठावान चेतना’ विलाप कर उठी, और अंत में उन्होंने उसे निर्जनतम नगरी में कैद कर दिया और उसके परिधान का स्पर्श करते निष्ठावान लोगों की पकड़ समाप्त कर दी। यदि कोई उनसे यह कहता कि ”विश्व का सुधारक आया है“ तो वे यह जवाब देते कि ”नहीं, यह साबित हो चुका है कि वह वैमनस्य भड़काने वाला है!“ और वह भी तब जबकि उन्हें कभी भी ‘उसके’ साथ रहने का अवसर नहीं मिला और वे यह भी जान गए कि उसने एक क्षण के लिए भी अपनी रक्षा करने का प्रयास नहीं किया। सदासर्वदा वह दुष्ट जनों की कृपा का पात्र बना रहा। एक समय उन्होंने उसे कारागार में फेंक दिया तो दूसरे समय उसे निर्वासित कर दिया, और उसके भी बाद उसे वे यहाँ से वहाँ देशनिकाले की सजा देते रहे। इस तरह उन्होंने हमारे खिलाफ अपना फैसला सुनाया है, और मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ ईश्वर, सत्य ही, उसका साक्षी है। ईश्वर की निगाह में ऐसे लोग उसकी सृष्टि में सबसे अज्ञानी हैं। वे अपना ही अंग काट रहे हैं और उन्हें पता ही नहीं! जो उनके लिए सर्वोत्‍तम है वे स्वयं को उसी से वंचित रख रहे हैं और वे जानते ही नहीं! वे ऐसे नादान बच्चों की तरह हैं जिसे एक सुधारक और शरारती व्यक्ति के बीच का फर्क ही नहीं मालूम, और न ही दुष्ट और सदाचारी के बीच का। हम इस युग में उन्हें स्पष्ट रूप से एक पर्दे में ढके देख रहे हैं।

178. हे धरती के शासकों! तुमने ‘सूर्य’ की प्रभा को भला क्यों कर ढक दिया है और उसे चमकने से क्यों रोक रखा है? सर्वोच्च की लेखनी द्वारा दिए गए परामर्श पर ध्यान दे ताकि कदाचित तू और तेरे गरीब जन दोनों अमन-चैन को प्राप्त कर सकें। परमात्मा से हमारी याचना है कि वह धरती के सम्राटों को पृथ्वी पर शान्ति स्थापित करने में सहायता दें। वह सचमुच जैसा चाहता है वैसा करता है।

179. हे धरती के राजाओं! हम साल-दर-साल तुम्हें अपने खर्चे बढ़ाते हुए देख रहे हैं और इसका भार तुम अपनी जनता पर डाल रहे हो। वस्तुतः, यह बिल्कुल अनीतिपूर्ण बात है। इस ‘प्रवंचित’ की आहों और उसके आँसुओं से भय खाओ और अपनी जनता पर अतिशय भार मत डालो। अपने महलों के पोषण के लिए उन्हें लूटो मत, बल्कि उनके लिए उन्हीं बातों का चयन करो जिनका तुम अपने लिए करते हो। इस प्रकार हम तुम्हारी आँखों के समक्ष वह प्रकट करते हैं जो तुम्हारे लिए लाभदायक है, बशर्ते कि तुम समझ सको। तुम्हारी प्रजा तुम्हारी निधियाँ हैं। सावधान कि कहीं तुम्हारे नियम ईश्वर के आदेशों के प्रतिकूल न हों, और तुम अपने लोगों को लुटेरों के हवाले न कर दो। उन्हीं के दम पर तुम्हारा शासन है, उन्हीं के बूते तुम्हारा जीवन है, उन्हीं की सहायता से तेरी विजय है। और फिर भी तुम कितनी हिकारत से उन्हें निहारते हो! कितनी अजीब बात है, कितनी अजीब!

180. अब जबकि तुमने परम महान शान्ति को अस्वीकार कर दिया है, तो इस लघु शान्ति का दामन दृढ़ता से थाम लो, ताकि कुछ हद तक तुम स्वयं अपनी और अपनी जनता की दशा को सुधार सको।

181. हे धरती के शासकों! आपस में सुलह से रहो, ताकि अपने प्रदेशों और शासन-क्षेत्र की सुरक्षा के अलावा तुम्हें हथियारों की ज्यादा जरूरत न हो। सावधान कि कहीं तुम उस सर्वज्ञ और निष्ठावान प्रभु के परामर्श की अवहेलना न कर दो।

182. हे धरती के राजाओं! एकता के साथ रहो, क्योंकि उसी के माध्यम से तुम्हारे बीच मतभेद की आँधी शान्त हो सकेगी और तुम्हारे लोगों को चैन मिल सकेगा, बशर्ते कि तुम उन लोगों में से हो जो समझते हैं। यदि तुम में से कोई किसी के खिलाफ हथियार उठाए तो तुम सब उसके खिलाफ उठ खड़े हो, क्योंकि यह प्रत्यक्ष न्याय के सिवा और कुछ नहीं है। इसी तरह हमने पहले भेजी गई एक पाती में भी तुम्हें आदेशित किया था, और एक बार फिर हम तुम्हें चेतावनी देते हैं कि उसी बात का अनुगमन करो जिसे उस सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ द्वारा प्रकट किया गया है। यदि कोई तुम्हारी शरण में आए तो उसे अपना संरक्षण दो और उससे विश्वासघात न करो। इस तरह परामर्श देती है तुम्हें सर्वोच्च की लेखनी, उसके आदेश से जो सर्वज्ञ परमात्मा है, सर्वसूचित है।

183. सावधान कि कहीं तुम इस्लाम धर्म के अनुयायी उस राजा की तरह आचरण न कर बैठो जब हम उसके कहने पर उसके पास आए थे। उसके मंत्रियों ने हमारे खिलाफ ऐसा अन्यायपूर्ण निर्णय सुनाया कि सम्पूर्ण सृष्टि विलाप कर उठी और ईश्वर के निकटस्थ जनों के हृदय चीत्कार कर उठे। स्वार्थ और लालसा की हवाएँ उन्हें उनकी मर्जी की दिशा में लिए जाती हैं और हम उनमें दृढ़चित्‍तता का सर्वथा अभाव देखते हैं। वे, वस्तुतः, उन लोगों में हैं जो बिल्कुल पथभ्रष्ट हो चुके हैं।

184. हे दिवसाधिक प्राचीन की लेखनी! तू अपनी लेखनी को विराम दे और उन्हें उनकी ही दशा पर छोड़ दे क्योंकि वे अपनी कपोल कल्पनाओं में ही डूबे हुए हैं। तू उस महारानी का उल्लेख कर ताकि वह अपने पवित्र हृदय के साथ इस अद्भुत महिमा के परिदृश्य की ओर उन्मुख हो सके, जो अपने ‘परम नियंता’ प्रभु की ओर निहारने से अपनी आँखों को वंचित न करे और उन बातों से परिचित हो सके जिन्हें समस्त मानवजाति के रचयिता द्वारा उसके ग्रंथों और उसकी पातियों में प्रकट किया गया है - उस प्रभु द्वारा जिसके माध्यम से सूर्य को अंधकार से आच्छादित किया गया है, चन्द्रमा पर ग्रहण लगा है और जिसके माध्यम से धरती और स्वर्ग के बीच उसका आह्वान गुंजरित किया गया है

185. तू ईश्वर की ओर उन्मुख हो और बोल: हे मेरे सार्वभौम स्वामी! मैं तुम्हारा एक दास मात्र हूँ जबकि तुम, वस्तुतः, राजाधिराज हो। मैंने अपने याचनामय हाथ तेरी करुणा और कृपालुता के स्वर्ग की ओर उठाए हैं। अतः, अपनी उदारता के मेघों से मेरे पास वह भेज जो मुझे तेरे सिवा अन्य सबसे मुक्त कर दे और मुझे तू अपने निकट ला। हे मेरे प्रभु, मैं तेरे उस नाम से तुझसे याचना करता हूँ जिसे तूने धरती और स्वर्ग के सभी निवासियों के लिए नामों का अधिराज और अपने आत्म-तत्व का प्रकट स्वरूप बनाया है, कि तू उन पर्दों को छिन्न-भिन्न कर दे जो मेरे तथा तेरे संकेतों के उदयस्थल एवं तेरे प्रकटीकरण के दिवास्रोत के बीच अवरोध बनकर खड़े हैं। तू, वस्तुतः, सर्वशक्तिमान, सर्वसामर्थ्‍यवान, सर्वकृपालु है। हे मेरे प्रभु! इन दिवसों में तू मुझे अपनी करुणा के परिधान की सुरभि से वंचित न कर और मेरे लिए वह लिख डाल जिसे तूने अपनी उन सेविकाओं के लिए लिखा है जिन्होंने तुझमें और तेरे चिह्नों में आस्था रखी है, तुझे पहचाना है और अपने हृदयों को तेरे धर्म के क्षितिज की ओर उन्मुख किया है। तू, सत्य ही, सभी लोकों का प्रभु है, और दया दिखाने वालों में सर्वाधिक दयालु है। अतः, हे मेरे परमेश्वर! अपनी सेविकाओं के बीच तेरा स्मरण करने और तेरे भूभागों में तेरे धर्म की सहायता करने में मेरे सहायक बन। अतः तू वह स्वीकार कर जो मुझसे तब छूट गया था जब तेरी मुखमुद्रा के प्रकाश ने अपनी चमक बिखेरी थी। वस्तुतः, तेरी शक्ति हर वस्तु पर है। महिमा हो तेरी, हे तू जिसके हाथों में है स्वर्ग और धरती का साम्राज्य।

186. **नसीरुद्दीन शाह** हे धरती के राजन्! इस ‘दास’ के आह्वान पर ध्यान दे: वस्तुतः मैं वह ‘सेवक’ हूँ जिसने ईश्वर और उसके संकेतों में विश्वास किया है और स्वयं को उस परमेश्वर के पथ पर उत्सर्ग कर डाला है। इसकी साक्षी हैं वे पीड़ाएँ जिन्होंने मुझे घेर रखा है, ऐसी पीड़ाएँ जैसी कि पहले किसी मनुष्य ने नहीं झेलीं। मेरा परमात्मा - वह सर्वज्ञ परमेश्वर - मेरे शब्दों की सत्यता का साक्षी है। मैंने लोगों को ईश्वर के सिवा अन्य किसी के भी पास आमंत्रित नहीं किया है - वह जो कि समस्त लोकों का प्रभु है - और उसके प्रेम के निमित्‍त मैंने ऐसी यातनाएँ झेली हैं जैसी कि सृष्टि के नयनों ने पहले कभी नहीं देखीं। इसके साक्षी हैं वे जिन्हें मानवीय कपोल कल्पनाओं के आवरण ’परम उदात्‍त दर्शन’ और उससे भी आगे तक उन्मुख होने से नहीं रोक पाए हैं और वह जिसके पास एक संरक्षित पाती में सभी वस्तुओं का ज्ञान है।

187. जब कभी भी सभी नामों के स्वामी उस परमात्मा के पथ पर यातना के बादलों ने मुझपर पीड़ाओं की बौछार की है, मैं तेजी से उनका सामना करने आगे बढ़ा हूँ, जैसाकि हर निष्पक्ष और विवेकी व्यक्ति अभिप्रमाणित करेगा। न जाने कितनी रातें आईं जब चारागाहों के पशु अपनी माँद में सोए रहे और नभचर पंछी अपने घोंसलों में और यह ‘युवा’ अकेला, असहाय जंजीरों और बेड़ियों में जकड़ा घुटता रहा।

188. क्या तुम्हें ईश्वर की वह करुणा याद नहीं जब अन्य कई लोगों के साथ कारागार में बन्द थे। तब उस प्रभु ने ही तुम्हें मुक्त किया और दृश्य एवं अदृश्य जगत के सहचरों की सहायता से तुम्हें मुक्त किया। और तब जब हमने उसके समक्ष यह भेद प्रकट किया कि तुम विद्रोह भड़काने वालों में से नहीं थे तो सम्राट ने तुझे इराक भेज दिया। जो लोग अपनी भ्रष्ट इच्छाओं का ही अनुसरण करते हैं और ईश्वरीय भय को दरकिनार कर देते हैं वे सचमुच घोर भूल करते हैं। जो लोग किसी भी भूभाग में अव्यवस्था फैलाते हैं, लोगों का खून बहाते हैं और गलत तरीके से दूसरों का माल हड़प लेते हैं - हम सचमुच ऐसे लोगों से परे हैं, और ईश्वर से हमारी यही याचना है कि हमें वे उनके साथ इस लोक या परलोक में कोई भी वास्ता रखने से दूर ही रखें, बशर्ते कि वे ईश्वर के समक्ष पश्चाताप न करें। वह, वस्तुतः, दया दिखाने वालों में सर्वाधिक दयालु है।

189. जो कोई भी ईश्वर की ओर अभिमुख होता है उसे चाहिए कि वह अपने प्रत्येक कार्य में औरों से विशिष्ट बने और ‘ग्रन्थ’ में उसे जो आदेश दिया गया है उसका पालन करे। एक सुस्पष्ट पाती में इसी प्रकार से निर्णय दिया गया है। लेकिन जिन लोगों ने ईश्वर की आज्ञाओं से पीठ मोड़ ली है और अपनी ही लालसाओं के बहकावे में पड़े हैं, वे सचमुच घोर भूल कर रहे हैं।

190. हे राजन्! मैं तुझे अपने सर्वदयालु प्रभु की शपथ देता हूँ कि अपने सेवकों पर अपनी कृपा भरी दृष्टि डाल और उनके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार कर ताकि ईश्वर भी तुझसे दया का व्यवहार करे। ईश्वर जो चाहे उसे करने की सामर्थ्‍य रखता है। यह संसार और इसकी सारी गरिमाएँ और तुच्छताएँ एकदिन विलुप्त हो जाएँगी, और साम्राज्य ईश्वर का होगा, वह जो है परम उदात्‍त, सर्वज्ञाता।

191. सुनो: उसने वाणी का प्रदीप जला दिया है जिसे वह विवेक और समझ के तेल से जलाए रखता है। तुम्हारा प्रभु, वह सर्वदयामय, इतना उच्च है कि संसार में कोई भी उसके धर्म का प्रतिरोध नहीं कर सकता। अपनी सार्वभौम शक्ति के माध्यम से वह जैसा चाहता है वैसा प्रकट करता है और उसे अपने कृपाप्राप्त देवदूतों के माध्यम से संरक्षित रखता है। वह अपने सेवकों पर सर्वश्रेष्ठ है और सम्पूर्ण सृष्टि पर निर्विवाद साम्राज्य है उसका। वह, वस्तुतः, सर्वज्ञ है, सर्वप्रज्ञ है।

192. हे राजन्! मैं तो बस अन्य लोगों की तरह अपनी शैय्या पर सोया पड़ा था कि तभी सर्वमहिमामय के मृदुल झकोरे मेरे ऊपर से प्रवाहित हो उठे और उन्होंने मुझे हर घटित वस्तु का ज्ञान सिखा दिया। यह सब कुछ कोई मेरी ओर से नहीं है बल्कि उसकी ओर से है जो है सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान। और उसी ने मुझे धरती और स्वर्ग के बीच अपनी आवाज गुंजारित करने को कहा और इसी के लिए मुझ पर ऐसी विपदाएँ आन पड़ी कि हर ज्ञान-सम्पन्न व्यक्ति की आँखों से आँसू प्रवाहित हो उठे। लोगों के बीच प्रचलित ज्ञान-विज्ञान मैंने पढ़े नहीं, उनकी पाठशालाओं में मैं गया नहीं। उस शहर में पता करो जहाँ मैं रहा था, ताकि तुम इस बात से अच्छी तरह आश्वस्त हो सको कि मैं उन लोगों में नहीं हूँ जो झूठ बोलते हैं। मैं तो बस एक पत्‍ता मात्र हूँ जिसे तुम्हारे सर्वशक्तिशाली, सर्व-प्रशंसित प्रभु की मर्जी की हवाओं ने खड़खड़ाया है। जब आँधी-तूफान उठ रहे हों तो क्या वह भला स्थिर रह सकता है? नहीं, सौगन्ध उसकी जो सभी नामों और उपाधियों का स्वामी है! वे उनकी ही मर्जी से गतिमान हैं। वह जो कि सदा शाश्वत है, उसके समक्ष क्षणभंगुर सत्‍ता का भला क्या अस्तित्व है! सबको बाध्य करके रख देने वाले उसके आह्वान मेरे पास तक आ पहुँचे हैं, और उन्होंने सभी लोगों के बीच उसके गुणगान के लिए मुझे प्रेरित किया है। जब उसकी आज्ञा का उच्चार हुआ तो मैं सचमुच मृतप्राय पड़ा था। तुम्हारे करुणामय, दयामय, प्रभु की इच्छा के हाथ से मैं रूपांतरित हो उठा। क्या कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा से वह बोल सकता है जिसके लिए उच्च और निम्न हर कोटि के लोग उसके विरोध में उठ खड़े हों? नहीं, उसकी शपथ जिसने इस ‘लेखनी’ को अनन्त रहस्यों का ज्ञान दिया है! जिसमें उस सर्वशक्तिशाली, सर्वसामर्थ्‍यवान, की कृपा ने ताकत भर दी है, उसके सिवा अन्य कोई ऐसा नहीं कर सकता।

193. सर्वोच्च की लेखनी ने यह कहकर मुझे सम्बोधित किया: डरो मत, महामहिम शाह से वह सब कुछ कहो जो तुझ पर आन पड़ा है। वस्तुतः, उसका हृदय तुम्हारे प्रभु की उंगलियों के मध्य है - वह जो कि करुणा का प्रभु है - ताकि कदाचित न्याय और कृपा का सूर्य उसके हृदय के क्षितिज पर उदित हो उठे। इस तरह अकाट्य निर्णय दिया है उसने जो सर्वप्रज्ञ है।

194. हे राजा! इस ‘युवक’ पर अपनी न्याय भरी दृष्टि डाल, और तब उस पर जो विपदाएँ आन पड़ी हैं उनकी सत्यता के आलोक में अपना निर्णय कर। सत्य ही, ईश्वर ने तुझे लोगों के बीच अपनी छाया का स्वरूप बनाया है तथा धरती के सभी निवासियों के बीच अपनी शक्ति का प्रतीक। जिन लोगों ने हमें बिना किसी सबूत और बिना किसी निर्देशात्मक ‘ग्रंथ’ के प्रवंचित किया है उनके और हमारे बीच निर्णय कर। जिन लोगों ने तुम्हें चारों ओर से घेर रखा है वे तुम्हें अपने ही कारण से प्रेम करते हैं, जबकि यह ‘युवा’ तुम्हें तुम्हारे कारण प्रेम करता है और उसके मन में तुझे गरिमा के आसन के निकट लाने तथा न्याय की दाहिनी भुजा की ओर उन्मुख करने के सिवा अन्य कोई कामना नहीं है। मैं जो घोषित करता हूँ उसका साक्षी है तुम्हारा प्रभु।

195. हे सम्राट! यदि तुम ‘गरिमा की लेखनी’ की चीख और उस कल्पतरु पर जिसके आगे कोई राह नहीं है, कलरव करते ‘अनन्तता के कपोत’ को सभी नामों के रचयिता तथा धरती और स्वर्ग के सृष्टिकर्ता अपने परमेश्वर का गुणगान करते सुनने की चेष्टा करते तो तुम एक ऐसा पद प्राप्त कर लेते जहाँ से तुम्हें अस्तित्व के संसार में उस आराध्य की प्रखर आभा के सिवा अन्य कुछ नहीं दिखता और अपनी इस सम्प्रभुता को तुम अपनी सम्पदाओं में सबसे हेय समझते, उसे इसकी लालसा रखने वालों के लिए त्याग देते और उसकी मुखमुद्रा के प्रकाश से प्रदीप्त क्षितिज की ओर अपना मुखड़ा कर लेते। और तुम अपने उदात्‍त, परमोच्च प्रभु की सहायता के अलावा अन्य किसी भी उद्देश्य से राज्य का भार उठाने की कामना नहीं करते। तब उच्च लोक के सहचर तुम्हें आशीर्वाद देते। ओह, यह महान पद कितना उत्कृष्ट है, काश कि तुम ईश्वर के नाम से उत्पन्न साम्राज्य की शक्ति से उस ऊँचाई तक पहुँच पाते!

196. लोगों के बीच वे हैं जिनका यह कहना है कि अपने नाम को लोकप्रिय बनाने के सिवा इस ‘युवा’ का और कोई उद्देश्य नहीं था, जबकि कुछ अन्य लोगों का दावा यह है कि उसने स्वयं के लिए इस संसार की चमक-दमक की कामना की थी - और यह सब कुछ तब जबकि अपने समस्त दिनों में मैं अपना पैर टिकाने मात्र के लिए भी कभी एक सुरक्षित जगह नहीं पा सका। सदासर्वदा मैं यातनाओं के महासागर में इस कदर निमग्न रहा कि ईश्वर के सिवा अन्य कोई उसकी थाह नहीं पा सकता। वह, वस्तुतः, मेरे कथन से अवगत है। न जाने ऐसे कितने दिन आए जबकि मेरे प्रियजन मेरी यातनाओं को देखकर काँप उठे और न जाने ऐसी कितनी रातें आईं जबकि मेरे सगे-सम्बंधी मेरी जान जाने के डर से बुरी तरह विलाप और चीत्कार कर उठे। इन बातों से कोई इन्कार नहीं कर सकता सिवाय उसके जो सत्य से कोसों दूर है। क्या यह सोचा भी जा सकता है कि जो किसी भी क्षण अपनी जान जाने की आशंका लिए बैठा था वह सांसारिक चमक-दमक की कामना करेगा? कितनी विचित्र है उन लोगों की कल्पनाएँ जो अपने ही लोभ-लालच द्वारा हमें उत्प्रेरित बताते हैं और जो स्वार्थ और लालसा के बियावान में दिग्भ्रमित होकर भटक रहे हैं! बहुत ही जल्द उन्हें अपनी करनी का हिसाब देने को कहा जाएगा और उस दिन उन्हें न कोई साथी मिलेगा न सहारा।

197. और लोगों के बीच वे हैं जो यह दावा करते हैं कि ‘उसने’ ईश्वर में अनास्था प्रकट की थी - किन्तु मेरे शरीर का अंग-प्रत्यंग यह साक्षी देता है कि ‘उसके’ सिवा अन्य कोई परमात्मा नहीं है, यह कि वे जिन्हें ‘उसने’ सत्य ही खड़ा किया है और अपने मार्गदर्शन के साथ यहाँ भेजा है, वे उसके परम उत्कृष्ट नामालंकरणों के प्रकटावतार हैं, उसके परम उदात्‍त विभूषणों के प्रकटकर्ता, और सृष्टि के साम्राज्य में उसके प्राकट्य के कोषालय, कि उनके माध्यम से ‘उसके’ सिवा अन्य सब पर ‘ईश्वर के प्रमाण’ को पूर्ण बनाया गया है, दिव्य एकता की ध्वजा फहराई गई है, और पावनता के संकेत को उजागर किया गया है, और यह कि उनके माध्यम से हर आत्मा को उच्च सिंहासन के स्वामी की ओर जाने का मार्ग प्राप्त हुआ है। हम प्रमाणित करते हैं कि ‘उसके’ सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, कि अनन्तकाल से वह अकेला ही था और उसके सिवा अन्य कोई न था, और वह जैसा है वैसा ही अनन्तकाल तक बना रहेगा। वह सर्वदयालु उन हृदयों के लिए जिन्होंने उसे पहचान लिया है इतना महान है कि वे उसकी सच्ची प्रकृति को नहीं जान सकते, और वह लोगों के मस्तिष्क से इतना परे है कि वे उसके सार-तत्व की गहराइयों को नापने की आशा भी नहीं कर सकते। वह, वस्तुतः, अपने सिवा अन्य किसी की भी समझ से ऊपर है, और स्वयं अपने सिवा सबके बोध से परे, पावन। अनन्तकाल से ही वह अपनी सम्पूर्ण सृष्टि से स्वाधीन रहा है।

198. याद करो उन दिनों को जब बहा का सूर्य तेरे उदात्‍त एवं परम महान प्रभु के क्षितिज से चमक उठा था, और यह भी याद करो कि कैसे उस समय के धर्मगुरु उससे विमुख हो गए थे, और विद्वानों ने उससे विवाद किया था, ताकि कदाचित् तुम वह समझ सको जो कि आज के युग में गरिमा के आवरणों के पीछे छुपा पड़ा है। हर ओर से उसकी स्थिति इतनी गम्भीर हो गई कि उसने अपने साथियों को इधर-उधर बिखर जाने के लिए कहा। दिव्य गरिमा के स्वर्ग से इस तरह का निर्णय प्रकट किया गया था। और तुम यह भी याद करो कि जब इन्हीं साथियों में से एक इथोपिया के राजा के सम्मुख आया और उसने उसके सामने कुरान का एक सूरा पढ़कर सुनाया तो उसके अपने अनुचरों के समक्ष यह घोषित किया: ”यह सचमुच उसकी ओर से प्रकट किया गया है जो सर्वज्ञ और सर्वप्रज्ञ है। जो कोई भी सत्य को स्वीकार करेगा और यीशु की शिक्षाओं में विश्वास करेगा वह जो कुछ पढ़कर सुनाया गया है उससे इन्कार नहीं कर सकता। हम सत्य ही इसकी सत्यता के साक्षी हैं, ठीक वैसे ही जैसे हम संकटों में सहायक, स्वयंजीवी, परमात्मा के ग्रंथ में निहित सत्य के साक्षी हैं।“

199. हे राजा! मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, यदि तू अपना ध्यान उस ‘बुलबुल’ के माधुर्य की ओर लगा पाता जो अपने सर्वदयालु परमेश्वर के आदेश से रहस्यमयी टहनी पर अपने अनेक स्वरालापों में गा रही है तो तू अपने साम्राज्य को त्याग देता और अपना मुखड़ा इस अद्भुत महिमा के आसन की ओर कर लेता जिसके क्षितिज के ऊपर ‘अरुणोदय का ग्रंथ’ जगमगा रहा है और ईश्वर की वस्तुओं को प्राप्त करने की उत्कंठा में तू अपनी समस्त सम्पदा खर्च कर डालता। तब तू स्वयं को उच्चता और महिमा के शिखर पर विराजमान और गरिमा तथा स्वाधीनता के श्रृंगों तक उठा हुआ पाता। सर्वदयालु की लेखनी से ‘मातृग्रंथ’ में इस तरह दिव्य निर्णय लिपिबद्ध किया गया है। जो वस्तुएँ आज तेरी हैं कल किसी और की हो जाएँगी उनसे भला क्या फायदा? तू तो अपने लिए उसका चयन कर जो कि ईश्वर ने अपने चुने हुए लोगों के लिए चाहा है, और ईश्वर अपने साम्राज्य में तुझे एक शक्तिशाली सम्प्रभुता प्रदान करेंगे। ईश्वर से हमारी याचना है कि वे महामहिम को उस वाणी पर ध्यान देने में सहायता करें जिसकी दीप्ति ने इस समस्त संसार को आवृत्‍त कर रखा है और तुझे उन लोगों से बचाएँ जो ‘उसकी’ उपस्थिति के दरबार से दूर भटक गए हैं।

200. हे प्रभु, मेरे परमेश्वर! महिमा हो तेरी! तेरे पथ पर न जाने कितने सिरों पर भाले तने हुए थे और न जाने कितनी छातियों पर तेरी सुकृपा के निमित्‍त तीरों के निशाने बनाए गए थे! तेरी वाणी को उदात्‍त बनाने और तेरे धर्म को आगे बढ़ाने के लिए न जाने कितने हृदयों को छलनी कर दिया गया, और न जाने कितनी ऐसी आँखें हैं जो तेरे प्रेम के कारण फूट-फूटकर रो उठी हैं। हे तुम राजाधिराज और पद-दलितों पर दया करने वाले! तुम्हारे महानतम नाम पर जिसे तुमने अपने उत्कृष्टतम नामालंकरणों का उदयस्थल और अपनी उच्चतम विभूतियों का दिवास्रोत बनाया है, मैं तुमसे याचना करता हूँ कि तुम उन पर्दों को छिन्न-भिन्न कर दो जो तेरे और तेरे रचित जीवों के बीच आ पड़े हैं और जिन्होंने उन्हें तेरे प्रकटीकरण के क्षितिज की ओर उन्मुख होने से रोक रखा है। अतः, हे मेरे परमेश्वर! अपनी परम उदात्‍त वाणी द्वारा उन्हें विस्मृति और विभ्रम के बाएँ हाथ की ओर से विमुख करके ज्ञान और निश्चय के दाहिने हाथ की ओर उन्मुख होने दे ताकि वे यह जान सकें कि तूने अपनी करुणा और कृपा के माध्यम से उनके लिए क्या निर्धारित किया है, और वे अपने मुखड़े ‘उसकी’ ओर अभिमुख कर सकें जो तेरे धर्म का साक्षात अवतार और तेरे संकेतों का प्रकटकर्ता है।

201. हे मेरे परमेश्वर! तुम सर्वकृपालु हो, जिसकी कृपा अनन्त है। अपने सेवकों को उस परम शक्तिमान ‘महासागर’ से दूर मत रहने दो जिसे तुमने अपने ज्ञान और विवेक के मोतियों का कोषालय बनाया है, और उन्हें अपने उस द्वार से हटाओ मत जिसे तुमने आकाश और धरती के सभी निवासियों के लिए प्रशस्त रूप से खोल रखा है। हे प्रभो! उन्हें उनके हाल पर मत छोड़ो क्योंकि वे कुछ भी नहीं समझते और तुमने अपनी धरती पर जिन वस्तुओं का सृजन किया है उन सबसे जो उनके लिए बेहतर है वे उससे दूर भाग जाते हैं। हे मेरे परमात्मा! उन पर अपनी कृपा और करुणा के नेत्रों की दृष्टि डाल और उन्हें स्वार्थ तथा लालसा से मुक्त कर ताकि वे तेरे परम उदात्‍त क्षितिज के निकट आ सकें, तेरे सुमिरन की मधुरता चख सकें और उस रोटी का मधुर आस्वाद पा सकें जिसे तूने अपनी इच्छा के स्वर्ग और अपनी करुणा के आकाश से भेजा है। अनन्तकाल से तुम्हारी करुणा ने समस्त सृष्टि को आवृत्‍त कर रखा है और तेरी कृपा सभी वस्तुओं के लिए अपरम्पार रही है। तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है - सदा क्षमाशील, परम दयालु।

202. महिमावन्त हो तुम, हे मेरे प्रभो, मेरे परमेश्वर! तुम यह अच्छी तरह जानते हो कि मेरा हृदय तेरे धर्म में विगलित हो चुका है और तेरे प्रेम की अग्नि से मेरा रक्त मेरी शिराओं में इस कदर उबालें मारता है कि इसकी हर बूंद अपनी अंतर्वाणी से यह घोषणा करती है: ‘यह वरदान दे कि तेरे निमित्‍त मैं धरती पर टपका दिया जाऊँ, हे मेरे प्रभो, हे परमोच्च! ताकि उस बूंद से वह उत्पन्न होकर खड़ा हो जाए जो तुम्हारी पातियों में उद्दिष्ट है और जो सभी लोगों की दृष्टि से निगूढ़ है, सिवाय तुम्हारे ऐसे सेवकों के जिन्होंने तेरी कृपा के करों से ज्ञान की शुभ्र धारा का आस्वाद पाया है और तेरे उदार अनुदानों की प्याली से बोध की मृदु-प्रवाही जलधाराओं को छका है।

203. तुम्हें पता है, हे मेरे ईश्वर! अपने सभी कार्यकलापों में मैंने केवल तेरे आदेशों का पालन करना चाहा है, कि अपनी हर वाणी में मैंने सिर्फ तुम्हारा गुणगान करना चाहा है, और मेरी लेखनी से जो भी निस्सृत हुआ है उसमें मैंने सिर्फ तेरी सुकृपा प्राप्त करनी चाही है, और वह प्रकट करने की इच्छा की है जिसे तूने अपनी सम्प्रभुता द्वारा मेरे लिए आदेशित किया है।

204. हे मेरे परमेश्वर! तुम देख रहे हो मुझे अपने भूभाग में किंकर्तव्यविमूढ़ की तरह। जब कभी मैं उस बात का उल्लेख करता हूँ जिसे तुमने मेरे ऊपर आदेशित किया है तो तेरे रचित जीव मेरा उपहास कर उठते हैं, लेकिन फिर भी तुमने मुझे जिस बात का आदेश दिया है यदि मैं उसकी उपेक्षा करता तो मैं तेरे कोप का भाजन बनता और तेरी निकटता की शस्यभूमि से दूर कर दिया जाता। नहीं, तेरी गरिमा की सौगन्ध! मैंने अपना मुखड़ा तेरी सुकृपा की ओर कर रखा है और उन चीजों से विमुख हो गया हूँ जिन पर तेरे सेवकों ने अपना दिल लगा रखा है। मैंने उन सभी चीजों को आत्मर्पित किया है जो तुझसे जुड़ी हुई हैं और मैंने उन तमाम वस्तुओं को त्याग दिया है जो मुझे तेरी निकटता के आश्रय-स्थल और तेरी महिमा की ऊँचाइयों से दूर कर रखतीं। तेरी शक्ति की सौगन्ध! अपने हृदय में तेरा प्रेम सँजोए हुए, मेरे लिए कोई भी संकट नहीं आ सकता और तेरी सुकृपा के पथ पर दुनिया की सारी यातनाएँ किसी भी तरह मुझे पराभूत नहीं कर सकतीं। परन्तु यह सब कुछ तेरी ही शक्ति और सामर्थ्‍य के कारण है, तेरी कृपा और करुणा की ओर से, न कि मेरी पात्रता के कारण।

205. हे मेरे ईश्वर! यह वह पत्र है जिसे मैंने सम्राट के लिए उद्दिष्ट किया है। तुझे पता है कि उससे मेरी और कोई कामना नहीं है सिवाय इसके कि वह तेरे सेवकों के प्रति न्यायशीलता और तेरे साम्राज्य के जनों के प्रति अपनी कृपा दर्शाए। स्वयं अपने लिए मैंने वही चाहा है जो तेरी इच्छा है और तेरी कृपा के माध्यम से मैं और कुछ भी नहीं चाहता सिवाय उसके जो तेरी इच्छा है। नष्ट हो जाए वह आत्मा जो तुझसे तेरे सिवा अन्य कुछ भी चाहता हो। तेरी गरिमा की शपथ! तुम्हारी सुकृपा ही मेरी सबसे प्रिय कामना है, और तेरा उद्देश्य ही मेरी सर्वोच्च आशा। हे परमेश्वर! अपने इस अकिंचन जीव पर दया कर जो तेरी सम्पन्नता के परिधान के छोर से चिपका हुआ है, और इस याचना भरी आत्मा पर जो यह कहते हुए तुझे पुकार रही है: ”तुम सत्य ही शक्ति और गरिमा के स्वामी हो!“ हे मेरे ईश्वर! महामहिम शाह की सहायता कर कि वह तेरे सेवकों के बीच तेरे विधानों की स्थापना कर सके और तेरे जीवों के बीच तेरा न्याय प्रकट कर सके, और वह इस जन के साथ वैसा ही व्यवहार करे जैसा वह दूसरों के साथ करता है। तुम, वस्तुतः, शक्ति और गरिमा तथा विवेक के प्रभु हो।

206. इस युग के सम्राट की आज्ञा और अनुमति से यह ‘सेवक’ ‘सम्प्रभुता के आसन’ से इराक की यात्रा पर चला और बारह वर्षों तक उस धरती पर रहा। इस सम्पूर्ण अवधि में, मेरी दशा के बारे में आपके दरबार में कोई भी विवरण प्रस्तुत नहीं किया गया और न ही विदेशी ताकतों के सम्मुख कोई प्रतिनिधि ही भेजा गया। अपनी पूरी आस्था ईश्वर में टिकाए हुए, हम तब तक उस धरती पर रहे जब तक इराक में एक ऐसे पदाधिकारी का पदार्पण नहीं हो गया जिसने आते ही निर्वासितों की इस पूरी टोली को तंग करने का काम अपने हाथ में लिया। ऊपर से विद्वान कहे जाने वाले तथा कुछ अन्य लोगों के उकसावे पर वह दिन-प्रतिदिन इन सेवकों के प्रति उपद्रव खड़ा करता रहा, हालाँकि उन लोगों ने कभी भी ऐसा कोई कार्य नहीं किया था जो राज्य तथा इसके लोगों के लिए हानिकारक रहा हो या उस प्रदेश की जनता की परम्पराओं या उनके नियमों के खिलाफ हो।

207. इस डर से कि कहीं इन नियम-भंजकों के कार्य विश्व को विभूषित करने वाले न्याय के विरुद्ध कोई परिणाम न उत्पन्न कर दे, इस सेवक ने विदेश मंत्रालय में मिर्जा सईद खान को इस विषय का एक संक्षिप्त ब्योरा भेजा ताकि वह आपके समक्ष उसे प्रस्तुत कर सके और इस सम्बंध में जो भी आपकी आज्ञा हो उसका पालन किया जा सके। काफी समय बीत गया मगर कोई भी आदेश जारी नहीं हुआ। अंततः बात इतनी बढ़ गई कि संघर्ष और रक्तपात की नौबत निकट आ गई। अतः, आवश्यकता को देखते हुए तथा ईश्वर के सेवकों की सुरक्षा के लिहाज से, उनमें से कुछ लोगों ने इराक के गवर्नर के पास अपील की।

208. यदि आप निष्पक्ष नजरों से इन घटनाओं पर दृष्टिपात कर पाते तो आपके हृदय के प्रखर दर्पण में यह स्पष्ट और प्रमाणित हो जाता कि जो भी हुआ वह परिस्थिति की दरकार थी और उसका कोई विकल्प नहीं था। महामहिम स्वयं इस बात के गवाह हैं कि ये लोग जिस किसी नगर में रहे, कुछ खास लोगों की शत्रुता के कारण संघर्ष और विवाद की लपटें सुलग उठीं। किन्तु यह क्षणभंगुर व्यक्ति इराक में अपने आगमन के समय से ही सबको संघर्ष और विवाद में उलझने से रोकता रहा। मेरे कार्य स्वयं ही मेरे सबूत हैं क्योंकि हर किसी को पता है और हर कोई इसका साक्ष्य देगा कि हालाँकि इनमें से बहुतेरे लोग अन्य जगहों की तुलना में इराक में रहते थे किन्तु किसी ने भी अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया और न ही अपने पड़ोसी के साथ कोई अतिक्रमण ही किया। अपनी दृष्टि सिर्फ ईश्वर पर टिकाए हुए और उसी में अपनी आस्था जमाए, ये सब लोग लगभग पन्द्रह वर्षों से शांतिपूर्वक रहते आ रहे हैं, और उन पर चाहे जो कुछ भी गुजरा हो, उन्होंने धैर्य का परिचय दिया है और स्वयं को ईश्वर पर छोड़ दिया।

209. जब यह सेवक इस एड्रियानोपल शहर में आया तो उसके बाद इराक तथा अन्य जगहों के कुछ लोगों ने ”ईश्वर को सहायता प्रदान करना“ इस शब्दावली का अर्थ जानना चाहा जिसका उल्लेख पवित्र ग्रंथों में किया गया है। इसके प्रत्युत्‍तर में कई जवाब भेजे गए जिनमें से इस एक पन्ने में निरूपित किया गया है ताकि आपकी उपस्थिति के दरबार में यह स्पष्ट हो जाए कि इस सेवक के समक्ष इस संसार की बेहतरी और उसके कल्याण के सिवा और कोई भी लक्ष्य नहीं है। और यदि ईश्वर ने मेरी अपात्रता के बावजूद मुझे कुछ दिव्य कृपाएँ प्रदान की हैं यदि वे स्पष्ट रूप से प्रकट न भी हो सकें तो भी कम से कम इतना तो स्पष्ट हो ही जाएगा की अपनी असीम करुणा और अनन्त कृपा से उसने मेरे हृदय को तर्क के विभूषण से रिक्त नहीं रखा है। ”ईश्वर को सहायता प्रदान करना“ इस शब्दावली के संदर्भ में जिस अंश का हवाला दिया गया है वह यह है - वह परमात्मा है, धन्य है उसकी महिमा!

वह ईश्‍वर है उसकी महिमा महान है!

210. यह स्पष्ट और सुप्रमाणित है कि एकमेव सत्य परमेश्वर - धन्य हो गुणगान उसका - इस संसार और इसकी सभी वस्तुओं से परे, पावन है। अतः ”ईश्वर को सहायता प्रदान करने“ से यह तात्पर्य नहीं है कि कोई भी व्यक्ति किसी अन्य के साथ संघर्ष या विवाद करे। उस सार्वभौम प्रभु ने, जो कि अपनी मर्जी से जो चाहे करता है - अपनी सृष्टि का साम्राज्य, इसके समुद्र और भूभाग, राजाओं के हाथों में सौंप दिया है, क्योंकि अपने-अपने दायरे में वे सब उस प्रभु की दिव्य शक्ति के प्रकट रूप हैं। यदि वे उस एकमेव प्रभु की छाया तले प्रवेश करेंगे तो उन्हें ईश्वर का जन माना जाएगा और यदि नहीं तो, वस्तुतः, तुम्हारा प्रभु सब कुछ जानता है, सब देखता है।

211. धन्य हो उस प्रभु का नाम! परमेश्वर ने अपने लिए जो चाहा है वह है अपने सेवकों का हृदय जो कि उसके प्रेम के आगार और उसके ज्ञान और विवेक के कोषालय हैं। उस ‘अनन्त सम्राट’ की सदैव यही इच्छा रही है कि वह अपने सेवकों के हृदयों को इस संसार और सांसारिक वस्तुओं से परे पवित्र बनाए ताकि वे उस ‘सभी नामों और विभूषणों के सम्राट’ की प्रखर आभाओं को प्राप्त करने वाले बन सकें। अतः इस हृदय रूपी शहर में किसी भी अजनबी को प्रवेश नहीं देना चाहिए ताकि वह अतुलनीय मित्र अपने घर में प्रवेश कर सके। इससे तात्पर्य है नामों और विभूषणों की आभा, न कि उसका उदात्‍त सार-तत्व, क्योंकि वह अनुपम सम्राट आरोह और अवरोह से सदा परे, पावन रहा है और सदैव रहेगा।

212. अतः अर्थ यह निकलता है कि आज के युग में ईश्वर को सहायता देने का मतलब किसी से भी संघर्ष और विवाद करने के प्रसंग में नहीं है और न कभी होगा, नहीं, बल्कि ईश्वर की दृष्टि में जो ज्यादा उत्‍तम वस्तु है वह है लोगों के हृदय जो कि स्वार्थ और लालसा द्वारा शासित होते हैं जबकि उन्हें वाणी, विवेक और ज्ञान की तलवार से शमित किया जाना चाहिए। अतः जो कोई भी ईश्वर को सहायता देना चाहता है उसे सर्वप्रथम यह चाहिए कि वह आभ्यंतरिक अर्थ और व्याख्या की तलवार से अपने हृदय रूपी नगरी पर विजय पाए और ईश्वर के सिवा अन्य सभी वस्तुओं के स्मरण से उसकी रक्षा करे। तभी वह अन्य लोगों की हृदय-नगरी पर विजय पा सकेगा।

213. ईश्वर को सहायता देने का यही सच्चा अर्थ है। ईश्वर को उपद्रव कभी प्रिय नहीं लगा और न ही अतीत के युग में कतिपय मूर्ख जनों द्वारा किए गए कृत्य ही उसकी दृष्टि में शोभनीय थे। तुम यह जानो कि उसकी सुकृपा के पथ पर जान दे देना किसी की जान लेने से कहीं बेहतर है। इस युग में ईश्वर से प्रेम करने वाले को चाहिए कि वह उसके सेवकों के बीच इस तरह आचरण करे कि वे अपने आचरण और कर्मों से सभी लोगों को उस सर्वमहिमामय के स्वर्ग की राह दिखा सकें।

214. सौगन्ध उसकी जो पवित्रता के दिवास्रोत के ऊपर प्रभासित है! ईश्वर के बन्धुओं ने इस संसार की नश्वर सम्पदाओं की आशा न कभी की है न कभी करेंगे। उस एकमेव सत्य परमेश्वर ने लोगों के हृदयों को सदा अपना माना है, अपनी विशुद्ध सम्पदा और यह भी और कुछ नहीं बल्कि उसकी अपरिमेय करुणा की अभिव्यक्ति है, ताकि कदाचित् नश्वर आत्माएँ इन सांसारिक वस्तुओं, इस धूल की दुनिया से परे पावन बन सकें और अनन्तता के साम्राज्य में प्रवेश पा सकें। अन्यथा वह आदर्श सम्राट स्वयं अपने में और अपने द्वारा अपने लिए पर्याप्त है और सभी वस्तुओं से मुक्त है। न कि उसके जीवों के प्रेम उसे कोई लाभ पहुँचा सकते हैं और न ही उनके विद्वेष उसे कोई हानि पहुँचा सकते हैं। हर कोई धूल की दुनिया से निकला है और वे धूल में ही समा जाएँगे जबकि एकमेव सत्य ईश्वर - एकाकी और अकेला - अपने सिंहासन पर आसीन है, एक ऐसे सिंहासन पर जो समय और स्थान के दायरे से बाहर है, जो हर वाणी, हर अभिव्यक्ति, अनुकृति, वर्णन और परिभाषा से परे, पावन है और निम्नता तथा गरिमा की हर धारणा से परे, उदात्‍त है। और इसे उस परमात्मा और उनके सिवा और कोई नहीं जानता जिनके पास उसके ग्रन्थ का ज्ञान है। उस सर्वशक्तिमान, सर्वदयालु के सिवा और कोई परमेश्वर नहीं है।

215. तथापि सार्वभौम सम्राट की उदारता के अनुरूप यह है कि वे सभी बातों को न्याय और करुणा की दृष्टि से परखें और कुछ खास लोगों के बेबुनियाद दावों से संतुष्ट न हों। ईश्वर से हमारी याचना है कि वे महामहिम शाह को वह कार्य करने में सहायता दें जो परमात्मा को प्रिय है और, वस्तुतः, जो परमात्मा की इच्छा है वह समस्त लोकों की इच्छा होनी चाहिए।

216. बाद में इस सेवक को कुस्तुन्तुनिया (कौंस्टैंटिनोपल) बुलाया गया जहाँ हम निरीह निर्वासितों के एक छोटे-से दल के साथ पहुँचे। उसके बाद हमने किसी से भी मुलाकात करने का प्रयास नहीं किया क्योंकि हमें कोई भी निवेदन नहीं करना था और सबके समक्ष यह दर्शाने के सिवा न ही कोई मकसद था कि इस ‘सेवक’ के मन में कोई भी उपद्रवकारी विचार नहीं था और न ही हम विद्रोह भड़काने वालों के साथ थे। सौगन्ध उसकी जिसने हर किसी की जिह्वा को अपना गुणगान करने की क्षमता प्रदान की है! हालाँकि कतिपय बातों का विचार करते हुए हम किसी के समक्ष आवेदन नहीं कर सके किन्तु ऐसे कदम कुछ लोगों की सुरक्षा के लिहाज से जान-बूझकर उठाए गए। मेरा प्रभु जानता है कि मेरे मन में क्या है और वह मेरे कथन की सत्यता का साक्षी है।

217. न्यायशील राजा इस धरती पर ईश्वर की छाया है। हर किसी को चाहिए कि वह उसके न्याय की छाया तले शरण ले और उसकी कृपा की छाँह तले विश्राम करे। यह बात अपने दायरे में सीमित या विशिष्ट नहीं है कि इसे एक या दूसरे व्यक्ति तक परिसीमित किया जा सके क्योंकि छाया उसकी ओर संकेत करती है जिसने उसे स्वरूप दिया है। धन्य हो उसकी महिमा! ईश्वर ने स्वयं को समस्त लोकों का स्वामी कहा है क्योंकि उसी ने सबका पोषण किया है और अभी भी कर रहा है। अतः महिमा हो उसकी कृपा की जिसका अस्तित्व सभी वस्तुओं से पूर्व रहा है और उसकी करुणा समस्त लोकों के पार तक जाती है।

218. यह स्पष्ट है कि इस प्रभुधर्म को लोग अच्छा समझें या बुरा, किन्तु जो कोई भी इसके नाम के साथ जुड़े हुए हैं उन्होंने सत्य समझ कर ही इसका दामन थामा है और ईश्वरीय सम्पदाओं को ग्रहण करने की उत्सुकता में उन्होंने अपना सर्वस्व त्याग दिया है। उस सर्वदयालु के प्रेम के पथ पर उन्हें ऐसा ही त्याग प्रदर्शित करना चाहिए, यह स्वयं ही एक निष्ठापूर्ण प्रमाण और उनकी आस्था की सत्यता का मुखर साक्ष्य है। क्या ऐसा कभी देखा गया है कि सही निर्णय-क्षमता से सम्पन्न कोई भी व्यक्ति अकारण अपना जीवन न्योछावर कर दे? और यदि ऐसा भी कहा जाए कि इस व्यक्ति ने अपने होशो-हवास गँवा दिए हैं तो यह भी अत्यंत असंभव लगता है क्योंकि ऐसा व्यवहार कोई एक-दो लोगों द्वारा प्रदर्शित नहीं किया जा रहा बल्कि हर वर्ग के एक विशाल जनसमूह ने दिव्य ज्ञान की जीवन्त जलधारा का छक कर पान किया है और मस्त होकर वे अपने दिलो-जान से अपने प्रियतम के लिये बलिदान के पथ पर शीघ्रता से बढ़ चले हैं।

219. यदि इन आत्माओं को, जिन्होंने ईश्वर के निमित्‍त उसके सिवा सब कुछ का त्याग कर दिया है और उसके पथ पर जिन्होंने अपना जीवन और उसका सार-तत्व न्योछावर कर दिया है, झूठा करार दिया जाए तो आपके समक्ष उन अन्य लोगों के कथन की सत्यता स्थापित करने का क्या प्रमाण हो सकता है? स्वर्गीय हाजी सैयद मुहम्मद - ईश्वर उनका दर्जा ऊँचा उठाएँ और उन्हें अपनी करुणा और क्षमा के सिन्धु में निमज्जित करें! - अपने समय के एक अत्यंत विद्वान धर्माधिकारी थे और अत्यंत श्रद्धालु तथा पावन व्यक्ति। उन्हें इतना उच्च सम्मान प्राप्त था कि हर किसी की जुबान पर उनकी तारीफ रहती थी और उनकी पवित्रता और सच्चरित्रता की धाक दुनिया में हर कोई मानता था। फिर भी जब रूस के साथ शत्रुता भड़क उठी तो स्वयं उन्होंने जिन्होंने ज़ेहाद का फतवा दिया था और धर्मध्वजा उठाकर अपने धर्म के समर्थन में अपनी मातृभूमि से चल पड़े थे, एक मामूली भिड़न्त की असुविधा के बाद उन्होंने अपनी सारी नेकनीयती को तिलांजलि दे दी और वहीं लौट आए जहाँ से वे चले थे। काश कि पर्दा उठ जाता और जो आज तक लोगों की निगाह से छुपा है वह तथ्य सामने आ जाता!

220. बीस सालों से भी अधिक समय से ये लोग सार्वभौम शाह के क्रोध का शिकार बनते चले आ रहे हैं और उनकी अकृपा के प्रचंड झंझावातों द्वारा उनमें से हर किसी को अलग-अलग भूभागों में तितर-बितर कर दिया गया है। न जाने कितने बच्चों के पिता छिन गए और न जाने कितने पिताओं के बेटे! ऐसी न जाने कितनी माताएँ हैं जो डर और आतंक से अपनी उन सन्तानों का शोक भी नहीं मना सकीं जिन्हें मार डाला गया! न जाने कितने ऐसे लोग हैं जो कल शाम को अपार धन-वैभव के स्वामी थे और जो कल सुबह आने पर अधमता और दरिद्रता के रसातल में समा गए! ऐसी कोई धरती नहीं जिसकी मिट्टी उनके खून से न रंगी हो और न ही स्वर्ग का ऐसा कोई कोना जहाँ उनकी आह न पहुँची हो। सालों-साल उन पर ईश्वर के निर्णय रूपी मेघ-धाराओं से कष्टों के बाण लगातार बरसते रहे किन्तु इन तमाम संकटों और परीक्षाओं के बावजूद दिव्य प्रेम की लौ उनके दिलों में इस कदर सुलगती रही कि यदि उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े भी कर दिए जाएँ तो भी वे उसके प्रेम को कदापि तिलांजलि नहीं देंगे जो कि सभी लोकों का परम प्रियतम है, बल्कि ईश्वर के पथ पर जो कुछ भी उन पर आन पड़ेगा उसका वे दिलो-जान से स्वागत करेंगे।

221. हे राजन! सर्वदयालु की करुणा रूपी बयारों ने इन सेवकों को रूपांतरित करके रख दिया है और उन्हें उसके पावन दरबार की ओर खींच लाई हैं। ”सच्चे प्रेमी का गवाह उसकी आस्तीन के पास है।“ तथापि, सर्वदयालु के शिविर के चतुर्दिक परिक्रमा करने और सच्चे ज्ञान के अभयारण्य की तलाश करने वाले इन लोगों के बारे में बाहर से प्रतीत होने वाले कुछ विद्वानों ने युग-सम्राट के प्रखर हृदय को आंदोलित करके रख दिया है। काश कि महामहिम की विश्व-विभूषणकारी सदिच्छा से यह निर्णय निर्गत होता कि इस ‘सेवक’ को इस युग के धर्मगुरुओं के समक्ष उपस्थित होने का फरमान सुनाया जाता और महामहिम शाह की उपस्थिति में अपने प्रमाणों को प्रस्तुत करने को कहा जाता! यह ‘सेवक’ इस बात के लिए तैयार है और ईश्वर पर उसकी आशा टिकी हुई है कि ऐसी सभा बुलाई जाए ताकि तथ्यों की सत्यता को स्पष्ट किया जा सके और महामहिम शाह के सम्मुख उसे प्रकट किया जा सके। अतः आदेश देना आपकी मर्जी पर है और मैं आपके सम्प्रभु सिंहासन के समक्ष तैयार खड़ा हूँ। अतः मेरे पक्ष में या विपक्ष में अपना निर्णय करें।

222. सर्वदयालु प्रभु ने कुरान में कहा है जो कि दुनिया के सभी लोगों के लिए उसका स्थायी प्रमाण है: ”अतः, यदि तुम लोग सत्यात्मा हो तो मृत्यु की कामना करो।“ देखो कि कैसे परमात्मा ने मृत्यु की कामना को सत्य-निष्ठा की कसौटी घोषित किया है। और तुम्हारे निर्णय के प्रखर दर्पण में यह निस्संदेह स्पष्ट प्रमाणित हो चुका है कि इस युग में किन लोगों ने लोकों के परम प्रियतम के पथ पर अपने प्राण उत्सर्ग कर देने का चयन किया है। धन्य हो उस परमेश्वर की महिमा! वास्तव में, यदि इन लोगों की आस्था के समर्थन में परमात्मा के पथ पर बहाए गए रक्त से पुस्तकें लिखी जातीं तो लोग अनेक खंडों में लिखी उन पुस्तकों को देख पाते।

223. हम यह पूछना चाहेंगे कि इन लोगों पर भला कैसे दोषारोपण किया जा सकता है जिनके कार्य उनकी वाणी के अनुरूप हैं और उनके बजाय ऐसे लोगों को भला कैसे विश्वसनीय माना जा सकता है जिन्होंने अप्रतिबाधित परमेश्वर के पथ पर अपनी सांसारिक सत्‍ता का अंश मात्र भी त्यागने से इन्कार किया है? कुछ धर्मगुरुओं ने जिन्होंने इस ‘सेवक’ को विश्वासघाती करार दिया है, वे मुझसे कभी मिले भी नहीं हैं। उन्होंने न मुझे कभी देखा है और न ही मेरे मकसद का उन्हें कोई ज्ञान है, मगर फिर भी उन्होंने अपनी मर्जी से कुछ भी बोल दिया और कुछ भी कर लिया। किन्तु हर दावे के लिए प्रमाण की जरूरत होती है, केवल शब्दों और बाह्य आडंबरों की नहीं।

224. इस संदर्भ में ‘फातिमा की निगूढ़ पुस्तक’ से - ईश्वर की कृपाएँ उन पर विराजें! - फारसी जुबान में कुछ उद्धरण प्रस्तुत किए जाएँगे जो कि वर्तमान विषय-वस्तु के अनुरूप हैं, ताकि कतिपय बातें जो आज से पहले छिपी हुई थीं वे आपके समक्ष प्रकट हो सकें। उपरोक्त पुस्तक में - जिसे अब ‘निगूढ़ वचन’ कहा जाता है - जिन लोगों को सम्बोधित किया गया है वे ऐसे लोग हैं जिन्हें वैसे तो बाहरी तौर पर विद्वान और पवित्रात्मा माना जाता है लेकिन जो भीतर ही भीतर स्वार्थ और लालसा के क्रीतदास हैं।

225. उसने कहा है: हे विद्वान कहलाने वाले मूर्खो! तुम गडेरियों का वेश क्यों धारण किए हुए हो जबकि भीतर ही भीतर तुम लोलुप भेड़िए बन चुके हो और मेरे अनुयायियों पर घात लगाए बैठे हो? तुम उस तारे की तरह हो जो प्रभात के पूर्व प्रकट होता है और यद्यपि वह चमकता और जगमगाता हुआ प्रतीत होता है किन्तु वह मेरे नगर की ओर बढ़ते हुए पथिकों को भ्रम की राहों पर भटका देता है।

226. और इसी तरह वह यह कहता है: रे बाहर से भले, अन्दर से दुष्ट! तुम उस स्वच्छ किन्तु कड़वे जल के समान हो जो बाहर से स्फटिक-सा शुद्ध प्रतीत होता है, किन्तु जब दिव्य गुण के परीक्षक के द्वारा उसकी परीक्षा ली जाती है तब उसकी एक बूंद भी स्वीकार्य नहीं होती। हाँ, सूर्य-रश्मियाँ धूल और दर्पण पर समान रूप से पड़ती हैं किन्तु प्रतिबिम्बन में वे एक-दूसरे से इतने भिन्न हैं जितने कि पृथ्वी से तारे दूर हैं। बल्कि वह अन्तर इतना अधिक है कि उसे मापा और आँका नहीं जा सकता।

227. और उसने यह भी कहा है: हे लालसा के सार! अनेक सुप्रभात बेला में, स्थानरहित देश से मैं तेरे कक्ष तक आया और तुझे अपनी शैय्या पर निश्चिंततापूर्वक मेरे अतिरिक्त किसी अन्य के साथ लिप्त अवस्था में पाया। तत्काल ही, चेतना की झलक के समान, मैं स्वर्गिक महिमा के लोक में लौट आया और अपनी शस्य-शरणस्थली में पावनता के सहचरों के समक्ष इसकी चर्चा भी नहीं की।

228. और वह पुनः यह कहता है: हे संसार के बंधुआ दासो! अनेक प्रभातों में मेरी प्रेमपूर्ण कृपालुता की बयार तेरे ऊपर से होकर बही है और तुझे लापरवाही की शैय्या पर प्रगाढ़ निद्रा में निमग्न पाया है। तेरे हाल पर विलाप करती हुई वह वहीं लौट आई है जहाँ से उसका आगमन हुआ था।

229. अतः, एक राजा के न्याय का तकाजा है कि वह केवल दावा करने वाले की बात पर ही ध्यान न दे। कुरान में परमात्मा का एक वचन है जो कि सत्य को भ्रम से अलग करने वाला एक अचूक तराजू है: ”हे आस्था रखने वाले! यदि कोई दुष्ट व्यक्ति तुम्हारे पास कोई खबर लेकर आए तो तुरन्त उसका समाधान करो ताकि अपनी अज्ञानता के कारण तुम दूसरों का नुकसान न कर दो और बाद में अपनी करनी पर पछताओ।“ पवित्र परम्पराओं में भी यह चेतावनी दी गई है: ”अफसाने गढ़ने वालों पर यकीन मत करो।“ कतिपय धर्मगुरुओं ने, जिन्होंने मुझे कभी देखा भी नहीं है, हमारे धर्म की प्रकृति को गलत समझ रखा है। लेकिन जिन्होंने हमसे मुलाकात की है वे इस बात का साक्ष्य देंगे कि इस ‘सेवक’ ने ऐसा कुछ भी नहीं कहा है सिवाय उसके जो कि ईश्वर के ग्रंथ में उसके द्वारा आदेशित है, और उसने इस आशीर्वादित श्लोक की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया है - ”क्या तुम सिर्फ इसलिए मुझे अस्वीकार नहीं करते क्योंकि हमने ईश्वर में विश्वास किया है, और जो कुछ हमारे पास उसने भेजा है उसमें, और उन बातों में जो उस परमात्मा ने पहले के समय में हमारे पास भेजी थी?“

230. हे युग-सम्राट! इन शरणार्थियों की निगाहें उस परम कृपालु की ओर उन्मुख और उसकी दया पर टिकी हुई हैं। इस बात में कोई सन्देह नहीं कि परीक्षा की इन घड़ियों के बाद सर्वोच्च करुणा की बौछारें भी होंगी और इन घोर मुसीबतों के बाद अपार समृद्धि का आगमन होगा। तथापि हम यह आशा करेंगे कि महामहिम शाह स्वयं ही इन बातों की परीक्षा करेंगे और लोगों के दिलों में आशाओं का संचार करेंगे। हमने जो कुछ भी महामहिम के समक्ष प्रस्तुत किया है वह आपके सर्वोत्‍तम कल्याण के लिए है। और, वस्तुतः, ईश्वर मेरा पर्याप्त साक्षी है।

231. हे प्रभो, मेरे परमेश्वर! धन्य हो तुम! मैं साक्षी देता हूँ कि शाह का हृदय वस्तुतः तुम्हारी सामर्थ्‍य की उंगलियों के बीच में है। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो उसे, हे मेरे ईश्वर! दया और उदारता की दिशा में उन्मुख कर दो। तुम, वस्तुतः, सर्वशक्तिमान हो, परम उदार। तुझ सर्वमहिमामय के सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, वह जिसकी सहायता की याचना सभी करते हैं।

232. किसी भी विद्वान व्यक्ति की आवश्यक योग्यताओं के संदर्भ में उसने यह कहा है कि ”विद्वानों में से जो कोई भी अपने स्वार्थ से अपना बचाव करता है, अपने धर्म की रक्षा करता है, अपनी लालसाओं को रोकता है और अपने प्रभु की आज्ञा का पालन करता है, सामान्य लोगों का कर्तव्‍य है कि वे उसी के अनुरूप अपने जीवन को ढालें.....।“ यदि युग-सम्राट इस वाणी पर ध्यान दें जो कि उसकी जिह्वा से निकली है जो ‘सर्वदयालु प्रभु के प्रकटीकरण का दिवास्रोत’ है तो वे यह समझ जाएँगे कि जो कोई भी इस पवित्र परम्परा में वर्णित गुणों से विभूषित हैं वे लोग पारसमणि से भी अधिक दुर्लभ हैं। अतः हर दावा करने वालों पर यकीन नहीं किया जा सकता।

233. और पुनः, परवर्ती युगों के धर्मगुरुओं के सम्बंध में उसने कहा है: ”उस आगामी युग के धर्म-मनीषी स्वर्ग की छाया तले अत्यंत दुष्ट धर्मगुरुओं में से एक होंगे। उन्हीं से उपद्रवों का जन्म हुआ है और यह उन्हीं के पास लौट जाएगा।“ और उसने पुनः यह कहा है: ”जब सत्य की ध्वजा को प्रकट किया जाएगा तो पूरब और पश्चिम के लोग उसे शाप देंगे।“ यदि कोई व्यक्ति इन परम्पराओं के बारे में विवाद करेगा तो यह ‘सेवक’ उनकी सत्यता स्थापित करने का दायित्व स्वीकार करेगा क्योंकि संक्षिप्तता को ध्यान में रखते हुए यहाँ पर उनका विस्तृत विवरण छोड़ दिया गया है।

234. जिन धर्मगुरुओं ने वास्तव में त्याग की मदिरा का पान किया है उन्होंने इस ‘सेवक’ के कार्य में कभी हस्तक्षेप नहीं किया। उदाहरण के लिए, शेख मुर्तजा - ईश्वर उनका रुतबा बढ़ाएँ और अपने वितान तले विश्रान्ति प्रदान करें! - हमारी इराक यात्रा के दौरान हम पर अपनी दया ही दर्शाते हैं और इस धर्म के बारे में उन्होंने दिव्य अनुमति के सिवा अन्य किसी तरह की बात नहीं कही। ईश्वर से हमारी याचना है कि वह हर किसी को उदारतापूर्वक अपनी इच्छा को पूरा करने में सहायता दे।

235. परन्तु अब तो सभी ने अन्य बातों का विचार करना ही छोड़ दिया है और इन लोगों को उत्पीड़ित करने पर तुल आए हैं। अतः यदि उन कतिपय लोगों से, जो ईश्वर की करुणा से आपकी राजसी कृपा की छाँह तले विश्रान्ति पा रहे हैं और अनन्त कृपाओं के पात्र बने हुए हैं, यह पूछा जाए कि ”इन राजसी कृपाओं के बदले तुमने क्या सेवाएँ प्रदान की हैं? क्या तुमने अपनी विवेकपूर्ण नीति से इस साम्राज्य में किसी और राज्य को जोड़ा है? क्या तुमने अपने आप को ऐसे कार्यों में लगाया है जिनसे लोगों का कल्याण सुनिश्चित हो सके, साम्राज्य की सुख-समृद्धि बढ़े और उसकी गरिमा की असीम शोभा बढ़े?“ तो उनके पास इसके सिवाय और कोई उत्‍तर न होगा कि वे सही या गलत तरीके से आपकी शाही उपस्थिति में ‘बाबी’ नामक लोगों के एक समुदाय का हवाला दें और फिर जनसमूह की हत्या और लूटपाट के कार्य में लिप्त हो जाएँ। उदाहरण के लिए, तबरीज में तथा मिस्र देश के एक शहर मंसूरिया में, ऐसे अनेक लोगों को बंधक बनाकर रखा गया था और उनसे काफी धन छीना गया था और फिर भी आपके दरबार में इन बातों का कोई जिक्र भी नहीं किया गया।

236. इन सभी घटनाओं के घटित होने का कारण यह रहा है कि उन पर यातना का चक्र चलाने वालों ने यह देखा कि इन अभागे लोगों की रक्षा करने वाला कोई नहीं है। इसलिए ज्यादा महत्वपूर्ण बातों को भुलाकर वे इन लोगों को उत्पीड़ित करने में ही जुट गए हैं। आपके साम्राज्य की छत्रछाया में अनेक मत एवं विश्वास शांतिपूर्वक पनप रहे हैं। इन लोगों को भी उन्हीं में शुमार समझा जाए। नहीं, बल्कि वे लोग जो शाह की सेवा में निरत हैं, उनका हृदय तो ऐसे महान उद्देश्यों और उच्च इरादों से अनुप्राणित होना चाहिए कि वे सतत् रूप से समस्त धर्मों को आपकी छत्रछाया में लाने के लिए प्रयत्नशील हों और पूर्ण न्याय के साथ उन पर शासन करें।

237. ईश्वर के नियमों को लागू करना न्याय के सिवा और कुछ नहीं है और यह विश्वव्यापी संतुष्टि का स्रोत है। बल्कि इससे भी बढ़कर, ईश्वरीय नियम सदा से मानवजाति के संरक्षण के माध्यम और साधन रहे हैं और सदा रहेंगे, जैसाकि उस प्रभु के उदात्‍त शब्दों से प्रमाणित होता है: ”हे अंतर्दृष्टि से सम्पन्न लोगो! दंड में तुझे जीवन मिलेगा।“ लेकिन महामहिम के न्याय के लिए यह युक्तिसंगत नहीं होगा कि किसी एक व्यक्ति द्वारा नियम का अतिक्रमण किए जाने के कारण लोगों की एक पूरी टोली को आपका कोपभाजन बनना पड़े। उस एकमेव सत्य परमेश्वर ने - धन्य हो नाम उसका! ने कहा है: ”कोई भी व्यक्ति दूसरे का भार नहीं ढोएगा।“ यह स्पष्ट और प्रमाणित है कि प्रत्येक समुदाय में ज्ञानी और अज्ञानी, विवेकी और असावधान, भ्रष्ट और पवित्र, दोनों ही तरह के लोग रहते आए हैं और रहते रहेंगे। इस बात की सम्भावना बड़ी क्षीण है कि विवेकी और विचारवान व्यक्ति कोई घृणित काम करेगा, क्योंकि ऐसे व्यक्ति के मन में या तो इस संसार की कामना है या उसने यह लालसा त्याग दी है: यदि उसने लालसा त्याग दी है तो निस्संदेह ईश्वर के सिवा उसके मन में और किसी चीज का विचार नहीं होगा और फिर ईश्वर का भय उसे किसी भी ऐसे कार्य को करने से रोक देगा जो सही और विधि-सम्मत नहीं होगा। और यदि वह पहली किस्म के लोगों में से होगा तो ऐसे कार्यों से वह परहेज करेगा जिससे लोगों में भय हो और वे अलग-थलग हो जाएँ और वे लोगों का विश्वास जीतने का प्रयास करेंगे। अतः यह स्पष्ट है कि घृणित कार्य हमेशा ऐसे ही लोग करते आए हैं और आगे भी करेंगे जो अज्ञानी और मूर्ख होंगे। ईश्वर से हमारी याचना है कि वह अपने सेवकों को अपने सिवा अन्य किसी भी ओर उन्मुख होने से रक्षा करे और उन्हें अपने सामीप्य के दरबार की ओर आकर्षित करे। वस्तुतः, उसकी शक्ति हर वस्तु के समतुल्य है।

238. गुणगान हो तुम्हारा, हे प्रभो, मेरे परमेश्वर! तू सुन रहा है मेरे विलाप की आवाज, और देख रहा है मेरी दशा, मेरे संकट और उत्पीड़न। तू मेरे अन्दर की हर बात जानता है। मैंने जो आह्वान किया है यदि वह पूर्णतः तेरे निमित्‍त है तो उसके द्वारा तू अपने रचित जीवों के हृदयों को अपने ज्ञान के स्वर्ग की ओर आकर्षित कर और अपने सम्राट के हृदय को अपने सर्वदयालु नाम के सिंहासन की दाहिनी भुजा की ओर। और उसे, हे मेरे ईश्वर! अपनी शुभ आजीविका का अंश प्रदान कर जो कि तेरी उदारता के स्वर्ग और तेरी करुणा के मेघ से अवतरित होता है, ताकि वह सब कुछ त्याग कर तेरी कृपा के दरबार की ओर उन्मुख हो सके। हे परमेश्वर! उसे अपने धर्म की सहायता करने और तेरी सृष्टि के बीच तेरी वाणी को गौरवान्वित करने में मदद दे। फिर उसे दृश्य और अदृश्य देवदूतों के समूह द्वारा सबल बना ताकि तेरे नाम से वह हर नगर को अपने अधीन ला सके और तेरी सम्प्रभुता तथा शक्ति के सहारे धरती के सभी निवासियों पर राज कर सके, हे तू जिसके हाथ में है साम्राज्य इस सम्पूर्ण सृष्टि का! सत्य ही, तू आदि और अंत दोनों में ही सर्वोच्च नियंता है। तुझ परम शक्तिशाली, सर्वगरिमामय, सर्वप्रज्ञ के सिवा और कोई ईश्वर नहीं है।

239. आपकी शाही उपस्थिति में हमारे प्रभुधर्म को ऐसे नितान्त गलत ढंग से पेश किया गया है कि यदि इसके किसी एक व्यक्ति द्वारा भी कोई अशोभनीय कार्य किया गया हो तो उसका चित्रण ऐसे किया जाता है मानों यह इस धर्म के प्रति उसकी आस्था का ही परिणाम हो। सौगन्ध उसकी जिसके सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है! इस ‘सेवक’ ने निंदनीय कार्यों को करने के लिए कभी भी अपनी स्वीकृति नहीं प्रदान की है, तो फिर वह ऐसे कार्यों की अनुमति कैसे दे सकता है जिनका ईश्वरीय ग्रंथ में निषेध किया गया है?

240. ईश्वर ने लोगों के लिए मद्यपान करने का निषेध किया है, और यह निषेध उसके ग्रंथ में प्रकटित और अंकित है। इसके बावजूद और इस युग के विद्वजनों - ईश्वर उनकी संख्या बढ़ाएँ - द्वारा लोगों को ऐसा घृणित काम करने से मना किए जाने के बाद भी, अभी भी ऐसे लोग हैं जो ऐसा करते हैं। लेकिन इस कार्य के कारण जिस दंड का प्रावधान है उसका पात्र सिर्फ उन्हीं असावधान लोगों को बनाया जाता है जो ऐसा करते हैं जबकि ऐसे लोग जो कि सर्वोच्च पावनता के प्रकट स्वरूप हैं सभी दोषारोपणों से मुक्त माने जाते हैं। हाँ, बल्कि दृश्य और अदृश्य सम्पूर्ण सृष्टि उनकी पवित्रता की साक्षी होती है।

241. हाँ, ये सेवक एकमेव सत्य ईश्वर को वह मानते हैं जो कि ”अपनी इच्छानुसार कार्य करता है“ और ”जैसा चाहता है वैसा आदेशित करता है।“ अतः वे इस नाशवान संसार में उस ‘परमेश्वर की एकता के प्रकटावतारों’ के सतत् अवतरण को असंभव मानकर नहीं चलते। यदि कोई इस मान्यता में विश्वास नहीं रखता तो वह भला उन लोगों से भिन्न कैसे है जो यह मानते हैं कि ईश्वर के हाथ ”बँध चुके“ हैं? और यदि उस एकमेव सत्य ईश्वर को - धन्य हो उसका उल्लेख! वस्तुतः अप्रतिबंधित माना जाए तो वह ‘पुरातन सम्राट’ अपनी आज्ञा के स्रोत से जिस किसी भी धर्म को प्रकट करना चाहे उसे हर किसी द्वारा स्वीकार किया जाना चाहिए। किसी के लिए इससे बचने का कोई रास्ता नहीं और ईश्वर के सिवा उसके पास और कोई पनाह नहीं। उस परमात्मा के सिवा किसी भी मनुष्य के पास और कोई संरक्षण नहीं और उसके सिवा कोई शरण नहीं।

242. अपना दावा पेश करने वालों के लिए अनिवार्य यह है कि वह अपने कथनों की पुष्टि में स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करे। इसके आगे लोगों की अस्वीकृति - चाहे वे विद्वान लोग हों या मूर्ख - का कोई अर्थ न कभी रहा है न कभी रहेगा। ईश्वर के अवतार - जो कि दिव्य एकता के महासिन्धु के वे मोती तथा ईश्वरीय प्रकटीकरण के कोषागार हैं - सदा से ही लोगों की अस्वीकृति और अपनिन्दा के पात्र बनते आए हैं। यहाँ तक कि उस परमात्मा का भी यही वचन है: ”प्रत्येक राष्ट्र ने अपने ईश्वरीय संदेशवाहक पर अपनी हिंसक पकड़ बनाने के लिए उसके विरूद्ध कुचक्र रचे हैं और सत्य को अमान्य करने के लिए बेकार के शब्दों में उनसे तकरार किया है।“ और पुनः - ”ऐसा कोई संदेशवाहक उनके पास नहीं आया जिसकी उन्होंने खिल्ली नहीं उड़ाई हो।“

243. जरा उसके अवतरण पर विचार करो जो ‘ईश्वरीय संदेशवाहकों की मुहर’ और ‘चुने हुए लोगों का सम्राट’ है - समस्त मानवजाति की आत्मा उस पर न्योछावर हो! जब सत्य का सूर्य हिजाज के क्षितिज पर चमक उठा तो उस सर्वमहिमामय परमात्मा के अतुल्य प्रकटावतार पर भ्रम के व्याख्याकारों ने कितने निर्दय अत्याचार किए! इतने भ्रमित थे वे लोग कि उस पवित्र आत्मा पर ढाए गए हर जुल्म को उन्होंने महानतम कार्य का दर्जा दिया और परमोच्च परमात्मा तक पहुँचने का एक साधन समझ लिया। उसके मिशन के आरम्भिक वर्षों में उस युग के धर्माधिकारियों ने - ईसाई और यहूदी दोनों ने ही - गरिमा के स्वर्ग के उस सूर्य से मुँह मोड़ लिया और बड़े और छोटे सभी लोग आभ्यंतरिक अर्थों के क्षितिज पर प्रभासित उस नक्षत्र की ज्योति बुझाने उमड़ पड़े। अतीत के ग्रंथों में इन धर्माधिकारियों के नामों का उल्लेख किया गया है और ऐसे ही कुछ ग्रंथ हैं वहब इब्न-ए-राहिब, कब इब्न-ए-अशरफ, अब्दुल्लाही-उबय्य और ऐसे ही अन्य ग्रंथ।

244. अंततः, बात यहाँ तक पहुँच गई कि इन लोगों ने आपस में सलाह-मशविरा किया और उन्होंने उसकी हत्या करने की साजिश रची, परमात्मा - धन्य हो उसका उल्लेख! - के इस वचन के बावजूद कि ”और याद रखो जब नास्तिकों ने तुम्हारे खिलाफ कुचक्र रचा ताकि वे तुम्हें अपना ग्रास बना सकें, या तुम्हारी जान ले सकें, या तुम्हें निर्वासित कर सकें और इसीलिए उन्होंने अपना कुचक्र चलाया, और ईश्वर ने भी अपना चक्र चलाया और, वस्तुतः, चक्र चलाने वालों में ईश्वर से बढ़कर कोई नहीं।“ और उसने पुनः यह भी कहा है: ”लेकिन यदि उनका विरोध तेरे लिए गंभीर रूप धारण कर ले और यदि तुम्हें न धरती में कोई सुराख मिले और न स्वर्ग के लिए कोई सीढ़ी और न ही तुम उनके समक्ष कोई संकेत प्रस्तुत कर सको परन्तु फिर भी यदि ईश्वर की मर्जी होगी तो वह उन्हें सच्चे मार्गदर्शन के पथ पर एकत्रित करेगा। अतः तुम अज्ञानियों में से मत बनना।” ईश्वर की सौगन्ध! प्रभु के कृपा-प्राप्त जनों के हृदय इन दोनों ही आशीर्वादित श्लोकों के अर्थ पर बलिहारी हैं। ऐसे सुसंस्थापित और निर्विवाद तथ्यों को भुला दिया गया है और अतीत अथवा वर्तमान युग में कोई भी उन बातों पर विचार करने नहीं रुका जिन्होंने उन्हें ‘ईश्वरीय प्रकाश के प्रकटकर्ताओं’ के प्रकटीकरण के समय उनसे विमुख होने को उकसाया है।

245. इसी तरह, उसके अवतरण के पूर्व जो कि ”ईश्वरीय संदेशवाहकों की मुहर है“, मरियम के पुत्र यीशु (जीसस) के बारे में विचार करो। जब सर्वदयालु के उस प्रकटावतार ने स्वयं को प्रकट किया तो सभी धर्माधिकारियों ने निष्ठा के उस सार-तत्व को अपवित्र और विद्रोही करार दिया। अंत में, उस समय के सबसे ज्ञानी धर्माधिकारियों, अन्नाओं और सर्वोच्च पुरोहित, कायफाओं की स्वीकृति से उस आशीर्वादित व्यक्ति को ऐसी यातनाओं का पात्र बनाया गया जिनका उल्लेख करते हुए मेरी लेखनी शर्मिन्दा और जिनका वर्णन करने में वह अक्षम है। अपनी समग्र विशालता के बावजूद यह विस्तृत संसार उसे अपने पास न रख सका और एक दिन परमात्मा ने उसे स्वर्ग की ओर बुला लिया।

246. यदि यहाँ पर सभी ईश्वरावतारों के बारे में विस्तृत विवरण दिए जाएँ तो हमें डर है कि यह एक बोझिल कर देने वाला विषय हो जाएगा। खास तौर पर ‘टोराह’ के विद्वानों का कहना है कि हजरत मूसा के बाद कोई भी नया पैगम्बर नए कानून के साथ नहीं आएगा। उनका कहना यह है कि डेविड (दाऊद) के घराने की कोई ‘शाखा’ प्रकट की जाएगी जिसके द्वारा ‘टोराह’ के विधानों की घोषणा की जाएगी और पूरब तथा पश्चिम के समस्त भूभाग में उसकी आज्ञाओं को संस्थापित और लागू करने में सहायता प्राप्त होगी।

247. इसी तरह ‘गॉस्पेल’ के अनुयायी यह असम्भव मानकर चलते हैं कि मरियम-पुत्र यीशु (जीसस) - उन पर शांति विराजे! के बाद ईश्वरीय इच्छा के दिवास्रोत से किसी नए धर्म-प्रकटीकरण के धारक का पुनः उदय होगा। इस वादे के समर्थन में वे ”गॉस्पेल“ के निम्नांकित श्लोक का हवाला देते हैं: ”स्वर्ग और धरती समाप्त हो जाएँगे लेकिन ‘मानव-पुत्र’ की वाणी कभी समाप्त नहीं होगी।“ वे यह कहते हैं कि यीशु - उन पर शांति विराजे! की शिक्षाएँ और उनकी आज्ञाएँ कभी परिवर्तित नहीं होंगी।

248. ”गॉस्पेल“ में एक जगह उसने यह कहा है: ”मैं जाता हूँ और फिर लौटकर आऊँगा।“ पुनः जॉन की ईशवाणी में उसने एक ‘शांतिदायक’ के आगमन की पूर्वघोषणा की है जिसका पदार्पण उनके बाद होगा। और फिर लूके की ईशवाणी में अनेक संकेतों और लक्षणों का उल्लेख किया गया है। परन्तु उस धर्म के कई धर्मगुरुओं ने अपनी कल्पनानुसार इन श्लोकों की व्याख्या की है और इस तरह वे उनके वास्तविक महत्व को समझने में नाकाम रहे हैं।

249. हे शाह! काश कि तुम मुझे इजाजत देते कि मैं तुम्हारे पास वह भेज पाता जिससे आँखें आनन्द-विह्वल हो उठेंगी, आत्माएँ प्रशंसित होंगी और हर विवेकपूर्ण व्यक्ति यह मान सकेगा कि ‘उसके’ पास ईश्वरीय ग्रंथ का ज्ञान है। अपने विरोधियों द्वारा उठाई गई आपत्तियों का उत्‍तर देने में असमर्थ कुछ लोग यह दावा करते हैं कि ‘टोराह’ और ‘गॉस्पेल’ भ्रष्ट हो चुके हैं जबकि सच्चाई यह है कि इस भ्रष्टता का सम्बंध केवल कुछ मामलों से ही है। मूर्खों की अस्वीकृति और धर्मगुरुओं की उपेक्षा की बात छोड़ दें तो मैं ऐसा व्याख्यान दे सकता था जो लोगों के हृदयों को आनन्दित करके उन्हें एक ऐसे लोक में ले जाता जिसकी हवाओं की सरसराहटों से यह सुनाई पड़ता - ’उसके सिवा अन्य कोई परमेश्वर नहीं है’। लेकिन फिलहाल उपयुक्त समय न होने के कारण, मेरी वाणी की जिह्वा ठहर गई है और व्याख्या की मदिरा को तब तक के लिए सीलबंद कर दिया गया है जब तक कि ईश्वर अपनी सामर्थ्‍य की ताकत से उसे विमुक्त नहीं कर देगा। वह, वस्तुतः, सर्वशक्तिमान है, परम सामर्थ्‍यवान!

250. गुणगान हो तेरा, हे प्रभो, मेरे परमेश्वर! मैं तेरे उस नाम पर याचना करता हूँ जिसके माध्यम से तूने आकाश और धरती के सभी निवासियों को नतमस्तक किया है, कि अपनी सर्वशक्तिमानता और उदार कृपा के दायरे में तू अपने धर्म-प्रदीप की रक्षा कर ताकि यह उन लोगों की अस्वीकृतियों के विस्फोट के सामने उजागर न हो जो तुझ अप्रतिबाधित के नाम के रहस्यों के प्रति असावधान बने रहते हैं। अतः, अपने विवेक के स्नेह से तू इसके प्रकाश की दीप्ति बढ़ा। वस्तुतः, तेरी शक्ति अपनी धरती और अपने स्वर्ग के सभी निवासियों पर है।

251. हे मेरे ईश्वर! मैं तेरे उस परम उदात्‍त शब्द के नाम पर तुझसे याचना करता हूँ जिससे आकाश और धरती के सभी निवासियों के हृदयों में आतंक मच गया है, सिवाय उनके जिन्होंने तेरे ‘सुनिश्चित सहारे’ का दामन थाम लिया है, कि मुझे तू अपने रचित जीवों के बीच अकेला न छोड़। अतः तू मुझे स्वयं तक ऊपर उठा, मुझे अपनी करुणा की छाँह तले प्रवेश करने दे और मुझे तू अपनी कल्याणमय व्यवस्था की विशुद्ध मदिरा का पान करने दे ताकि मैं तेरी गरिमा के वितान और तेरी कृपा के चंदोवे के नीचे निवास कर सकूँ। वस्तुतः, तू ही संकटों में सहायक, स्वयंजीवी।

252. हे राजन! न्याय के प्रदीप बुझा दिए गए हैं, और हर ओर अन्याय की अग्नि कुछ ऐसे दहक उठी है कि मेरे लोग कैदी के रूप में जावरा से मोसुल ले जाए जा रहे हैं जो हजबा के नाम से मशहूर है। प्रभु के पथ पर यह कोई पहला अवसर नहीं है जबकि ये लोग इस तरह के कोप के भाजन बने हैं। हर व्यक्ति के लिए उचित है कि वह इस बात पर विचार करे और यह याद करे कि जब पैगम्बर के प्रियजनों को लोगों ने कैद करके दमिश्क (फायहा के नाम से प्रसिद्ध) लाया था तो उन पर क्या बीती थी। उनके बीच ईश्वर के आराधकों का राजकुमार भी था - वह ईश्वर जो अपने निकट आने वालों का मुख्य सहारा और अपनी उपस्थिति की कामना करने वालों का अभयारण्य है। हर किसी की जिन्दगी उस पर कुरबान जाए!

253. उनसे पूछा गया: ”क्या तुम अलगाववादियों के समूह में हो?“ तो उसने जवाब दिया: ”ईश्वर की सौगन्ध! हरगिज नहीं। हम तो केवल वे सेवक हैं जिसने ईश्वर और उसके श्लोकों में विश्वास किया है। हमारे माध्यम से प्रभुधर्म की मुखमुद्रा ने आनन्द से अपनी कांति बिखेरी है। हमारे माध्यम से उस सर्वदयालु का संकेत जगमगाया है। हमारे नामों के उल्लेख से बाथा की मरुभूमि जल से आप्लावित हो उठी है तथा आकाश और धरती को अलग करने वाला अंधकार मिट गया है।“

254. फिर उनसे यह पूछा गया कि ”ईश्वर ने जिसे विधि-सम्मत बनाया है क्या तुमने उनका निषेध किया है अथवा उन बातों की अनुमति दी है जिनका ईश्वर ने निषेध किया है?’’ तो उसने उत्‍तर दिया कि ”दिव्य आज्ञाओं का पालन करने वाले लोगों में हम प्रथम थे।“ उसने कहा कि ”हम उसके धर्म के मूल और उद्गम हैं, समस्त शुभ पदार्थों के आदि और उसके अंत। हम उस ‘दिवसाधिक प्राचीन’ प्रभु के संकेत हैं और राष्ट्रों के बीच उसके स्मरण के स्रोत।“

255. उनसे यह पूछा गया कि ”क्या तुमने कुरान को त्याग दिया है?“ उसने कहा कि ”उस सर्वदयालु ने उस ग्रंथ को हमारे ही गृह में प्रकट किया था। हम उसके सृजित जीवों के बीच उस सर्व-गरिमामय परमेश्वर की मृदुल बयारें हैं। हम उस परम महासागर से निकली धाराएँ हैं, हम वे हैं जिनके माध्यम से ईश्वर ने इस धरती को पुनरुज्जीवित किया है, और जिसके माध्यम से इसकी मृत्यु के बाद वह पुनः इसे पुनरुज्जीवित करेगा। हमारे माध्यम से उसके संकेत प्रकट किए गए हैं, उसके प्रमाण सामने लाए गए हैं और उसके प्रतीकों को उजागर किया गया है।

256. उनसे पूछा गया: ”तुम्हें किस अपराध के लिए दंडित किया गया है?“ उसका उत्‍तर था: ”ईश्वर के प्रति हमारे प्रेम के कारण तथा ईश्वर के सिवा अन्य सभी वस्तुओं से हमारे अनासक्त होने के कारण।“

257. हमने ‘उसके’ शब्दों को यथावत प्रस्तुत नहीं किया है - शांति विराजे ‘उस’ पर! बल्कि हमने अनन्त जीवन के उस महासागर से जल लेकर जरा-से कुछ शब्दों को छिड़का है ताकि उन पर ध्यान देने वाले स्फूर्ति से भर उठें और यह जान सकें कि एक विनष्ट एवं दिग्भ्रमित पीढ़ी के हाथों ईश्वर के विश्वासपात्रों पर क्या कुछ गुजरा है! इस युग के लोगों को हम विगत युगों के आततायियों की निन्दा करते देखते हैं जबकि वे स्वयं उनसे भी बड़ी गलतियाँ कर रहे हैं और उन्हें पता ही नहीं!

258. ईश्वर मेरा साक्षी है कि मेरा उद्देश्य विद्रोह भड़काना नहीं रहा है बल्कि प्रभु के सेवकों को उन तमाम बातों से रोककर उन्हें पावन बनाना है जो उन्हें ‘उसके’ निकट आने के मार्ग में अवरोधक हैं जो कि न्याय-दिवस का स्वामी है। मैं अपनी शैय्या पर प्रगाढ़ निद्रा में निमग्न लेटा था कि तभी मेरे सर्वकृपालु स्वामी की मृदुल बयारें मेरे ऊपर से बह उठीं, मुझे मेरी निद्रा से जगा दिया और आकाश तथा धरती के बीच मुझे अपनी ध्वनि गुंजारित करने के लिए बाध्य कर दिया। यह सब कुछ मेरी ओर से नहीं बल्कि परमात्मा की ओर से है। इसके साक्षी हैं उसके राज्य-साम्राज्य के सभी निवासी तथा उसकी अनन्त गरिमा की नगरी के सभी बाशिन्दे। वह जो सत्य-स्वरूप है उसकी सौगन्ध! उसके पथ पर मुझे किसी भी यातना का डर नहीं है, न ही उसके प्रेम और सद्कृपा के मार्ग पर किसी भी कष्ट का भय। वस्तुतः, ईश्वर ने संकट को अपने हरित चारागाह की एक ओस-बिंदु के रूप में बनाया है और अपने दीपक की एक शिखा जो समस्त आकाश और धरती को प्रकाशित करती है।

259. क्या किसी व्यक्ति की सम्पदा सदा अक्षुण्ण रहेगी, या ‘उससे’ बचा सकेगी जो शीघ्र ही उसके आगे की लटों को पकड़ के उसे अपनी गिरफ्त में ले लेगा? कब्र की शिलाओं के नीचे सोए हुए, धूल-धूसरित कायाओं के बीच से क्या कोई कभी यह पहचान सकेगा कि कौन-सी खोपड़ी किसी सम्प्रभु सम्राट की है और कौन-सी चटकती हुई हड्डी किसी प्रजा की? नहीं, सौगन्ध उसकी जो सम्राटों का भी सम्राट है! क्या कोई भी स्वामी और सेवक के बीच का फर्क कर पाएगा या अपार धन-वैभव से सम्पन्न लोगों एवं ऐसे लोगों के बीच अन्तर समझ पाएगा जिनके पास सोने के लिए एक चटाई और पहनने के लिए एक जोड़ा जूता भी नहीं था? ईश्वर की सौगन्ध! हर अन्तर को मिटा दिया गया है, सिवाय उनके जिन्होंने सन्मार्ग का आश्रय लिया और जिन्होंने न्यायपूर्वक शासन किया।

260. कहाँ गए अतीत के वे ज्ञानी लोग, धर्मगुरु और शासक लोग? उनके नीर-क्षीर विवेक आज कहाँ गए, उनकी बुद्धिमत्‍ता, उनके सूक्ष्म अंतर्ज्ञान और गम्भीर घोषणाओं का क्या हश्र हुआ? कहाँ हैं आज उनके छिपे हुए खजाने, उनके आभूषणों का प्रदर्शन, उनकी स्वर्ण-रचित शैय्याएँ, उनके आलीशान गलीचे और तकिए? आज उनकी पीढ़ी का ही नामो-निशान नहीं! सब नष्ट हो चुके और ईश्वर के निर्णय के द्वारा आज एक बिखरी हुई धूल के सिवा और कुछ भी नहीं बचा है। उन्होंने जो सम्पदाएँ अर्जित की है वे आज समाप्त हो चुकी हैं, उनके कोषालय बिखर चुके हैं, उनके छुपे हुए खजाने तितर-बितर हो गए हैं। उनके परित्यक्त आश्रयों, टूटी हुई छतों वाले आवासों, उखड़े पड़े दरख़्तों और उनकी धूमिल आभाओं के सिवा अब कुछ भी नहीं दिखता। कोई भी मनुष्य धन-वैभव को ऐसा अवरोधक नहीं बनने दे सकता कि जिससे उसके चरम लक्ष्य से उसकी दृष्टि भटक जाए और कोई भी ज्ञानवान व्यक्ति धन-सम्पदा को उसकी ओर उन्मुख होने से रोकने वाला तत्व नहीं बनने दे सकता जो सबको अपने में समाहित रखने वाला और सर्वोच्च है।

261. कहाँ है वह जिसके साम्राज्य का सूरज कभी अस्त नहीं होता था, जो बड़े आडम्बर के साथ इस धरती पर रहा करता था, संसार तथा इसमें सृजित सभी वस्तुओं में विलासिताओं की तलाश करता हुआ? साँवली सैन्य टुकड़ी का सेनापति आज कहाँ है और वह जिसने सुनहरी ध्वजा फहराई थी? कहाँ है जावरा का शासक और फायहा का आततायी? कहाँ हैं वे लोग जिनकी उदारता के सामने धरती के कोषागार लाज से काँप उठे थे और जिनके हृदय की विशालता और लहराती हुई चेतना के आगे समुद्र भी लज्जित हो उठा था? कहाँ है वो जिसने विद्रोह में अपनी भुजा फड़काई थी और जिसने सर्वदयालु परमेश्वर के खिलाफ अपना हस्तलाघव दिखाया था?

262. कहाँ हैं वे लोग जो पार्थिव आनन्दों और दैहिक लालसाओं के फलों के आस्वाद को पाने के लिए निकले थे? उनकी वे अनिंद्य सुन्दरियाँ आज कहाँ गुम हो गईं? उनकी लचकती डालियाँ, उनकी विस्तारित शाखाएँ, उनके उच्च प्रासाद, उनके सुसज्जित उद्यान कहाँ गए? और क्या हुआ उन उद्यानों की खुशियों का - उनकी अनुपम भूमियों और मृदुल बयारों का, उनके फव्वारों, उनकी सनसनाती हवाओं, उनके कूजित कपोतों और सरसराते पत्‍तों का? अब कहाँ हैं उनके ज्योतिर्मय प्रभात और मुस्कान में गुम्फित उनकी दीप्तिमान मुख-मुद्राएँ? वे सब के सब नष्ट हो चुके और धूल की चादर तले चिर निद्रा में लीन हैं। अब किसी को न उनके नाम का पता, न उनकी कोई चर्चा है, किसी को न उनकी प्रेम-लीलाओं का ज्ञान है और न ही उनका कहीं कोई नामो-निशान ही बचा है।

263. क्या! तब भी लोग उस पर विवाद करेंगे जिसके साक्षी वे स्वयं हैं? जिसे वे सत्य के रूप में जानते हैं क्या वे उसी से इन्कार करेंगे? मुझे पता नहीं कि वे किस बियावान में भटक रहे हैं! क्या वे यह नहीं देख रहे कि वे एक ऐसी यात्रा पर चल पड़े हैं जहाँ से फिर उनकी वापसी नहीं होगी? पर्वत से घाटी तक, खोह से पहाड़ी तक, आखिर वे कब तक भटकते रहेंगे? ”क्या उनका समय नहीं आ चुका जो ईश्वर के उल्लेख के आगे अपने हृदय को विनत करने में विश्वास करते हैं?“ धन्य है वह जिसने कहा है या जो अब कहेगा कि ”हाँ, मेरे प्रभु की सौगन्ध! वह समय आ चुका है, वह घंटा बज चुका है।“ और जो उसके बाद स्वयं को अस्तित्व की सभी वस्तुओं से अनासक्त कर लेगा और स्वयं को सम्पूर्णतया उसके समक्ष समर्पित कर देगा जो इस ब्रह्मांड का स्वामी और सम्पूर्ण सृष्टि का प्रभु है।

264. और फिर भी क्या आशा! क्योंकि आखिर जो बोया जाता है वही तो काटा जाता है, और जो रखा जाता है वही तो उठाया जाता है, बशर्ते कि परमात्मा की कृपा और वरदान से ऐसा न हो सके। क्या इस संसार के गर्भ में अब तक कोई ऐसा भी पल है जिसे अपने सर्वगरिमामय, परम महान परमेश्वर के साम्राज्य की ऊँचाइयों तक उठने में गरिमा के आवरण बाधित नहीं करेंगे? क्या अब तक यह हमारे लिए सम्भव हो सका है कि हम ऐसे कार्य कर सकें जो हमारी पीड़ाएँ दूर कर सकें और हमें उसके निकट ला सकें जो कि कारणों का भी कारण है? ईश्वर से हमारी याचना है कि वह अपनी कृपालुता के अनुसार हमसे व्यवहार करे, अपने न्याय के आधार पर नहीं और हमें यह वरदान दे कि हम उन लोगों में से बन सकें जिन्होंने अपने मुखड़े अपने प्रभु की ओर उन्मुख किए हैं और सभी चीजों से स्वयं को अनासक्त कर लिया है।

265. हे शाह! ईश्वर के पथ पर वह सब कुछ देखा है जो न कभी किन्हीं आँखों ने देखा और न कानों ने सुना। मेरे परिचितों ने मेरी निन्दा की है और मेरे पथ पर अवरोध खड़े किए गए हैं। कल्याण का निर्झर सूख गया है और सुख-चैन के लता-मण्डप मुरझा चुके हैं। न जाने कितनी यातनाएँ मुझे दी गई हैं और आगे भी दी जाएँगी! हालाँकि मेरे पीछे साँप रेंग रहा है किन्तु मैं सिर्फ उसके मुखड़े पर अपना ध्यान केन्द्रित किए हुए आगे बढ़ रहा हूँ जो है सर्वशक्तिमान, सर्वदयामय। मेरे नयनों से इतने नीर बह चुके हैं कि मेरा बिछावन तक तरबतर हो गया है।

266. लेकिन मुझे अपने लिए दु:ख नहीं है। ईश्वर की सौगन्ध! अपने प्रभु के प्रेम के कारण मेरा सिर बरछियों से बिंध जाने को तरस रहा है। मैं कभी किसी पेड़ के पास से नहीं गुजरा लेकिन उसे सम्बोधित करते हुए मेरे हृदय ने कहा: ”काश कि मेरे नाम से तुम काट डाले जाते और मेरे प्रभु के पथ पर मेरा शरीर तेरे सहारे सूली पर लटका दिया जाता!“ क्योंकि मुझे सारे लोग दिग्भ्रमित से भटकते दिख रहे हैं और अपने मदमत्‍त प्रलाप में निमग्न। उन्होंने अपनी लालसाओं के ज्वार को बहुत ऊँचा उठा लिया है और ईश्वर से विस्मृत हो चले हैं। मुझे लगता है उन्होंने ईश्वर के धर्म को मजाक समझ रखा है और उसे खेल और मनोरंजन का माध्यम मान लिया है और तिस पर भी वे यह विश्वास करते हैं कि वे सही काम कर रहे हैं तथा सुरक्षा के दुर्ग में निश्चिंतता से निवास कर रहे हैं। परन्तु यह सब कुछ ऐसा नहीं जैसाकि वे सुखपूर्वक सोच रहे हैं। आज वे जिस बात से इन्कार करना चाहते हैं, कल उसी सच्चाई से उनका सामना होगा।

267. शक्ति और सम्पदा के गुमान में पड़े लोग बहुत ही जल्द हमें एड्रियानोपल की भूमि से निष्कासित करके अक्का शहर में भेज देंगे। जैसाकि लोग कहते हैं, यह दुनिया के सबसे वीरान शहरों में से एक है, सबसे असुन्दर, सबसे खराब जलवायु वाला और जहाँ का जल भी सबसे प्रदूषित है। लगता है यह उल्लुओं की महानगरी थी जिसके दायरे में चीख-चिल्लाहट के सिवा और कुछ भी नहीं सुना जा सकता। वहीं वे इस ‘युवा’ को कैद करके रखना चाहते हैं ताकि हमारे सामने सुख-सुविधाओं के दरवाजे हमेशा के लिए बंद किए जा सकें और हमारे जीवन के शेष दिनों में हमें हर सांसारिक लाभ से वंचित किया जा सके।

268. ईश्वर की सौगन्ध! भले ही थकान मुझे चकनाचूर कर दे, भूख मुझे लील जाए, कठोर चट्टान मेरा बिछौना बन जाए और मेरे साथी मैदानों में चरने वाले जानवर ही क्यों न हों, फिर भी मैं कोई शिकायत नहीं करूँगा बल्कि राष्ट्रों के सर्जक और अनन्त सम्राट परमेश्वर की शक्ति की सहायता से सब कुछ धैर्यपूर्वक उसी तरह सह लूँगा जैसे स्थिरता और दृढ़ता के गुणों से सम्पन्न लोगों ने सहा है और हर परिस्थिति में ईश्वर के प्रति कृतज्ञ रहूँगा। हमारी प्रार्थना है कि वह परमात्मा - गुणगान हो उसका! - अपनी कृपालुता के बल पर इस कारावास के माध्यम से उन लोगों की गर्दनों को जंजीरों और बेड़ियों से मुक्त करे और उन्हें निष्ठा भरे चेहरों के साथ अपने मुखड़े की ओर उन्मुख होने में सहायता दे - वह जो शक्तिमान है, कुपालु है। वह हर याचक की प्रार्थना का उत्‍तर देने के लिए तत्पर है और जो भी उससे वार्तालाप करते हैं वह उसके निकट है। हम उससे आगे यह भी याचना करते हैं कि वह इस घनघोर यातना को अपने धर्म-मन्दिर का कवच बनाए और तीखी तलवारों तथा नुकीले छुरों के हमलों से उसकी रक्षा करे! संकटों ने हमेशा उसके धर्म के अभ्युत्थान और उसके नाम के महिमा-मंडन में सहायता दी है। शताब्दियों से और अतीत में हमेशा ईश्वर की यही कार्य-पद्धति रही है। आज लोग जिस बात को नहीं समझ पा रहे हैं उसे वे शीघ्र ही जान जाएँगे - उस दिन जबकि उनके घोड़े ठुमक जाएँगे और उनके धारदार हथियार अपनी खोलों में बन्द हो जाएँगे, उनकी धारें भोंथरी हो जाएँगी और उनके पैर डगमगा उठेंगे।

269. पता नहीं मुझे कि ये लोग कब तक स्वार्थ और लालसा के घोड़ों पर सवार होकर कुलाचें भरते रहेंगे और भ्रम तथा लापरवाही के बियावान में भटकते रहेंगे! क्या कभी भी किसी ताकतवर की शान-शौकत और अपमानित की दुर्दशा सदा रही है? वह जो कि आज प्रतिष्ठा के सर्वोच्च आसन पर विराजमान है, जिसने शक्ति और गरिमा के शिखरों को छू लिया है, वहाँ सदैव टिका रहेगा? नहीं, मेरे सर्वदयालु प्रभु की सौगन्ध! धरती की हर चीज गुजर जाएगी और केवल मेरे उस सर्वगरिमामय, परम कृपालु स्वामी का मुखड़ा विद्यमान रहेगा।

270. विनाश के तीरों ने भला किस कवच को नहीं भेदा है और नियति के हाथों ने किस राजसी भृकुटि का मान-मर्दन नहीं किया है? मृत्यु के दूत के आगमन को भला कौन-सा दुर्ग रोक पाया है? वह कौन-सा सिंहासन है जिसके टुकड़े-टुकड़े नहीं हो गए, कौन-सा महल जो खंडहर में नहीं बदल गया? केवल वे लोग जिन्होंने अपने सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ प्रभु की करुणा की विशुद्ध मदिरा का पान किया है - जो कि इस संसार से परे उनके लिए संरक्षित रखी गई है - आलोचनाओं में निरत नहीं होंगे और केवल इस ‘युवा’ की सद्कृपा पाने के लिए सचेष्ट होंगे। परन्तु अभी उन्होंने अंधकार के उस आवरण में मुझे छुपा दिया है जिसका ताना-बाना उन्होंने अपने व्यर्थ ख्यालों और निरर्थक कल्पनाओं के हाथों से बुना है। बहुत ही जल्द ईश्वर के हिमधवल हाथ इस रात के अंधेरे को चीर देंगे और अपनी ‘नगरी’ के लिए एक विशाल द्वार खोल देंगे। उस दिन दल के दल उस नगरी में प्रवेश करेंगे और वे वही बातें बोलेंगे जो दोषारोपण करने वाले इन लोगों ने पहले कभी उचारे थे, ताकि अंत में उसे उजागर किया जा सकेगा जो आदि में भी प्रकट हुआ था।

271. रकाब पर एक पाँव रखे हुए भी क्या वे यहाँ जरा रुकने की कामना लिए बैठे हैं? एक बार चल पड़ने के बाद क्या उन्हें लौटने की लालसा है? नहीं, सौगन्ध उसकी जो स्वामियों का भी स्वामी है! न्याय-दिवस को छोड़कर वे ऐसा कभी नहीं कर सकते, वह दिवस जब लोग अपनी कब्रों से जाग उठेंगे और उनसे उनके कर्मों का हिसाब पूछा जाएगा। धन्य है वह जो उस दिन अपने भार से झुका नहीं होगा - उस दिन जबकि पहाड़ चलायमान होंगे और परम महान परमेश्वर के सम्मुख सवालों का जवाब देने एकत्रित होंगे। दंड देने में वह, वस्तुतः, अत्यंत कठोर है।

272. ईश्वर से हमारी प्रार्थना है कि वह कतिपय धर्मगुरुओं के हृदयों को वैमनस्य और शत्रुता से मुक्त और पावन बना दे ताकि वे किसी भी विषय पर घृणा से अलग हटकर अपनी दृष्टि डाल सकें। ईश्वर उन्हें ऐसी उच्चता तक ले जाएँ कि न ही इस संसार के आकर्षण और न अधिकार का लालच ही उन्हें सर्वोच्च क्षितिज की ओर निहारने से रोक सकें और न इस संसार के लाभ तथा वासनाएँ उन्हें उस ‘दिवस’ तक पहुँचने में बाधा डाल सकें जब पर्वत खाक में बदल जाएँगे। हालाँकि आज वे हम पर टूट पड़ी विपत्तियों को देखकर खुश हो सकते हैं किन्तु शीघ्र ही वह दिन आएगा जब वे रोएँगे, विलाप करेंगे। मेरे प्रभु की सौगन्ध! यदि मुझे एक ओर अपार धन-सम्पदा, आराम और सुख-सुविधा, गौरव और प्रतिष्ठा तथा दूसरी ओर उन कष्टों और मुसीबतों के बीच चयन करने को कहा जाता जो कि मेरी नियति में हैं, तो मैं बेहिचक अपनी इस वर्तमान दशा को चुनता और अस्तित्व के संसार की तमाम वस्तुओं के बदले इन संकटों के एक कण का भी सौदा नहीं करता।

273. ईश्वर के पथ पर जो संकट मुझ पर आन पड़े हैं उनके बिना मेरे जीवन में तो कोई मधुरता ही न होती और मेरे अस्तित्व से मुझे कोई लाभ न मिलता। जो बोध-सम्पन्न लोग हैं और जिनकी दृष्टि ‘उदात्‍त दर्शन’ पर टिकी हुई है, उनके लिए यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि अपने जीवन के अधिकांश दिनों में एक गुलाम की तरह मैं धागे से टँगी हुई तलवार के तले बैठा रहा, इस बात से अनजान कि वह तलवार मुझ पर अब गिरेगी या कब। और यह सब कुछ जानते हुए भी हम लोकों के स्वामी ईश्वर के प्रति कृतज्ञ हैं और सदासर्वदा और सभी परिस्थितियों में उसका गुणगान करते हैं। वस्तुतः, वह सभी बातों का साक्षी है।

274. ईश्वर से हमारी याचना है कि वह सब पर अपनी छाँह का विस्तार करें ताकि सच्चे अनुयायी शीघ्रतापूर्वक उस ओर बढ़ चलें और उसके निष्‍ठावान प्रेमी उसकी छाया तले शरण पा सकें। वह परमात्मा अपनी करुणा के लता-मंडपों से लोगों के जीवन में बहार ला दे और अपनी कल्याण भावना के क्षितिज से उन पर तारे बिखेर दे। और फिर, ईश्वर से हमारी यह भी प्रार्थना है कि वह शाह को कृपापूर्वक ऐसी सहायता प्रदान करे कि वह उस परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए तत्पर हो सके और उसे ईश्वर के सर्वोत्कृष्ट नामालंकरणों के दिवास्रोत के निकट आने में उसे सम्पुष्टि प्रदान करे, ताकि वह किसी अन्याय भरे कार्य को देखकर उसे अपना समर्थन न दे, अपनी प्रजा को स्नेह और कृपालुता की नजरों से देख सके और अत्याचारों से उनकी रक्षा कर सके। गुणगान हो उसका! और हम ईश्वर से यह भी याचना करते हैं कि वह समस्त मानवजाति को परम महासागर की खाड़ी के इर्द-गिर्द एकजुट करे - एक ऐसा महासागर जिसकी प्रत्येक बूंद यह घोषणा करती है कि वह इस संसार में आनन्द का संदेशवाहक है और इसके सभी लोगों को स्फूर्तिवान करने वाला। गुणगान हो परमेश्वर का, वह जो न्याय-दिवस का स्वामी है।

275. और अंत में हम ईश्वर से - धन्य हो उसकी महिमा - यह याचना करते हैं कि वह तुझे अपने धर्म की सहायता करने और उसके न्याय की ओर अभिमुख होने में मदद दे ताकि तू लोगों के बीच वैसे ही न्याय कर सके जैसे तू स्वयं अपने बन्धु-बांधवों के बीच न्याय करेगा, और उनके लिए वह चुन सके जो तू स्वयं अपने लिए चुनता है। वह, वस्तुतः, सर्वशक्तिमान है, परम उदात्‍त, संकटों में सहायक, स्वयंजीवी।

276. इस तरह हमने शक्ति और सामर्थ्‍य की अंगुलियों से ‘मन्दिर’ का निर्माण किया है, काश कि तू यह जान पाता! यह वह मन्दिर है जिसकी प्रतिज्ञा तुझसे ‘ग्रंथ’ में की गई थी। तू इसके निकट आ। यही है वह जो तेरे लिए लाभदायक है, बशर्ते कि तू इसे समझ पाता! हे धरती के लोगों! न्यायवान बनो। हे धरती के लोगों! कौन-सा मन्दिर ज्यादा श्रेयस्कर है, यह अथवा वह जो माटी से बना हुआ है? अपने मुखड़े इसकी ओर कर। संकटों में सहायक, स्वयंजीवी ईश्वर ने तुझे ऐसा ही आदेश दिया है। तू उसके आदेशों का पालन कर, और तुम्हारे प्रभु परमात्मा ने तुझे जो कुछ भी प्रदान किया है उनके लिए उसका गुणगान कर। वह, वस्तुतः, सत्य-स्वरूप है। उसके सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है। अपने एक वचन ”तथास्तु“ के माध्यम से वह जो चाहता है, प्रकट करता है।

# सूरा-ए-रईस

## उस सर्वगरिमामय के नाम पर

1. हे प्रधान! सार्वभौम स्वामी, संकटों में सहायक, स्वयंजीवी ईश्वर की वाणी को ध्यान से सुनो! वस्तुतः, वह आकाश और धरती के बीच अपना आह्वान सुनाता है - समस्त मानवजाति को परातीत गरिमा के आसन की ओर बुलाते हुए। न तो तुम्हारे इर्द-गिर्द के लोगों की ना-नुकुर, न ही उनकी आलोचनाएँ और न ही दुनिया के लोगों के विरोध के स्वर ही ईश्वर को उसका मकसद पूरा करने से रोक पाएँगे। तुम्हारे सर्वगरिमामय प्रभु की वाणी की शक्ति से समस्त विश्व प्रज्वलित हो उठा है। यह एक ऐसी वाणी है जो प्रभात-समीरण से भी अधिक कोमल है। इसे मानव रूपी मन्दिर के स्वरूप में प्रकट किया जा चुका है और इसके माध्यम से ईश्वर ने अपने सेवकों के बीच निष्ठावान लोगों की आत्माओं को स्फूर्तिवान बना दिया है। अपने आंतरिक सारभूत रूप में, यह वाणी वह जीवन्त जलधार है जिसके द्वारा ईश्वर ने ऐसे लोगों के हृदयों को पवित्र बनाया है जो उसकी ओर उन्मुख हो चुके हैं, और जिन्होंने अन्य सभी बातों का उल्लेख भुला दिया है, और जिसके माध्यम से वह उन्हें अपने सामर्थ्‍यमय नाम के आसन के निकट बुलाता है। हमने इसे कब्र में सोए हुए लोगों पर छिड़क दिया है और, देखो, वे जाग गए हैं - अपनी दृष्टि अपने प्रभु के दीप्तिमान और ज्योतिर्मय सौन्दर्य पर टिकाए हुए।

2. हे प्रधान! तुमने ऐसा कार्य किया है जिससे प्रभु-अवतार मुहम्मद को परमोच्च स्वर्ग में विलाप करना पड़ा है। इस संसार ने तुम्हें इतना अभिमानी बना दिया है कि तुमने उसी ‘मुखड़े’ से मुँह फेर लिया है जिसकी दीप्ति से उच्च स्वर्ग के देवदूतों के मुखड़े प्रभासित हुए हैं। बहुत ही जल्द तुम स्वयं को घोर क्षति की अवस्था में पाओगे। फारसी राजदूत के साथ मिलकर तुमने मुझे हानि पहुँचाने के लिए षडयंत्र रचा, हालाँकि मैं तुम्हारे पास महिमा और भव्यता के स्रोत से आया था, एक ऐसे प्रकटीकरण के रूप में जिससे ईश्वर के कृपा-प्राप्त जनों की आँखों को सुकून मिला है।

3. ईश्वर की सौगन्ध! यह वह दिवस है जबकि अविनाशी ‘आग’ सभी सृजित वस्तुओं के भीतर से पुकार रही है: ”लोकों का परम प्रियतम आ चुका है!“ और सभी वस्तुओं के समक्ष एक प्रभुदूत मूसा खड़ा होकर तेरे सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ प्रभु की वाणी पर ध्यान लगाए हुए है। यदि हम इस नश्वर चोले को उतार फेंकते जिसे हमने तुम्हारी दुर्बलता का विचार करके धारण कर रखा है, तो आकाश और धरती की सभी वस्तुएँ मेरे निमित्‍त अपनी आत्मा न्योछावर कर देतीं। इसका साक्षी ईश्वर स्वयं है। लेकिन जिन्होंने सर्वसामर्थ्‍यमय, परम शक्तिमान परमेश्वर के प्रेम में स्वयं को अन्य सभी वस्तुओं से अनासक्त कर लिया है उनके सिवा अन्य कोई भी इसे समझ नहीं सकता।

4. क्या तुम यह मंसुबा लिए बैठे हो कि तुम उस आग को बुझा सकोगे जिसे ईश्वर ने इस सृष्टि के मध्य में सुलगाया है? नहीं, सौगन्ध उसकी जो है अनन्त सत्य, काश तुम जानते कि तुम ऐसा नहीं कर सकते। बल्कि, तुमने अपने हाथों से जो कुछ किया है, इसकी लपटें और ऊँची हो उठीं और यह आग और ज्यादा धधक उठी। बहुत ही जल्द यह सारी धरती और उसके समस्त निवासियों को अपने आगोश में ले लेगी। ऐसा ही निर्णय दिया है ईश्वर ने और धरती तथा आकाश की सभी शक्तियाँ उसके उद्देश्य को विफल करने में सक्षम नहीं हैं।

5. वह दिन निकट आ रहा है जबकि ‘रहस्य-भूमि’ और उसके पास जो कुछ है सब कुछ परिवर्तित कर दिया जाएगा। वे राजाओं के हाथ से निकल जाएँगे और सर्वत्र खलबली मच जाएगी। विलाप के स्वर उभर उठेंगे तथा सभी ओर उपद्रव के प्रमाण दृष्टिगोचर होंगे। आततायियों के हाथों इन कैदियों पर जो कुछ गुजरा है उसके कारण असमंजस की स्थिति फैलेगी। सारा क्रम ही बदल जाएगा और स्थिति इतनी बिगड़ जाएगी कि दूरस्थ पहाड़ों का एक-एक रजकण विलाप करेगा, पेड़-पौधे रो उठेंगे और हर वस्तु से खून की धारा प्रवाहित हो उठेगी। तब तुम लोगों को घोर संकट में निमग्न देखोगे।

6. हे प्रधान! टीना पर्वत के ऊपर एक बार हमने स्वयं को तुम्हारे समक्ष प्रकट किया था, पुनः दूसरी बार जायटा पर्वत पर और फिर उसके भी बाद इस पावन स्थल पर। परन्तु अपनी भ्रष्‍ट लालसाओं के पीछे भागते हुए तुम इसका प्रत्युत्‍तर न दे सके और तुम्हारी गिनती असावधानों में की गई। तो जरा विचार करो और याद करो वह समय जब सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ परमेश्वर के संकेतों के साथ मुहम्मद का प्रादुर्भाव हुआ था। लोग छुपी हुई जगहों से और सरे बाजार उन पर पत्थर फेंकने को आमादा थे। उन लोगों ने परमात्मा, तुम्हारे स्वामी और तुम्हारे पूर्वजों के प्रभु के चिह्नों को अस्वीकार कर दिया। जैसाकि पुरानी कथाओं के आधार पर तुम जानते हो, यहाँ तक कि विद्वान कहे जाने वाले लोगों और उनके अनुयायियों ने भी उन्हें मानने से इन्कार कर दिया और इस धरती के राजाओं ने भी। इन्हीं राजाओं में से एक था चोसरोज़ जिसके पास मुहम्मद ने एक आशीर्वादित पाती भेजी थी और उसे ईश्वर के निकट आने एवं अविश्वास से बचने का आह्वान सुनाया था। वस्तुतः, तुम्हारा प्रभु सब कुछ जानने वाला है। परन्तु अपनी दुश्ट एवं भ्रश्ट अभिरुचियों का मारा चोसरोज़ ईश्वर के सम्मुख घमंड से फूल उठा और उसने वह पाती फाड़ डाली। वस्तुतः, उसकी गिनती रसातल की धधकती आग में झुलसते लोगों में की गई है।

7. क्या यह फराओ के बल-बूते की बात थी कि जब वह अपनी धरती पर निरुद्देश्य कार्य कर रहा था और अतिक्रामक बना हुआ था तो वह ईश्वर को अपनी सम्प्रभुता की ताकत दिखाने से रोक देता? उसके अपने ही घर से और उसकी इच्छा के बावजूद हमने उसे प्रकट किया जिसने ईश्वर से वार्तालाप किया था। अपने मकसद को पूरा करने में हम पूर्णतः सक्षम हैं। और फिर यह भी याद करो कि किस प्रकार नमरूद ने अपवित्रता की आग सुलगाई थी ताकि उसकी लपटें अब्राहम को निगल सकें। लेकिन सत्य की शक्ति से हमने उसकी रक्षा की और नमरूद को हमने अपनी क्रोधाग्नि से ग्रस लिया। सुनो: लोगों के बीच से ईश्वर के प्रकाश को बुझाने और तेरे गरिमामय, परम कृपालु प्रभु के दिवस में उन्हें अनन्त जीवन के निर्झर-स्रोत से वंचित करने के लिए, ‘आततायी’ ने लोकों के प्रियतम को मौत के मुँह में डाल दिया।

8. हमने भी ईश्वर के नगरों में प्रभुधर्म को प्रकट किया है और उसमें सच्ची आस्था रखने वाले लोगों के मध्य उसके गुणगान का आह्वान गुंजारित किया है। सुनो: यह ‘युवा’ इस संसार को स्फूर्तिवान बनाने आया है और इसके लोगों को एकता के सूत्र में बाँधने। वह दिन निकट आ रहा है जब ईश्वर का मकसद कामयाब होगा और तुम इस धरती को सर्वगरिमावान आकाश में बदला हुआ देखोगे। इस महत्वपूर्ण पाती में प्रकटीकरण की लेखनी ने ऐसा ही अंकित किया है।

9. हे लेखनी! अब उस प्रधान का उल्लेख करना छोड़ो और अनीस का स्मरण करो, ईश्वर के प्रेम के उस अंतरंग सखा को जिसने स्वयं को दिग्भ्रमित और विश्वासघाती जनों से मुक्त कर लिया था। उसने सारे आवरणों को इस तरह छिन्न-भिन्न कर डाला कि स्वर्ग के अंतरंगों ने भी उन्हें चीरे जाने का स्वर सुना था। महिमा हो ईश्वर की, उस सार्वभौम प्रभु, शक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वप्रज्ञ की!

10. हे बुलबुल! इस रात्रि में जबकि हम अतीव आनन्द की स्थिति में हैं और हथियारबंद सैन्य-दलों से घिरे हुए हैं, तू सर्वगरिमामय की वाणी पर ध्यान दे। काश कि इस धरती पर मेरा रक्त बह जाता और हमारी देह ईश्वर के पथ पर धूल में समा जाती! वस्तुतः, यही मेरी कामना है और उन सबकी कामना जिसे मेरी इच्छा है और जिसने मेरे विलक्षण, अतुल्य साम्राज्य को प्राप्त कर लिया है।

11. हे सेवक! तू यह जान ले कि एक दिन अपने जागने पर हमने प्रभु के प्रियतम को अपने शत्रुओं की दया के सहारे देखा। हर द्वार पर संतरी खड़े थे और किसी को भी बाहर या भीतर जाने की अनुमति नहीं थी। वस्तुतः, उन्होंने घोर अन्याय का कार्य किया क्योंकि ईश्वर के प्रियजनों और बान्धवों को पहली रात भोजन तक नहीं दिया गया। ऐसी नियति थी उन लोगों की जिनके निमित्‍त यह संसार और इसका सर्वस्व रचा गया है। ऐसे कार्य करने वालों पर वज्र टूटे और उन पर भी जिन्होंने उन्हें ऐसे पाप कर्मों के लिए उकसाया था। बहुत ही जल्द ईश्वर उनकी आत्माओं को अग्निसात करके रख देगा। वस्तुतः, वह प्रतिशोध लेने वालों में क्रूरतम है।

12. लोगों ने हमारा घर घेर लिया, मुसलमानों तथा ईसाइयों ने हमारे लिए रुदन किया और आततायियों के कारनामों के कारण विलाप के ये स्वर धरती और स्वर्ग के बीच भर उठे। हमने यह जाना कि ‘पुत्र’ के जनों के विलाप अन्य लोगों के रुदन से भी बढ़कर थे जो कि विचारवान लोगों के लिए एक संकेत है।

13. मेरे एक साथी ने ईश्वर के प्रेम की खातिर अपने ही हाथों अपना गला रेतकर अपना जीवन न्योछावर कर दिया - एक ऐसा कार्य जैसाकि बीती हुई शताब्दियों में कभी सुना भी नहीं गया, जिसे ईश्वर ने अपनी सामर्थ्‍य की शक्ति के प्रमाणस्वरूप अपने इसी प्रकटीकरण के लिए सुरक्षित रखा था। वह, वास्तव में, अप्रतिबाधित और सर्ववशकारी है। और जहाँ तक उसकी बात है जिसने इस तरह इराक में अपना बलिदान कर दिया वह वास्तव में शहीदों का सम्राट और उनका प्रियतम है और उसने जो कुछ भी कर दिखाया वह धरती के लोगों के लिए ईश्वर की ओर से एक प्रमाण था। ऐसे लोग ईश्वर की वाणी से प्रभावित रहे हैं, उन्होंने उसके स्मरण का माधुर्य चखा है और पुनर्मिलन की बयारों से वे इस तरह संवाहित हुए हैं कि उन्होंने धरती के सभी निवासियों से स्वयं को अनासक्त कर लिया है और प्रकाशित मुखड़ों के साथ वे दिव्य मुखमंडल की ओर उन्मुख हो गए हैं। हालाँकि उन्होंने ऐसा कार्य किया है जिसके लिए ईश्वर ने उन्हें मना किया है तथापि प्रभु ने अपनी करुणा के प्रतीकस्वरूप उन्हें क्षमा कर दिया है। वह, वस्तुतः, सदा क्षमाशील, परम दयावान है। ये लोग उस सर्वबाध्यकारी परमेश्वर के आनन्द में ऐसे आनन्दित थे कि इच्छा की लगाम उनके हाथों से फिसल गई और तब तक वे उस अदृश्य के साम्राज्य में पहुँच गए और सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ परमेश्वर की उपस्थिति के दरबार में आ चले।

14. सुनो: यह ‘युवक’ इस देश से बाहर जा चुका है और उसने हर पेड़, हर पत्थर के तले एक विश्वास संचित कर रखा है जिसे बहुत ही जल्द ईश्वर सत्य की शक्ति से सामने लाएँगे। इस तरह उस एकमेव सत्य का आगमन हुआ है और वह जो कि नियंता है, सर्वप्रज्ञ है उसकी आज्ञा पूरी हुई है। उसके धर्म को रोकने में धरती और आकाश के सारे समुदाय शक्तिहीन हैं, और न ही दुनिया के सभी राजा और शासक मिलकर उसके उद्देश्य को विफल कर पाएँगे। सुनो: विपत्ति वह तेल है जो इस दीपक की लौ को उकसाकर तेज करती है, काश कि तुम यह जान पाते! वास्तव में, दुष्‍ट लोगों की अवनिन्दा इस धर्म की घोषणा और प्रभुधर्म एवं उसके प्रकटीकरण के प्रचार-प्रसार में ही सहायक होती है।

15. तुम्हें प्राप्त आशीर्वाद महान है क्योंकि एक ऐसे समय में जबकि अत्याचार की आग सुलग रही थी और असहमति के कौए की आवाज उठ रही थी, तुमने अपने घरों को त्याग दिया और जब तक तुम ‘रहस्य-भूमि’ नहीं पहुँच गए तब तक अपने सर्वशक्तिमान, दिवसाधिक प्राचीन प्रभु के प्रेम में तुम जगह-जगह भटकते रहे। मेरे संकटों में तुम मेरे साझेदार हो, क्योंकि तुम उस अंधेरी रात में हमारे साथ रहे जबकि ईश्वर की एकता को प्रमाणित करने वाले ह्नदय उद्वेलित हो उठे थे। तुमने हमारे प्रेम के कारण इस भूमि में प्रवेश किया और हमारी आज्ञा से ही वहाँ से बाहर गए। ईश्वर की धर्मपरायणता की सौगन्ध! तुम्हारे कारण खुद यह धरती हमारे स्वर्ग को महिमामंडित करती है। यह अति उदात्‍त, महिमामय और महान कृपा कितनी उत्कृष्ट है! हे अनन्तता के विहंग! अपने अप्रतिबाधित स्वामी के निमित्‍त, तुम सब अपने नीड़ से वंचित कर दिए गए हो लेकिन तुम्हारा सच्चा आश्रय तो उस सर्वदयालु की कृपा के पंखों तले है। धन्य हैं वे जो समझते हैं।

16. हे मेरे ज़बीह! काश कि चेतना की साँसें तुम्हारे ऊपर से प्रवाहित हों और उन सबके ऊपर से जिन्होंने तुम्हारे साथ वार्तालाप चाहा है, जिन्होंने तुमसे मेरी उपस्थिति की मधुर सुरभि ग्रहण की है और उस पर ध्यान दिया है जिससे सच्चे साधकों के हृदय पावन हुए हैं। ईश्वर का धन्यवाद करो क्योंकि तुमने इस परम महासागर के तटों को पाया है, और धरती के कण-कण द्वारा की जाती इस घोषणा पर ध्यान दो: ”यह लोकों का परम प्रियतम है!“ धरती के निवासियों ने उसे छला है और उसी को पहचानने से चूक गए हैं जिसके नाम का आह्वान वे अनवरत रूप से करते रहते हैं। ऐसे असावधान लोग नष्ट-भ्रष्ट हो चुके हैं और उसका विरोध किया है जिसके प्रियजनों के लिए भी अपना जीवन निसर्ग कर देना उनके लिए समीचीन होता, तो फिर स्वयं उसके ज्योतिर्मय और दीप्तिमान सौन्दर्य के लिए अपना बलिदान करना कौन सी बड़ी बात है!

17. तू अधीर न हो, भले ही तेरा हृदय ईश्वर के वियोग से दग्ध हो जाए, क्योंकि उसने अपनी उपस्थिति के स्वर्ग में तुझे एक महान पद प्रदान किया है। बल्कि, तू अभी भी उसके मुखड़े के सम्मुख खड़ा है, और हम अपनी सामर्थ्‍य और शक्ति की वाणी से तुझे ऐसे शब्द प्रदान कर रहे हैं कि जिन्हें सुनने से निष्ठावान लोगों के कान भी तरसते रहे हैं। सुनो: यदि ‘वह’ एक शब्द भी उचार देता तो वह एक शब्द ही लोगों द्वारा कही गई हर बात से ज्यादा मधुर होता।

18. यदि प्रभु-अवतार मुहम्मद इस युग में होते तो उन्होंने यह उद्गार प्रकट किया होता: ”हे दिव्य संदेशवाहकों की अभिलाषा! मैंने सत्य ही तुझे पहचान लिया है!“ और यदि आज अब्राहम होते तो वे भी जमीन पर साष्टांग लेटकर तुम्हारे स्वामी परमेश्वर के समक्ष अत्यंत विनत होकर पुकार उठते: ”मेरा हृदय शांति से परिपूरित है, हे आकाश और धरती के सभी निवासियों के प्रभु! मैं साक्षी देता हूँ कि तुमने मेरे नेत्रों के समक्ष अपनी शक्ति की सम्पूर्ण महिमा और अपने विधान की पूर्ण भव्यता प्रकट कर दी है। और फिर मैं यह भी साक्षी देता हूँ कि तुम्हारे प्रकटीकरण के माध्यम से निष्ठावान लोगों के हृदय अच्छी तरह आश्वस्त और तुष्ट हो चुके हैं।“ यदि स्वयं हजरत मूसा ने इस दिवस को प्राप्त किया होता तो वे इन शब्दों में अपनी आवाज बुलन्द करते: ”सर्वस्तुति हो तुम्हारी मेरे ऊपर अपनी मुखमुद्रा का प्रकाश बिखेरने और मेरा नाम उन लोगों में अंकित करने के लिए जिन्हें तेरा मुखड़ा देखने का सौभाग्य प्राप्त है!“

19. लोग और उनकी दशा पर विचार करो। जरा उन बातों के बारे में सोचो जो उनके मुख से निकली हैं और उन कारनामों पर विचार करो जो उनके हाथों ने इस परम पावन और अनुपम दिवस में अंजाम दिए हैं। जिन लोगों ने प्रभुधर्म की ख्याति को धूमिल किया है और ‘दुष्ट’ की ओर उन्मुख हुए हैं वे सभी सृजित वस्तुओं में सर्वाधिक शापग्रस्त हैं और उनकी गिनती नरकाग्नि में जलने वालों में की जाती है। वस्तुतः, जिस किसी ने मेरे आह्वान पर ध्यान दिया है उस पर धरती के किसी भी जन के कोलाहल का असर नहीं पड़ेगा और जो कोई भी मेरे सिवा अन्य किसी की वाणी से प्रभावित हुआ है उसने मानों मेरी पुकार कभी सुनी ही नहीं। ईश्वर की सौगन्ध! ऐसा व्यक्ति मेरे साम्राज्य में प्रवेश करने से वंचित रहेगा, वह मेरी शक्ति और गरिमा की परिधि में नहीं आ सकेगा और वह घोर क्षति पाने वालों में से होगा।

20. तुझपर जो कुछ भी आन पड़ा है उसके लिए दुःख मत करो। मेरे प्रेम के कारण तुमने जो कुछ झेला है जिसे सामान्य लोग कभी झेल नहीं पाए। तुम्हारा प्रभु सब कुछ जानता है, उसे सब पता है। वह प्रभु सभी सभाओं और जमघटों में तुम्हारे साथ था और अपने सर्वदयालु परमेश्वर के स्मरण में तुम्हारे हृदय से निकले उद्गारों को उसने सुना था। यह, वस्तुतः, उसकी उदार कृपा का एक प्रतीक है।

21. बहुत ही जल्द ईश्वर राजाओं के बीच से उसे खड़ा करेगा जो प्रभु के प्रियजनों को सहायता देगा। सत्य ही, हर वस्तु उसके दायरे में है। वह लोगों के दिलों में ईश्वर के प्रियजनों के लिए प्रेम का संचार करेगा। यह, वास्तव में, उसका अकाट्य निर्णय है जो है सर्वशक्तिमान और कृपालु।

22. ईश्वर से हमारी प्रार्थना है कि तेरे आह्वान के माध्यम से वह अपने सेवकों के हृदयों को हर्षित करे, अपनी धरती पर तुझे मार्गदर्शन की ध्वजा बनाए और तेरे माध्यम से उन्हें सहायता प्रदान करे जिन्हें तुच्छ स्थिति में ला दिया गया है। उस व्यक्ति पर ध्यान न दे जिसने भारी कोलाहल मचाया और अभी भी मचा रहा है। तुम्हारा प्रभु - वह जो सदा क्षमाशील और परम उदार है - वही तेरे लिए पर्याप्त हो। मेरे प्रियजनों को इस ‘युवा’ के बारे में वह कथा कहो जो तुमने देखा और जाना है और उन्हें वह संदेश सुनाओ जो तुझे हमने दिया है। सत्य ही, तुम्हारा स्वामी सदासर्वदा और हर परिस्थिति में तुझे देखता और तेरी सहायता करता है। स्वर्ग के देवदूतों का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है तथा दिव्य तरुवर की परिक्रमा करने वाले पावन परिवार के आत्मीय जन और उसकी पत्तियाँ तुम्हारी अपार प्रशंसा के शब्द बखान रहे हैं।

23. हे प्रकटीकरण की लेखनी! जरा तू उसका स्मरण कर जिसकी पाती हमारे पास तब आई थी जब हम इस अंधेरी रात में निमग्न थे। यही वह व्यक्ति है जो अपने सर्वशक्तिमान, परमोच्च प्रभु की कृपा के आश्रय की तलाश में इस ‘नगरी’ में प्रवेश करने तक एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश भटकता रहा। अपने स्वामी की कृपाओं के प्रति समुत्सुक, उसने वहाँ एक रात निवास किया लेकिन अगली ही सुबह इस ‘युवा’ के हृदय को उदासी से भरकर वह परमात्मा की आज्ञा से वहाँ से चल पड़ा। इसका साक्षी स्वयं वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है।

24. तुम्हें प्राप्त आशीर्वाद महान है क्योंकि तुम्हें सर्वदयालु के हाथों उसकी वाणी की मदिरा प्राप्त हुई है और तुम उस परम प्रियतम की मधुर सुरभि से इतने आनन्द-विह्वल हो उठे कि तुमने सारे सुख-चैन त्याग डाले और उन लोगों में गिने गए जो उस परमात्मा के स्वर्ग, अपने अनुपम, उदार स्वामी के संकेतों के उदय-स्थल की ओर शीघ्रता से बढ़ चले हैं। धन्य है वह जिसने अपने प्रभु की मुखमुद्रा से अंतरंग रहस्यों की मदिरा पी ली है और उसकी विशुद्ध तथा स्फटिक स्वच्छ घूँटों से जो मस्त हो चला है। प्रभु की सौगन्ध! इससे हर सच्चा अनुयायी गरिमा अैर भव्यता के स्वर्ग में उड़ान भरने लगता है और हर संदेह निश्चयात्मकता में बदल जाता है।

25. तुझ पर जो संकट आन पड़े हैं उनका दुःख न कर बल्कि अपना पूरा भरोसा अपने सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वप्रज्ञ प्रभु में रख। अपने घर की बुनियाद दिव्य वाणी की ठोस नींव पर रख और ईश्वर का गुणगान कर। वस्तुतः, ईश्वर तुम्हारे लिए धरती के सभी लोगों से बढ़कर पर्याप्त होगा।

26. सचमुच, ईश्वर ने तुम्हारे नामों को एक ऐसी पाती पर अंकित कर रखा है जिस पर अस्तित्व में आ चुकी सभी वस्तुओं के निगूढ़ रहस्य निहित हैं। बहुत ही जल्द निष्ठावान लोग तुम्हारे इस निर्वासन को याद करेंगे और परमात्मा के पथ पर की गई तुम्हारी यात्राओं को। वह, वास्तव में, उनसे प्यार करता है जो उससे प्यार करते हैं और वह निष्ठावान जनों का सहायक है। ईश्वर की धर्मपरायणता की शपथ! उच्च स्वर्ग के देवदूतों के नयन तुम पर टिके हुए हैं और उनकी अंगुलियाँ तुम्हारी ही ओर इंगित करती हैं। इस तरह तुम ईश्वर की कृपालुता से घिरे हुए हो। काश लोग यह समझ पाते कि सर्वमहिमामय, सर्वप्रशंसित परमात्मा के दिवसों में वे किन बातों से चूक गए हैं।

27. परमात्मा को धन्यवाद दे कि उसने स्वयं को जानने और एक ऐसे समय में जबकि अनीश्वर लोग तुम्हारे प्रभु और उसके परिवार पर घात लगाए बैठे हैं अपने पावन दरबार की परिधि में प्रवेश करने में सहायता की है। उन्होंने अपार निर्दयता के साथ उन लोगों को उनके ही घरों से निकाल बाहर किया है और समुद्र के तट पर हमें एक-दूसरे से विलग कर देना चाहा है। सत्य ही, इन अविश्वासियों ने अपने दिलों में जो कुछ भी छुपा रखा है तुम्हारे प्रभु को वह सब कुछ ज्ञात है। सुनो: यदि तुम हमारी देह के टुकड़े-टुकड़े भी कर दो तो भी तुम हमारे दिलों से ईश्वर के प्रेम को नहीं मिटा सकते। सच ही, हमें अपने बलिदान के लिए ही तैयार किया गया था और इसके लिए हम इस समस्त सृष्टि के सम्मुख गौरवान्वित हैं।

28. हे परमात्मा के प्रेम से प्रज्वलित जन! जान लो कि तुम्हारा पत्र हमें प्राप्त हुआ है और हमें उसकी विषय-वस्तु के बारे में ज्ञात हुआ। ईश्वर से हमारी याचना है कि वह अपने प्रेम और अपनी सद्कृपा में तुम्हें पुष्टि प्रदान करें, अपने धर्म के संवर्द्धन में तुम्हें सहायता दें और तेरी गिनती उन लोगों में करें जो प्रभुधर्म की विजय के लिए उठ खड़े हुए हैं।

29. आत्मा के बारे में तुम्हारे प्रश्न के सम्बंध में: तुम यह जान लो कि लोगों के बीच इसकी स्थिति के बारे में अनेक व्याख्याएँ और विचार हैं। इनमें हैं साम्राज्य की आत्मा, प्रभुलोक की आत्मा, स्वर्गिक आत्मा, दिव्य आत्मा, पवित्र आत्मा, और साथ ही दयालु आत्मा, संतुष्ट आत्मा, ईश्वर को प्रिय लगने वाली आत्मा, प्रेरित आत्मा, दुष्ट आत्मा और विषयानुरक्त आत्मा। आत्मा के बारे में हर समूह की अपनी-अपनी घोषणाएँ हैं और अतीत की इन बातों की व्याख्या करने की मेरी रुचि नहीं। वस्तुतः, अतीत और आगामी पीढ़ियों का समस्त ज्ञान तुम्हारे प्रभु के पास है।

30. काश कि तुम्हें जिसकी इच्छा है उसे भव्यता की वाणी से सुनने के लिए तुम हमारे सिंहासन के समक्ष उपस्थित हो पाते और उस सर्वज्ञ तथा सर्वप्रज्ञ की कृपा से ज्ञान की उत्‍तुंग ऊँचाइयों तक उड़ान भर पाते! लेकिन हमारे बीच नास्तिकों का हस्तक्षेप है। सावधान कि कहीं तुम्हें इससे दुःख न झेलना पड़े। अकाट्य निर्णय द्वारा जो कुछ भी निर्धारित किया गया है उससे संतुष्ट रह और उन लोगों में से बन जो धैर्यपूर्वक सब सहते हैं।

31. यह जान कि सब में पाई जाने वाली आत्मा का प्रादुर्भाव वस्तुओं के सम्मिश्रण और उसकी परिपक्वता के बाद होता है, जैसाकि तुम एक अंकुर में देखते हो। जैसे ही यह अपनी पूर्वनिर्धारित अवस्था में विकसित हो जाता है, ईश्वर उसमें पहले से निहित आत्मा को प्रकट कर देते हैं। तुम्हारा प्रभु, वास्तव में, जैसा चाहता है वैसा करता है और उसकी जो मर्जी होती है उसकी वह आज्ञा देता है।

32. जिस आत्मा के सम्बंध में तुम्हारा अभिप्राय है, वास्तव में उसे ईश्वर की वाणी द्वारा अस्तित्व में लाया गया है और उसका स्वरूप कुछ ऐसा है कि यदि उसे अपने प्रभु की प्रेम रूपी अग्नि से प्रज्वलित किया जाए तो न तो विरोध की जलधाराएँ ही उसकी लपटों को बुझा सकेंगी और न ही इस संसार के महासागर ही उसे शान्त कर सकेंगे। ऐसी आत्मा वास्तव में मानव रूपी तरुवर में ज्वलित वह आग है जिसकी घोषणा है: ”उसके सिवा अन्य कोई परमात्मा नहीं है!“ जो कोई भी इसकी पुकार पर ध्यान देता है वह वास्तव में उन लोगों में से है जिसने ‘उसे’ प्राप्त कर लिया है और जब वह अपना भौतिक चोला छोड़ देता है तो ईश्वर उसे अन्य सर्वोत्‍तम स्वरूपों में फिर से खड़ा करेंगे और उसे महानतम स्वर्ग में प्रवेश प्रदान करेंगे। निस्संदेह, तुम्हारे प्रभु की शक्ति हर वस्तु पर है।

33. आगे तू यह भी जान कि मनुष्य के जीवन का प्रारंभ चेतना से होता है और यह चेतना उस ओर उन्मुख होती है जिधर उसे आत्मा निर्देशित करती है। उस पर विचार कर जिसे हमने तुम्हारे समक्ष प्रकट किया है ताकि तू ईश्वर की आत्मा को पहचान सके जो कि प्रत्यक्ष सम्प्रभुता से सम्पन्न होकर कृपालुता के दिवास्रोत पर प्रकट हुई है।

34. यह भी जान ले कि आत्मा के पास दो डैने हैं: यदि यह प्रेम और संतोष के वितान में उड़ान भरे तो यह सर्वदयालु प्रभु से सम्बंध रखेगी और यदि वह स्वार्थ और लालसा के वितान में उड़ान भरे तो उसका सम्बंध शैतान से होगा। हे बोध-सम्पन्न! ईश्वर हमारी और तुम्हारी इससे रक्षा करें! यदि आत्मा ईश्वर की प्रेम रूपी अग्नि से प्रदीप्त हो तो उसे दयालु आत्मा और ईश्वर को प्रिय लगने वाली आत्मा कहते हैं, लेकिन यदि वह लालसा की आग में धधकती रहे तो उसे विषयानुरक्त आत्मा कहते हैं। इस प्रकार हमने इस विषय पर तुम्हारे निमित्‍त प्रकाश डाला है ताकि तू स्पष्ट रूप से समझ ले।

35. हे सर्वोच्च की लेखनी! वह जो कि तुम्हारे सर्वगरिमामय प्रभु की ओर उन्मुख हुआ है उसे वह बता दे जिससे वह लोगों की कही-सुनी बातों से मुक्त होने में सक्षम हो। सुनो: चेतना, मन, आत्मा तथा देखने और सुनने की शक्तियाँ - ये सब एक ही यथार्थ के रूप हैं, केवल अलग-अलग माध्यमों के कारण उनकी अभिव्यक्तियाँ अनेक प्रतीत होती हैं। जैसाकि तुम देखते हो, लोगों में समझने, चलने, बोलने, सुनने और देखने की ये तमाम शक्तियाँ उसमें अंतर्निहित ईश्वरीय संकेतों से प्रकट होती हैं। यह शक्ति अपने सारभूत रूप में एक ही है किन्तु माध्यमों की विविधता के कारण उनमें अनेकता दिखती है। वस्तुतः, यह एक असंदिग्ध सत्य है। उदाहरण के लिए, जब यह शक्ति श्रवण के माध्यम पर ध्यान केन्द्रित करती है तो सुनने और उससे जुड़े गुण प्रकट हो जाते हैं। उसी तरह, जब यह दृष्टि के माध्यम की ओर एकाग्र होती है तो एक भिन्न प्रभाव और गुण प्रकट होते हैं। इस विषय पर विचार कर ताकि जो उद्दिष्ट किया गया है तू उसके सही अर्थ को जान सके, स्वयं को लोगों की कहासुनी से मुक्त कर सके और उन लोगों में से एक हो जाए जो निश्चयात्मक हैं। इसी तरीके से, जब ईश्वर के संकेत मस्तिष्क और विचार की ओर उन्मुख होते हैं - या ऐसे ही अन्य माध्यमों की ओर - तो मन और आत्मा की शक्तियाँ प्रकट हो उठती हैं। वस्तुतः, तुम्हारा प्रभु अपनी इच्छानुसार सब कुछ कर सकने में सक्षम है।

36. यहाँ हमने जिन बातों का उल्लेख किया है उन पर कुरान के विच्छेदित अक्षरों के प्रसंग में किए गए प्रश्नों के उत्‍तर में प्रकटित पातियों में हम पहले ही प्रकाश डाल चुके हैं। उन पर विचार करो ताकि उन बातों को समझ सको जिन्हें सर्वशक्तिमान, सर्वप्रशंसित के साम्राज्य से नीचे भेजा गया है। इस प्रकार, इस पाती में हमने संक्षिप्तता बरतना तय किया है। ईश्वर से हमारी याचना है कि इस संक्षिप्त विश्लेषण के माध्यम से वह तुम्हें उन बातों से परिचित करा दे जिन्हें शब्दों द्वारा परिसीमित नहीं किया जा सकता और वह तुम्हें इस प्याली के माध्यम से अनन्त महासागरों का जल पान करने में सक्षम बनाए। वस्तुतः, तुम्हारा प्रभु सर्वकृपालु है और उसकी शक्ति अनाक्रामक है।

37. हे दिवसाधिक प्राचीन की लेखनी! तू अली का स्मरण कर, उसका जो कि इराक की यात्रा में तब तक तेरे साथ था जब तक ‘विश्व का सूर्य’ वहाँ से प्रस्थान न कर गया। एक ऐसे समय में जबकि हम सर्वदयालु परमेश्वर की मधुर सुरभि से वंचित लोगों के हाथों कैद पड़े थे, उसने तुम्हारी उपस्थिति के दरबार में आने के लिए अपना घर-बार त्याग दिया था। ईश्वर के पथ पर हम पर और तुझ पर जो संकट आ पड़े हैं उनका शोक न कर। आश्वस्त रहो और प्रयास जारी रखो। जो कोई उस परमेश्वर से प्यार करता है उन्हें वह विजयी बनाता है और उसकी शक्ति सब कुछ के समतुल्य है। जो कोई भी उसकी ओर अभिमुख होता है, वह इस कार्य के माध्यम से स्वर्ग के देवदूतों के मुखड़ों को दीप्तिमान बनाता है, और ईश्वर स्वयं ही इस बात के लिए मेरा साक्षी है।

38. सुनोः हे लोगों! क्या तुम यह सोचते हो कि उसे त्याग कर भी, जिसके माध्यम से विश्व के धर्मों को प्रकट किया गया है, तुम ईश्वर के प्रति वफादार बने हुए हो? ईश्वर की धर्मपरायणता की शपथ! तुम्हारी गिनती नरकाग्नि में जलने वालों में की गई है।। परमेश्वर की लेखनी द्वारा उसकी पातियों में इसी तरह अंकित किया गया है। सुनो: कुत्‍तों की भौंक से विचलित होकर ‘बुलबुल’ अपना मधुर कलरव कभी बन्द नहीं करेगी। इस पर जरा विचार करो ताकि कदाचित तू अनन्त सत्य की ओर जाने वाला मार्ग पा सके।

39. सुनो: हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! अपरम्पार है तू! तेरी अभिलाषा में तेरे प्रेमियों ने जो आँसू बहाए हैं और तेरे वियोग में जो रुदन कर उठे हैं उनकी उत्कंठ कामना का वास्ता देकर और तेरे शत्रुओं के हाथों में पड़े उस ‘परम प्रियतम’ की सौगन्ध देकर मैं तुझसे याचना करता हूँ कि उन सबकी सहायता कर जिन्होंने तेरी कृपा और स्नेहिल करुणा के शरणदायी पंखों के तले आश्रय की कामना की है और जिन्होंने तेरे सिवा अन्य किसी स्वामी की इच्छा नहीं की है।

40. हे प्रभो! तुझसे मिलने की उत्सुकता और तुझसे एकाकार होने की अपनी ललक के साथ हमने अपना घर-बार त्याग दिया है। तेरी उपस्थिति के दरबार तक पहुँचने और तेरे श्लोकों को हृदयंगम करने के लिए हमने धरती और सागर की दूरियाँ मापी हैं। लेकिन जब हम उस समुद्र के तट तक पहुँचे तो हमारे और तेरे मुखड़े के प्रकाश के बीच नास्तिकों के हस्तक्षेप के कारण हमें तुझ तक आने से रोक दिया गया।

41. हे ईश्वर! हम घोर प्यास से संत्रस्त हैं, और अनन्त जीवन की मृदुल-प्रवाही जलधाराएँ तेरे ही पास हैं। तेरी जो भी इच्छा होती है उसे करने में तू सर्वथा सक्षम है। हमें वह देने से इन्कार न कर जिसकी हमें खोज है। अतः हमारे लिए वह पुरस्कार लिख डाल जो तेरे ऐसे सेवकों के लिए निर्णीत है जिन्हें तेरी निकटता का आनन्द प्राप्त है और जो तेरी इच्छा के प्रति पूर्ण समर्पित हैं। हमें अपने प्रेम में इतना सुदृढ़ कर कि कुछ भी हमें तुझसे दूर न रख सके और न ही तेरी आराधना से हमें रोक सके। तू अपनी इच्छा को कार्यरूप देने की शक्ति रखता है। वस्तुतः, तू सर्वशक्तिमान है, परम उदार।

# लौह-ए-रईस

## अपने ही प्राधिकार में वह अधिशासक है सर्वोच्च!

1. परम महान की लेखनी यह घोषणा करती है: हे तू जिसने स्वयं को लोगों में महानतम मान रखा है और जिसने इस दिव्य ‘युवा’ को - जिसके माध्यम से स्वर्ग के देवदूतों के नयन प्रकाशित और दीप्तिमान हुए हैं - सबसे अधम प्राणियों में समझ रखा है! इस ‘युवा’ ने तुझसे या तेरे जैसे अन्य लोगों से कुछ भी नहीं चाहा है, क्योंकि अनादि काल से ही जब कभी भी सर्वदयालु परमेश्वर के प्रकटीकरणों और उसकी अमिट गरिमा के व्याख्याकारों ने अनन्तता के साम्राज्य से बाहर इस नश्वर संसार में अपने पग रखे और उन्होंने मृतकों में नवजीवन का संचार करने के लिए स्वयं को प्रकट किया तो तुम्हारे जैसे लोगों ने इन पावन आत्माओं और दिव्य एकता के मन्दिरों को - जिन पर धरती के सभी लोगों का निवास निर्भर है - उपद्रव भड़काने वालों और दोषारोपण के योग्य लोगों में मान लिया। वस्तुतः, ये सारे लोग धूल में समा गए। बहुत ही जल्द तेरा भी उसी खाक में बसेरा होगा और तू स्वयं को घनघोर क्षति में पाएगा।

2. यदि ये जीवनदाता और विश्व के सुधारक तुम्हारे आकलन में विद्रोह और संघर्ष के दोषी हों फिर भी उन महिलाओं, बच्चों और दूध पिलाती माताओं का क्या कसूर है कि उन्हें इस तरह तुम्हारा कोपभाजन बनाना पड़ा? किसी भी धर्म में कभी बच्चों को जिम्मेवार नहीं ठहराया गया है। दिव्य आज्ञा की लेखनी ने उन्हें बरी किया है लेकिन फिर भी तेरे अत्याचार और तेरी नृशंसता की आग ने उन्हें भी समेट लिया है। यदि तुम किसी भी धर्म या विश्वास के प्रति निष्ठा रखते हो तो तुम्हें यह जानना चाहिए कि सभी स्वर्गिक ग्रंथों और समस्त दिव्य-प्रेरित और महान शास्त्रों के अनुसार बच्चों को कभी उत्‍तरदायी नहीं माना जा सकता। इसके अलावा, कभी उन लोगों ने भी ऐसे अशोभनीय कार्य नहीं किए हैं जिन्हें ईश्वर में आस्था नहीं है। चूँकि हर बात से एक परिणाम उत्पन्न होता है और तर्क तथा समझ से खाली लोग ही इस तथ्य का खंडन करेंगे, अतः यह निश्चित है कि इन बच्चों की आहें और इन प्रवंचित लोगों के विलाप एक दिन जरूर रंग लाएँगे।

3. तुम सबने लोगों के एक समूह को लूटा है और अन्यायपूर्वक उन्हें बर्बादी का शिकार बनाया है जबकि उन्होंने कभी भी तुम्हारे साम्राज्य में कोई बगावत नहीं की है, न ही उन्होंने तुम्हारी सरकार की अवज्ञा की है। बल्कि वे स्वयं तक सीमित रहे और दिन-रात केवल प्रभु-स्मरण में लीन रहे। बाद में जब इस ‘युवा’ को निर्वासित करने का आदेश जारी हुआ तो सब हतप्रभ रह गए। परन्तु मुझे निष्कासित करने के लिए जिम्मेवार बनाए गए अधिकारियों ने यह घोषणा की: ”इन अन्य बाकी लोगों पर किसी भी अपराध का आरोप तय नहीं हुआ है और सरकार ने उन्हें निर्वासन की सजा नहीं दी है। यदि वे आपके साथ जाना चाहें तो कोई भी इसका विरोध नहीं करेगा।“ इस प्रकार, इन अभागे लोगों को कीमत चुकानी पड़ी, उन्होंने अपनी धन-सम्पदा का त्याग कर दिया और हमारी उपस्थिति में रहने का संतोष पाकर तथा ईश्वर में अपनी सम्पूर्ण आस्था जमाए हुए, एक बार फिर वे ‘उसके’ साथ यात्रा पर चल पड़े जब तक कि अक्का का किला बहा का कारागार न बन गया।

4. हमारे वहाँ पहुँचने पर, हमें प्रहरियों ने घेर लिया और स्त्री-पुरुषों, वृद्धों और युवाओं, सबको सेना की एक बैरक में एक साथ डाल दिया गया। पहली रात तो किसी को खाने-पीने के लिए भी कुछ नहीं दिया गया, क्योंकि सारे संतरी बैरक के द्वार पर पहरा दे रहे थे और किसी को भी वहाँ से जाने की इजाजत नहीं दी गई। इन प्रवंचित लोगों की दशा पर किसी ने भी ध्यान न दिया। उन्होंने पानी की भीख माँगी मगर उन्हें इन्कार सुनने को मिला।

5. समय गुजर चुका है, और हम अभी भी इन बैरकों में कैद हैं, बावजूद इसके कि एड्रियानोपल में हमारे पाँच वर्षों के निवास के दौरान वहाँ के सारे लोग - चाहे वे ज्ञानी रहे हों या अज्ञानी, अमीर या गरीब - इन सेवकों की शुचिता और पवित्रता के गवाह थे। जिस समय यह ‘युवा’ एड्रियानोपल से प्रस्थान कर रहा था, तब ईश्वर के एक प्रेमी ने स्वयं अपनी जान लेनी चाही क्योंकि आततायियों के हाथों इस ‘प्रवंचित व्यक्ति’ की यह दुर्दशा उससे देखी न गई। यात्रा के दौरान हमें तीन बार अपना जहाज बदलने के लिए बाध्य किया गया और इसके कारण बच्चों को कितना कष्ट उठाना पड़ा होगा यह तो स्पष्ट ही है। जहाज से उतरने पर, चार अनुयायियों को अलग-थलग कर दिया गया और उन्हें हमारे साथ रहने से रोका गया। जब यह ‘युवा’ वहाँ से चल पड़ा था तो उन चारों में से एक अब्दुल गफ्फार नाम का एक व्यक्ति समुद्र में कूद पड़ा और किसी को यह पता नहीं कि उसका क्या हश्र हुआ।

6. लेकिन हमारे साथ जो सारे प्रपंच किए गए थे, ये विवरण उनके लिए समुद्र में एक बूँद की तरह अत्यल्प हैं, और फिर भी तुझे संतोष नहीं। हर रोज ये अधिकारी एक नया आदेश जारी करते हैं और उनके अत्याचार का कहीं कोई ओर-अंत नहीं दिखता। दिन-रात बस वे नए-नए षडयंत्र रचने में लगे रहते हैं। सरकारी भंडार से उन्होंने हर कैदी को रोजाना रोटी के बस तीन टुकड़ों का हिस्सा मुकर्रर किया है और वो भी ऐसे टुकड़े कि कोई खा नहीं सकता। इस संसार के आदि से लेकर वर्तमान समय तक, ऐसी निर्दयता की बानगी न तो देखी गई न सुनी गई।

7. उसकी धर्मपरायणता की सौगन्ध जिसने आकाश और धरती के सभी निवासियों के बीच ‘बहा’ को अपनी वाणी गुंजारने दी है! ऐसे लोगों के बीच न तुम्हारा कोई दर्जा है और न ही कोई उल्लेख जिन्होंने सर्वसामर्थ्‍यमय, सर्वबाध्यकारी, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रेम के निमित्‍त अपनी आत्मा को उत्सर्ग कर दिया है। तुम्हारे इस समस्त साम्राज्य और सम्प्रभुता से ईश्वर की दृष्टि में मुट्ठी भर माटी कहीं श्रेयस्कर है। यदि वह चाहेगा तो तुम सबको धूल-धूसरित कर देगा। बहुत ही जल्द उसका प्रचंड कोप तुम्हें अपनी चपेट में ले लेगा, तुम्हारे बीच विद्रोह भड़क उठेंगे और बिखर जाएँगे तेरे ये साम्राज्य। तब करोगे तुम विलाप और क्रन्दन लेकिन कोई भी तुम्हें सांत्वना और सहारा देने वाला नहीं होगा।

8. इन बातों का उल्‍लेख करने में हमारा मकसद तुम्हें तुम्हारी नींद से जगाना नहीं है, क्योंकि ईश्वर के प्रचंड कोप ने तुझे इस कदर घेर रखा है कि तुम कभी सावधान होंगे ही नहीं। और न ही हमारा उद्देश्य इन पावन और आशीर्वादित आत्माओं के ऊपर ढाए गए जुल्मों का बखान करना ही है, क्योंकि सर्वदयालु प्रभु की मदिरा से वे ऐसे मतवाले हो चले हैं और उसकी स्नेहिल कल्याण-भावना के जीवन्त जल से इतने उन्मत्‍त कि यदि ईश्वर के निमित्‍त उन्हें संसार की तमाम निर्दयताओं का भी सामना करना होता तो भी वे संतोष से भरे होते और ईश्वर का धन्यवाद करते। इन लोगों ने न कभी कोई शिकायत की है, न कभी करेंगे। बल्कि उनमें प्रवाहित होता रक्त अनवरत रूप से लोकों के प्रभु की प्रार्थना और याचना में निरत है कि वह उस परमात्मा के पथ पर छिड़क दिया जाए और हर हृदय, हर आत्मा के उस परम प्रियतम के लिए उनके मस्तक भालों की नोकों पर टँग जाने को समुत्सुक हैं।

9. कई बार तुझ पर संकट आए हैं मगर तुम बिल्कुल चेते नहीं। ऐसे ही संकटों में से एक थी वह भीषण आग जिसने न्याय की अग्नि से अधिकांश शहरों को लील लिया और जिसके बारे में न जाने कितनी कविताएँ लिखी गईं, यह बखान करते हुए कि ऐसा अग्निकांड पहले कभी देखा नहीं गया। और फिर भी तुम पहले से भी ज्यादा असावधान होते चले गए। इसी तरह प्लेग की महामारी फैली और फिर भी तुम सावधान नहीं हो पाए। तैयार रहो, क्योंकि ईश्वर का कोप तुम पर टूटने को उद्यत है। बहुत ही जल्द तुम वह देखोगे जो मेरी आज्ञा की लेखनी से भेजा गया है।

10. क्या तुमने यह मनोरथ सजा रखा है कि तुम्हारी गरिमा कभी नष्ट नहीं होगी और तुम्हारा साम्राज्य सदा अक्षुण्ण रहेगा? नहीं, सौगन्ध उसकी जो है सर्वकरुणामय! न तो तुम्हारा गौरव सदा रहेगा और न ही मेरी यह अधम स्थिति सदा बरकरार रहेगी। सच्चे व्यक्ति के आकलन में तो यह अधम स्थिति गौरवों में भी गौरवशाली है।

11. जब मैं छोटा-सा बच्चा था और परिपक्व नहीं हुआ था तो मेरे पिता ने तेहरान में मेरे एक बड़े भाई का ब्याह रचाया था। और नगर की परम्परा के अनुसार, यह उत्सव सात दिनों और सात रातों तक चला। आखिरी दिन यह घोषणा की गई कि ‘शाह सुल्तान सलीम’ नामक नाटक खेला जाएगा। इस अवसर पर अनेक राजकुमार, प्रतिष्ठित जन और राजधानी के गणमान्य लोग वहाँ एकत्र हुए थे। मैं भवन के एक ऊपरी कक्ष में बैठा यह दृश्य निहार रहा था। आंगन में एक खेमा ठोंका गया और फटाफट कुछ छोटी-छोटी मानवीय आकृतियाँ जिनमें से हरेक एक बित्‍ता से ज्यादा बड़ी नहीं थीं, उस खेमे से बाहर निकलीं और यह मुनादी हुई: ‘राजाधिराज पधार रहे हैं! जल्दी आसन लगाओ!’ फिर अन्य आकृतियाँ बाहर निकलीं जिनमें से कुछ रास्ता बुहारने में लग गईं और कुछ अन्य पानी छिड़कने लगीं। फिर उसके बाद एक अन्य बाहर आया जिसके बारे में घोषणा की गई कि वह नगर का मुख्य मुनादीकार था और उसने आवाज लगाकर लोगों को राजा के समक्ष दरबार में एकत्र होने का फरमान सुनाया। उसके बाद, कई समूहों में कुछ अन्य मानवीय आकृतियाँ सामने आईं और अपनी-अपनी जगहों पर बैठ गईं। पहली कतार में वे ‘लोग’ थे जो फारसी अन्दाज में टोप और कमरबंद पहने थे, उसके बाद वे जो हाथों में फरसे लिए हुए थे और तीसरी कतार में थे अनेक चारण और सेवक तथा हाथों में बेंत लिए हुए कार्यपालकगण। और अंत में राजसी गरिमा के साथ, शाही ताज पहने हुए, बड़े अभिमान और शानो-शौकत के साथ, हर मोड़ पर रुकती-सँभलती, राजा जैसी एक आकृति सामने आई जो अत्यंत गुरुता, संतुलन और भव्यता की चाल चलती अपने सिंहासन पर आकर बैठ गई।

12. तब उस क्षण (राजा के सम्मान में) गोले दागे गए, तुरहियाँ बजाई गईं और राजा तथा वह पूरा खेमा धुएँ के गुबार से भर गया। और जब वह धुआँ छँटा तो अपने राजसिंहासन पर संस्थापित राजा को मंत्रियों, राजकुमारों और राज्य के प्रतिष्ठित जनों से घिरा पाया गया। वे सब अपने-अपने स्थान पर सावधान की मुद्रा में राजा के समक्ष खड़े थे। उसके बाद एक चोर को पकड़ कर राजा के सामने लाया गया और उसने चोर की गर्दन काटे जाने का फैसला सुनाया। अगले ही क्षण प्रमुख जल्लाद ने चोर की गर्दन उड़ा दी और उससे खून जैसा तरल पदार्थ बह निकला। उसके बाद राजा ने दरबार सजाया जिसके दौरान एक जासूस से यह खबर मिली कि एक खास सीमा पर विद्रोह भड़क उठा है। तब राजा ने अपनी फौजी टुकड़ियों का निरीक्षण किया और हथियारों से लैस कई रेजिमेंटों को विद्रोह दबाने के लिए रवाना किया। कुछ क्षणों के बाद खेमे के पीछे से तोपों की गरगराहट सुनाई दी और घोषणा की गई कि लड़ाई शुरु हो गई है।

13. इस ‘युवा’ ने इस समस्त दृश्य को आश्चर्य की भाँति देखा। जब शाही दरबार खत्म हुआ तब पर्दा गिरा और करीब बीस मिनट के बाद खेमे के पीछे से अपनी बाँह तले एक बक्सा दबाए एक आदमी बाहर निकला।

14. ”इस बक्से में क्या है?“ मैंने उससे पूछा, ”और यह कैसा तमाशा था?“

15. उसने जवाब दिया: ”यह सारा तामझाम भरा तमाशा, ये बड़े-बड़े सरंजाम, राजा और राजकुमार और ये सारे वज़ीर, उनकी शानो-शौकत, शक्ति और पराक्रम - जो कुछ भी तुमने देखा अब इस बक्से में बंद हैं।“

16. मैं अपने उस प्रभु की सौगन्ध खाकर कहता हूँ जिसने अपने मुँह से निकले एक शब्द मात्र से इस समस्त अस्तित्व को प्रकट किया है! तब से इस ‘युवा’ की दृष्टि में इस दुनिया के सारे साजो-सामान उसी दृश्य की भाँति नजर आने लगे हैं। उनका कभी न कोई मोल और महत्व था और न कभी रहेगा - यहाँ तक कि सरसों के एक दाने के बराबर भी नहीं। कितना आश्चर्य लगता है मुझे इस बात पर कि ऐसी झूठी गरिमाओं पर लोग घमंड करते हैं! किन्तु जो लोग अंतर्दृष्टि से सम्पन्न हैं वे मनुष्य के किसी भी अहंकार का साक्षी बनने से पहले निश्चयात्मक रूप से उसके नष्ट हो जाने की बात समझ लेते हैं। ”मैंने ऐसी कोई भी वस्तु नहीं देखी जिसका मैंने पहले विनाश नहीं देख लिया और, वस्तुतः, ईश्वर इसका पर्याप्त साक्षी है।“

17. हर किसी के लिए यही उचित है कि वह जीवन की इस लघु यात्रा को निष्ठा और निष्पक्षता से गुजार दे। यदि कोई ‘उसका’ अभिज्ञान न पा सके जो कि ‘अनन्त सत्य’ है तो भी उसे कम से कम यह जरूर चाहिए कि वह न्याय और औचित्यपूर्ण आचरण करे। अतिशीघ्र ये बाहरी तामझाम, आँखों के सामने पड़े ये खजाने, ये सांसारिक गर्व और गुमान, ये सजी-धजी सेनाएँ, ये सुसज्जित वस्त्राभरण, ये अभिमानी और उद्धत लोग सब के सब कब्र की एक छोटी-सी दुनिया में समा जाएँगे, मानो एक बक्से में। अंतर्दृष्टि से सम्पन्न लोगों की निगाह में ये सारे संघर्ष, विवाद और झूठी शान के प्रदर्शन सदा से बच्चों के खेल-तमाशे की तरह रहे हैं और रहेंगे। अतः, सावधान! ऐसे लोगों में से न बन जो देखकर भी अनदेखा कर देते हैं।

18. हमारा यह आह्वान इस ‘युवा’ और ईश्वर के प्रियजनों से सरोकार नहीं रखता क्योंकि पहले ही उन पर घोर अत्याचार हो चुके हैं, वे कैद भुगत चुके हैं और तुम्हारे जैसे लोगों से अब उन्हें और कोई अपेक्षा नहीं है। हमारा मकसद सिर्फ यह है कि तुम असावधानी की शैय्या से अपना सिर उठा सको, लापरवाही की निद्रा से जाग जाओ और ईश्वर के सेवकों का अन्यायपूर्वक विरोध करना बंद कर दो। जब तक तुम्हारी ताकत और वैभव का सूर्य उदीयमान है, अत्याचार के शिकार हुए लोगों की पीड़ा कम करने का प्रयास करो। यदि तुम निष्पक्षता से निर्णय ले सको और इस क्षणभंगुर संसार के संघर्षों और कार्यों को विवेक की दृष्टि से देख सको तो तुम तुरन्त ही यह स्वीकार कर लोगे कि यह सब कुछ वैसा ही खेल-तमाशा है जैसाकि हमने वर्णन किया है।

19. एकमेव सत्य ईश्वर की वाणी पर ध्यान दो और इस संसार की निरी वस्तुओं में अभिमान न करो। तुम्हारी तरह उन अन्य लोगों का क्या अंजाम हुआ जो इस धरती पर अपने झूठे स्वामित्व का दावा किया करते थे, जो ईश्वर के ही धरा-धाम पर उसी की ज्योति बुझाने और उसके नगरों में उसके शक्तिशाली भवनों के आधारों को विनष्ट करने के लिए प्रयासरत थे? कहाँ दिख रहे हैं आज वे लोग? अपने निर्णय में निष्पक्ष बनो और परमात्मा की ओर लौट जाओ ताकि कदाचित वह परमेश्वर तेरे तुच्छ जीवन में किए गए उल्लंघनों को क्षमा कर दे। मगर, अफसोस! हमें पता है कि तुम कभी भी ऐसा नहीं करोगे क्योंकि ऐसी घोर है तेरी नृशंसता कि उससे नरक भी दहक गया है और ‘चेतना’ विलाप कर उठी है, तथा ‘सिंहासन’ के स्तम्भ हिल गए हैं और निष्ठावानों के हृदय दहल उठे हैं।

20. हे धरती के लोगो! अपनी अंतर्रात्मा से इस ‘प्रवंचित’ के आह्वान पर ध्यान दो और हमने जो कहानी कही है उसके अर्थ पर विचार करने के लिए जरा रुको। ताकि कदाचित् तुम स्वार्थ और लालसा की आग में झुलसने से बच जाओ और इस निम्न जगत की तुच्छ और बेकार वस्तुओं को उस तक पहुँचने में बाधा न बनने दो जो ‘अनन्त सत्य’ है। गौरव और अनादर, समृद्धि और विपन्नता, सुख-शांति और परीक्षाओं के दौर ये सब गुजर जाएँगे और शीघ्र ही धरती के सभी जनों को कब्र में विश्रान्ति की नींद सुला दिया जाएगा। अतः अंतर्दृष्टि से सम्पन्न हर व्यक्ति के लिए यही उचित है कि वह अपना ध्यान अनन्त लक्ष्य की ओर केन्द्रित करे, ताकि कदाचित् उसकी कृपा से जो कि ‘पुरातन सम्राट’ है, वह अनन्त साम्राज्य को पा सके और ‘उसके प्रकटीकरण के वृक्ष’ की छाँह तले अपना बसेरा बना सके।

21. भले ही यह संसार छल-प्रपंचों से भरा हो, लेकिन यह लगातार सबको उनके आसन्न विनाश की चेतावनी देता रहता है। पिता की मौत बेटे को आगाह करती है कि एक दिन वह भी मिट जाएगा। काश दुनिया में निवास करने वाले वे लोग जिन्होंने अपने लिए अपार धन-सम्पदा जमा कर रखी है और जो उस ‘एकमेव सत्य’ परमात्मा से दूर भटक आए हैं, यह जान पाते कि अंत में उनके ये खजाने किसके हाथों में चले जाएँगे! किन्तु बहा के जीवन की सौगन्ध! कोई भी यह नहीं जानता, ईश्वर के सिवा - धन्य हो उसकी गरिमा!

22. सनाय नामक कवि ने - ईश्वर की करुणा उन पर विराजे! कहा है: ”हे ऐसे लोगो, जिनके अशोभनीय आचरण ने तुम्हारे मुखड़ों पर कालिमा पोत दी है! सावधान, हे तुम जिनकी दाढ़ी बढ़ती उम्र के कारण पक चुकी है!“ अफसोस कि ज्यादातर लोग घोर निद्रा में निमग्न हैं। वे ऐसे आदमी की तरह हैं जो नशे की हालत में एक कुत्‍ते की ओर आकर्षित हो गया, उसे गले लगा लिया, उसे अपना खिलौना बनाया और जब ज्ञान का सवेरा हुआ और सूरज की रोशनी क्षितिज पर जगमगा उठी, तो जिसने यह महसूस किया कि उसके स्नेह का पात्र एक निरा कुत्‍ता था। तब शर्म और पश्चात्‍ताप से भरकर वह अपने घर में जा छुपा।

23. यह मत सोचना कि तुमने इस ‘युवा’ को निरादृत किया है या उसपर विजय पा ली है। तुम पर तो अधम से अधम प्राणियों का शासन है और तुम्हें इसका ज्ञान ही नहीं। तुच्छ से तुच्छ वस्तुएँ तुझ पर शिकंजा कसे हुई हैं जो सदा से घृणित रही हैं और वह कुछ नहीं बल्कि तेरा स्वार्थ और तेरी लालसा है। यदि ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट विवेक नहीं होता तो तुम अपनी और धरती के सभी निवासियों की असहाय स्थिति देख पाते। हमारा यह निरादर वास्तव में ईश्वर के धर्म का गौरव है, काश कि तुम यह समझ पाते!

24. इस ‘युवा’ ने सौजन्यता के विरुद्ध जाकर कभी भी एक शब्द बोलना नहीं चाहा है, क्योंकि सौजन्यता हमारा परिधान है जिससे हमने अपने कृपा प्राप्त सेवकों के अस्तित्व रूपी मन्दिरों को विभूषित किया है। अन्यथा तुम्हारे बहुत से कारनामें जिन्हें तुम छुपे हुए मान बैठे हो, इस पाती में प्रकट कर दिए जाते।

25. हे शक्ति और सामर्थ्‍य के प्रतिरूप! इन छोटे बच्चों और ईश्वर में निष्ठा रखने वाले इन असहाय लोगों को अधिकारियों और सिपाहियों के पहरे में भेजने की जरूरत नहीं थी। गलीपोली में हमारे आगमन के बाद, उमर नाम का एक मेजर हमारे सामने आया। उसने मुझसे क्या कहा यह ईश्वर को ज्ञात है। कुछ वार्तालाप के बाद जिसमें उसकी अपनी निर्दोषता और तुम्हारी गलती का उल्लेख किया गया था, हमने यह घोषणा की: ‘‘आरंभ में ही एक सभा बुलाई जानी चाहिए थी जिसमें इस समय के विद्वानों को इस ‘युवा’ से मिलने का अवसर दिया जाता ताकि यह तय किया जा सकता कि इन सेवकों ने क्या अपराध किए हैं। लेकिन अब तो यह विषय ऐसे विचारों के दायरे से बाहर आ गया है, और तुम्हारे अपने ही कथनानुसार तुम्हें हम सबको इस घोर एकाकी नगर में कैद रखने का दायित्व मिला है। लेकिन एक बात है, यदि तुम उचित समझो तो मेरा निवेदन है कि महामहिम सुल्तान से यह अर्ज करो कि इस ‘युवा’ को दस मिनट के लिए उनसे मिलने की इजाजत दी जाए, ताकि सुल्तान ऐसा कोई भी पर्याप्त प्रमाण माँग सकें जिसे वे उस परम सत्य परमात्मा के यथार्थ का सबूत मानते हों। यदि ईश्वर इस युवा को वह प्रमाण प्रस्तुत करने में सक्षम बना सकें तो फिर सुल्तान इन प्रवंचित लोगों को मुक्त कर दें और उन्हें उनकी हालत पर छोड़ दें।’’

26. उसने यह संदेश पहुँचाने और उसका जवाब हमें देने का वादा किया। लेकिन हमें उससे कोई खबर नहीं मिली। हालाँकि वह, जो कि ‘परम सत्य’ है उसे स्वयं को किसी भी व्यक्ति के समक्ष प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हर किसी की रचना उसकी आज्ञा के पालन के लिए की गई है, लेकिन फिर भी इन छोटे बच्चों और बड़ी तादाद में महिलाओं की दशा देखते हुए - जिन्हें अपने मुल्कों, अपने साथियों से बिछुड़ना पड़ा है हम इस विषय पर सहमत हो गए हैं। इसके बावजूद कोई परिणाम नहीं निकला। उमर आज भी जीवित और सुलभ है। उससे पूछो ताकि तुम सच्ची बात जान सको।

27. हमारे अधिकांश साथी अब इस कारागार में बीमार पड़े हैं, और सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ परमात्मा के सिवा किसी को नहीं पता कि हम पर क्या गुजरी है। हमारे यहाँ आगमन के बाद के दिवसों में, इनमें से दो सेवक स्वर्ग सिधार गए। दिन भर प्रहरी इस बात पर अड़े रहे कि जब तक उन्हें कफन-दफन का दाम नहीं चुका दिया जाता इन महान हुतात्माओं को वहाँ से नहीं ले जाया जा सकता। हालाँकि किसी ने उनसे मदद माँगी भी नहीं थी। उस समय हमारे पास कोई भी पार्थिव संसाधन नहीं था। हमने उनसे निवेदन किया कि वे इस विषय को हमारे ऊपर ही छोड़ दें और मौजूदा लोगों को उनके मृत शरीर ले जाने दें किन्तु उन्होंने मना कर दिया। अंत में, एक गलीचा बेचने के लिए बाजार ले जाया गया और उससे प्राप्त धन पहरेदारों को दिया गया। बाद में पता चला कि उन्होंने एक बहुत ही कम गहरी कब्र खोद दी थी और दोनों हुतात्माओं को उसी में दफन कर दिया गया, जबकि उन्होंने कफन-दफन के लिए दोगुनी रकम ली थी।

28. हमने जो यातनाएँ भोगी हैं उनका चित्रण करने में हमारी लेखनी और उनका वर्णन करने में हमारी वाणी असमर्थ है। लेकिन फिर भी उन यातनाओं की कटुता मेरे लिए शहद से भी ज्यादा मिठास भरी है। काश कि ईश्वर के पथ पर और उसके प्रेम के निमित्‍त हर क्षण दुनिया के सारे कष्ट ईश्वरीय ज्ञान के समुद्र में निमज्जित इस क्षणभंगुर ‘आत्मा’ को झेलने पड़ते!

29. हम ईश्वर से धैर्य और सहनशीलता की याचना करते हैं, क्योंकि तुम ठहरे एक दुर्बल और नासमझ प्राणी। यदि तुम जाग पाते और अनन्तता की विश्रान्ति से बहती बयारों की सुरभि ग्रहण कर पाते तो तुरन्त ही अपनी वे सारी सम्पदाएँ त्याग देते जिनमें तुम आनन्द-मग्न हो और इस ‘महानतम कारागार’ की एक भग्न कोठरी में निवास करना पसन्द करते। ईश्वर से याचना कर कि वह तुम्हें ऐसी परिपक्व सोच-समझ से सम्पन्न कर दे कि तू प्रशंसनीय और निन्दनीय आचरण के बीच विभेद कर सके। शांति विराजे उस पर जो मार्गदर्शन के पथ पर चलता है!

# लौह-ए-फुआद

## वह है परम पावन, परम महिमावान!

1. काफ़, ज़ा। हम परम भव्यता के महासागर के पार से तुम्हें बुला रहे हैं, अपनी लालिमामय धरती पर, अग्नि-परीक्षा के क्षितिज के ऊपर। सत्य ही, उसके सिवा और कोई ईश्वर नहीं है - वह जो है सर्वशक्तिमान, परम उदार। तू मेरे धर्म-पथ पर दृढ़तापूर्वक चल और उन लोगों का अनुसरण न कर जो अपनी इच्छित ध्येय पा लेने के बाद स्वामियों के स्वामी परमेश्वर से ही मुकर बैठे। बहुत ही शीघ्र वे परमात्मा के महाक्रोध के शिकंजे में होंगे और वह, वस्तुतः, सर्वशक्तिशाली, सर्वदमन है।

2. तू यह जान कि अपनी सार्वभौम सामर्थ्‍य की शक्ति के माध्यम से ईश्वर ने उसे अपने शिकंजे में ले लिया है जो हमारे विरुद्ध निर्णय सुनाने वालों में अग्रणी था। जब उसे अपनी यातना पास आती दिखी तो वह चिकित्सकों की पनाह लेने पेरिस भाग गया।

3. उसने पूछा कि ”क्या कोई भी मेरी मदद नहीं करेगा?“

4. उसके मुँह पर दो टूक जवाब दे दिया गया: ”अब कोई उपाय नहीं!“

5. और जब वह क्रोध के देवदूत की ओर मुड़ा तो डर के मारे वह मानों मर ही गया। उसने मिन्नत की: ”मेरे घर में धन-सम्पदा का अम्बार है। बॉसफोरस में मेरा एक महल है जिसके नीचे से नदियाँ बहती हैं।“

6. देवदूत ने उत्‍तर दिया: ”आज के दिन तुझसे कुछ भी मूल्य नहीं लिया जाएगा, भले ही तू दृश्य और अदृश्य हर वस्तु समर्पित करना चाहे। क्या तुझे ईश्वर के प्रियजनों की आहें नहीं सुनाई पड़ रहीं, जिन्हें तूने बिना किसी सबूत या प्रमाण के कैद में डाल दिया? तुम्हारी करनी से तो स्वर्ग के अंतरंग सहचर तक विलाप कर उठे हैं, और वे भी जो सुबह-शाम उच्च ‘सिंहासन’ की परिक्रमा किया करते हैं। तेरे प्रभु का कोप तुझ पर टूट पड़ा है, और दंड देने में अत्यंत कठोर है वह!”

7. उसने जवाब दिया: ”मैं लोगों पर शासन किया करता था और ये रहा मेरे अधिकार का आज्ञापत्र।“

8. ”चुप रह, अरे न्याय-दिवस से मुकरने वाले!“

9. उसने याचना की: ”क्या जरा मोहलत नहीं मिल सकती कि मैं अपने घर-परिवार से मिल आऊँ?“

10. ”हरगिज नहीं, अरे ईश्वर के श्लोकों में अविश्वास करने वाले!“

11. और तब अथाह रसातल के प्रहरियों ने उसे पुकार कर कहा: ”हे, अपने अप्रतिबाधित प्रभु से विमुख होने वाले जन! तेरे स्वागत के लिए नरक के द्वार पूरी तरह खोल दिए गए हैं। जा, इसकी आग में विश्राम कर, क्योंकि वह लालायित है तेरे लिए। अरे ओ तिरस्कृत! क्या तू भूल गया कि कैसे तू अपने जमाने का नमरूद बन गया था और कैसे तेरी नृशंसता ‘खूँटों के स्वामी’ फराओ की निर्ममता को भी पार कर गई थी? ईश्वर की सौगन्ध! तेरी दुष्‍टता ने पावनता के आवरण को तार-तार करके रख दिया है और स्वर्ग के स्तम्भों को हिला दिया है। अब तुझे भला शरण कहाँ मिलेगी? तेरे सर्व-बाध्यकारी प्रभु के भयंकर अभिशाप से भला वह कौन है जो तेरी रक्षा करेगा? ओ नास्तिक संशयात्मा! आज तेरे लिए कहीं कोई पनाह नहीं।” उसके बाद मृत्यु की वेदना ने उसे जकड़ लिया और वह आगे कुछ नहीं देख सका। इस तरह अपने अपार क्रोध में हमने उसे अपना ग्रास बनाया और दंड देने में बहुत कठोर है तुम्हारा प्रभु।

12. और तब ‘सिंहासन’ की दाहिनी भुजा की ओर से एक देवदूत ने उसका आह्वान किया: ”देख, यातनाओं के देवदूत को! क्या नरक के सिवा - जहाँ हृदय उबल उठता है, तेरे भाग निकलने का और कोई ठौर है?“ और दंड के देवदूत ने उसकी चेतना को प्राप्त किया और एक ध्वनि ने यह घोषित किया: ”अधम रसातल में प्रवेश कर जिसका वचन ‘ग्रंथ’ में दिया गया था और जिसके अस्तित्व को तुम रात-दिन नकारा करते थे।“

13. बहुत ही जल्द हम उसे (अली पाशा) भी खारिज कर देंगे जो उसी के जैसा था और उसके प्रमुख पर भी शिकंजा कसेंगे जो धरती पर शासन करता है (सुल्तान अब्दुल-अजीज), और मैं वस्तुतः सर्वशक्तिमान, सर्वबाध्यकारी हूँ। तू प्रभुधर्म में सुदृढ़ रह और सुबह-शाम अपने प्रभु का गुणगान कर। उस व्यक्ति की निंदा से अपनी आत्मा की ज्योति न बुझने दे जो हमारे उपहारों को पाने के बाद ऐसा अंधा हुआ कि सर्व नामों के अधीश्वर ईश्वर से ही विमुख हो बैठा। जैसे शैतान ने खुद उसे उकसाया था वैसे ही वह अपने समर्पित अनुयायियों को बहला रहा है। बहुत ही जल्द स्पष्ट रूप से तुम लोक और परलोक दोनों में उसे घोर पराभव की स्थिति में देखोगे। वह वस्तुतः ऐसे लोगों में से है जिसके इंतजार में है घोर यंत्रणा। उस धरती पर उसने किसी को एक पाती भी भेजी थी, दुष्टता के कारसाजों की एक कृति - जिसमें उसने ईश्वर का उपहास किया और ऐसी बातें अंकित कीं जिनसे अस्तित्व की सभी वस्तुएँ विस्मय में पड़ गईं। सुनो: जब सर्वशक्तिमान, अप्रतिबाधित ईश्वर का कोप तुझ पर टूटेगा तो क्या तुम किसी को अपने रक्षक के रूप में खोज सकोगे?

14. इस तरह हमने तुझे उन बातों के बारे में सूचित किया है जो लोगों के दिलों में छुपे पड़े हैं। सत्य ही, तुम्हारा प्रभु सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञाता है। इस प्रभुधर्म की विजय के लिए उठ खड़े हो और मेरे प्रियजनों को एकत्र कर। उन्हें इस दिवस में, जबकि लोगों के पग फिसल गए हैं, सत्य का दर्शन कर पाने में सहायता दे। सुनो: हर सच्चे अनुयायी के लिए यही सुयोग्य है कि वह अपने प्रभु को सहायता प्रदान करे। वह, वस्तुतः, तुम्हारा सहायक है और लोगों के पास अन्य कोई नहीं जिसकी ओर वे उन्मुख हो सकें।

15. और तब हमने मेहदी को अपनी गिरफ्त में लिया जिसके लिए अपने ‘ग्रंथों’ में हमने ईश्वरीय दंड का वचन अंकित किया था। जब हमारी भयावह गरिमा ने उसे चारों ओर से घेर लिया तो उसने विनती की: ”क्या मुझे अपने कार्यों को सुधारने का एक अवसर नहीं मिलेगा?“

16. तब एक ध्वनि ने यह बात कही: ”अरे, न्याय-दिवस में विश्वास न करने वाले! यह अतल रसातल की आग है और इसकी ज्वाला तेरे ही लिए सुलगाई गई है। अपने तुच्छ और व्यर्थ जीवन में तुमने सभी पुण्य कर्मों को त्याग दिया और अब ईश्वर से तेरी रक्षा करने वाला कोई नहीं है। तुम वास्तव में वह व्यक्ति हो जिसने हर हृदय को खिन्न कर दिया और ‘पवित्र चेतना’ के रुदन का कारण बना।

17. उसने याचना की: ”क्या अब मेरे लिए कोई शरण नहीं?“

18. ”नहीं, मेरे प्रभु की सौगन्ध! भले ही तू हर सम्भव साधन आजमा कर देख ले।“

19. तब वह ऐसी विपन्नता के साथ रो उठा कि मानों कब्र में सोए लोग भी काँप उठे। और उसे अदम्य शक्ति के हाथों ने जकड़ लिया। तब एक ध्वनि यह पुकार उठी: ”जा, नरकाग्नि में महाक्रोध के आसन की ओर लौट जा। घोर दुःख और अशुभ से परिपूरित तेरा निवास हो!“

20. इस तरह हमने उसे जकड़ लिया जैसे हमने उसके पहले के जनों को जकड़ा था। देखो उनके घरों को जिन्हें हमने मकड़ियों का बसेरा बनाकर छोड़ दिया है और सावधान हो जा, हे तुम जो कि ज्ञान से सम्पन्न हो! यही है वह जिसने ईश्वर का विरोध किया था और जिसके लिए हमारे ‘ग्रंथ’ में रौद्र श्लोकों को प्रकट किया गया था। धन्य है वह जो इसमें निहित तत्वों को पढ़ता और उन पर मनन करता है, क्योंकि एक शुभ अंत वस्तुतः उसकी प्रतीक्षा में है।

21. इस तरह हमने तुझे दुष्टों की कथा सुनाई है, ताकि तेरी आँखों को सांत्वना मिले। जहाँ तक तेरा प्रश्न है, तेरे लिए एक आशीर्वादित अंत के सिवा और कुछ भी नियत नहीं है।

# सूरा-ए-मुलूक

## वह है परम शक्तिमान!

1. यह पाती उस सेवक की ओर से है जिसे धरती के सम्राटों के समूह के बीच, नामों के साम्राज्य में, ‘हुसैन’ कहा जाता है। कदाचित् वे इसे खुले विचार की मनोचेतना के साथ ले सकें, इसके संदेश से दिव्य कल्याण-भावना के रहस्यों को खोज सकें, और उन लोगों में से बन सकें जो इसके अर्थ को समझते हैं। और कदाचित् वे अपना सर्वस्व त्याग कर पावनता के विश्रांति-स्थल की ओर उन्मुख हो सकें, तथा सर्वमहिमावान, अतुल्य परमात्मा के निकट आ सकें।

2. हे धरती के सम्राटों! इस उदात्‍त, इस फलों से लदे ‘वृक्ष’ जो कि पवित्र ‘मैदान’ में ‘रक्ताभ पर्वत’ पर से उगा है, से पुकारती हुई ईश्वर की ‘वाणी’ पर ध्यान दो जो इन शब्दों को गुंजार रही है: ”उसके सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है जो है सर्वसामर्थ्‍यमय, सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ।“ यह वह ‘स्थल’ है जिसे ईश्वर ने इसके निकट पहुँचने वालों के लिए पावन बनाया है, वह ‘स्थल’ जहाँ ‘पावनता के दिव्य तरुवर’ से उसकी आवाज सुनी जा सकती है। हे राजागण! ईश्वर से डरो और स्वयं को इस परम महान करुणा से वंचित मत रहने दो। अतः अपनी सारी सम्पदाएँ त्याग दे और उस उदात्‍त, महान ‘परमेश्वर का हाथ’ थाम ले। अपने हृदय ‘ईश्वर के मुखमंडल’ की ओर उन्मुख कर और तेरी लालसाएँ तुझे जिन वस्तुओं के पीछे भगा रही हैं उन्हें त्याग दे। विनष्ट हो जाने वाले लोगों में से न बन।

3. हे सेवक! उन्हें अली (अर्थात दिव्यात्मा बाब) की कथा सुनाओ कि कैसे वे उन लोगों के समक्ष सत्य के साथ आविर्भूत हुए थे, अपनी गौरवशाली और महत्वपूर्ण ‘पुस्तक’ के साथ और अपने हाथों में ईश्वर की ओर से प्रमाण लेकर और उस परमात्मा की ओर से पवित्र एवं आशीर्वादित प्रतीकों को लिए हुए। किन्तु, हे राजाओं! तुम सब ‘ईश्वर के स्मरण’ के दिवसों में उसकी ओर ध्यान देने और एक ज्योतिर्मय स्वर्ग के क्षितिज से उदित और प्रभासित होते प्रकाश से मार्गदर्शन पाने में चूक गए। तुमने उसके धर्म को परखा ही नहीं, जबकि ऐसा करना तुम्हारे लिए उन सभी वस्तुओं से श्रेयस्कर होता जिन पर सूर्य की किरणें जगमगाती हैं। काश कि तुम यह समझ पाते! जब तक फारस के धर्मगुरुओं ने - उन निर्मम लोगों ने - उसके खिलाफ अपना निर्णय सुनाया और अन्यायपूर्वक उसे मार डाला तब तक तुम लापरवाह ही बने रहे। उसकी चेतना ईश्वर के लोक की ओर उठ गई और उस निर्दयता के कारण स्वर्ग के सहचरों और ‘उसके’ निकट रहने वाले देवदूतों के नयन बरस पड़े। सावधान, तू पहले की तरह आगे भी असावधान न रह। अतः अपने सृजनकर्ता ईश्वर की ओर लौट जा और बेपरवाह लोगों में से न बन।

4. सुनो: प्रतिनिधित्व का सूर्य उग चुका है, ज्ञान और विवेक का ‘बिंदु’ स्पष्ट किया जा चुका है, तथा सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ ईश्वर का प्रमाण प्रकट कर दिया गया है। सुनो: अनन्तता का ‘चन्द्र’ स्वर्ग के बीचोंबीच उदित हो चुका है और इसके प्रकाश ने ऊपरी जगत के निवासियों को आलोकित कर दिया है। मेरा मुखड़ा आवरणों से बाहर झाँक उठा है और इसने स्वर्ग और धरती के समस्त निवासियों पर अपनी प्रभा बिखेरी है, किन्तु फिर भी तुम ‘उसकी’ ओर उन्मुख नहीं हुए, यद्यपि तुम्हारा सृजन उसी के लिए किया गया था, हे राजागण! अतः उसका अनुसरण कर जो मैं तुझसे कह रहा हूँ, और अपने सम्पूर्ण हृदय से उस पर ध्यान दे और विमुख हो चुके लोगों में से न बन। क्योंकि तुम्हारी गरिमा तुम्हारे राज-पाठ में नहीं बल्कि ईश्वर से तुम्हारी निकटता तथा उसकी पवित्र और संरक्षित पातियों के माध्यम से भेजे गए उसके आदेशों के पालन में निहित है। यदि तुम में से कोई भी भले ही सम्पूर्ण पृथ्वी पर शासन कर ले और इसमें तथा इसके ऊपर स्थित सभी वस्तुओं पर, इसके महासागरों, भूभागों, पर्वतों और मैदानों पर, किन्तु यदि ईश्वर स्मरण नहीं करेगा तो इन सबसे उसे कोई लाभ नहीं होगा, काश कि तू यह जान लेता।

5. तू यह जान कि एक सेवक की गरिमा ईश्वर से उसकी निकटता में है और यह कि यदि वह उस परमात्मा के निकट नहीं आता तो कुछ भी उसे कभी लाभ नहीं दे सकता, भले ही उसका प्रभुत्व सम्पूर्ण सृष्टि पर क्यों न हो। सुनो: स्वर्ग की विश्रान्ति से परमेश्वर की मृदुल बयार तेरे ऊपर से बह चुकी है परन्तु तुमने उसकी उपेक्षा की है और अपनी दिग्भ्रमित स्थिति में ही रहना पसन्द किया है। ईश्वर की ओर से मार्गदर्शन तुझे दिया जा चुका है, किन्तु तुम उसका अनुसरण करने से चूक गए और उसकी सत्यता को तिरस्कृत करना ही बेहतर समझा। ईश्वर के धर्म रूपी आले में उसका दीपक जला दिया गया है, परन्तु तुमने उसके गौरव की दीप्ति को पाने और उसकी ज्योति के पास पहुँचने के कार्य की अनदेखी कर दी। और तुम अभी भी असावधानी की शैय्या पर ही सोए पड़े हो!

6. अतः, जाग और अपने पैरों को दृढ़ कर और जो बातें तुझसे छूट गई हैं उनकी क्षतिपूर्ति कर और फिर स्वयं को ‘उसके’ पावन दरबार, उसके शक्तिमान महासागर, की ओर उन्मुख कर ताकि ईश्वर ने ‘उसके’ दीप्तिमान हृदय रूपी सीपी में ज्ञान और विवेक के जो मोती संगृहीत कर रखे हैं, वे तुम्हारे समक्ष प्रकट किए जा सकें। ऐसा ही है वह परामर्श जो तेरे लिए सर्वाधिक लाभप्रद होगा। इसे ही अपना प्रावधान बना ताकि तू सच्चे मार्गदर्शित लोगों में से बन सके। सावधान कि कही तू ईश्वर की मधुर बयार को अपने हृदय के ऊपर प्रवाहित होने से न रोक दे, वह बयार जिसके माध्यम से ‘उसकी’ ओर उन्मुख हुए लोगों के हृदय स्फूर्ति से भर सकें। हमने इस पाती में तुम्हारे लिए जो स्पष्ट चेतावनियाँ प्रकट की हैं उन पर ध्यान दे ताकि उसके बदले ईश्वर भी तेरी ओर ध्यान दे सके और तुम्हारे मुखड़े के सम्मुख अपनी करुणा के पट खोल दे। वस्तुतः, वह परम करुणामय और दयालु है।

7. हे धरती के सम्राटों! ईश्वर के भय को दरकिनार मत करो, और सावधान रहो कि कहीं तुम उस सर्वशक्तिमान द्वारा तय की गई मर्यादाओं का उल्लंघन न कर बैठो। उसके ग्रंथ में तुम्हारे लिए प्रदत्‍त विधानों का पालन करो और ध्यान रखो कि तुम उनकी सीमाएँ न लांघो। सावधान रहो ताकि तुम किसी के भी प्रति अन्याय न करो, भले ही वह सरसों के दाने के बराबर क्यों न हो। तू न्याय के पथ पर चल क्योंकि, वस्तुतः, यही सीधा मार्ग है।

8. अपने विभेदों को शांत कर और अपने हथियार कम कर, ताकि तुम्हारे खर्चों का भार कम हो सके और तुम्हारे मनो-मस्तिष्क में सुख-शांति का अनुभव हो। जो मतभेद तुम्हारे बीच फूट पैदा कर रहे हैं उनका निदान कर। इससे अपने नगरों और साम्राज्यों की आवश्यक सुरक्षा के अलावा तुझे और अधिक हथियारों की जरूरत नहीं रह जाएगी। ईश्वर से डर और मर्यादा की सीमाएँ न लांघ और न ही फिजूलखर्चियों में अपनी गिनती करा।

9. हमें पता चला है कि तुम प्रतिवर्ष अपने व्यय बढ़ाते ही जा रहे हो और उसका भार अपनी प्रजा पर डाल रहे हो। वास्तव में, यह उनकी सहनशक्ति से बाहर की बात है और घोर अन्याय है। हे राजागण! तू लोगों के बीच न्यायपूर्ण निर्णय कर और उनके बीच न्याय का प्रतीक बन। यदि तू सही ढंग से विचार करे तो यही तुम्हारे लिये उपयुक्त और तेरे पद के लिए शोभनीय है।

10. सावधान कि जो कोई भी तुझसे अपील करे और तेरी छत्रछाया में आए उससे अन्यायपूर्वक व्यवहार न कर। तू ईश्वरीय भय की छाया में विचरण कर और उनमें से बन जो नेक आचरण करते हैं। अपनी ताकत, सैन्य-शक्ति और अपने वैभव पर आश्रित न रह। अपना सम्पूर्ण विश्वास अपने रचयिता ईश्वर में रख और अपने समस्त मामलों में उसी की सहायता की याचना कर। सहायता सिर्फ उस परमात्मा के पास से ही आती है। स्वर्गों और धरती के समुदायों के माध्यम से वह जिसे भी चाहता है अपनी सहायता प्रदान करता है।

11. यह जान कि गरीब लोग तुम्हारे बीच ईश्वर की धरोहर हैं। ध्यान रख कि तू ईश्वर की धरोहर के साथ छल न कर और यह कि तू उनके साथ अन्यायपूर्ण आचरण न कर और न ही धोखेबाजों जैसा व्यवहार कर। वह दिवस जबकि ‘न्याय का तराजू’ स्थापित किया जाएगा उस दिन तुझे ईश्वर की धरोहर के बारे में जवाब देने को कहा जाएगा। यह वह दिवस होगा जबकि हर किसी को उसका देय चुकाया जाएगा, जब अमीर और गरीब सबके कर्मों को तौला जाएगा।

12. यदि तू हमारी इस पाती में अनुपम और स्पष्ट भाषा में प्रकटित परामर्शों पर ध्यान नहीं देगा तो ईश्वरीय दंड का प्रकोप हर ओर से तुझ पर टूट पड़ेगा और तेरे विरुद्ध उसका न्याय-निर्णय सुना दिया जाएगा। उस दिन उसका प्रतिकार कर सकने की तुझमें कोई शक्ति नहीं होगी और तू अपनी ही अक्षमता का साक्षी बनेगा। अतः अपने आप पर और वे लोग जो तेरी छत्रछाया में हैं उन पर दया कर और ईश्वर द्वारा उसकी परम पवित्र और महान पाती में प्रस्तावित सलाहों के अनुसार उन सबके बीच न्याय कर। यह वह पाती है जिसमें उसने हर एक वस्तु के लिए उसका अंश निर्धारित किया है, जिसमें उसने अत्यंत स्पष्टता के साथ सभी बातों की व्याख्या की है और जो अपने आप में उन सबके लिए चेतावनी है जो उस परमेश्वर में आस्था रखते हैं।

13. हमारे धर्म को परख, हम पर जो विपत्तियाँ टूटी हैं उनके बारे में पता कर और हमारे तथा हमारे शत्रुओं के बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर, तथा तू ऐसे लोगों में से बन जो अपने पड़ोसी के साथ युक्तिसंगत आचरण करते हैं। यदि तू आततायियों के हाथों को न रोक सके, यदि तू दलित निरीहों के अधिकारों की रक्षा करने में चूक गया तो फिर लोगों के बीच अपना बड़प्पन जताने का भला तुझे क्या हक है? क्या तुझे अपने उत्‍तम खान-पान का गुमान है, अपने खजानों में पड़ी निधियों का, भाँति-भाँति के अपने कीमती आभूषणों का जिनसे तुम स्वयं को अलंकृत करते हो? यदि सच्ची गरिमा ऐसी ही नाशवान वस्तुओं के स्वामित्व में निहित होती तब तो यह धरती जिस पर तुम विचरण करते हो तुझसे भी ज्यादा बड़प्पन दिखा पाती क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर के आदेश से ये सभी वस्तुएँ आखिर वही तो तुझे प्रदान करती है, तुझ पर समर्पित करती है। तेरे पास जो कुछ भी है वह धरती के गर्भ में ईश्वर के आदेश से ही तो है जिससे परमात्मा की कृपा के संकेत-स्वरूप तू अपनी सम्पदाएँ प्राप्त करता है। अतः अपनी दशा देख और उन चीजों को निहार जिन पर तुझे गर्व है। काश कि तू इसे समझ पाता!

14. नहीं, बल्कि उसकी सौगन्ध जिसकी मुट्ठी में है सम्पूर्ण सृष्टि का साम्राज्य! तेरी सच्ची और शाश्वत गरिमा और कहीं नहीं बल्कि ईश्वर के आदेशों के प्रति तुम्हारी दृढ़ आज्ञाकारिता में निहित है, उसके विधानों का सम्पूर्ण हृदय से अनुपालन, यह सुनिश्चित करने के लिए तुम्हारी दृढ़संकल्पता कि वे विधान कार्यान्वित किए बिना न रह जाएँ और दृढ़ता के साथ सही मार्ग का अनुसरण करने में।

15. हे ईसाई जगत के राजाओं! क्या तुमने ‘ईश्वर की चेतना’ ईसा की यह पुकार नहीं सुनी: ”मैं जा रहा हूँ और मैं तुम्हारे पास फिर आऊँगा?“ तो फिर जब वह स्वर्ग के बादलों की छाँह में आया तो फिर तुम उसके निकट आने से चूक कैसे गए ताकि तुम उसके मुखड़े को देख पाते और उन लोगों में से बनते जिन्हें उसका सान्निध्य प्राप्त करने का मौका मिला है? एक अन्य अंश में उसने कहा है: ”जब वह आएगा जो कि सत्य की चेतना है, तो वह सर्वसत्यों में तेरा मार्गदर्शन करेगा।“ लेकिन फिर भी देख कि जब वह सत्य को लेकर प्रकट हुआ तो कैसे तुम सबने उसकी ओर उन्मुख होने से मना कर दिया और अपनी ही कपोल कल्पनाओं में डूबे रहे। तुम सबने उसका स्वागत नहीं किया और न ही उसका सान्निध्य पाने की चेष्टा की ताकि तुम स्वयं उसके मुख से ईश्वरीय श्लोकों को सुन पाते, तथा सर्वशक्तिमान, सर्वमहिमामय, सर्वप्रज्ञ परमात्मा के अपरिमित विवेक का स्वाद पा सकते। अपनी इस असफलता के कारण तुमने ईश्वर की साँस को स्वयं पर फूँके जाने से बाधित कर दिया और अपनी आत्मा को तुमने इसकी मधुर सुरभि से वंचित कर दिया। अभी भी तुम अपनी भ्रष्ट लालसाओं की घाटी में खूब मजे से मँडरा रहे हो। ईश्वर की सौगन्ध! तुम सब और तेरी ये सारी सम्पदाएँ गुजर जाएँगी। निस्संदेह, तुम ईश्वर के पास लौट जाओगे और उसकी उपस्थिति में तुझे अपने कर्मों का हिसाब देने को कहा जाएगा जो सम्पूर्ण सृष्टि को एक साथ एकत्रित करेगा।

16. और फिर क्या तुमने ”ईशवाणी“ (गॉस्पेल) में उनके बारे में अंकित वाणी नहीं सुनी ”जो रक्त से उत्पन्न नहीं हुए थे, न ही हाड़-मांस की कामना, न मनुष्य की इच्छा से, बल्कि स्वयं ईश्वर से“, अर्थात वे जो ईश्वर की शक्ति द्वारा प्रकट किए गए हैं? अतः यह स्पष्ट है कि जो कोई भी सत्यतः उस परमात्मा की ओर से है जो सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ है उसे अस्तित्व के संसार में प्रकट किया जाएगा। तब फिर ऐसा क्यों है कि जब हमारे धर्म की वाणी तुझ तक पहुँची तो तुम हमारे मुख से उसके बारे में जानने से चूक गए, ताकि तुम सत्य और भ्रम का अन्तर समझ पाते, हमारे लक्ष्य और उद्देश्य की खोज कर पाते, और यह जान पाते कि एक दुष्ट और दिग्भ्रमित पीढ़ी के हाथों हमें किन यातनाओं से गुजरना पड़ा?

17. हे पेरिस के राजमंत्री! क्या तुम ‘गॉस्पेल’ में जॉन के शब्दों में अंकित ईश्वरीय वाणी और उसके ‘प्रकटीकरणों’ से सम्बंधी घोषणा को भुला बैठे? और फिर ‘ईश्वरीय वाणी के प्रकटावतारों’ के बारे में तुमने ‘पवित्र चेतना’ के उपदेशों की उपेक्षा कर दी और असावधानों में शुमार हो गए? यदि नहीं तो फिर फारस के मंत्री के साथ मिलकर तुमने हम पर ऐसी यातनाएँ ढाने का षडयंत्र क्योंकर रच लिया जिनसे ज्ञान और अंतर्दृष्टि से सम्पन्न लोगों के हृदय विचलित हो उठे, ‘अनन्त साम्राज्य’ के निवासियों की आँखों से अश्रुधारा बह उठी और ईश्वर के निकटस्थ जनों की आत्माएँ शोक में डूब गईं? और यह सब कुछ तुमने हमारे धर्म को परखे और इसके सत्य को समझे बिना कर डाला। क्या इस धर्म की सत्यता की पड़ताल करना, हम पर टूट पड़ी मुसीबतों की खबर रखना, समदर्शिता के साथ निर्णय लेना और न्याय-पथ पर चलना क्या तेरे स्पष्ट कर्तव्‍य नहीं हैं?

18. तेरे ये दिन समाप्त हो जाएँगे, तेरे मंत्रित्व का एक दिन अंत हो जाएगा और तेरी धन-दौलत सदा-सदा के लिए विलीन हो जाएगी और तब शक्तिमान ‘सम्राट’ के सम्मुख तुझे उन कारनामों का जवाब देने को कहा जाएगा जो तेरे हाथों ने रचे हैं। तुझसे पहले न जाने कितने मंत्री इस संसार में आए, ऐसे लोग जो शक्ति और सामर्थ्‍य में तुझसे बढ़-चढ़कर थे, जिनका पद तुझसे अधिक उत्कृष्ट था और जो धन-सम्पदा में तुझसे कहीं अधिक समृद्ध थे, और फिर भी वे धूल में समा गए, इस धरती पर उनका नामो-निशान नहीं रहा और जो अब घोर पश्चात्‍ताप के महासिंधु में निमग्न हैं। उनमें शामिल थे ऐसे लोग जो ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्‍य निभाने से चूक गए थे, जो अपनी ही लालसाओं के पीछे भागते रहे और वासना तथा दुष्टता के मार्ग का अनुसरण करते रहे। और उन लोगों में ऐसे भी थे जिन्होंने ईश्वर के श्लोकों में प्रस्तावित बातों का अनुगमन किया, अपने ऊपर आच्छादित दिव्य मार्गदर्शन की सहायता से जिन्होंने समुचित न्याय किया और जिन्हें अपने प्रभु की कृपा के वितान तले आश्रय मिला।

19. तुझे और तेरे जैसे औरों को मैं हिदायत देता हूँ कि जिस तरह तुम सबने हमारे साथ व्यवहार किया है, वैसे किसी अन्य के साथ न करना। सावधान कि कहीं तू ‘शैतान’ के पदचिह्नों पर न चलने लगे और अन्यायियों के मार्ग का अनुसरण न कर बैठे। इस संसार से तू बस उतना ही ग्रहण कर जितनी तेरी जरूरत है और उससे अधिक का त्याग कर। अपने सभी निर्णयों में समदर्शी बन, न्याय की मर्यादा न लांघ, और उन लोगों में से न बन जो इस पथ से भटके हुए हैं।

20. ओ राजाओं! बीस वर्ष बीत गए और इस दौरान प्रत्येक दिन हमें एक नई यंत्रणा का स्वाद चखने को मिला। हमसे पहले किसी को भी ऐसी यातनाएँ नहीं झेलनी पड़ीं जैसी कि हमने झेलीं। काश कि तुम यह समझ पाते! हमारे विरुद्ध उठ खड़े होने वाले लोगों ने हमें मौत के मुँह में डाल दिया, हमारा खून बहाया, हमारी धन-दौलत लूट ली और हमारी प्रतिष्ठा चाक-चाक करके रख दी। हालाँकि तुम्हें हमारी इन अधिकांश यातनाओं के बारे में पता था किन्तु तुम आततायियों के बढ़ते हाथ न रोक सके। अत्याचारियों के अन्याय को रोकना और अपनी जनता के साथ न्यायोचित व्यवहार करना ताकि तुम्हारी उत्कृष्ट न्याय-भावना मानवजाति के समक्ष झलक सके, क्या तुम्हारा स्पष्ट कर्तव्‍य नहीं है?

21. ईश्वर ने तुम्हारे हाथों में लोगों के शासन की लगाम सौंपी है ताकि तुम उन पर न्यायपूर्वक राज कर सको, दलितों के अधिकारों की रक्षा कर सको और गलत काम करने वालों को दंड दे सको। यदि तुम ईश्वर के ‘ग्रंथ’ में प्रस्तावित कर्तव्यों की अनदेखी करोगे तो उसकी दृष्टि में तुम्हारी गिनती अन्यायी लोगों में की जाएगी। तुम्हारी यह त्रुटि, वस्तुतः, गम्भीर होगी। क्या तुम अपनी कपोल-कल्पनाओं से बुनी गई बातों से चिपके बैठे हो और परम उदात्‍त, अगम्य, सर्वबाध्यकारी, सर्वशक्तिमान ईश्वर की आज्ञाओं को तिलांजलि दे रहे हो? जो कुछ तुम्हारे पास है उसे त्याग दो और ईश्वर ने जिन बातों का पालन करने की आज्ञा दी है, उनका दामन थाम लो। उस परमात्मा की कृपा पाने का यत्न कर क्योंकि जो ऐसा करता है वही उसके सीधे मार्ग का अनुगामी है।

22. हम जिस स्थिति में हैं उसका विचार करो, और देखो उन संकटों और मुसीबतों को जिनसे हम घिरे हैं। एक क्षण के लिए भी हमारी उपेक्षा मत करो और हमारे तथा हमारे दुश्मनों के बीच समत्व की भावना के साथ निर्णय लो। निस्संदेह, यह तुम्हारे लिए प्रत्यक्ष रूप से लाभदायक होगा। इस तरह हम अपनी कहानी तुझे सुनाते हैं, और हम पर जो विपदाएँ टूटी हैं उनकी तुम्हें दास्तान सुनाते हैं, ताकि तुम हमारी विपत्तियों को रोक सको और हमारा बोझ कम कर सको। जो कोई भी चाहे, हमें हमारी मुसीबतों से मुक्त करे, और जो ऐसा न करना चाहे, सत्य ही, मेरा ईश्वर सर्वोत्‍तम सहायक है।

23. हे ‘सेवक‘! हमने तुम्हारे पास जो कुछ भेजा है उससे लोगों को सावधान कर और उन्हें उनसे परिचित करा और किसी भी वस्तु के भय से स्वयं को विचलित न होने दे और न ही तू उन लोगों में से बन जो डिग जाते हैं। वह दिन निकट आ रहा है जबकि ईश्वर स्वर्ग और धरती के सभी निवासियों के समक्ष अपने धर्म की महानता की स्थापना और अपने प्रमाणों का विराट रूप दिखा चुका होगा। सभी परिस्थितियों में तू अपना सम्पूर्ण विश्वास अपने प्रभु में रख और उसी पर अपनी दृष्टि केन्द्रित कर और उन सबसे विमुख हो जा जो उसके सत्य से इन्कार करते हैं। तुम्हारा प्रभु, परमेश्वर, ही तुम्हारा पर्याप्त सहारा और सहायक हो। हमने अपने आप से प्रतिज्ञा की है कि हम धरती पर तुम्हारी विजय सुनिश्चित करेंगे और सभी लोगों के ऊपर अपने धर्म की महानता स्थापित करेंगे, भले ही ऐसा कोई भी राजा न मिले जो तेरी ओर उन्मुख होने वाला हो।

24. तू ‘नगर’ में अपने आगमन की बात याद कर कि किस तरह सुल्तान के मंत्रियों ने तुझे उनके नियम-कायदों से अनभिज्ञ मान लिया और तुझे अज्ञानियों में से समझा। सुनो: हाँ, मेरे प्रभु की सौगन्ध! ईश्वर ने अपनी उदार कृपा के माध्यम से मुझे जिन वस्तुओं का ज्ञान कराना चाहा है उनके सिवा अन्य सभी बातों से अनभिज्ञ हूँ मैं। निश्चितरूपेण, हम इसके साक्षी हैं और निःसंकोच इसे स्वीकार करते हैं।

25. सुनो: तुम जिन नियमों और विधानों से चिपके हुए हो, यदि वे तुम्हारे द्वारा निर्मित हैं तो हम किसी भी तरह उनका पालन नहीं करेंगे। मुझे इसी तरह निर्देशित किया है उसने जो सर्वज्ञ और सर्वसूचित है। ईश्वर की शक्ति और सामर्थ्‍य के माध्यम से अतीत में भी मेरा ऐसा ही तरीका रहा है और भविष्य में भी ऐसा ही रहेगा। यही, वस्तुतः, सही और सच्चा मार्ग है। और यदि वे विधान ईश्वर द्वारा निर्धारित हों तो अपने प्रमाण प्रस्तुत करो, बशर्ते कि तुम सच बोलने वालों में से हो। सुनो: एक ऐसी ‘पुस्तक’ में जिसमें मनुष्य का किया ऐसा कुछ भी नहीं है जो अंकित न हो भले ही वह कितना ही आसान काम क्यों न लगे, हमने वह सब कुछ लिख डाला है जो उन्होंने तुझ पर आरोपित किया है और वह सब कुछ जो उन्होंने तेरे साथ किया है।

26. सुनो: हे राज्यों के मंत्रिगण! तुझे यह शोभा देता है कि तू ईश्वर के आदेशों पर चले और अपने नियमों और विधानों को ताक पर रख दे, और उन लोगों में से बन जिन्हें सही मार्गदर्शन प्राप्त है। तेरी समस्त सम्पदाओं की तुलना में तेरे लिए यही श्रेयस्कर है, बशर्ते कि तू यह जान सके। यदि तुम ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करोगे तो तेरा रंच मात्र कर्म भी परमात्मा की दृष्टि में स्वीकार्य नहीं होगा। इस तुच्छ जीवन में तूने जो कुछ भी किया होगा, बहुत ही जल्द तुम्हें उनके परिणाम देखने को मिलेंगे और तुम्हें उनके प्रतिफल भुगतने होंगे। वस्तुतः, यह सच्ची बात है, एक निर्विवाद सत्य।

27. अतीत के युगों में ऐसे न जाने कितने असंख्य लोगों ने वैसा ही किया है जैसा कि तुमने किया है, हालाँकि वे ओहदे में तुझसे भी ऊँचे थे फिर भी अंत में धूल में समा गए और जिन्हें अपनी अपरिहार्य नियति का शिकार होना पड़ा। काश कि तुम सब अपने-अपने हृदय में प्रभुधर्म के विषय में विचार कर पाते! तुम्हारा भी उनके ही जैसा हश्र होगा और तुम्हें एक ऐसे निवास-स्थल में प्रवेश करना होगा जहाँ न कोई तुम्हारा मित्र होगा न मददगार। सत्य ही, तुमसे तुम्हारे कर्मों के बारे में पूछा जाएगा, ईश्वर के धर्म के प्रति अपने कर्तव्‍य के निर्वाह में तेरी असफलता और उसके उन प्रियजनों को घृणापूर्वक तिरस्कृत करने का हिसाब लिया जाएगा जो प्रकट निष्ठा के साथ तुम्हारे पास आए हैं।

28. ये तुम्हीं लोग तो हो जिन्होंने उनके बारे में मिलजुल कर मंत्रणा की है, तुम लोग जिन्हें अपनी लालसाओं के इशारे पर नाचना कहीं ज्यादा बेहतर लगा और जिन्होंने संकटों में सहायक, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आज्ञा को भुला दिया।

29. सुनो: क्या! तुम अपनी ही युक्तियों से चिपके बैठे हो और ईश्वर की आज्ञाओं को तुमने तिलांजलि दे डाली? वास्तव में तुमने स्वयं को तथा औरों को धोखा दिया है, काश कि तुम यह समझ पाते! सुनो: यदि तुम्हारे नियम और सिद्धान्त न्याय पर आधारित हैं तो फिर ऐसा क्यों है कि तुम उन बातों का अनुसरण करते हो जो तुम्हारी भ्रष्ट अभिरुचियों से मेल खाती हैं और उनका त्याग कर देते हो जो तुम्हारी इच्छाओं के अनुरूप नहीं हैं? तो फिर किस अधिकार से तुम लोगों के बीच निष्पक्ष न्याय करने का दावा करते हो? क्या तुम्हारे नियम और सिद्धान्त ‘उसे’ दी गई यंत्रणाओं को उचित ठहरा सकेंगे जो तुम्हारे कहने पर तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत हुआ था, तुम्हारे द्वारा उसे अस्वीकार किए जाने को और हर दिन उसे घोर क्षति पहुँचाने को? भले ही एक क्षण के लिए भी सही, क्या उसने कभी तुम्हारी अवज्ञा की? इराक के सभी निवासी और उससे भी बढ़कर हर समझदार व्यक्ति जो इन बातों का गवाह रहा है, मेरे शब्दों की सच्चाई के साक्षी होंगे।

30. हे राज्यों के मंत्रिगण! अपने निर्णय में निष्पक्ष बनो। हमने ऐसा क्या किया है जो हमारे निर्वासन को उचित ठहरा सके? हमारा ऐसा क्या अपराध है जिससे हम निष्कासन के योग्य माने गए? हमने ही तो तुम्हारे पास आने का यत्न किया और जरा देखो कि फिर भी तुमने हमारा स्वागत करने से इन्कार कर दिया! यह तुमने घोर अन्याय का कार्य किया है - एक ऐसा अन्याय जिसके बराबर इस संसार का और कोई भी अन्याय नहीं है। इसका साक्षी है स्वयं सर्वशक्तिमान परमेश्वर!

31. क्या मैंने कभी भी तुम्हारे विधानों का उल्लंघन किया है, या इराक में तुम्हारे किसी भी मंत्री की अवज्ञा की है? उनसे पूछकर देखो, ताकि हमारे प्रति तुम विवेक-सम्मत आचरण कर सको और तुम्हारी गिनती ऐसे लोगों में हो सके जो सर्वसूचित हैं। क्या उनमें से कभी भी किसी ने हमारे खिलाफ कोई शिकायत प्रस्तुत की है? क्या उनमें से किसी ने भी कभी हमारे मुख से ऐसा एक भी शब्द सुना है जो ईश्वर द्वारा उसके ‘ग्रंथ’ में प्रकटित विधान के प्रतिकूल जाता हो? यदि ऐसा है तो प्रस्तुत करो अपने प्रमाण ताकि हम तुम्हारे कार्यों का अनुमोदन और तुम्हारे दावों को स्वीकार कर सकें।

32. यदि तुमने अपने सिद्धान्तों और आदर्शों के अनुरूप हमसे व्यवहार करने की इच्छा की होती तो तुम्हारे लिए यही सुयोग्य रहा होता कि अपनी आज्ञाओं के पालन और जो कुछ भी तुमने अपनी मर्जी से निर्धारित किया उसके पालन के लिए तुमने हमें आदर और सम्मान दिया होता। इसी तरह, तुम्हारे योग्य यह रहा होता कि इराक में तुम्हारी इच्छाओं की पूर्ति के लिए हमने जो व्यय किए तुमने उस कर्ज का भुगतान किया होता। अतएव, तुमने हमारी बातों पर ध्यान दिया होता, हमारे दुःखों की दास्तान सुनी होती और हमारे साथ तुमने उसी औचित्य के साथ न्याय किया होता जैसे कि तुम स्वयं अपने साथ करते। तुमने हमारे लिए वह कामना नहीं की होती जो तुम अपने लिए नहीं करते, बल्कि तुमने उदारतापूर्ण आचरण करने का निर्णय लिया होता। ईश्वर की सौगन्ध! तुमने हमारे साथ न तो अपने सिद्धान्तों और मानकों के अनुरूप व्यवहार किया, न ही धरती के किसी अन्य मनुष्य की तरह। बल्कि, ओ कुटिल और धृष्ट जनो! तुमने हमारे साथ अपनी शैतानी और दिग्भ्रमित लालसाओं के बहकावे में आकर आचरण किया।

33. हे पवित्रता के विहग! मेरे साथ मिलन के स्वर्ग में उड़ान भर और लोगों को उन बातों से परिचित करा जिन्हें हमने गरिमा के पर्वत के पार अनन्तता के लहराते हुए सागरों के पास तेरे समक्ष उजागर किया था। तू किसी के भी भय से न घबड़ा और अपना विश्वास ईश्वर में रख जो है सर्वशक्तिमान और परम दयालु। हम, सत्य ही, उन सब लोगों से तेरी रक्षा करेंगे जिन्होंने ईश्वर से प्राप्त किसी भी स्पष्ट संकेत या किसी दिव्य-निर्देशित ‘ग्रंथ’ के बिना ही तुझे घोर प्रवंचना का शिकार बनाया है।

34. हे असावधानों के समुदाय! ईश्वर मेरा साक्षी है कि हम तुम्हारी धरती पर अव्यवस्था फैलाने या तुम्हारे लोगों के बीच विभेद के बीज बोने नहीं आए थे। नहीं, बल्कि हम तो साम्राज्य की आज्ञाओं के पालन के लिए आए थे, तुम्हारी प्रभुसत्‍ता को और महान बनाने, हमारी अपनी बुद्धिमत्‍ता के पथ पर तुझे निर्देशित करने और तुझे वह याद दिलाने जो तुम भूल चुके हो - जैसाकि उस प्रभु ने सत्य ही कहा है:”उन्हें सावधान करो क्योंकि, वस्तुतः तुम्हारी चेतावनी अनुयायियों के लिए लाभप्रद होगी।“ किन्तु तुमने ‘चेतना’ के मधुर स्वरों पर ध्यान नहीं दिया, और बिना सोचे-विचारे हमारे शत्रुओं की बातों पर कान दिया, उनकी बातों पर जो अपनी भ्रष्ट अभिरुचियों के बहकावे में आकर काम करते हैं, जिनके कारनामों को ‘शैतान’ ने उनकी दृष्टि में बहुत ही उचित बनाकर पेश किया है, और जिनकी जीभ हमारी निन्दा करने में ही निरत है। क्या तुमने वह नहीं सुना जो ‘उसकी’ सर्वमहिमाशाली और अचूक ‘पुस्तक’ में प्रकटित है: ”यदि कोई दुष्ट व्यक्ति तुम्हारे पास कोई खबर लेकर आए तो तुरन्त उसका समाधान करो?“ तो फिर तुमने ईश्वर की आज्ञा को क्योंकर त्याग दिया है और उनके कदमों का अनुसरण किया है जो उपद्रव करने पर आमादा हैं?

35. हमें यह सुनने को मिला है कि ऐसे ही निन्दकों में से एक ने यह कहा है कि इराक में अपने निवास के दौरान यह ‘सेवक’ सूदखोरी किया करता था और अपने लिए धन-सम्पदा के संग्रह में व्यस्त था। सुनो: जिस विषय का तुझे ज्ञान ही नहीं उसके बारे में तुम कैसे निर्णय कर सकते हो? तुम ईश्वर के सेवकों के खिलाफ कैसे आक्षेप लगा सकते हो और ऐसे शैतानी शंका-सन्देहों को मन में कैसे रख सकते हो? और यह आरोप भला कैसे सच हो सकता है जबकि ‘परमात्मा के संदेशवाहक’ और ’अवतारों की मुहर’ मुहम्मद के समक्ष प्रकटित उस परम पावन और संरक्षित ‘ग्रंथ’ में ईश्वर ने अपने सेवकों के लिए इस कार्य का निषेध किया है - एक ऐसी पुस्तक में जिसे परमात्मा ने अपना शाश्वत प्रमाण तथा समस्त मानवजाति के लिए अपने मार्गदर्शन और अपनी चेतावनी के रूप में निरूपित किया है? यह तो वस्तुतः वह विषय है जिसके सन्दर्भ में हमने फारस के धर्मगुरुओं का विरोध किया है क्योंकि पवित्र ग्रंथ के पाठ के अनुसार हमने सभी लोगों को सूदखोरी से मना किया है। ईश्वर स्वयं ही मेरे शब्दों का साक्षी है: ”तथापि मैं स्वयं को दोषमुक्त मानकर नहीं चलता क्योंकि आत्मा दुष्टता की ओर प्रवृत्‍त हो जाती है।“ हमारा इरादा सिर्फ तुम्हें सत्य बताने का है ताकि तुम उसे जान सको और दिव्य जीवन जीने वाले लोगों में से बन सको। सावधान, कहीं तुम ऐसे लोगों की बातों पर ध्यान न दे बैठो जिनसे ईर्ष्‍या और द्वेष की दुर्गन्ध निकल रही हो। ऐसे लोगों पर ध्यान न दो और सच्चरित्रता का पालन करो।

36. तू यह जान ले कि यह संसार और इसके मिथ्याभिमान और समस्त अलंकरण एक दिन विनष्ट हो जाएँगे। ईश्वर के साम्राज्य के सिवा जो कि सबके उस सार्वभौम स्वामी, संकटों में सहायक, सर्वगरिमामय, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सिवा और किसी का नहीं है, अन्य कुछ भी नहीं बचेगा। तुम्हारे जीवन के ये दिन समेट लिए जाएँगे और वे सभी वस्तुएँ जिनमें तुम निरत हो और जिनकी तुम शेखी बघारते नहीं अघाते वे नष्ट हो जाएँगी। निस्संदेह परमेश्वर के देवदूतों का समूह तुम्हें उस स्थल पर प्रकट होने को बुलाएगा जहाँ पर सम्पूर्ण सृष्टि के अंग-प्रत्यंग काँप उठेंगे और हर आततायी का मांस रेंग उठेगा। तुम्हारे इस व्यर्थ जीवन में तुम्हारे हाथों ने जो कारनामें किए हैं उनका हिसाब लिया जाएगा, तुमसे और तुम्हें तुम्हारे कर्मों का प्रतिफल प्राप्त होगा। यह वह दिन है जिसके तुम अवश्य ही एकदिन साक्षी बनोगे - एक ऐसी घड़ी जिसे कोई नहीं टाल सकता। इसकी साक्षी है उसकी वाणी जो सत्य कहता है और जो सभी वस्तुओं का ज्ञाता है।

37. हे ‘नगर’ के निवासियों! ईश्वर से डरो और लोगों के बीच विभेद के बीज मत बोओ। ‘शैतान’ के पथ का अनुगमन न करो। अपने जीवन के इन चंद बचे-खुचे दिनों में एकमेव सत्य ईश्वर के पदचिह्नों पर चलो। तुम्हारे दिन वैसे ही गुजर जाएँगे जैसे तुमसे पहले आने वालों के गुजर गए थे। तुम भी वैसे ही धूल में समा जाओगे जैसे तुम्हारे पूर्वज।

38. यह जान ले कि ईश्वर के सिवा मुझे अन्य किसी का डर नहीं। मैंने अपना विश्वास उस प्रभु के सिवा अन्य किसी में नहीं रखा है, उस परमात्मा के सिवा मैं और किसी से आसक्त नहीं, और उसने मेरे लिए जो भी चाहा है उसके सिवा मेरी अन्य कोई भी कामना नहीं है। वस्तुतः, यही मेरे हृदय की अभिलाषा है, बशर्ते कि तुम जानते! मैंने अपनी आत्मा और यह काया समस्त लोकों के प्रभु परमात्मा के लिए उत्सर्ग कर रखी है। जिस किसी ने ईश्वर को जाना है वह उसके सिवा अन्य किसी को नहीं जानेगा और जिस किसी के भी मन में ईश्वर का डर है वह उसके सिवा अन्य किसी से भयभीत नहीं होगा, भले ही पूरी धरती की सभी शक्तियाँ उसके विरुद्ध क्यों न खड़ी हो जाएँ। मैं उस ईश्वर के आदेश के बिना कुछ भी नहीं बोलता, और ईश्वर की शक्ति और सामर्थ्‍य के माध्यम से उसके सत्य के सिवा अन्य किसी भी बात का अनुसरण नहीं करता। वह, वस्तुतः, हर सदाचारी को उसका पुरस्कार प्रदान करेगा।

39. हे सेवक! ‘नगर’ में अपने आगमन पर तुमने जो बातें देखीं उनका वर्णन करो ताकि लोगों के बीच तुम्हारे प्रमाण बचे रहें और विश्वासियों के लिए एक चेतावनी के रूप में काम कर सकें। ‘नगर’ में अपने आगमन पर हमने इसके गवर्नरों और वयस्कजनों को बच्चों की तरह एकत्रित होकर मिट्टी से खेलते पाया। हमने किसी को भी इतना परिपक्व नहीं पाया कि वह हमसे उन सत्यों को ग्रहण कर सके जिनकी शिक्षा हमें ईश्वर ने दी थी, न ही वे इतने प्रौढ़ विचार के थे कि वे हमारे विवेक की विलक्षण वाणी सुन पाते। उनकी हालत देखकर, उनके द्वारा मर्यादा के किए गए उल्लंघनों, और जिन चीजों के लिए उन्हें रचा गया था उनके प्रति उनकी पूर्ण उपेक्षा के कारण हमारी अंदरूनी आँखें रो उठीं। उस ‘शहर’ में मैंने यही देखा और जिसे हमने अपने ‘ग्रंथ’ में अंकित करना चाहा है ताकि यह उनके तथा शेष लोगों के लिए चेतावनी का काम कर सके।

40. सुनो: यदि तुम इस जीवन और इसकी चमक-दमक के पीछे दौड़ने वालों में से हो तो तुम्हें तभी उन्हें पाने का यत्न करना चाहिए था जब तुम अपनी माँ की कोख में थे, क्योंकि उस समय तुम लगातार उनके करीब आ रहे थे, काश कि तुम यह समझ पाते! किन्तु दूसरी ओर, तुमने जब से जन्म लिया और परिपक्वता प्राप्त की, तबसे तुम इस दुनिया से दूर और धूल के निकट आते चले गए हो। तो फिर धरती के खजाने जमा करने के लिए ऐसे लालच का प्रदर्शन क्यों, जबकि तुम्हारे दिन गिने-चुने हैं और तुम अपना अवसर लगभग खो चुके हो? अरे ओ असावधान जनों! क्या तुम फिर भी अपनी नींद से नहीं जागोगे?

41. ईश्वर के निमित्‍त यह ‘सेवक’ तुझे जो सलाह दे रहा है उसे ध्यान से सुन। वस्तुतः, वह तुझसे कोई भी प्रतिदान नहीं चाहता। ईश्वर ने जो कुछ भी उसके लिए नियत किया है उसने स्वयं को बस उसी पर छोड़ दिया है और वह पूर्णतः ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित है।

42. हे लोगों! तेरे जीवन के बहुत सारे दिन बीत चुके और तुम्हारा अंत सन्निकट है। अतः, अब त्याग अपनी सारी युक्तियाँ और वह सब कुछ जिनसे तू चिपका बैठा है, और ईश्वर की शिक्षाओं का दामन कस कर थाम ताकि तू कदाचित् उस पद को पा सके जिसे ईश्वर ने तेरे लिए उद्दिष्ट किया है और तू सन्मार्ग पर चलने वाले लोगों में से बन सके। संसार की वस्तुओं और उसके व्यर्थ के अलंकरणों में आनन्दमग्न न हो और न ही उन पर अपनी आशाएँ टिका। तुम्हारी निर्भरता सिर्फ परम उदात्‍त, महानतम ईश्वर के स्मरण पर रहे। बहुत ही जल्द वह तुम्हारी समस्त सम्पदा को शून्य में विलीन कर देगा। उस परमात्मा से डर और उसके साथ की गई अपनी संविदा को न भूल और ऐसे लोगों में से न बन जो मानो एक पर्दे के कारण उससे दूर हो गए हैं।

43. सावधान कि कहीं तू ईश्वर के सम्मुख घमंड से न फूल बैठे और उसके प्रियजनों को घृणापूर्वक त्याग न दे। उनके प्रति नमनशील और विनम्र बन जो निष्ठावान हैं, जिन्होंने ईश्वर और उसके संकेतों में आस्था झलकाई है, जिनके हृदय उसकी एकता के साक्षी हैं, जिनकी वाणी उसकी एकमेवता की घोषणा करती हैं और जो उसकी अनुमति के बिना नहीं बोलते। इस तरह हम तुम्हें न्याय का उपदेश देते हैं और तुम्हें सत्य के माध्यम से सावधान करते हैं ताकि तू कदाचित जाग्रत हो सके।

44. किसी भी आत्मा पर वह बोझ न डाल जो तू स्वयं अपने ऊपर डाला जाना पसन्द नहीं करेगा और किसी के लिए भी उन चीजों की कामना न कर जिनकी कामना तू स्वयं अपने लिए नहीं करेगा। यह तेरे लिए मेरा सर्वोत्‍तम परामर्श है बशर्तें कि तू इस पर ध्यान देता।

45. तू अपने बीच के धर्मगुरुओं और विद्वानों का आदर कर, जिनका आचरण उनके पद के अनुरूप हो, जो ईश्वर द्वारा तय की गई मर्यादाओं का उल्लंघन न करते हों, और जिनके निर्णय ईश्वर के ग्रंथ में प्रकटित उसकी आज्ञाओं के अनुरूप हों। यह जान कि वे स्वर्गों और धरती के निवासियों के लिए मार्गदर्शन के दीप हैं। जो कोई भी अपने बीच निवास करने वाले धर्मगुरुओं और विद्वानों का तिरस्कार और उनकी उपेक्षा करते हैं, उन्होंने वास्तव में ईश्वर की उस कृपा को बदलने का कार्य किया है जो ईश्वर ने उन्हें प्रदान की है।

46. सुनो: जब तक ईश्वर तुझे प्रदत्‍त अपनी कृपा में परिवर्तन न कर दें तब तक तू इंतजार कर। चाहे कुछ भी हो वह उससे बच नहीं सकता। उसे स्वर्गों और धरती दोनों का ही रहस्य ज्ञात है। हर वस्तु उसके ज्ञान के दायरे में है। तूने जो कुछ भी किया हो या जो भी तू भविष्य में करेगा उनका आनन्द न मना और न ही उन यातनाओं का जश्न मना जो तूने हमें दी हैं, क्योंकि इस प्रकार के उपायों से तू अपना रुतबा नहीं बढ़ा सकता, बशर्ते कि तू तीक्ष्ण विवेक-बुद्धि से अपने कार्यों को परख पाता। और तू हमारे पद की उच्चता से ध्यान भी नहीं भटका सकेगा, नहीं, बल्कि हमने जो यातनाएँ भोगी हैं उनमें सतत धैर्य का परिचय देने के लिए ईश्वर हमें कई गुणा पुरस्कार प्रदान करेगा। वस्तुतः, जो कोई भी धैर्यपूर्वक सब झेलता है उसके पुरस्कार में वह परमात्मा वृद्धि करेगा।

47. तू यह जान ले कि अनादि काल से ही संकट और परीक्षाएँ ईश्वर के चुने हुए जनों, उसके प्रियपात्रों और ऐसे सेवकों की नियति रहे हैं जो ईश्वर के सिवा अन्य सबसे अनासक्त होते हैं - उनकी नियति जिन्हें न कोई सौदेबाजी न कोई लेनदेन सर्वशक्तिमान ईश्वर के स्मरण से दूर कर सकती है, जो तब तक नहीं बोलते जब तक उस प्रभु की वाणी नहीं निकलती और जो उसकी ही आज्ञा के अनुसार कार्य करते हैं। ईश्वर का ऐसा ही विधान रहा है जो उसने अतीतकाल में कार्यान्वित किया है और भविष्य में भी ऐसा ही रहेगा। धन्य हैं वे जो स्थिर और सुदृढ़ धैर्य के साथ रहते हैं, वे जो बुरे वक्त और कठिनाइयों में धीरज रखते हैं, जो अपने ऊपर आ पड़ी किसी भी विपत्ति पर विलाप नहीं करते और जो समर्पण के पथ पर चलते हैं।

48. जो विपत्तियाँ हम पर टूटी हैं वे पहले भी घटित हुई हैं। इस्लाम की धरती पर इस तरह गिरकर चकनाचूर होने वाला कोई हमारा ही पहला प्याला नहीं है और न ही यह पहली बार है जबकि ऐसे षडयंत्रकारियों ने मिलकर ईश्वर के प्रियतम के खिलाफ कुचक्र रचा हो। हमने जो यातनाएँ भोगी हैं वे हमसे पहले इमाम हुसैन द्वारा दी गई अग्नि-परीक्षाओं के तुल्य ही हैं। दिल में दुष्टता और वैमनस्य रखने वाले षडयंत्रकारियों के दूत उनके पास भी पहुँचे थे, उन्होंने उन्हें शहर से बाहर आने का आमंत्रण दिया था, और जब वे अपने प्रियजनों के साथ बाहर आए तो वे अपनी पूरी ताकत से उनके खिलाफ खड़े हो गए और अंत में उन्हें मार ही डाला, उनके बेटों और भाइयों की हत्या कर दी और परिवार के बाकी लोगों को कैद कर लिया। अतः यह पहले भी हो चुका है और, वस्तुतः, ईश्वर मेरे शब्दों का साक्षी है। इमाम हुसैन के वंश में छोटा या बड़ा कोई न बचा, सिवाय उनके पुत्र अली अल-औसात के जिन्हें जैनुल-आबदीन के नाम से जाना गया।

49. अतः देख, ओ असावधानों! कि इस युग से पहले हुसैन के हृदय में ईश्वर के प्रेम की अग्नि कितनी प्रज्वलित थी, बशर्ते कि तू मननशील लोगों में से हो! इतने प्रबल रूप से प्रज्वलित हुई थीं उस अग्नि की लपटें कि अंत में उत्कंठा और अदम्य अभिलाषा ने धैर्य की लगाम उनसे थाम ली और उस सर्वबाध्यकारी ईश्वर के प्रेम ने उनके हृदय को इतना भावविह्वल करके रख दिया कि उन्होंने समस्त लोकों के स्वामी ईश्वर के पथ पर अपनी आत्मा, अपनी चेतना, अपना सर्वस्व सौंप डाला। ईश्वर की सौगन्ध! यह उनके लिए धरती और स्वर्ग के साम्राज्य से भी ज्यादा मधुर था क्योंकि सच्चा प्रेमी अपने प्रियतम से पुनर्मिलन के सिवा अन्य कोई कामना नहीं करता और साधक का लक्ष्य अपना साध्य पाने के अलावा और कुछ भी नहीं होता। उनका हृदय पुनर्मिलन के लिए वैसे ही ललकता है जैसे शरीर चेतना के लिए। ओह, बल्कि उनकी अभिलाषा इससे भी बढ़कर है, काश कि तुम यह समझ पाते!

50. सुनो: वही अग्नि अब मेरे वक्षस्थल में धधक रही है, और मेरी अभिलाषा है कि यह ‘हुसैन’ भी उसी तरह अपना जीवन बलिदान कर दे - एक ऐसी महान उच्चता को प्राप्त करने की आशा में जिस उच्चता की स्थिति में सेवक स्वयं अपने प्रति मृत हो जाता है और जीवित रहता है उस सर्वशक्तिमान, परम उदात्‍त, महान परमात्मा में। यदि मैं ईश्वर द्वारा उस महान स्थिति में अंतर्निहित किए गए रहस्यों को तुम्हारे समक्ष प्रकट कर दूँ तो सत्य ही तुम उसके पथ पर अपने जीवन निःसर्ग कर डालोगे, अपनी सम्पदाओं का परित्याग कर दोगे और अपना सर्वस्व छोड़ दोगे ताकि तुम इस लोकोत्‍तर और सर्वगरिमामय पद को पा सको। परन्तु ईश्वर ने तुम्हारे हृदयों पर आवरण डाल रखे हैं और तुम्हारे नेत्रों पर पट्टी बाँध रखी है ताकि न तुम उस प्रभु के रहस्यों को जान सको और न ही जान सको उनके गहन अर्थ को।

51. सुनो: निष्ठावान आत्मा ईश्वर की निकटता की वैसे ही कामना करती है जैसे दुधमुँहा शिशु अपनी माँ के वक्षों की। नहीं, बल्कि इससे भी अधिक उग्र है उसकी उत्कंठा, बशर्ते कि तुम यह जान पाते! और फिर उसकी यह ललक ठीक वैसी ही है जैसे कोई घोर प्यास का मारा करुणा की जीवन्त जलधार को पाने के लिए हाँफता है, या पापी क्षमा और दया के लिए तरसता है। इस तरह हम बताते हैं तुम्हें ईश्वरीय धर्म के रहस्य और प्रदान करते हैं तुम्हें वह जो तुम्हें उन तमाम वस्तुओं से मुक्त कर देगा जिनमें तुम अब तक अपना मन रमाए बैठे हो, ताकि तुम कदाचित् इस उदात्‍त स्वर्ग की परिधि में पावनता के दरबार के अन्दर प्रवेश पा सको। मैं परमात्मा की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, जो कोई भी उसके अन्दर प्रवेश करेगा वह कभी भी उसके भवन-परिसर को त्यागेगा नहीं और जो कोई भी उसे निहार लेगा वह वहाँ से कभी मुँह नहीं फेरेगा, भले ही नास्तिकों और विश्वासघातियों के खड्ग उस पर प्रहारों की बौछार क्यों न कर दें। इस तरह हमने तुम्हें वह बतलाया है जो हुसैन पर बीता था, और हम ईश्वर से याचना करते हैं कि वह हमारे लिए वह नियत करे जो उसने हुसैन के लए आदेशित किया था। वस्तुतः, वह परम उदार है, सर्वदयालु है।

52. ईश्वर की धर्मपरायणता की शपथ! उनके (हुसैन के) कर्म के माध्यम से सभी वस्तुओं पर पावनता की सुरभि प्रवाहित हुई थी, ईश्वर के प्रमाणों की पूर्णाहुति हुई थी, और उसके सबूत सब लोगों के बीच उजागर किए गए थे। और फिर उनके बाद, ईश्वर ने एक ऐसे जन-समुदाय को खड़ा किया जिन्होंने उनकी मौत का बदला लिया, उनके दुश्मनों को मार डाला, और जो सुबह-शाम उनके लिए विलाप करते थे। सुनो: ईश्वर ने अपने ‘ग्रंथ’ में वचन दिया है, हर आततायी द्वारा किए गए उत्पीड़न के लिए एक दिन वह उसे जकड़ लेगा और उपद्रव भड़काने वालों को उखाड़ फेंकेगा। तू यह जान कि ऐसे पवित्र कार्य, अपने आप में, इस अस्तित्व के संसार पर एक महान प्रभाव डालते हैं - एक ऐसा प्रभाव जिसकी परख उनके सिवा और कोई नहीं कर सकता जिनकी आँखें ईश्वर ने खोल दी हैं, जिनके हृदयों को उसने हर अवरोधक आवरण से मुक्त कर दिया है और जिनकी आत्माओं को उसने सच्चा मार्गदर्शन प्रदान किया है।

53. वह दिन निकट आ रहा है जब ईश्वर ऐसे लोगों को खड़ा करेंगे जो याद करेंगे हमारे दिनों को, जो हमारी परीक्षाओं की दास्तान सुनाएँगे, जो उन लोगों से हमारे अधिकारों की पुनर्बहाली की माँग करेंगे जिन्होंने अंश मात्र भी प्रमाण के बिना हमारे साथ घोर अन्यायपूर्ण व्यवहार किया है। ईश्वर, सत्य ही, उन लोगों के जीवन के नियामक हैं जिन्होंने हमें छला है, और उनकी करनी परमात्मा को अच्छी तरह ज्ञात है। निस्संदेह, उनके पापों के लिए वह उन्हें अपने शिकंजे में कसेगा। सत्य ही, वह प्रतिशोध लेने वालों में सबसे भयानक है।

54. इस तरह हमने तुम्हें एकमेव सत्य ईश्वर की बातें कही हैं, और परमात्मा द्वारा तेरे लिए निर्दिष्ट चीजें तुम्हारे पास भेजी हैं, ताकि तू कदाचित् उससे क्षमा-याचना करे, उसके पास वापस लौट जाए, सचमुच पश्चात्‍ताप करे, अपने गलत कामों को महसूस कर सके, अपनी निद्रा से जाग सके, त्याग सके अपनी असावधानी, जो चीजें तुझसे छूट गई हैं उनके लिए पछतावा कर सके, और नेक काम करने वाले लोगों में से बन सके। जो कोई भी चाहे, मेरे शब्दों की सत्यता स्वीकार करे, और जो ऐसा नहीं चाहता उसे विमुख हो जाने दो। मेरा एकमात्र कर्तव्‍य ईश्वर के धर्म के प्रति अपना कर्तव्‍य निभाने से तेरे द्वारा चूक जाने की याद दिलाना है, ताकि तू कदाचित् मेरी चेतावनी पर ध्यान देने वाले लोगों में से हो। अतः, ध्यान दे मेरी वाणी पर और तू ईश्वर की ओर वापस लौट और पश्चात्‍ताप कर, ताकि वह अपनी कृपा के माध्यम से तुझ पर करुणा कर सके, तुम्हारे पापों को धो सके, और तेरे अतिक्रमणों को क्षमा कर सके। उसकी दया की महानता उसके क्रोध की प्रचंडता से कहीं बढ़कर है, और उसकी करुणा उन सबको समेटे हुए है जिन्हें अस्तित्व प्रदान किया गया है और जिन्हें जीवन के वस्त्राभरण से सुसज्जित किया गया है - चाहे वे अतीत में हुए हों या भविष्य में।

55. हे राज्यों के मंत्रीसमुदाय! क्या तुम्हारे हृदय में यह विश्वास है कि हम तुम्हें तुम्हारी सांसारिक सम्पदाओं और इसके मिथ्याभिमान की वस्तुओं से वंचित करने आए हैं? नहीं, सौगन्ध उसकी जिसके हाथों में मेरी आत्मा है! हमारा इरादा तो यह स्पष्ट करना रहा है कि हम साम्राज्य की आज्ञाओं का विरोध नहीं करते और न ही हमारी गिनती विद्रोहियों में की जानी चाहिए। तू यह निश्चित जान कि धरती की सारी निधियाँ, सारे सोने और चाँदी और उसमें निहित दुर्लभ तथा बेशकीमती रत्न ईश्वर और उसके चुने हुए एवं प्रियजनों की दृष्टि में हाथ में पड़े ढेले की तरह व्यर्थ हैं। क्योंकि बहुत ही शीघ्र धरती पर जो कुछ है, सब नष्ट हो जाएगा, और साम्राज्य ईश्वर का होगा जो कि सर्वसमर्थ है, अतुलनीय है। जो विनाशी है उससे हमें भला क्या लाभ हो सकता है? और उनसे तुझे भी कोई लाभ नहीं होगा, बशर्ते कि तू इस पर मनन कर पाता!

56. ईश्वर की धर्मपरायणता की शपथ! मैं झूठ नहीं बोलता, और ईश्वर ने मुझे जो कहने को कहा है उसके सिवा और कुछ नहीं बोलता। इसके साक्षी हैं इस पाती के एक-एक शब्द, बशर्ते कि तुम सब इसमें निहित बातों पर गहन विचार कर पाते! अपनी लालसाओं के बहकावे में मत आओ, न ही अपनी आत्मा के अन्दर ‘शैतान’ की फुसफुसाहट ही सुनो। बल्कि अपने आंतरिक और बाह्य जीवन में ईश्वर के धर्म का अनुसरण करो, और असावधानों में से न बनो। तुम सबने अपने घरों में जो जखीरा खड़ा कर रखा है और दिन-रात जिन चीजों के पीछे भागते फिरे हो उन सबकी तुलना में यही तुम्हारे लिए बेहतर है।

57. यह संसार एक दिन विनष्ट हो जाएगा और विनष्ट हो जाएँगी वे सब चीजें जिनमें तुम्हारे हृदय रमे हुए हैं, या जिनके कारण तुम लोगों के समक्ष घमंड से फूलते हो। अपने-अपने हृदय रूपी दर्पणों को संसार और सांसारिक वस्तुओं के मैल से मुक्त और स्वच्छ कर ताकि वे ईश्वर की प्रखर ज्योति को झलका सकें। वस्तुतः, इसी से तुम ईश्वर के सिवा अन्य सभी वस्तुओं से मुक्त हो सकोगे और अपने परम कृपालु, सर्वज्ञ तथा सर्वप्रज्ञ ईश्वर की सदकृपा पा सकोगे। वास्तव में, हमने तुम्हारी आँखों के सामने वह खोलकर रख दिया है जिससे इस लोक और आस्था के संसार दोनों में ही तुझे लाभ पहुँचेगा और जो तुम्हें मोक्ष के मार्ग की ओर ले जाएगा। काश कि तुम उस ओर उन्मुख हो पाते!

58. हे राजन! उसकी वाणी को ध्यान से सुन जो सत्य कहता है, वह जो तुझसे उन चीजों से कोई प्रतिफल नहीं माँगता जिन्हें ईश्वर ने तुझें प्रदान करना चाहा है, वह जो बिना किसी भूल के सीधे पथ का अनुगमन करता है। वही है वह जो तुझे अपने प्रभु, परमात्मा, की ओर बुलाता है, जो तुझे सच्चा मार्ग दिखाता है - वह मार्ग जो ले जाता है सच्चे आनन्द की ओर - ताकि तू कदाचित् कल्याण प्राप्त करने वाले लोगों में से बन सके।

59. सावधान, ओ राजन! तू अपने इर्द-गिर्द ऐसे मंत्रियों की जमात न खड़ी कर ले जो भ्रष्ट इच्छाओं के पीछे भागते हैं, जिन्होंने अपने हाथों में सौंपी गई जिम्मेवारी से मुँह फेर लिया है और अपने न्यास के साथ खुलेआम विश्वासघात किया है। जैसे ईश्वर तुम्हारे प्रति कृपालु रहा है, वैसे ही तू भी दूसरों के प्रति कृपालु रह और अपनी जनता के हितों को ऐसे मंत्रियों की दया के हवाले न छोड़। ईश्वर का भय न त्याग और तू सदाचारपूर्ण कार्य करने वालों में से बन। अपने आस-पास ऐसे मंत्रियों को एकत्र कर जिनसे तुझे निष्ठा और न्याय की सुगन्ध की अनुभूति हो और उन्हीं के साथ परामर्श कर और जो कुछ भी तेरी दृष्टि में सर्वोत्‍तम हो वही चुन, और उन लोगों में से बन जो उदारतापूर्ण आचरण करते हैं।

60. तू यह निश्चित जान कि जो कोई भी ईश्वर में विश्वास नहीं करता वह न तो विश्वासपात्र है और न ही सच्चा। वस्तुतः, यह सत्य है, निर्विवाद सत्य। जो ईश्वर के साथ छलपूर्ण आचरण करता है वह अपने राजा को भी धोखा देता है। ऐसे व्यक्ति को कुमार्ग पर चलने से कुछ भी नहीं रोक सकता, उसे अपने पड़ोसी को छलने में कुछ भी बाधक नहीं, उसे सन्मार्ग पर चलने के लिए कुछ भी प्रेरित नहीं कर सकता।

61. यह सावधानी रख कि तू अपने राज-काज के मामलों की बागडोर दूसरों के हाथों में न छोड़ दे, अविश्वस्त मंत्रियों में अपना भरोसा न रख और असावधान होकर जीने वाले लोगों में से न बन। उनसे परहेज कर जिनका हृदय तुमसे विमुख है, ऐसे लोगों पर विश्वास न कर और अपने तथा तेरी आस्था के अनुरूप लोगों के काम-काज उनके हवाले न छोड़। सावधान कि तू कहीं किसी भेड़िये को ईश्वर के समुदाय के लोगों का रखवाला न बना दे और उसके प्रियजनों को दुष्टों की दया के भरोसे न रहने दे। यह उम्मीद न कर कि जो ईश्वर के अध्यादेशों का उल्लंघन करते हैं वे अपनी प्रकट आस्था में विश्वसनीयता अथवा निष्ठा झलकाएँगे। उनसे बचकर रह और अपने ऊपर कड़ी निगरानी रख ताकि उनकी युक्तियों और शरारत भरे कारनामों से तुझे हानि न पहुँचे। उनकी ओर से मुँह फेर ले और अपनी दृष्टि अपने सर्वगरिमामय, परम उदार, प्रभु - परमात्मा की ओर डाल। जो कोई भी स्वयं को सम्पूर्णतया ईश्वर के प्रति समर्पित कर देता है, ईश्वर निश्चय ही उसके साथ रहेगा और जो कोई भी अपना समग्र विश्वास परमात्मा में रखता है, ईश्वर निस्संदेह ऐसी हर चीज से उसकी रक्षा करेगा जो उसके लिए हानिप्रद है, और हर दुष्ट षडयंत्रकारी की धूर्तता से उसे बचाएगा।

62. यदि तुम अपना ध्यान मेरी वाणी की ओर दोगे और मेरे परामर्श का पालन करोगे तो ईश्वर तुम्हें ऐसी महान उच्चता का पद प्रदान करेगा कि इस समस्त धरती के किसी भी व्यक्ति का कुचक्र कभी भी तुझे नहीं छू सकेगा और न ही तुझे कोई हानि पहुँचा सकेगा। हे राजन! अपने हृदय के अंतर्तम और अपने सम्पूर्ण अस्तित्व से ईश्वर की आज्ञाओं का पालन कर और आततायियों के पदचिह्नों पर न चल। तू जनता के मामलों की बागडोर थाम और अपनी सामर्थ्‍य के दायरे में उनका कसकर दामन थाम, और उनसे सम्बंधित हर विषय की तू व्यक्तिगत रूप से पड़ताल कर। कुछ भी तेरी नजरों से बचने न पाए क्योंकि इसी में है सर्वोत्‍तम कल्याण।

63. ईश्वर को धन्यवाद दे कि उसने पूरी दुनिया में से तेरा चुनाव किया है और जो लोग तेरे द्वारा चलाये जा रहे धर्म के अनुयायी हैं तुझे ईश्वर ने उन सबका राजा बनाया है। तेरे योग्य यह है कि परमेश्वर ने तुझे जिन विलक्षण कृपाओं का अनुदान दिया है तू उनका महत्व समझ और सतत रूप से उस प्रभु के नाम का प्रसार कर। यदि तू ईश्वर के प्रियजनों से प्रेम करेगा और विश्वासघातियों के कुचक्रों से उसके सेवकों की ऐसे रक्षा करेगा कि कोई भी उन पर और अधिक अन्याय न कर सके तो इस भाँति तू ईश्वर का गुणगान सबसे बेहतर तरीके से कर सकेगा। और फिर तुझे उन लोगों के बीच परमेश्वर के विधानों को कार्यान्वित करने के लिए उठ खड़ा होना चाहिए, ताकि तू उन लोगों में से बन सके जो प्रभु के विधान के प्रति दृढ़ हैं।

64. यदि तू न्याय के दरिया को अपनी जलधाराओं का प्रसार अपनी जनता के बीच करने देगा, तो ईश्वर निश्चित ही अपने दृश्य और अदृश्य देवदूतों के माध्यम से तेरी सहायता करेगा और तेरे कार्यों में तुझे दृढ़ता प्रदान करेगा। उसके सिवा और कोई परमेश्वर नहीं है। सम्पूर्ण सृष्टि और समस्त अधिराज्य उसी का है। निष्ठावानों के कार्य उसी की ओर लौट जाते हैं।

65. अपने खजानों पर निर्भर न रह। अपना पूरा भरोसा अपने प्रभु, परमेश्वर की दया में रख। तू जो कुछ भी करे उसमें उसे ही अपना विश्वासपात्र बना और उन लोगों में से बन जिन्होंने स्वयं को उसकी इच्छा के आगे समर्पित कर दिया है। उसे ही अपना सहायक होने दे और उसे अपनी निधियों से तुझे वैभवशाली बनाने दे, क्योंकि स्वर्गों और धरती के समस्त कोषालय उसी के पास हैं। वह जिसे भी चाहता है वे निधियाँ प्रदान करता है और जिनसे भी चाहता है उनसे उन्हें दूर रखता है। उस सर्वसम्पदामय, सर्वप्रशंसित ईश्वर के सिवा और कोई परमात्मा नहीं है। उसकी दया के द्वार सबके सब खुले हैं, उसकी सम्प्रभुता के प्रकटीकरण के सम्मुख सब निःसहाय हैं और सब उसकी कृपा की याचना करते हैं।

66. मर्यादा की सीमाएँ न लाँघ और जो तेरी सेवा करते हैं उनके साथ न्यायपूर्ण आचरण कर। उन्हें उनकी आवश्यकता के अनुरूप अंश प्रदान कर, और इतना नहीं कि वे धन का अम्बार लगाने, अपने लोगों को अलंकृत करने, अपने घरों की साज-सज्जा और ऐसी वस्तुओं को पाने में जुट जाएँ जिनसे उन्हें कोई लाभ नहीं होगा और वे फिजूलखर्चियों में गिने जाएँ। उनके साथ अविचल न्याय भावना के साथ व्यवहार कर, ताकि उनमें से कोई भी न तो अभावग्रस्त हो और न ही विलासिता में डूब सके। प्रकटतः, यही न्याय है।

67. अधम लोगों को भद्र तथा सम्मान के योग्य लोगों पर शासन करने या दबदबा जताने की इजाजत मत दो, और उच्च विचार-सम्पन्न लोगों को घृणित तथा बेकार लोगों की दया पर मत छोड़ो, क्योंकि ‘नगर’ में अपने आगमन पर मैंने यही देखा और इसके साक्षी हैं स्वयं हम। हमने उस शहर के निवासियों के बीच कुछ ऐसे लोगों को देखा जिनके पास अपार सुख-समृद्धि थी और जो अत्यंत वैभवपूर्ण जीवन जी रहे थे, जबकि अन्य लोग घोर अभाव और गरीबी में बसर कर रहे थे। तेरी सम्प्रभुता के लिए यह योग्य नहीं है और न ही यह तेरे पद के अनुरूप है।

68. मेरी सलाह मान ले और लोगों के बीच समदर्शिता के साथ शासन करने का प्रयास कर ताकि ईश्वर तुम्हारे नाम को ऊँचा उठा सके, और तेरे न्याय की महिमा पूरे विश्व में फैला सके। सावधान कि तू अपने मंत्रियों को अपनी प्रजा की कीमत पर धन-धान्य से अलंकृत न कर। गरीबों और सच्चरित्र हृदय के लोगों की आहों से डर, जो हर रोज दिन निकलने पर अपनी दुर्दशा पर विलाप करते हैं और उनके लिए तू एक कृपालु सम्राट बन। वे, वस्तुतः, इस धरती पर तेरे खजाने हैं। अतः तेरे लिए सुयोग्य यह है कि अपने खजानों को उनसे बचा जो उन्हें लूटने की कामना रखते हैं। उनके हर मामले के बारे में पता कर और हर वर्ष - नहीं, बल्कि हर महीने उनकी स्थिति का आकलन कर और उन लोगों में से न बन जो अपने कर्तव्‍य की अनदेखी करते हैं।

69. अपनी आँखों के सामने ईश्वर की अचूक तराजू रख और उस प्रभु के सम्मुख खड़े व्यक्ति की तरह अपने जीवन के हर रोज, हर क्षण, उस तराजू में अपने कर्मों का माप-तौल कर लिया कर। इससे पहले कि उस दिन का बुलावा आ जाए जब ईश्वर के डर के आगे किसी भी व्यक्ति में खड़े होने की हिम्मत नहीं होगी - वह दिन जबकि असावधान जनों के हृदय काँप उठेंगे, तू अपने कर्मों का हिसाब कर ले।

70. हर राजा के लिए यही सुयोग्य है कि वह सूर्य की तरह उदार और कृपालु बने जो इस अस्तित्व की हर वस्तु के विकास को सम्बल देता है और हर किसी को उसका देय अंश प्रदान करता है, जिसके लाभ स्वयं अपने में निहित नहीं हैं, बल्कि उसके द्वारा निर्धारित हैं जो है सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमान। एक राजा को अपनी दयालुता में इतना उदार, इतना मुक्तहस्त होना चाहिए, जितने कि बादल, जिनकी उदारता की फुहारें हर भूभाग पर बरसती हैं - उसकी आज्ञा से जो परम विधाता, सर्वज्ञाता है।

71. सावधान रह कि तू अपने राजकाज के मामले पूर्णतया दूसरों के हाथों में न सौंप। तुझसे बढ़कर तेरे कार्यों का बेहतर ढंग से निष्पादन और कोई नहीं कर सकता। इस तरह हम अपने विवेक की वाणी तेरे लिए सुस्पष्ट करते हैं और तेरे पास वह भेजते हैं जो तुझे अत्याचार की बाईं भुजा से न्याय की दाहिनी भुजा तक आने और परमेश्वर की कृपाओं के प्रभासित महासागर के निकट पहुँचने में समर्थ बना सकेगा। ऐसा ही है वह पथ जिस पर तुझसे पहले आने वाले सम्राट चले हैं, वे सम्राट जिन्होंने अपनी प्रजा के साथ निष्पक्ष व्यवहार किया और जो अविचल न्याय के मार्ग के अनुगामी बने।

72. तुम इस धरा-धाम पर ईश्वर की छाया हो। अतः इस तरह से अपना आचरण करो जो ऐसे आदर्श, ऐसे भव्य पद के लिए शोभायमान हो। यदि तुम उन बातों का अनुसरण करने से विमुख हो गए जो हमने तुम पर अवतरित किए हैं और जिनकी तुम्हें हमने शिक्षा दी है तो तुम निस्संदेह उस महान और अमूल्य सम्मान से वंचित हो जाओगे। अतः वापस लौट और पूर्णतया ईश्वर का दामन थाम और अपने हृदय को इस संसार और उसके मिथ्याभिमानों से मुक्त, स्वच्छ कर तथा उसमें किसी भी अजनबी के प्रेम को प्रवेश न करने दे। जब तक तुम अपने हृदय को ऐसे सभी प्रेम के लवलेश मात्र से मुक्त और पावन नहीं बना लेते तब तक ईश्वरीय प्रकाश की आभा उसमें अपनी चमक नहीं बिखेर सकती, क्योंकि ईश्वर ने किसी को भी एक से अधिक हृदय नहीं दिए हैं। यह वास्तव में उसके प्राचीन ग्रंथ में अंकित और आदेशित है। चूँकि मानव हृदय - जैसाकि ईश्वर ने उसे बनाया है - एक और अविभाज्य है अतः यह तेरे योग्य है कि तू सावधान रह कि उसका स्नेह भी एक और अविभाज्य रहे। अतः, तू अपने हृदय के सम्पूर्ण स्नेह के साथ ईश्वर के प्रेम के प्रति आसक्त हो और उसके सिवा अन्य किसी के भी प्रेम से इसे विलग कर ताकि वह तुझे अपनी एकता के महासिंधु में निमज्जित होने में सहायता दे सके और तुझे अपनी एकमेवता का सच्चा संवर्द्धक बनने में सक्षम बना दे। ईश्वर मेरा साक्षी है। इन शब्दों को तेरे समक्ष प्रकट करने में मेरा एकमात्र उद्देश्य तुझे इस संसार की नाशवान वस्तुओं से अनासक्त करना और तुझे अनन्त गरिमा के साम्राज्य में प्रवेश करने में मदद देना है ताकि, ईश्वर की आज्ञा से, तू उन लोगों में से बन सके जो उस साम्राज्य में निवास और शासन करते हैं।

73. हे सम्राट! क्या तुमने सुना नहीं कि तुम्हारे मंत्रियों के हाथों हमें क्या कुछ नहीं भोगना पड़ा और उन्होंने हमारे साथ कैसा व्यवहार किया, या तुम बेखबर लोगों में से हो? यदि वास्तव में तुमने सुना और जाना है तो तुमने अपने मंत्रियों को ऐसे कार्य करने से क्योंकर नहीं मना किया? ‘वह’ जोकि तेरी आज्ञाओं का अनुपालन करता रहा और तेरी मर्जी के अनुसार चलता रहा, उसके लिए तुमने आखिर ऐसी बातों की इच्छा कैसे कर ली जैसी कोई भी राजा अपनी किसी भी प्रजा के लिए नहीं चाहेगा? और यदि तुझे पता ही नहीं तो यह और भी अधिक गम्भीर त्रुटि है, बशर्ते कि तू ईश्वर से डरने वाला हो। अतः, मैं तुझे वह बताऊँगा जो इन अत्याचारियों के हाथों मुझे झेलने पड़े।

74. तू यह जान कि तेरे नगर में हम तेरी ही आज्ञा से आए और उसमें हमने नितान्त प्रतिष्ठा के साथ प्रवेश किया। लेकिन उन्होंने हमें तेरे नगर से निर्वासित कर दिया और वो भी ऐसे अनादर के साथ जिसकी तुलना संसार के किसी भी अनादर से नहीं की जा सकती, बशर्ते कि तुम उन लोगों में से हो जिन्हें सब पता है। उन्होंने हमें तब तक यात्रा करने को बाध्य किया जब तक हम उस जगह (एड्रियानोपुल/अक्का) नहीं पहुँच गए, जहाँ उनके सिवा और कोई प्रवेश नहीं करता जिन्होंने तुम्हारी सत्‍ता के खिलाफ विद्रोह किया हो और जिनकी गिनती नियमोल्लंघन करने वालों में होती हो। यह सब कुछ तब हुआ जबकि हमने क्षणमात्र के लिए भी तुम्हारी आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं किया था, क्योंकि जैसे ही हमने तुम्हारी आज्ञा सुनी हमने उसका पालन किया और स्वयं को तेरी मर्जी के हवाले कर दिया। लेकिन हमारे साथ आचरण करने में तुम्हारे मंत्रियों ने न तो ईश्वरीय मानदंडों और उसके आदेशों का ध्यान रखा और न ही उन बातों का जो कि अवतारों और दिव्य संदेशवाहकों के समक्ष प्रकट की गई थीं। उन्होंने हम पर जरा भी रहम नहीं किया और हमारे खिलाफ ऐसे-ऐसे कारनामें किए जैसे किसी भी आस्थावान व्यक्ति ने अपने बन्धुओं के साथ नहीं किए होंगे और न ही किसी धर्मानुयायी ने किसी विश्वासघाती पर ऐसे कहर ढाए होंगे। हमारे शब्दों की सत्यता का साक्षी है ईश्वर और वही सब जानता है।

75. जब उन्होंने हमें नगर से निष्कासित किया तो उन्होंने हमें ऐसे वाहनों में ड़ाला जिसमें लोग अपने माल-असबाब ढोया करते हैं। ऐसा था वह व्यवहार जो हमें उनसे मिला, यदि तू सत्य को जानने का इच्छुक हो। इस तरह हमें वहाँ से भेजा गया और इस तरह हमें उस नगरी में लाया गया जिसे वे विद्रोहियों का निवास-स्थान मानते हैं। वहाँ आने पर हमें रहने को कोई घर नहीं मिला और बाध्य होकर हमें एक ऐसे स्थान पर रहना पड़ा जो किसी घोर दरिद्र अजनबी के सिवा किसी और की ठौर नहीं हो सकती। वहाँ हम कुछ समय तक रहे और तब उस घुटी हुई जगह में रहकर यंत्रणा झेलने के बाद हमने ऐसे घर किराये पर लिए जो उनके मालिक द्वारा अत्यंत सर्दी के कारण खाली कर दिए गए थे। इस तरह उस कड़ाके की सर्दी में हमें ऐसे मकानों में रहने को विवश होना पड़ा, जिनमें गर्मी के दिनों के अलावा कभी कोई नहीं रहता था। उस कंपकंपाती सर्दी से अपनी हिफाजत के लिए मेरे परिवार और मेरे साथ के लोगों के लिए आवश्यक कपड़े भी नहीं थे।

76. काश कि तुम्हारे मंत्रियों ने हमारे साथ उन सिद्धान्तों के अनुसार आचरण किया होता जिनकी वकालत वे स्वयं अपने बीच किया करते हैं! ईश्वर की सौगन्ध! उन्होंने हमारे साथ न तो ईश्वरीय आज्ञाओं के अनुरूप व्यवहार किया, न ही स्वयं अपनी उन प्रथाओं के अनुसार जिनका वे समर्थन करते हैं, न ही लोगों के बीच प्रचलित मानदंडों के अनुसार, और न ही उस रीति से जिस रीति से धरती का अकिंचन से अकिंचन प्राणी किसी राह चलते मुसाफिर से व्यवहार करता है। ऐसा है वृतान्त उन यातनाओं का जो हमें उनके हाथों भोगनी पड़ीं और जिसे हमने सच्ची और ईमानदार भाषा में तेरे सामने प्रकट की है।

77. ये सारी विपदाएँ मुझपर तब आ पड़ीं जबकि मैं उनके पास उनकी ही आज्ञा से आया था और मैंने उनकी सत्‍ता का विरोध नहीं किया था। इस तरह हमने उनके आदेशों को माना और उनका पालन किया। लेकिन लगता है वे ईश्वर की आज्ञा ही भूल गए। परमात्मा की वाणी है और उसकी वाणी सत्य है: ”अनुयायियों के प्रति विनम्र आचरण करो।“ मुझे लगता है उनका एकमात्र सरोकार उनकी अपनी आरामतलबी और विश्रान्ति से था और वे गरीबों की आहों और शोषितों की चीखों के प्रति बहरे हो चुके थे। लगता है वे इस खामख़्याली में डूबे थे कि उनकी रचना पवित्र प्रकाश से की गई है और बाकी लोग माटी से रचे गए हैं। कितनी दुःखद है उनकी यह कल्पना! आखिर हम सब एक तुच्छ कीट की पैदाइश ही तो हैं!

78. हे राजा! मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, मेरी यह इच्छा नहीं है कि मैं उन लोगों के खिलाफ तुमसे शिकायत करूँ जिन्होंने मुझे सताया है। अपना दुःख और अपनी पीड़ा मैं सिर्फ ईश्वर से कहता हूँ, जिसने मेरी और उन सबकी रचना की है, जिसे हमारी दशा का बखूबी ज्ञान है और जिसकी दृष्टि हर वस्तु पर है। मेरी इच्छा सिर्फ उन्हें उनके कार्यों के परिणामों के प्रति आगाह करना है, ताकि कदाचित् वे दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करने से रुक जाएँ जैसा उन्होंने मेरे साथ किया है और उन लोगों में से बन सकें जो मेरी चेतावनी पर ध्यान देते हैं।

79. जिन यातनाओं ने हमारा स्पर्श किया है, जो अभाव हमें भोगने पड़े हैं, वे मुसीबतें जिनसे हम घिरे हैं, वे सब एकदिन समाप्त हो जाएँगी, ठीक वैसे ही जैसे आनन्द की वे घड़ियाँ समाप्त हो जाएँगी जिनमें वे निमग्न हैं और वे वैभव जिसे पाकर वे आज प्रफुल्लित हैं। यह एक ऐसा सच है जिससे धरती का कोई भी मनुष्य इन्कार नहीं कर सकता। वे दिन जिनमें हमें धूल के निवास में रहने को बाध्य किया गया है वे शीघ्र समाप्त हो जाएँगे, जैसे वे दिन जिनमें वे प्रतिष्ठा के सिंहासन पर विराजमान हैं। निस्संदेह, ईश्वर हमारे और उनके बीच सत्य के साथ न्याय करेगा और वह न्याय करने वालों में सर्वोत्‍तम है।

80. हम पर जो कुछ भी विपत्तियाँ टूटी हैं उनके लिए हम ईश्वर को धन्यवाद देते हैं और हम धैर्यपूर्वक झेल रहे हैं वह सब कुछ जो उसने मेरे लिए अतीत में निर्धारित किया और भविष्य में भी नियत करेगा। उस प्रभु में मैंने अपना विश्वास रखा है और उसी के हाथों में सौंप दिया है मैंने अपना धर्म। वह, वस्तुतः, उन सबको निश्चितरूपेण उनका प्रतिफल देगा जो धैर्यपूर्वक सब झेलते हैं और जो उसमें अपना विश्वास रखते हैं। उसी की है यह सृष्टि और उसी का है साम्राज्य। वह जिसे भी चाहे उच्चता प्रदान करता है और जिसे भी चाहे उसे नीचे झुकाता है। उससे उसके कर्मों का हिसाब नहीं लिया जाएगा। वह, वस्तुतः, सर्वमहिमावान है, सर्वशक्तिमान है।

81. हे राजा! हमने जो शब्द तुझे सम्बोधित किए हैं उन पर ध्यान दे। अत्याचारी को अपने अन्याय से विरत होने दे और जो कोई भी तेरे धर्म के समर्थक हैं उनके बीच से अन्याय के नुमाइंदों को अलग-थलग कर। ईश्वर की धर्मपरायणता की सौगन्ध! हमने ऐसी यातनाएँ झेली हैं, कि उनका वर्णन करने वाली कोई भी लेखनी वेदना से अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकती। जो कोई भी सचमुच ईश्वर की एकता में विश्वास और उसका समर्थन करता है वह उन उत्पीड़नों का वर्णन करना सहन नहीं कर सकता। मैंने इतना ज्यादा झेला है कि यहाँ तक कि हमारे दुश्मनों की आँखें भी हमारी दशा पर रो उठी हैं और उनसे भी बढ़कर हर विवेक-सम्पन्न व्यक्ति की आँखें। और हमें इन तमाम मुसीबतों से तब गुजरना पड़ा जबकि हमने तुझ तक पहुँचने का प्रयास किया और लोगों को तुम्हारी छत्रछाया में रहने को कहा है ताकि तुम उन लोगों के लिए एक शक्तिशाली दुर्ग बन सको जो ईश्वर की एकता में विश्वास और उसका संवर्द्धन करते हैं।

82. हे राजा! क्या मैंने कभी तुम्हारी किसी आज्ञा का उल्लंघन किया है? क्या मैंने कभी भी तेरे नियमों का अतिक्रमण किया है? क्या इराक में तुम्हारा प्रतिनिधित्व करने वाला कोई भी मंत्री ऐसा प्रमाण प्रस्तुत कर सकता है जो तुम्हारे प्रति मेरे मन में वफादारी न होना साबित कर सके? नहीं, उसकी शपथ जो सभी लोकों का स्वामी है! एक क्षण के लिए भी हमने तुम्हारे या तुम्हारे किसी मंत्री के खिलाफ बगावत नहीं की और ईश्वर ने चाहा तो हम कभी भी तेरे खिलाफ विद्रोह करेंगे भी नहीं, भले ही हमें उनसे भी अधिक घोर संकटों का पात्र क्यों न बना दिया जाए जो हमने अतीत में झेले।

83. दिन हो या रात, सुबह हो या शाम, तुम्हारी ओर से हम ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि वह कृपापूर्वक तुझे उसके प्रति आज्ञाकारी बनने और उसके आदेशों का पालन करने में सहायता दे ताकि वह शैतानों के समूह से तेरी रक्षा कर सके। अतः, तू जैसा चाहे वैसा कर और हमसे वैसा ही व्यवहार कर जैसा तेरे पद की गरिमा के अनुरूप हो और तेरी सम्प्रभुता को शोभा दे। आज या भविष्य में कभी भी, तू चाहे जो भी हासिल करना चाहे, उसमें ईश्वर के विधान को न भूल। सुनो: समस्त लोकों के स्वामी ईश्वर का गुणगान हो!

84. हे इस ‘शहर‘ में शाह के मंत्री! क्या तुम यह कल्पना करते हो कि ईश्वर के धर्म की अन्तिम नियति मेरी मुट्ठी में बंद है? क्या तुम यह सोचते हो कि मेरा यह कारावास, या यह अनादर की स्थिति जिसका मैं पात्र बनाया गया हूँ, या यहाँ तक कि मेरी मृत्यु या साक्षात महाप्रलय भी उसके मार्ग को मोड़ सकता है? बड़ी दुःखद है वह कल्पना जो तुमने अपने मन में सोच रखी है! तुम वास्तव में उन लोगों में से हो जो अपने मन में कल्पित व्यर्थ के ख़यालों के पीछे भागते रहते हैं। उसके सिवा और कोई ईश्वर नहीं है। अपने धर्म को प्रकट करने और अपने प्रमाण को उदात्‍त बनाने, तथा अपनी इच्छानुसार कुछ भी स्थापित करने और उसे इतना उच्च स्थान प्रदान करने, के लिए सामर्थ्‍यवान है वह कि न तो तुम्हारे हाथ और न ही उस प्रभु से विमुख होने वाले अन्य लोगों के हाथ ही उसे छू या उसे कोई हानि पहुँचा सकेंगे।

85. क्या तुम यह विश्वास करते हो कि तुझमें उस परमेश्वर की इच्छा को रोकने की शक्ति है, उसे अपना निर्णय सुनाने से बाधित करने की शक्ति, अथवा उसे अपनी सम्प्रभुता को प्रकट करने से अवरुद्ध करने की शक्ति? क्या तू यह जताना चाहता है कि स्वर्ग में या धरती पर तू उसके धर्म को प्रतिबंधित कर सकता है? नहीं, सौगन्ध उसकी जो है अनन्त सत्य! इस सम्पूर्ण सृष्टि में कुछ भी उसके उद्देश्य को परास्त नहीं कर सकता। अतः, त्याग दे यह मिथ्याभिमान जिसके पीछे तू दौड़ रहा है, क्योंकि मिथ्याभिमान कभी भी सत्य की जगह नहीं ले सकता। तू उन लोगों में से बन जिन्होंने सचमुच पश्चात्‍ताप किया है और जो ईश्वर की ओर वापस लौट गए हैं - उस ईश्वर की ओर जिसने तुझे रचा है, तेरा पोषण किया है और तेरे धर्म का समर्थन करने वालों के बीच तुझे मंत्री पद से सुशोभित किया है।

86. और तू यह भी जान ले कि उसी परमेश्वर ने अपनी इच्छा से उन सब चीजों को रचा है जो स्वर्गों में या धरती पर है। तब फिर वे वस्तुएँ जो उसी के आदेश से रची गई हैं, उसके विरुद्ध कैसे विजयी हो सकती हैं? ओ द्वेषपूर्ण जनों! ईश्वर के बारे में तूमने जो कुछ भी सोच रखा है, वह उन सबसे कहीं ऊपर है। यदि यह ईश्वर का धर्म होगा तो कोई भी व्यक्ति इसे परास्त नहीं कर सकेगा, और यदि यह ईश्वर का धर्म नहीं होगा तो तुम्हारे बीच जो धर्मगुरुओं के समुदाय हैं और वे सब के सब जो अपनी भ्रष्ट लालसाओं का अनुसरण कर रहे हैं और वे सारे जिन्होंने उस परमात्मा के खिलाफ विद्रोह किया है, निस्संदेह इसे पराजित कर सकेंगे।

87. क्या तुमने नहीं सुना कि प्राचीन समय में फ़राओ के परिवार के एक सदस्य ने क्या कहा था और जिसे ईश्वर ने अपने उस ‘दिव्यदूत’ को कह सुनाया था जिसे उसने सभी मनुष्यों से बढ़कर चुना था, और अपना सन्देश दिया था, और धरती के सभी निवासियों के लिए अपनी करुणा का स्रोत बनाया था? उसने कहा था और वह, वस्तुतः, सत्य कहता है: ”क्या तुम इसलिए किसी के प्राण लोगे कि वह कहता है कि परमेश्वर मेरा प्रभु है, जबकि वह अपने मिशन के प्रमाण लेकर तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत हो चुका है? और यदि वह झूठा होगा तो उसका झूठ उसी के काम आएगा। लेकिन यदि वह सच्चा इन्सान हुआ तो उसने तुझे जो चेतावनी दी है उसका एक अंश तुझ पर आ टूटेगा।“ यही है वह जो कि ईश्वर ने अपने अचूक ‘ग्रंथ’ में अपने ‘परम प्रियतम’ के समक्ष प्रकट किया है।

88. और तब भी तुम सब उसके आदेश पर ध्यान देने से चूक गए, उसके विधान का अनादर किया, उसके ग्रंथ में अंकित उसके परामर्श को अस्वीकार कर दिया और उन लोगों में से बन गए जो उससे काफी दूर भटक आए हैं। न जाने ऐसे कितने अनगिनत लोग हैं जिन्हें हर वर्ष, हर महीने, तुम्हारे कारण मौत के घाट उतार दिया गया! न जाने कितने अन्याय किए हैं तूने। ऐसे अन्याय जैसे सृष्टि की आँखों ने कभी देखे नहीं, जैसे किसी इतिहासकार ने कभी अंकित नहीं किए! हे अन्यायियों! तुम्हारी निर्ममता के कारण न जाने कितने बच्चों और दुधमुँहे शिशुओं को अनाथ बना दिया गया, और कितने पिताओं ने अपने बेटों को खो दिया! न जाने कितनी बार कितनी बहनें चिन्ता से दुबली हुईं और अपने भाइयों के लिए शोक-संतप्त हुईं और कितनी बार कितनी पत्नियों को अपने पतियों, अपने एकमात्र सहारा, के लिए विलाप करना पड़ा!

89. तुम्हारा अत्याचार और अधिक बढ़ता ही चला गया, जब तक तुमने उसकी (दिव्यात्मा बाब) की जान नहीं ले ली, जिसने एक पल के लिए भी परम उदात्‍त, परम महान ईश्वर से अपनी दृष्टि नहीं फेरी थी। काश तुमने इस तरह उसे मृत्यु दी होती जैसे एक इन्सान दूसरे इन्सान को मृत्यु देता है! परन्तु तुमने तो ऐसी परिस्थितियों में उसे मार डाला जैसी किसी इन्सान ने कभी देखी न थी। स्वर्ग उस पर चीत्कार कर उठे और उसे मिली यातनाओं के लिए ईश्वर के निकटस्थ जनों की आत्माएँ रो उठीं। क्या वह तुम्हारे ‘पैगम्बर’ के प्राचीन घराने की एक ‘शाखा’ नहीं था? ‘ईशदूत’ के प्रत्यक्ष वंशज के रूप में क्या उसकी कीर्ति इस देशांतर तक तुझ तक नहीं पहुँची थी? तब फिर तुमने उसे ऐसी यातनाएँ क्यों दीं जैसी कि किसी इन्सान ने - चाहे तू सुदूर अतीत में दूर-दूर तक निगाह कर ले, किसी दूसरे इन्सान को कभी नहीं दी थी? ईश्वर की सौगन्ध! सृष्टि की आँखों ने तुझ जैसे अन्य को नहीं देखा। तुम उसकी हत्या कर देते हो जो तुम्हारे ही ‘पैगम्बर’ के वंशज हैं, और फिर भी अपनी प्रतिष्ठा के आसन पर बैठकर आनन्द मनाते हो! तुम उन लोगों को कोसने में लगे हो जो तुमसे पहले हो चुके हैं और जिन्होंने वही दुष्कृत्य किए हैं जो तूने किए हैं और तुम निरन्तर अपने ही पापों से अनभिज्ञ बने बैठे हो!

90. अपने न्याय में निष्पक्ष बनो। जिन्हें तुम कोस रहे हो, जिनकी दुष्टता की दुहाई देते हो तुम, क्या उन्होंने तुमसे अलग आचरण किया था? क्या उन्होंने भी अपने ‘पैगम्बर’ के वंशज (इमाम हुसैन) की हत्या नहीं की थी, जैसे तुमने अपने पैगम्बर के वंशज की हत्या की है? क्या तुम्हारा भी आचरण उन्हीं जैसा नहीं है? तो फिर तुम उनसे भिन्न होने का दावा क्यों कर करते हो, हे लोगों के बीच विभेद के बीज बोने वालों!

91. और जब तुमने ‘उसकी’ जान ले ली तो उसके अनुयायियों में से एक उसकी मौत का बदला लेने उठ खड़ा हुआ। लोग उसे नहीं जानते थे और उसने जो योजना बनाई थी उस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया था। अंत में उसने वह कार्य किया जो पूर्वनियत था। अतः तेरे योग्य यह है कि जो कार्य तूने स्वयं किया है उसके लिए किसी और पर आक्षेप न लगा, बशर्ते कि तू निष्पक्षता से न्याय करने वाला हो। इस पूरी धरती पर ऐसा कौन है जिसने तुझ जैसा काम किया हो? कोई नहीं, सौगन्ध उसकी जो समस्त लोकों का स्वामी है!

92. धरती के सभी शासक और सम्राट अपने ईश्वरावतारों और पावन आत्माओं के वंशजों को आदर और सम्मान देते हैं, बशर्ते कि तू यह समझ पाता! लेकिन तुम तो ऐसे कृत्यों के लिए उत्‍तरदायी हो जैसे कभी किसी मनुष्य ने नहीं किए हैं। हर विवेकशील हृदय तुम्हारे दुष्कृत्यों से शोकाकुल हो उठा है। और तिस पर भी तुम अपनी असावधानी में निमग्न हो, और अपने कार्यों की दुष्ट प्रकृति को महसूस न कर सकें!

93. तुम तब तक अपनी पथभ्रष्टता पर अड़े रहे जब तक तुम हमारे खिलाफ न उठ खड़े हुए, हालाँकि हमने ऐसा कोई कार्य नहीं किया था जिससे तुम्हारी इस शत्रुता को न्यायोचित ठहराया जा सके। क्या तुम्हें ईश्वर का डर नहीं है, जिसने तुम्हें रचा है, और जिसने तुम्हें स्वरूप दिया है, और जिसने तुझे अपनी यह ताकत जुटाने की क्षमता दी और तुम्हें ऐसे लोगों के साथ संयुक्त किया जिहोंने स्वयं को ईश्वर के समक्ष समर्पित कर दिया है? कब तक रहोगे तुम इस दिग्भ्रमित स्थिति में? कब तक तुम वापस लौटने से इन्कार करते रहोगे? और कितनी देर है तुझे अपनी नींद से जागने में, अपनी असावधानी की शैय्या छोड़ उठ खड़े होने में? कब तक तुम सत्य से अनजाने रहोगे?

94. अपने हृदय में विचार करो। अपने इस व्यवहार और अपने हाथों से रचे तमाम कारनामों के बावजूद, क्या तुम ईश्वर की प्रदीप्त अग्नि को बुझाने या उसके ‘प्रकटीकरण’ के प्रकाश को रोकने में कामयाब हो सके - उस प्रकाश को जिसने अपनी प्रखरता की परिधि में उन सबको समेट रखा है जो अमरता के लहराते हुए महासागर में निमज्जित हैं और जिन्होंने ईश्वर की एकता में सच्चा विश्वास रखने और उसे समर्थन देने वाले लोगों को आकर्षित किया है? क्या तुझे नहीं पता कि ‘ईश्वर की भुजा’ तेरे हाथों से कहीं ऊपर है, कि उसका निर्णय तेरी युक्तियों से कहीं बढ़कर है, और वह अपने सेवकों से श्रेष्ठतर है, और उसका उद्देश्य उसकी सामर्थ्‍य के दायरे में है, कि वह जो चाहता है करता है, और यह कि वह जो भी चाहता है उसके लिए उससे सवाल नहीं पूछा जाएगा, कि उसकी जैसी मर्जी होती है वह वैसा ही नियत करता है, कि वह परम सामर्थ्‍यवान, सर्वशक्तिमान है? यदि तू इसे सत्य मानता है तो फिर तुम उपद्रव मचाने से बाज क्यों नहीं आओगे और क्यों नहीं शांत बैठोगे?

95. हर रोज तुम एक नया ज़ुल्म ढाते हो और मेरे साथ तुम्हारा वही व्यवहार है जो अतीत में भी तुमने मेरे साथ किया था, जबकि मैंने कभी भी तुम्हारे मामलों में हस्तक्षेप करने की कोशिश नहीं की। मैंने कभी भी तुम्हारा विरोध नहीं किया और न ही मैंने तुम्हारे कानून के खिलाफ कोई बगावत की। फिर भी, देख कि आखिर तूने इस सुदूर धरती पर कैसे मुझे कारावास में डाल दिया! परन्तु तू यह निश्चित रूप से जान ले कि तेरे या विश्वासघातियों के हाथों ने चाहे जो कुछ भी किया हो, वे कभी भी ईश्वर के धर्म को परिवर्तित नहीं कर सकेंगे या उसके मार्ग को ही बदल सकेंगे, जैसे वे अतीत में भी कभी नहीं बदल सके थे।

96. हे फारस के लोगों! मेरी चेतावनी पर ध्यान दो। यदि मैं तेरे हाथों मारा गया तो ईश्वर निश्चित रूप से उसे उठ खड़ा करेंगे जो मेरी मौत से खाली हुए स्थान पर विराजमान होगा, क्योंकि अतीत में भी ईश्वर की ऐसी ही विधि प्रभावी रही है और तुम ईश्वर की कार्यविधि में जरा भी परिवर्तन नहीं कर सकोगे। क्या तुम इस धरती पर प्रज्वलित ईश्वरीय प्रकाश को बुझा देने पर आमादा हो? घृणा योग्य है तेरी यह लालसा ईश्वर की दृष्टि में। भले ही तुम अपने हृदय के किसी गुप्त कोने में इसे लाख नापसन्द करो किन्तु परमेश्वर अपने प्रकाश को परिपूर्णता प्रदान करके रहेगा।

97. ओ मंत्री! जरा क्षणमात्र के लिए रुककर अपने मन में विचार करो और अपने निर्णय में निष्पक्ष बनो। हमने ऐसा क्या किया है कि ‘परम सम्राट के अमात्यों’ के बीच हमें कलंकित करने के तेरे कार्य को न्यायोचित ठहराया जा सके, या तेरे द्वारा अपनी लालसाओं के पीछे भागने को, सत्य को विकृत करने के तेरे प्रयासों को, और हमारे खिलाफ निंदा भरी बातें कहने को? हम तो कभी एक-दूसरे से मिले भी नहीं, सिवाय तब जबकि हम तुम्हारे पिता के घर में तुमसे मिले थे, उन दिनों जबकि इमाम हुसैन की शहादत के दिन का शोक मनाया जा रहा था। ऐसे अवसरों पर किसी के भी पास ऐसा कोई अवसर नहीं हो सकता कि वह बातचीत या व्याख्यान में दूसरों को अपने विचारों या अपनी मान्यताओं से अवगत करा सके। यदि तू सच्चा है तो मेरे इन शब्दों की सत्यता का साक्षी होगा। मैं ऐसी अन्य किसी भी सभा में अक्सर नहीं जाता रहा जिसमें तू या अन्य कोई भी मेरे मन को पढ़ पाता। तब जबकि तुमने मेरे मुख से मेरी घोषणा सुनी ही नहीं तो तुमने भला कैसे मेरे खिलाफ अपना निर्णय सुना दिया? क्या तुमने नहीं सुना है कि ईश्वर - धन्य हो उसकी महिमा! ने क्या कहा है: ”हर कोई जो भी अभिवादन के साथ तुझसे मिले उन सबसे यह मत कह कि ‘तुम ईश्वर के प्रति आस्थावान नहीं हो’।“ ”उन्हें परे मत हटाओ जो सुबह और संध्याकाल उसके मुखड़े के दर्शन की अभिलाषा में उस प्रभु को पुकारते हैं।“ ईश्वर के ग्रंथ ने जो आदेश दिया है उसे तुमने वास्तव में त्याग दिया है, और तिस पर भी तुम स्वयं को धर्मानुयायी मानते हो!

98. ईश्वर मेरा साक्षी है कि इन सबके बावजूद मेरे मन में तेरे या अन्य किसी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है, हालाँकि तुझसे तथा औरों से हमें ऐसी पीड़ा मिली है जैसी कि ईश्वर की एकता में विश्वास करने वाला कोई भी धर्मानुयायी नहीं दे सकता। मेरा धर्म ईश्वर के सिवा अन्य किसी के हाथ में नहीं है और उस परमात्मा के सिवा अन्य किसी पर भी मेरा भरोसा नहीं। बहुत ही जल्द तुम्हारे ये दिन समाप्त हो जाएँगे, जैसे उनके भी दिन गुजर जाएँगे जो आज घोर अहंकार के साथ अपने पड़ोसी पर अपनी शान बघार रहे हैं। बहुत ही जल्द तुम सबको ईश्वर के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा और तुझसे तेरे कर्मों का हिसाब लिया जाएगा और तेरे हाथों ने जो कृत्य किए हैं उनका तुझे प्रतिफल दिया जाएगा और दुष्ट कर्म करने वालों की ठौर सचमुच बड़ी दुःखद है!

99. ईश्वर की सौगन्ध! यदि तुम यह महसूस कर पाते कि तुमने क्या किया है तो तुम अपने ही ऊपर फूट-फूटकर रो देते और ईश्वर की शरण पाने के लिए दौड़ जाते और अपने जीवन के सभी दिन चिन्ता और शोक में बिता देते, जब तक कि ईश्वर ने तुम्हें क्षमा नहीं कर दिया होता, क्योंकि वह वास्तव में परम उदार है, सर्वकृपालु है। मगर तुम अपनी मृत्यु पर्यन्त अपनी असावधानी में ही डूबे रहोगे क्योंकि अपने सम्पूर्ण हृदय, अपनी आत्मा और अपने अंतर्मन से, तुमने अपने आपको इस संसार के मिथ्याभिमानों में ही व्यस्त कर रखा है। किन्तु इस संसार से कूच कर जाने के बाद, तुम यह जानोगे कि हमने तुम्हारे लिए क्या प्रकट किया था और अपने सभी कर्म उस ‘ग्रंथ’ में अंकित पाओगे जिसमें धरती के हर मनुष्य के कर्म - चाहे वे बहुत बड़े हों या एक कण से भी हल्के अंकित किए जाते हैं। अतः, मेरी सलाह पर ध्यान दे और अपने हृदय की गहराई से मेरी वाणी सुन और मेरे शब्दों के प्रति लापरवाह मत बन और न ही उन लोगों में से बन जो मेरे सत्य को अस्वीकार करते हैं। तुझे जो वस्तुएँ प्रदान की गई हैं, उन पर गर्व न कर। अपनी दृष्टि उन बातों पर केन्द्रित कर जो संकटों में सहायक, सर्वगरिमामय परमात्मा के ‘ग्रंथ’ में प्रकट की गई हैं: ”और जब वे उन्हें दी गई चेतावनियाँ भूल गए तो हमने सभी वस्तुओं के द्वार उनके लिए खोल दिए,“ ठीक वैसे ही जैसे हमने तुम्हारे और तुम्हारे जैसे अन्य लोगों के समक्ष इस धरती के द्वार और इसके सारे रत्नों को उन्मुक्त कर दिया था। अतः, इंतजार कर उसका जिसे इस श्लोक के बाद वाले अंश में प्रकट किया गया है, क्योंकि यह वचन उसकी ओर से है जो है सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ, और यह ऐसा वचन है जो कभी असत्य नहीं हो सकता।

100. हे मेरा अहित चाहने वाले लोगों के समूह! मैं नहीं जानता वह कौन-सा पथ है जिसे तुम सबने चुना है और जिस पर तुम चल रहे हो। हम तुम्हें ईश्वर की ओर आने का आह्वान करते हैं, हम तुम्हें उसके दिवस की याद दिलाते हैं, हम उसके साथ तुम्हारे पुनर्मिलन का समाचार सुनाते हैं, हम तुम्हें उसके दरबार के निकट बुलाते हैं और तुम्हारे पास उसकी विलक्षण प्रज्ञा के संकेत भेजते हैं और फिर भी जरा देखो तो सही कि तुम किस प्रकार हमें अस्वीकार करते हो, कैसे अपने मुखों से निकली झूठी बातों से हमारी निन्दा करते हो, एक विश्वासघाती की तरह कैसे हमारे खिलाफ षडयंत्र रचते हो! और जब हम तुम्हारे समक्ष वह प्रकट करते हैं जो ईश्वर ने अपनी उदार कृपा से हमें प्रदान किया है तो तुम सब कहते हो कि “यह तो बस कोई जादू-मंतर है।“ तुझसे पहले की पीढ़ी ने भी बिल्कुल ऐसे ही शब्द कहे थे और वे भी तेरे जैसे ही थे, काश कि तुम यह समझ पाते! इस प्रकार से तुमने स्वयं को ईश्वर की कृपा और करुणा से वंचित कर रखा है और तुम तब तक उन्हें प्राप्त नहीं कर पाओगे जब तक वह दिन नहीं आ जाता जब ईश्वर तुम्हारे और हमारे बीच अपना निर्णय करेगा और वह, वस्तुतः, सर्वोत्‍तम निर्णायक है।

101. तुझमें से कुछ लोगों ने कहा है: ”वह वही है जिसने ईश्वर होने का दावा किया है।“ परमात्मा की शपथ! यह एक घोर झूठा आरोप है। मैं बस ईश्वर का एक सेवक हूँ जिसने उसमें, उसके संकेतों, उसके अवतारों और उसके देवदूतों में अपनी आस्था रखी है। मेरी वाणी, और मेरा हृदय, और मेरा आंतरिक तथा बाह्य अस्तित्व इस बात के साक्षी हैं कि उस परमेश्वर के सिवा और कोई ईश्वर नहीं है, कि अन्य सभी उसके आदेश की शक्ति से रचे गए हैं, और उसकी इच्छा के कार्य-संचालन से ही उन सबको स्वरूप दिया गया है। उस सृष्टिकर्ता, मृत्यु के बाद फिर जगाने वाले, स्फूर्तिदाता और मृत्युदाता के सिवा और कोई ईश्वर नहीं है। मैं उन लोगों में हूँ जो देश-देशांतर में उन कृपाओं का बखान करता हूँ जो ईश्वर ने दयापूर्वक मुझे प्रदान की हैं। यदि यही मेरे द्वारा मर्यादा का उल्लंघन किया जाना है तो सचमुच मैं उल्लंघन करने वालों में सर्वप्रथम हूँ। ऐसी स्थिति में मेरे प्रियजन और मैं तुम्हारी दया के आसरे हैं। तेरी जैसी इच्छा हो वैसी कर और हिचकिचाने वालों में से न बन, ताकि मैं अपने प्रभु परमेश्वर के पास लौट सकूँ और उस स्थान तक पहुँच जाऊँ जहाँ मुझे तुम्हारे ये चेहरे देखने को न मिलें। वास्तव में, यही मेरी सबसे प्रिय इच्छा है, मेरी सबसे प्रबल अभिलाषा है। वस्तुतः, मेरी दशा ईश्वर को पर्याप्त रूप से ज्ञात है और वह सब देखता है।

102. हे मंत्री! अपने आप को ईश्वर की नजरों के नीचे खड़े होने की कल्पना कर। यदि तुम उसे नहीं देखते तो भी, वस्तुतः, वह तुम्हें स्पष्ट देखता है। ध्यान से देखो और हमारे धर्म के बारे में निष्पक्ष निर्णय दो। यदि तुम न्यायपूर्ण लोगों में से हो तो बतलाओ कि हमने ऐसा क्या कर दिया है कि तुम्हें हमारे विरुद्ध खड़े होने और लोगों के बीच हमें अपयश देने का उकसावा मिल गया? हम ‘शाह’ के आदेश से तेहरान छोड़कर चले गए और इस तरह प्रस्थान करने के कारण हमने अपना निवास इराक में स्थानांतरित कर लिया। यदि हम उसके खिलाफ खड़े हुए होते तो फिर उसने मुझे मुक्त क्यों किया? और यदि मैं निरपराध था तो तुमने मुझे ऐसे संकटों में क्यों डाला जैसे तुम्हारे धर्म का अनुपालन करने वाले किसी व्यक्ति ने नहीं झेले होंगे? क्या इराक में मेरे आगमन के बाद मेरा कोई भी कार्य ऐसा रहा है जो कि सरकार की सत्‍ता को चुनौती देने वाला हो? ऐसा कौन है जिसके बारे में यह कहा जा सकता है कि हमारे व्यवहार से उसे कुछ भी गलत प्रतीत हुआ हो? लोगों से जरा स्वयं पूछताछ करो ताकि तुम ऐसे लोगों में से बन सको जिसने सत्य का बोध पा लिया है।

103. उस धरती पर हमने ग्यारह वर्ष बिताए, जब तक कि तुम्हारी सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाला वह मंत्री वहाँ नहीं आ गया जिसके नाम का उल्लेख करना मेरी लेखनी को अप्रिय लगता है। वह व्यक्ति जिसे शराब की लत थी, जो अपनी वासनाओं का गुलाम था और दुष्टता में निरत रहता था और जो भ्रष्ट था और जिसने इराक को भ्रष्ट किया। यदि तुम उनसे पूछ पाते और उन लोगों में से होते जिन्हें सत्य की तलाश है तो बगदाद के अधिकांश निवासी इसकी गवाही देंगे। यह वही तो था जिसने छल से अपने ही बंधुओं की सम्पत्ति हथिया ली, जिसने ईश्वर के सारे आदेशों को तिलांजलि दे दी, और परमात्मा द्वारा निषिद्ध हर कार्य किया। अंततः, अपनी इच्छाओं का अनुसरण करता हुआ वह हमारे खिलाफ उठ खड़ा हुआ और अन्यायी लोगों के मार्ग पर चल पड़ा। तुम्हारे नाम अपने पत्र में उसने हम पर दोषारोपण किया, और बिना कोई सबूत तलाशे और उससे कोई विश्वसनीय प्रमाण प्राप्त किए बिना तुमने उसका यकीन कर लिया और उसी के रास्ते पर चल पड़े। तुमने न तो कोई स्पष्टीकरण माँगा, न ही तुमने मामले की छानबीन या उसका सत्यापन करने की कोशिश की ताकि तेरी नजर में सच और झूठ का फ़र्क दिख जाता और तुम्हारी विवेक-बुद्धि स्पष्ट हो पाती। उस समय इराक में जो भी मंत्रीगण थे उनसे तथा उस शहर के गवर्नर और हाई काउन्सलर से पूछकर स्वयं जान लो कि वह किस प्रकार का आदमी था ताकि सत्य तुम्हारे समक्ष प्रकट हो सके और तुम सही रूप से सूचित व्यक्ति बन सको।

104. ईश्वर हमारा साक्षी है कि हमने किसी भी परिस्थिति में न तो उसका विरोध किया और न किसी अन्य का। हर स्थिति में हमने ईश्वर के आदेशों का पालन किया और हम उन लोगों में से कभी नहीं रहे जो अव्यवस्था फैलाते हैं। इसका वह (बगदाद स्थित उक्त मंत्री) स्वयं साक्षी है। उसका इरादा हमें अपने चंगुल में जकड़ कर वापस फारस भिजवा देने का था ताकि इस तरह से वह अपना नाम कमा सके। तुमने भी वैसा ही अपराध किया है, और ठीक उसी इरादे से। सबके सार्वभौम स्वामी और सब कुछ जानने वाले ईश्वर की दृष्टि में तुम दोनों समान दर्जे के हो।

105. इन शब्दों को तुझसे सम्बोधित करने में हमारा उद्देश्य अपनी वेदना के भार को कम करना अथवा किसी के भी साथ हमारे लिए मध्यस्थता करने के लिए तुझे प्रलोभन देना नहीं है। नहीं, सौगन्ध उसकी जो सभी लोकों का प्रभु है! हमने ये सारे विषय इसलिए तुम्हारे सामने प्रस्तुत कर दिए हैं ताकि कदाचित तुम यह विचार कर सको कि तुमने क्या किया है, तुमने हमें जो यातनाएँ दी हैं वैसी यातनाएँ दूसरों को देने से रुक सको और ऐसे लोगों में से बन सको जिन्होंने सचमुच उस ईश्वर के सामने पश्चात्‍ताप किया है जिसने तुझे और सारी वस्तुओं को रचा है, और भविष्य में बुद्धि-विवेक के साथ आचरण कर सको। तुम्हारी समस्त सम्पदाओं की तुलना में यही तुम्हारे लिए श्रेयस्कर है और उस मंत्रीपद की तुलना में भी जिसके दिन गिने-चुने हैं।

106. सावधान रह कि तुझे कोई अन्याय का ताना-बाना बुनने के लिए न उकसा दे। अपना हृदय दृढ़तापूर्वक न्याय पर आश्रित कर और ईश्वर के धर्म को बदल मत, और उन लोगों में से बन जिनकी दृष्टि उन वस्तुओं की ओर निर्देशित है जो ईश्वर के ग्रंथ में प्रकट की गई हैं। किसी भी स्थिति में, अपनी शैतानी इच्छाओं का अनुसरण न कर। तू ईश्वर के विधान का पालन करा जो प्रभु है तुम्हारा, दयालु एवं दिवसाधिक प्राचीन। निश्चित रूप से तुम धूल में विलीन हो जाओगे और उन्हीं वस्तुओं की तरह विनष्ट हो जाओगे जिनमें तुम आनन्दमग्न हो। सत्य और गरिमा की वाणी ने यही कहा है।

107. क्या तुम अतीत काल में ईश्वर द्वारा कही गई चेतावनियाँ भूल गए ताकि तुम ऐसे लोगों में से बन सकते जो उसकी चेतावनी पर ध्यान देते हैं? उसने कहा है, और वह वास्तव में सत्य कहता है: ‘‘हमने इस (मिट्टी) से तुम्हें उत्पन्न किया है और हम इसी में तुम्हें लौटा देंगे, और इसी में से हम दूसरी बार फिर तुम्हें प्रकट करेंगे।“ धरती के सभी निवासियों के लिए ईश्वर ने यही निर्धारित किया है - चाहे वे उच्च हों या निम्न। अतः जिसे धूल से रचा गया है, जो वापस उसमें मिल जाएगा और पुनः उससे उत्पन्न किया जाएगा उसके लिए यह शोभनीय नहीं है कि वह ईश्वर के समक्ष अहंकार से फूले और उसके प्रियजनों का घमंडपूर्वक अनादर करे और उद्धत अभिमान से भर उठे। नहीं, बल्कि तेरे और तुझ जैसे अन्य लोगों के लिए यही शोभनीय है कि स्वयं को उन लोगों के प्रति समर्पित कर दे जो ईश्वरीय एकता के ‘प्रकटावतार’ हैं और उन आस्थावान लोगों को विनम्रतापूर्वक समादर दे जिन्होंने ईश्वर के निमित्‍त अपना सर्वस्व त्याग दिया है, और लोगों के मन को व्यस्त करने तथा सर्वगरिमामय, सर्वप्रशंसित परमात्मा के पथ से भटकाने वाली बातों से स्वयं को अनासक्त कर रखा है। इस तरह हम तुम्हारे पास वह भेजते हैं जिससे तुझे और उन सबको लाभ प्राप्त होगा जिन्होंने अपना सम्पूर्ण भरोसा और विश्वास अपने प्रभु में रखा है।

108. हे इस नगर के धर्मगुरुओं! हम तुम्हारे पास सत्य के साथ आए थे जबकि तुम इससे बेखबर थे। मुझे तो लगता है कि अपने ही स्वार्थ के आवरणों में लिपटे हुए तुम मृतकों के समान हो। तुमने हमारी उपस्थिति में आने का प्रयत्न नहीं किया, जबकि ऐसा करना तेरे लिए तुम्हारे सभी कर्मों से कहीं ज्यादा श्रेयस्कर रहा होता। तू यह जान कि ईश्वरीय प्रतिनिधित्व का ‘सूर्य’ सम्पूर्ण सत्य में उदित हो चुका है और फिर भी तुम उससे विमुख हुए बैठे हो। मार्गदर्शन का ‘चन्द्र’ स्वर्ग के बीचोंबीच अत्यंत ऊपर प्रकटित हो गया है और फिर भी तुम उससे छुपे बैठे हो। दिव्य कृपा का ‘तारा’ अनन्त पावनता के क्षितिज के ऊपर चमक उठा है और तुम फिर भी उससे दूर भटके हुए हो।

109. यह जान ले कि तेरे अग्रजन, जिनके प्रति तू आस्था रखता है और जिन पर तुम्हें इतना नाज है और जिनके नामों का तुम सब दिन-रात उल्लेख किए रहते हो और जिनसे तुम्हें मार्गदर्शन की कामना है - यदि वे आज जीवित होते तो वे मेरी प्रदक्षिणा करते, और सुबह-शाम स्वयं को मुझसे अलग नहीं होने देते। परन्तु तुमने क्षणमात्र से भी अल्प समय के लिए अपने मुखड़े मेरी ओर नहीं किए और घमंड जताते रहे, और इस ‘प्रवंचित’ के प्रति लापरवाह बने रहे जो लोगों द्वारा इतना उत्पीड़ित हुआ कि उनकी जैसी मर्जी हुई मेरे साथ उन्होंने वैसा ही व्यवहार किया। तुम मेरी हालत के बारे में पता लगाने से चूक गए, और मेरे संकटों से अनजान बने रहे। इस तरह तुमने इस ज्योतिर्मय और प्रसादित ‘स्थल’ से प्रवाहित होने वाली पावनता की बयारों तथा कृपा के मृदुल समीरण को अपने आप तक आने से रोक दिया है।

110. मुझे लगता है कि तुम बाह्य वस्तुओं से चिपके बैठे हो और अंतरंग वस्तुओं को भूल बैठे हो। तुम नामों के प्रेमी हो और लगता है स्वयं को उन्‍हीं पर समर्पित कर चुके हो। इसीलिए तुम अपने अग्रजनों के नामों का उल्लेख करते हो। लेकिन यदि उन जैसा कोई भी, या उनसे भी वरिष्ठ, तुम्हारे पास आ पहुँचें तो तुम उसे भगा दोगे। उनके नामों से तुमने स्वयं अपना महिमा-मंडन किया है, अपनी सत्‍ता सुरक्षित रखी है, और सुख-समृद्धि से जी रहे हो। और यदि तुम्हारे अग्रजन फिर से प्रकट हो जाते तो भी तुम अपनी अगुआई नहीं त्याग पाते, न ही उनकी बताई दिशा की ओर उन्मुख होते और न उनकी ओर अपने मुखड़े करते।

111. ज्यादातर लोगों की तरह तुम्हें भी हमने सिर्फ उन नामों की पूजा में व्यस्त देखा जिनका वे उम्रभर सिर्फ उल्लेख ही करते रह जाते हैं। मगर जैसे ही उन नामों के ‘संवाहकों’ का अवतरण होता है, वे उसकी अवनिन्दा करते हैं और उनसे भाग खड़े होते हैं। हमने तुम्हें ऐसा ही पाया है, और इसी भाँति हमने तुम्हारे कर्मों को जाना-समझा है और इस युग में तुम्हारे कर्मों के साक्षी रहे हैं। जब तक तुम इस ‘सेवक’ के आकलन में नए व्यक्ति नहीं बन जाते, जान लो कि इस युग में ईश्वर तुम्हारे विचारों को स्वीकार नहीं करेगा, न ही तुम्हारे प्रभु-स्मरण को, न उसकी ओर तुम्हारे उन्मुख होने को, न तुम्हारी श्रद्धालुता को और न ही तुम्हारी सतर्कता को। काश कि तुम यह समझ पाते!

112. प्रभु की सौगन्ध! ईश्वरीय प्रतिनिधित्व का ‘तरुवर’ रोपा जा चुका है, ज्ञान का ‘बिंदु’ सुस्पष्ट किया जा चुका है, तथा संकटों में सहायक, स्वयंजीवी परमात्मा का साम्राज्य स्थापित किया जा चुका है। ईश्वर से डर! अपनी दुष्ट इच्छाओं का अनुगामी न बन बल्कि अपने दिनों में प्रभु के विधान का पालन कर। अपने जीवन के तौर-तरीके बदल डाल, ताकि मार्गदर्शन का प्रकाश तुझे राह दिखा सके और शीघ्रतापूर्वक तुझे उस ‘एकमेव सत्य’ ईश्वर के पथ पर ले जा सके।

113. हे ‘शहर’ के विवेक-सम्पन्न लोगों और दुनिया के दार्शनिकों! सावधान रहो कि मानवीय ज्ञान और विवेक तुम्हारे लिए संकटों में सहायक, स्वयंजीवी परमेश्वर के समक्ष घमंड से फूलने का कारण न बन बैठे। तुम सब यह जान लो कि सच्चा विवेक है ईश्वर का भय रखने में, उसे जानने में और उसके ‘प्रकटावतारों’ को पहचानने में। परन्तु यह विवेक वे ही प्राप्त कर सकते हैं जो स्वयं को इस संसार से अनासक्त कर लेते हैं और जो अपने प्रभु की सद्कृपा के मार्ग पर चलते हैं। क्या तुम उससे भी अधिक विवेक सम्पन्न हो जिसने (खुरासान के अल-मुकन्ना से संकेत है जो आठवीं सदी में हुआ था) एक ऐसा चन्द्रमा बना डाला था जो एक कुएँ से उगता और दूसरे कुएँ में डूबता था और जिसका प्रकाश एक ‘लीग’ की दूरी से दिखता था? ईश्वर ने, वस्तुतः, उसके कार्य का हर नामो-निशान मिटा दिया और धूल में मिला दिया उसे, जैसाकि हम पहले भी सुन चुके हैं या अब जानते हैं।

114. न जाने कितने ऐसे संत और दार्शनिक हुए जो ज्ञान और विवेक में उसके समकक्ष या उससे भी बढ़-चढ़ कर थे। और ऐसे न जाने कितने अनगिनत लोग थे जो खुद तुम्हारे समतुल्य या तुझसे भी श्रेष्ठ थे। उनमें से कुछ तो ईश्वर में विश्वास रखते थे जबकि बाकी लोग अविश्वासी थे और ईश्वर के ‘साझेदार’ बने बैठे थे। अंततः, ये सारे अविश्वासी आग में झोंक दिए गए और वहीं उन्हें ठिकाना मिला, जबकि विश्वासी लोग ईश्वर की करुणा की ठौर में निवास करने लौट आए। ईश्वर तुमसे तुम्हारे ज्ञान-विज्ञान की बात नहीं पूछेगा बल्कि तुम्हारी निष्ठा और तुम्हारे आचरण के बारे में सवाल किया जाएगा। क्या तुम विवेक में उससे भी बढ़कर हो जिसने तुम्हें अस्तित्व दिया है, जिसने स्वर्ग और उनकी हर वस्तु, धरती और इस पर निवास करने वाले हर जीव को स्वरूप दिया है? दयालु परमात्मा! सच्चा विवेक उसी का है। समस्त सृष्टि और साम्राज्य उसी का है। लोगों के बीच वह जिसका भी चयन करता है उन्हें अपना विवेक प्रदान करता है और जिस किसी को भी चाहता है उससे वंचित रखता है। सत्य ही, वही प्रदाता और वही वंचित रखने वाला है, और वही है वास्तव में सर्वकृपालु अैर सर्वप्रज्ञ।

115. हे दुनिया के विद्वानों! तुम हमारी उपस्थिति प्राप्त करने से चूक गए, जिससे तुम ‘चेतना’ के माधुर्य भरे स्वर का श्रवण कर पाते और उसे जान पाते जिसे ईश्वर ने अपनी कृपालुता के कारण मुझे सहर्ष प्रदान किया है। वास्तव में, अब यह कृपा तुझसे दूर हो गई है, काश कि तुम यह जान पाते! यदि तुमने हमारे सान्निध्य में आने का प्रयत्न किया होता तो हम तुम्हें ऐसा ज्ञान प्रदान करते कि जो तुझे सबसे मुक्त कर देता। मगर ऐसा करने में तुम असफल रहे और इस तरह ईश्वर का न्याय-निर्णय पूरा हुआ है। अब मुझे इसे प्रकट करने की मनाही है क्योंकि हम पर जादूगरी का आरोप लगाया गया है, बशर्ते कि तुम हमारे कहने का अर्थ समझ पाते। अतीत काल के अविश्वासियों ने भी ऐसे ही वचन बोले थे, उन लोगों ने जो बहुत पहले काल-कवलित हो चुके और अब जो उनकी दुर्दशा पर विलाप करती नरकाग्नि में धधक रहे हैं। इस युग के अविश्वासियों का भी वही हश्र होगा। ऐसा ही अकाट्य निर्णय है उसका जो है सर्वसामर्थ्‍यवान, स्वयंपर्याप्त।

116. और अंत में, मैं तुम्हें परामर्श देता हूँ कि ईश्वर द्वारा निर्धारित मर्यादा का उल्लंघन मत करो और न ही लोगों की आदतों और उनके तौर-तरीकों पर ध्यान दो क्योंकि वे ”न तो तुम्हारी भूख बढ़ा सकते हैं और न ही उसे शान्त कर सकते हैं।“ बल्कि अपना ध्यान ईश्वर की शिक्षाओं की ओर लगाओ। जो कोई भी चाहे वह परमात्मा की ओर ले जाने वाले एक मार्ग के रूप में इस परामर्श को स्वीकार करे और जो कोई भी चाहे वह अपनी व्यर्थ कल्पनाओं के संसार में लौट जाए। वस्तुतः, मेरा प्रभु उन सबसे मुक्त और ऊपर है जो स्वर्ग में और धरती पर हैं और उन सब बातों से ऊपर जो वे कहते और करते हैं।

117. मैं ईश्वर द्वारा कहे गए इस वचन के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ, धन्य हो उसकी महिमा: ”हर कोई जो भी अभिवादन के साथ तुझसे मिले उन सबसे यह मत कह कि ‘तुम ईश्वर के प्रति आस्थावान नहीं हो’।“

118. शान्ति विराजे तुझ पर, हे निष्ठावानों के समुदाय! और गुणगान हो ईश्वर का जो स्वामी है समस्त लोकों का!

# पद-टिप्पणियाँ

1. कुरान से उद्धृत 2:30-34, 38:71-75

2. उस्ताद मुहम्मद-अली-ए-सलमानी, - वर्तमान एवं बाद के अनुच्छेदों में बहाउल्लाह द्वारा उल्लिखित घटनाओं के विवरण के लिए देखें: ‘गॉड पासेज बाइ’, प. 166-168

3. अरबी भाषा में ‘हैकल‘ (मन्दिर) शब्द चार अक्षरों से बना है - हा, या, काफ़ और लाम (हा य क ल)। इनमें पहला अक्षर ‘हुबिय्या’ (दिव्यता का सार-तत्व) शब्द का संकेतक है, दूसरा शब्द ‘कादिर’ (सर्वशक्तिमान) का जिसमें तीसरा वर्ण है ‘या’। तीसरा अक्षर ‘करीम’ (सर्वदयालु) का द्योतक है और चौथा अक्षर ‘फज्ल’ (कृपा) का संकेतक है जिसका तीसरा वर्ण है ‘लाम’।

4. कुरान से उद्धृत 21:30, 24:45, 25:54

5. अर्थात, अंग्रेजी में अक्षर ‘ई’। बहाई लेखों में, ऐसे सभी संदर्भों में जहाँ अंग्रेजी के अक्षर ‘बी’ और ‘ई’ (संस्कृत में भ + व - भव) प्रयुक्त हुए हैं, वहाँ अरबी भाषा के अक्षर ‘काफ़’ और ‘नून’ हैं जो कि अरबी भाषा के शब्द ‘कुन’ के दो व्यंजन अक्षर हैं। उनका अभिप्राय अंग्रेजी के ‘बी’ (संस्कृत के ‘भव’) से है।

6. “वह पेड़ जिसके आगे कोई राह नहीं“ - ईश्वर के प्रकटावतार से संकेत।

7. ये बाब के सामने प्रस्तुत किए गए कुछ प्रश्नों के उदाहरण हैं। शिया इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार, पैगम्बर मुहम्मद के निधन के बाद इस्लामी समुदाय का नेतृत्व आधिकारिक रूप से बारह उत्‍तराधिकारियों को प्राप्त हुआ जो मुहम्मद साहब की बेटी फातिमा के वंशज थे और जिनमें से प्रत्येक को ‘इमाम’ के नाम से जाना गया। अंततः, अन्तिम इमाम के ‘तिरोहित’ हो जाने के कारण यह कड़ी टूट गई। कुछ समय तक उनके साथ संवाद स्थापित करने के माध्यम के रूप में क्रमशः चार मध्यस्थ सामने आए जिनमें से प्रत्येक को ‘द्वार’ कहा गया।

8. अरब देश की तीन देवियों में से एक जिनकी उपासना पैगम्बर मुहम्म्द ने समाप्त कर दी।

9. काबा के पूर्वी कोने में नीचे के स्थान में रखा एक छोटा-सा पत्थर।

10. मैथ्यू 5:29, मार्क 9:47

11. फ्रांस के सम्राट को सम्बोधित यह बहाउल्लाह की दूसरी पाती है। इससे पहले एक पाती ऐड्रियानोपल (अक्का) में प्रकट की गई थी।

12. क्रीमिया का युद्ध (1853-1855)

13. एक साल के अन्दर ही नेपोलियन तृतीय सीडान के युद्ध (1870) में पराजित हुआ और निर्वासन पर भेज दिया गया।

14. कुरान 77:20, 32:8

15. दो ‘परम महान उत्सव’ हैं - रिज़वान का पर्व जिसके दौरान बहाउल्लाह ने अपने मिशन की घोषणा की तथा ‘बाब का घोषणा दिवस’। संदर्भः किताब-ए-अकदस, अनुच्छेद 110

16. कुरान 17:78

17. मिर्जा बुजुर्ग खान - बगदाद स्थित फारस के कौंसल-जनरल

18. मुत्‍तामिनुल-मुल्क मिर्जा सईद-खान-ए-अंसारी, विदेशमंत्री

19. बहाउल्लाह ने यहाँ अपने तथा अपने साथी द्वारा ऑटोमन साम्राज्य की नागरिकता के लिए दिए गए आवेदन की चर्चा की है।

20. आका सैयद मुहम्मद-ए-तबाताबये-इफसानी जिन्हें ‘मुज़ाहिद’ नाम से जाना गया।

21. 1825-28 का दूसरा रूस-फारस युद्ध

22. कुरान 2:94, 62:6

23. फारसी ‘निगूढ़ वचन’ से उद्धृत, सं. 24-25, 28 और 30

24. कुरान 49:6

25. कुरान 5:59

26. ग्यारहवें इमाम अबू मुहम्मद अल-हसन अल-अस्करी से जुड़ी मान्यता

27. छठे इमाम अबू अब्दुल्लाह-जफर अस-सादिक से जुड़ी मान्यता

28. शेख मुर्तजा-ए-अंसारी - एक प्रमुख मुज़्तहिद

29. कुरान 2:179

30. कुरान 6:164, 15:15, 35:18, 39:17, 53:38

31. कुरान से उद्धृत 3:40, 14:27, 22:18

32. कुरान से उद्धृत 5:1

33. कुरान से उद्धृत 5:64

34. कुरान 40:5

35. कुरान 36:30

36. कुरान 8:30

37. कुरान 6:35

38. मैथ्यू से उद्धृत 24:35, मार्क 13:31, लूके 21:33

39. जॉन 14:28

40. जॉन से उद्धृत 14:26, 15:26, 16:7

41. उदाहरण के लिए देखें: कुरान 4:46, 5:13 और 2:75 तथा किताब-ए-इकान में चर्चा, पृ. 84

42. अली इब्न हुसैन (जैनुल आबदीन नाम से प्रसिद्ध), इमाम हुसैन के बेटों में दूसरे जो चैथे इमाम भी बने

43. ख़रीजी, एक गुट जो इमामों और उमैयाओं दोनों के राज्य के खिलाफ थे

44. क्रमशः अब्बासी एवं उमैयाई वंशों की ओर संकेत

45. कुरान 57:16

46. लूके से उद्धृत 19:21

47. कुरान से उद्धृत 55:26

48. कुरान से उद्धृत 12:31

49. यह पाती अरबी भाषा में हाजी मुहम्मद इस्माइल-ए-काशानी के सम्मान में प्रकटित की गई थी जिन्हें बहाउल्लाह ने ज़बीह (त्याग) और अनीस (साथी) की उपाधि दी थी और इसे ऑटोमन साम्राज्य के प्रधानमंत्री अली पाशा को सम्बोधित किया गया है जिसे यहाँ ‘रईस’ (प्रधान/शासक) के नाम से अभिहित किया गया है

50. सुल्तान अब्दुल-अजीज का 1876 में राजसिंहासन छिन गया और वह मारा गया। उसके बाद रूस के साथ हुए युद्ध (1877-78) में ऐड्रियानोपल यानी अक्का पर दुष्मनों का आधिपत्य हो गया और तुर्कों को हिंसक रक्तपात का सामना करना पड़ा।

51. शब्दिक अर्थ ‘अंजीरों का पर्वत’ तथा ‘जैतून का पर्वत’, कुरान से उद्धृत 95:1

52. चोसरोज द्वितीय, सासान वंश का शासक जो पैगम्बर मुहम्मद के जीवन-काल में फारस का शासक था।

53. हाजी जफर-ए-तबरीजी, - समय रहते उसे आत्महत्या करने से रोक दिया गया।

54. जवीरा के सैयद इस्माइल

55. अक्का में बहाउल्लाह के आगमन और कारावास के तुरन्त बाद अली पाशा को संबोधित बहाउल्लाह की दूसरी पाती फारसी भाषा में प्रकट की गई थी।

56. इस घटना के विवरण के लिए देखें: ‘गॉड पासेज बाइ’, पृ. 182

57. संभवतः होकापासा के अग्निकांड की ओर संकेत है जिसने 1865 में कुस्तुंतुनिया (कौंस्टैंटिनोपल) शहर के एक बड़े भाग को नष्ट कर दिया था।

58. ‘लौह-ए-फुआद’ बहाउल्लाह के एक प्रमुख अनुयायी काजवीन के शेख काज़िम-ए-समन्दर को संबोधित है। इसका दूसरा पात्र, ऑटोमन साम्राज्य का पूर्व राजनयिक फुआद पाशा 1869 के प्रारंभ में फ्रांस में मर गया। ‘काफ़’ और ‘ज़ा’ अक्षरनाम ‘काज़िम’ शब्द के ‘क’ और ‘ज़’ के सूचक हैं।

59. कुरान से उद्धृत 38:3

60. कुरान से उद्धृत 13:13

61. कुरान से उद्धृत 40:32

62. कुरान से उद्धृत 38:12 89:10

63. ‘हृदय’ शब्द का अनुवाद है ‘फुआद’ जो कि ऑटोमन के मंत्री को दिया गया नाम था।

64. मिर्जा मेहदी-ए-रश्ती, कौस्टैंटिनोपल में स्थित एक जज और मिर्जा याहिया के समर्थक

65. जॉन 14:28

66. जॉन 16:13

67. जॉन 1:13

68. कौंस्टैंटिनोपल स्थित फ्रांसीसी राजदूत

69. कौंस्टैंटिनोपल स्थित फारसी राजदूत

70. कुरान 51:53

71. कुरान 49:6

72. कुरान 12:53

73. कुरान 15:88

74. कुरान से उद्धृत 77:20, 32:8

75. कुरान 40:28

76. कुरान 4:94

77. कुरान 6:52

78. कुरान 6:44

79. बगदाद स्थित फारस के कौंसुल-जेनरल

80. कुरान 20:55

81. खुरासान के अल मुकन्ना (8वीं सदी)

82. कुरान 4:94

# संकेतिका

इस संकेतिका (इंडेक्स) में दिए गए संदर्भ अलग-अलग पातियों की ओर संकेतित करते हैं जिनके उपरांत उस खास पाती की अनुच्छेद संख्याएँ दी गई हैं। उदाहरण के लिए, ‘सूरा-ए-मुलुक’ के दूसरे अनुच्छेद में उल्लिखित विषय को ‘मु2’ के रूप में संकेतित किया गया है। प्रत्येक प्रविष्टि और उप-प्रविष्टि के अन्दर, संकेतिका के संदर्भ उसी क्रम में दिए गए हैं जिस क्रम में इस पुस्तक में पातियाँ प्रस्तुत की गई हैं।

**संक्षिप्ताक्षरः**

सूरा-ए-हैकल है

सूरा-ए-रईस स र

लौह-ए-रईस ल र

लौह-ए-फुआद फु

सूरा-ए-मुलुक मु

**अ-अः**

अब्दुल-अजीज (तुर्की के सुल्तान), है 139, 183, फु 13, मु 58-83

 बहाउल्लाह उसके साथ मुलाकात प्रस्तावित करते हैं, ल र 25-26

 बहाउल्लाह के साथ दुर्व्‍यवहार, मु 73

 अक्का (एड्रियानोपल) को गँवा बैठेगा, स र 5

अब्दुल-गफ्फार, ल र 5

अब्दुल्लाह-ए-उबय, है 243

अब्राहम, स र 7, 18

अक्का (महानतम कारागार), है 140, 156, 169, 267, ल र 3-6, 27, 29

अल्कोहल, है 88, 240, मु 103

अलैक्जैंडर द्वितीय (रूस का ज़ार), है 137, 158-170

 बहाउल्लाह की मदद करने के लिए उच्च स्थान, है 158

 के लिए प्रार्थना, है 169

अली-अकबर-ए-नराकी, मिर्जा, स र 37

अली पाशा (रईस), फु 13

 जागने का आह्वान, ल र 29

 उसे निश्पक्ष होने के लिए कहना, ल र 18

 के कर्म, ल र 24

 संकटों से असावधान, ल र 9

की निःसहायता, ल र 23

 की मृत्यु, ल र 10

 का अहंकार, स र 2

 बहाउल्लाह को खारिज करना, स र 2, 6

 बहाउल्लाह के निर्वासन का जिम्मेवार, ल र 25

 के अत्याचार, ल र 2-6

अनीस, देखें ज़बीह

अनास, है 245

अक्सा मस्जिद, है 91, 171

अस्त्र-षस्त्र, है 181, मु 8, 10

अज़ल, सुब्ह-ए, देखें मिर्जा याहिया

अस्तित्व, देखें: सृष्टि

अज्ञान, है 31, 71, 76, 79, 86, 174, 176, 177, 237, 242, 244, ल र 5, मु 24

अमरता, देखें: मृत्यु के बाद जीवन

अत्याचार, है 96, 114, 117, 160, 252, 257, 261, 274, स र 5, 7, 12, 15, ल र 2, 5, 6, फु 11, मु 13, 20, 36, 52, 62, 63, 71, 73, 81

 यह भी देखें: सम्राटों और शासकों, के अत्याचार

अवतार, देखें: ईश्वर के प्रकटावतार

अत्याचारी, देखें: अत्याचार, सम्राट और शासक

अनासक्ति, है 17, 80, 83, 88, 91-92, 107, 118-119, 138, 143, 156, 168, 171, 199, 263, स र 3, मु 21, 40, 42, 47, 113

अनन्तता (अनन्त, अनन्त जीवन), है 123, 128, 166, 214, 257, स र 7, 41, ल र 20, 29

अच्छा, शुभ, है 33, 81, 126, 143, 172, 219, 230, 254, मु 54, 62

अक्षर, है 73

 वियुक्त, स र 36

 यह भी देखें: शब्द, मन्दिर, के अक्षर (जीविताक्षर)

अवतारों की मुहर, देखें: मुहम्मद

आदम, है 24

आज्ञा - देखें: विधान

आचरण, है 119, 218, ल र 22, मु 45, 90, 94, 102, 114

 कर्म भी देखें

आँखें, देखें: मन्दिर, की आँखें

आत्मा(एँ), है 157, 197, फु 13, मु 15, 52

धर्मानुयायियों की, मु 94

 पावन बनाई गई, है 143

 ईश्वर की, स र 33

 प्रकृति की व्याख्या की गई है, स र 29-35

 ईश्वर की वाणी से स्फूर्त, स र 1, 32

 दासता से मुक्त, है 114

 ठीक वैसे ही जैसे चेतना, मन (मस्तिष्क), सुनने की शक्ति, स र 35

 निष्ठावान, मु 51

आत्महत्या, स र 13, ल र 5

आनन्द, है 12, 103, 253, 274, स र 10

इज़िप्ट (मिस्र)

 जहाँ ईसा मसीह को भेजा गया, है 160

 मंसूरिया, है 235

 में बहाइयों का उत्पीड़न, है 235

इथोपिया, है 198

इमाम, है 79, 252-257

इवैंजेल, देखें: बाइबिल

इराक, है 59, 139, 188, 206-207, 234, स र 13, मु 29, 32, 35, 82, 102-103

इसाइया, है 122, 164

इस्तांबुल, देखें: कौस्टैंटिनोपल

ईश्वर

 को स्वीकार करना पुनर्जन्म पर निर्भर, मु 111

 की सहायता, है 3

 एकमात्र, है 93, 197, 214, 269

 का कोप, है 35, 204, स र 7, 11, ल र 7-8, फु 1, 6, 13, मु 53-54

 के गुण, है 197, 211

 का प्राधिकार, है 58

 की कृपा, है 2, 28, 39, 63, 81, 185, 200-201, 204, 250, 264, 268, स र 26, मु 64, 100

 की संविदा, देखें: संविदा

 का सार-तत्व, है 37, 90, 211

 अज्ञात, है 65, 71, 197

 की दृष्टि, मु 102

 का मुखड़ा, है 22, 269

 का भय, है 32, 56, 237, मु 7, 10, 37-38, 42, 69, 112, 113

 क्षमा करता है, है 131, 219, स र 13, मु 54, 99

 मानवजाति को एकत्रित करता है, है 274

 की सद्कृपा, है 3, 6, 203-205, मु 113

की कृपा/करुणा, है 46-48, 64, 77, 131, 154, 185, 201-202, 217, 221, 264, स र 15, मु 54, 65, 100

 का मार्गदर्शन, है 1, 197

 की भुजा, है 33, 241, 270, मु 94

 की आत्मनिर्भरता, है 197, 214, फु 13, मु 116

 का निर्णय, है 111, फु 15, मु 12, 79, 85, 87, 100

 का न्याय, है 205, 264

 का प्रकाश (की प्रखरता), है 14, 22, स र 7, मु 96

 का प्रेम, है 204, स र 26, मु 49

 की करुणा, है 14, 32, 42, 81, 105, 125, 127, 131, 146, 154, 158, 185, 188, 193, 201, 205, 209, 214, 217, 219, 230, 238, 251, 270, स र 13, ल र 22, मु 6, 13, 18, 54, 65, 87, 114

 उनके प्रति जो न्याय दर्शाते हैं, है 190

 के नाम/नामालंकरण, है 45, 250

 से निकटता, है 204, मु 4, 5, 51

 के प्रति आज्ञाकारिता, है 20

 का एकत्व (की एकता, एकमेवता), है 45, 93, 155, मु 43, 81

 का पथ/मार्ग, है 1

 की शक्ति (सामर्थ्‍य), है 35, 39, 204, 238, 250, स र 13

 निर्धारित मापदंड प्रस्तावित करता है, है 4

 के प्रमाण (सामर्थ्‍य), है 19, मु 52

 ने हीरोड से ईसा मसीह की रक्षा की, है 160

 का उद्देश्य, मु 85

 को सहायता देना, है 209-214

 श्लोक प्रकट करते हैं, है 1-2

 अली पाशा को धूल में मिला देते हैं, ल र 7

 सबको देखते हैं, मु 102

 की आत्मा, स र 33

 का साम्राज्य, है 35, 38-39, 62, 191, मु 85

 बोलते हैं, है 2

 के संकेत, है 22

 अज्ञेय, है 197

 की आवाज, स र 1

 की चेतावनी, मु 107

की इच्छा, है 3, 35, 58-59, 113, 126, 131, 158, 160, 170, 223, 236, 191, 210, 241, स र 31, मु 80, 85, 94

 का विवेक, ल र 23, मु 100, 114

 यह भी देखें: ज्ञान और विवेक

 के शब्द/की वाणी - देखें: शब्द/वाणी

ईसाई लोग, है 122, मु 15-16

 ईसा मसीह के बाद किसी अवतार की बात नहीं करते, है 247-248

 के द्वारा अपेक्षित शांतिदाता (पिता), है 112, 122, 248

 बहाउल्लाह को पहचानने में विफल रहे, है 108, 127-129

 राजा लोग (ईसाई राष्‍ट्रों के), मु 15-16

 साधु, है 108, 111, 136, 154

 मुहम्मद को अस्वीकार करना, है 243

 बहाउल्लाह के निर्वासन पर रो उठे, स र 12

ईश्वर की संविदा, है 18, 122, 125, मु 42

 को तोड़ने वाले, है 93-95

ईशवाणी (गॉस्पेल), देखें: बाइबिल

ईरान, देखें: फारस

ईसा मसीह

 स्वर्ग से अवतरित हुए, है 127

 द्वारा प्रतिज्ञापित शांतिदाता, है 122, 248

 ने व्यभिचारी को क्षमा किया, है 135

 नए धर्म-प्रवर्तन के दोषी, है 140

 और इस्लाम, है 198

 की यातनाएँ, है 135

 ने लोगों को तैयार किया, है 122

 ने बहाउल्लाह के आगमन की भविष्यवाणी की, है 129, 133, 135, मु 15

 स्वर्ग तक उठे, है 245

 विनम्र जनों द्वारा मान्य, है 106

 को अस्वीकृत किया जाना, है106, 108, 123, 245

 की वापसी, है102, 121, 123, 127, 159, 248 मु 15

 ने अपने श्लोकों में कथाएँ प्रकट कीं, है 120

 हीरोड से बचाया, है 160

 ने ईश्वरीय प्रकटीकरणों के बारे में कहा, मु 17

 द्वारा छुपाए गए शब्द, है 112-113

ईश्वर के प्रकटावतार, है 66, 90-91, 93, 197, मु 17, 113

 प्रकट होते रहे हैं, है 241

 बहाउल्लाह से मिलना चाहते थे, है 163-164, स र 18

का उद्देश्य, है 81

 की अस्वीकृति, है 242, 244, ल र 1

 मृतकों को पुनर्जीवित करते हैं, ल र 1

 दिव्य एकता के मन्दिर, ल र 1

 की सत्यता, मु 87

ईश्वरावतार, देखें: ईश्वर के प्रकटावतार

ईश्वर को सहायता देना, है 209-214

उपासना (पूजा, आराधना), है 78, 87, 97, 109, 252

उज्जा (मक्का की प्रतिमा), है 87

उदारता, है 39, 40, 185, 238, मु 32, 39, 59

उस्ताद मुहम्मद-अली-ए-सलमानी, है 27

उपद्रव, है 28, 177, 216, 233, स र 5, ल र 1, मु 34, 52, 61, 63

उपवास, है 86, 154

उच्च स्वर्ग के सहचर, है 21, 158, 195, स र 2, 22, 26, 37

 बहाउल्लाह द्वारा प्रकाशित, ल र 1

 बयान के लोगों से बचते हैं, है 11

एकता (एकमेवता)

 दिव्य, है 12, 15, 93, 197, 241, 242, स र 15, ल र 1, मु 43, 72, 81, 94, 98, 107

 राजाओं की, है 182

 मानवजाति की, है 109, 142, 152, 177, स र 8

 ईश्वर के साथ, स र 40

 यह भी देखें: धर्म (धर्मों), की एकता

एकमेवता, देखें: एकता

एडर्न, देखें: एड्रियानोपल

ऍक्‍ट्स, देखें कर्म

एड्रियानोपल (एडर्न), है 27, 267, स र 5, 15, 23, ल र 5, मु 74-75

कर्म/कर्मों

 की स्वीकार्यता, है 172, मु 26

 वाणी के अनुरूप होना, है 147, 223, मु 45, 110

 के द्वारा अनुयायियों की अलग पहचान, है 189

 के परिणाम, मु 26-27, 78

 विभेदकारी, है 189, ल र 29

 और धर्म/आस्था, देखें: धर्म, और कर्म

निष्ठावान लोगों के, मु 64

 मानवता का मार्गदर्शन करते हैं, है 213

 पवित्र, मु 52

 अज्ञानियों के, है 176

 के लिए निर्णय, मु 15, 18, 27, 69, 98

 लिखे जाते हैं, मु 25, 99

 पर्दा, है 110

 आचरण भी देखें

**क-घ**

कर्तव्‍य, है 148, मु 17, 18, 20-21, 27, 54, 68

कर्ज़ पर ब्याज, देखें: सूदखोरी

करीम (सर्वदयालु), देखें: मन्दिर, के अक्षर

कल्पतरु (सद्रतुल-मुन्तहाँ), है 12, 69, 122, 130, 171, 195

कथाएँ, कथाओं में प्रकटित श्लोक, है 120

कठपुतली का खेल, ल र 11-18

काला सागर, है 137

काला पत्थर, है 90

कैयाफास, है 245

कुंवारापन, है 136

कुस्तुन्तुनिया (इस्तांबुल), है 216, ल र 9, मु 24, 37, 39, 67, 74-75, 84, 108, 113

 की आग, ल र 9

कुरान, है 229, 239, 255

 स्थायी प्रमाण, है 222

 वियुक्त अक्षर, स र 36

 सूदखोरी के लिए मना करता है, मु 35

 मद्यपान का निषेध करता है, है 240

 ने इथोपिया के राजा को प्रभावित किया, है 198

 के लोग, देखें: मुसलमान

क्रीमिया युद्ध (1853-1856), है 137

काबा, है 90

काब इब्न-बिन-अशरफ, है 243

कादिर (सर्वशक्तिमान), देखें: मन्दिर, के अक्षर

कार्य, कर्म

 पवित्र दिनों में न करना, है 153

कान, देखें: मन्दिर, के कान

खरीज़ी लोग, है 253

खर्च, व्यय, मु 8-9

गुलामी (गुलाम), है 228, 273

 मना है, है 172

 यह भी देखें: स्व/आत्म/अहं, की गुलामी

गरीबी, भौतिक, है 143, 149, 151, 178, 220, ल र 20, मु 67, 76, 77

 गरीब लोग ईश्वर के न्यास (निधि) हैं, है 143, मु 11, 68

गरीबी, आध्यात्मिक, मु 65

गैलिपोली, ल र 25,

ग्रंथ, है 155, 163, 194, 199, 214, 222, 276, मु 3, 31, 33, 45, 52, 87-88, 97

 प्राचीन, मु 72

 बहाई, है 130, 184, 189, मु 39

 यह भी देखें: बहाउल्लाह, बहाउल्लाह की लिखित पुस्तकें

पहले के धर्मों के पवित्र लेख, है 106, 108, 126, 164-165, ल र 2, मु 34-35

 यह भी देखें: बाइबिल, कुरान, टोराह

घमंड/अहंकार, है 26, 82, 83, 143, 172, 175, स र 27, ल र 10, 16, 19, मु 13, 43, 57, 98, 107, 109

घष्णा, है 5, 28, 61, 94, 112

**च-झ**

चरित्र (निष्ठा), है 148

चट्टान, देखें: संत पीटर

चिकित्सक, है 174-176, फु 2

चेतना, है 60, 177, 227, 261, ल र 19, फु 12, मु 3, 115

 बहाउल्लाह की, है 116, 162

 शरीर उसकी कामना करती है, मु 49

 ईश्वर की, है 62

 पवित्र/पावन, है 50, 115, 133-134, 150, फु 16

 मानव जीवन इससे आरंभ होता है, स र 33

 परम महान, है 50

 ठीक वैसे ही जैसे आत्मा, मन (मस्तिष्क), दृष्टि, सुनने की शक्ति, स र 35

 यह भी देखें: ईसा मसीह

 यह भी देखें: आत्मा (एँ)

चोसरोज, स र 6

ज़बीह (हाजी मुहम्मद इस्माइल-ए-काशानी, अनीस), स र 9, 16, 20, 22, 23, 28

ज्वलंत झाड़, है 133-134, 142, 159

 मूसा/मोसेज भी देखें

ज़ार, देखें: अलैक्जैंडर द्वितीय, रूस का जार

जावरा, देखें: बगदाद

जादू, देखें: जादू-टोना

जादू-टोना (जादू), है 54, 56, मु 100, 115

जायता पर्वत, स र 6

जीवन, है 75, 76, 137, 168, 196, 237, 273, ल र 17, 19, फु 16, मु 26, 36, 37, 42, 54 69, 91, 99, 111

 अनन्त (शाश्वत), देखें: अनन्तता

 ईश्वरीय, मु 10, 35

 अनन्त यात्रा, है 263

 चेतना से प्रादुर्भूत है, स र 33

 बलिदान (त्याग देना), है 162, 218, 219, स र 13, ल र 5, मु 50

 इसके पीछे भागने वाले, मु 40

जैनुल-आबदीन. अली इब्न-हुसैन (चैथे इमाम), है 252-257, मु 48

जॉन दि बैपटिस्ट, है 122

 बाब उनकी वापसी हैं, है 121

**ट-ढ**

टीना पर्वत, स र 6

टोराह, है 140, 164, 246, 249

डेविड, है 246

डैमैस्कस (फायहा), है 252, 261

**त-न**

तबरीज, है 235

त्याग, है 16, 186, 218, स र 27, मु 38

तराजू/तुला, है 229, मु 11, 69

तुर्की

 नागरिकता के लिए बहाइयों के आवेदन, है 207

 के सरकारी मंत्री, है 183, मु 24

तेहरान, है 206, ल र 11, मु 102

दर्शन (देखें: दृष्टि)

दर्शन एवं दार्शनिक, है 232, मु 113-114

 यह भी देखें: ज्ञान और विवेक

दया/करुणा, है 215, 231, 235, मु 12, 59, 61, 67, 70, 74, 101

 ईश्वर की, देखें: ईश्वर, की दया

 पापी इसकी याचना करते हैं, मु 51

दृढ़ता, है 27, 61, 155, स र 41, फु 1, 13, मु 6, 14, 47

दृष्टि, है 19, 93, 98, 99, 156, 157, 265, 272, 273, स र 35, ल र 5, मु 57

 आंतरिक, मु 39

प्रच्छन्न (छिपी हुई), मु 50, 93

 ईश्वर द्वारा खोली गई, मु 52

 सृष्टिकर्ता को पहचानने के लिए, है 19

 ठीक वैसे ही जैसे आत्मा, चेतना, मन (मस्तिष्क), सुनने की शक्ति, स र 35

 यह भी देखें: मन्दिर, की आँखें

दिग्भ्रमित पीढ़ी, है 257, 260, मु 16

द्विधा/दोहरापन, है 45

दुष्ट/शैतान, है 5, 229, 233, स र 6, 11, मु 18, 35, 48, 60-61, 83, 90, 92, 103

 का निवास, फु 19

 शैतान की पुकार, है 99

 कर्म, है 11, 88, फु 16-21, मु 27, 34, 92

 क्षति पहुँचाते हैं, स र 19

 बहाउल्लाह की सौजन्यता के कारण छुपे हुए हैं, ल र 24

 देखने में उचित लगते हैं, मु 34

 स्वर्ग के लोगों को विलाप करने पर विवश करते हैं, फु 6

 नास्तिक लोग फर्क नहीं कर पाते, है 177

 इच्छाएँ, है 8, 60, 94, 98, 127, 137, 143, 146, 150, 157, 158, 161, 167, 172, 188-189, 195, 223, 227, 232, 262, 272, स र 6, 34, मु 2, 15, 18, 28-29, 32, 56, 59, 86, 97, 103, 106, 112

 शैतान, दुष्टतापूर्ण, है 21, 98-99, 146, स र 19, 34, फु 13, मु 19, 34, 37, 56

 पीढ़ी, मु 16

 डरने की जरूरत नहीं, है 21

देवदूत, है 102, 191, फु 3-10, 12, मु 3, 36, 101

दौलत, देखें: धन

दंड/सजा, देखें: पुरस्कार और दंड

धन्यवाद (आभार, कृतज्ञता), है 5, 35, 61, 81, 268, 273, स र 16, 27, ल र 8, मु 63, 80

धन-सम्पदा (सम्पदा, समृद्धि, खजाने), है 86, 97, 220, ल र 21

 का संग्रह हतोत्साहित किया गया है, है 118-119

 पुरोहितों की, है 272

 अत्यधिक, मु 66-67

 क्षणभंगुर, नाशवान, है 156, 214, 259-260, 270, ल र 17, 21, मु 18

 फुआद पाशा की, फु 5-6

 ईश्वर की, है 162, 205, मु 65

 साम्राज्यों की, है 235

 लोग खजाने हैं, है 179, मु 68

 और गरीब लोग, है 151

 पोप को ईश्वर के पथ पर अपना धन खर्च करना चाहिए, है 118

 परिवर्तनशील, है 168

 विपत्ति के बाद आती है, है 230

 की तुच्छता/व्यर्थता, है 135, 156, 167, मु 55

ध्वनि, आवाज, देखें: वाणी

धर्म-परायणता (सच्चरित्रता), है 15, 32, 58, 77, 112, 177, फु 16, मु 59, 60, 68

धर्म, आस्था, है 10, 137, 245, 253, मु 57, 59, 114

 और कर्म, है 85-87, 172, मु 111, 114

 और देखें: बहाई धर्म, धर्म

 बच्चों को दोषी नहीं माना जाता, ल र 2

 बहाई धर्म में पूर्णता-प्राप्त, है 152

 के अनुयायियों को संबोधित, है 105, 113, 123

 ईरान में, है 236

 बहाउल्लाह द्वारा उजागर किया गया, स र 38

 नया, है 140

 लोगों द्वारा मजाक उड़ाया गया, है 266

 की एकता, है 176

धर्मगुरु/धर्माधिकारी (विद्वान, पंडित, इत्यादि), है 88, 131, 154, 219, मु 108

 और बहाई धर्म, मु 86

 बहाउल्लाह उनके सामने प्रस्तुत किए जाने का आग्रह करते हैं, है 221

 बहाउल्लाह ने जिनका विरोध किया, मु 35

 की अंधता, है 109

 ईसाई, है 122, 131, 243, 248,

 षडयंत्र करने वाले, है 249

 ईरानी, है 198, 243-244

 इस्लाम के, है 219, मु 3, 35, 108

 यहूदी, है 243, 245-246

 बाद के दिनों के ज्यादा धूर्त, है 233

 प्रभुधर्म की प्रकृति को गलत समझ बैठे, है 229

 बाब के बारे में फैसला सुनाया, मु 3

 बहाउल्लाह को अस्वीकार किया, है 223, 249

 ईसा मसीह को अस्वीकार किया, है 245

 मुहम्मद को अस्वीकार किया, है 198, 243-244

 को अपनी सम्पदाएँ त्याग देनी चाहिए, है 154

 को अपनी लेखनी रोक देनी चाहिए, है 107

 कुछ जो त्याग-भावना से सम्पन्न थे, है 234

 की सम्पदाएँ, है 272

 नष्ट हो जाएँगे, है 260

तब आदर के पात्र होते हैं जब वे ईश्वर के मार्गदर्शन का पालन करते हैं, मु 45

धर्मग्रंथ, देखें: ग्रंथ, पवित्र

धरती (संसार), है 54, 167, 184-185, 214, 214, 272, ल र 16-21, मु 113

 मानवजाति की रचना इसी से हुई है, मु 107

 बीमार, है 152

 के आनन्द आध्यात्मिक आनन्द की तुलना में निम्नतर हैं, है 162

 निम्न जगत, ल र 20

 गर्भ में रहते हुए लोग इस संसार की कामना करते हैं, मु 40

जबतक ईश्वर स्मरण न करें, इसकी सम्पदाएँ तुच्छ हैं, मु 4

स्फूर्तिमान, है 131, स र 8

नवीन किया गया, है 47, 255, स र 8

गुजर जाएगा/जाएगी, है 190, मु 36, 40, 42, 55, 57, 79

की स्थिति, है 156

के मिथ्याभिमान, है 91, 196, ल र 16-17, मु 36, 40, 55, 72, 99

लोगों को आसन्न मृत्यु की चेतावनी देते हैं, ल र 21

सृष्टि भी देखें

धूर्तता, देखें: दुष्टता, शैतान

धैर्य, है 27, 28, 48, 208, स र 17, 30, ल र 29, मु 47, 49

 यह भी देखें: बहाउल्लाह, का धैर्य

न्याय (निर्णय), का दिन, देखें: प्रकटीकरण

न्याय, है 56, 126, 147, 149, 173, 179, 190, 193, 194, 205, 236, 237, 259, 264, मु 7, 11, 12, 19-21, 29, 30, 64, 66, 68, 71

 यह भी देखें: ईश्वर, का न्याय, सम्राट एवं शासक

नमरूद, स र 7, फु 11

नरक, है 225, फु 11, 12

 की आग (निम्नतम आग, लपट), है 35, 54, 124, स र 6, 19, ल र 19, फु 11, 16, 19, मु 115

 आततायियों की आत्मा जला देती है, स र 11

 से मुक्ति, है 54

 विद्वान नास्तिक उसमें फेंक दिए जाते हैं, मु 114

 के लोग, है 79

 बहाउल्लाह को अस्वीकार करने वालों ने निंदा की, स र 38

नसीरुद्दीन शाह, है 186-275

संप्रभुता त्याग दे, है 199

 पर प्राणघातक हमला, है 188, मु 91

 बहाउल्लाह अपने लिए प्रेम करते हैं, है 194

 बहाउल्लाह उसके लिए प्रार्थना करते हैं, है 238, 274

 बहाइयों के प्रति न्यायनिष्ठ होने के लिए, है 230

 के दरबारी, है 194, 235

 वही चाहते हैं जो ईश्वर चाहते हैं, है 215

 ने बहाउल्लाह को निर्वासित किया, मु 102

 बहाउल्लाह को कैद से मुक्त किया, मु 102

 के प्रति ईश्वर की करुणा, है 188

 हृदय ईश्वर की अंगुलियों के बीच, है 193

 अपने अधिकारियों का दुर्व्‍यवहार उसे पता था, है 207

 ईश्वर के आदेशों का पालन करने के लिए, है 205

 युग-सम्राट, है 206, 221, 230, 232

 बहाउल्लाह के पक्ष या विपक्ष में निर्णय करे, है 221

 ने बहाइयों को उत्पीड़ित किया, है 220

 आस्था और कर्मों से पोषित, है 199

 बहाउल्लाह की दशा का कोई विवरण प्राप्त नहीं किया, है 206

 बहाउल्लाह को पहचानने के लिए, है 195

 ईश्वर की छाया (उसकी शक्ति का प्रतीक), है 194

 उसे बहाई धर्म की मदद करनी चाहिए, है 275

 बहाउल्लाह और धर्मगुरुओं की मुलाकात आयोजित करनी चाहिए, है 221

 न्याय का पालन करना चाहिए, है 190, 215

 करुणा दर्शानी चाहिए, है 215

 साम्राज्य एक घृण्य सम्पदा, है 195

 दर्जा, बशर्ते कि वह विश्वास करे, है 195

 जनता के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करना चाहिए, है 274

नाटक, बहाउल्लाह द्वारा बचपन में देखा गया, ल र 11-18

नाम, है 17, 86, 87, 92, 168, 243, स र 26, मु 21

 का साम्राज्य, है 40, 45, 49, 81, 102, 124, 167, मु 1

 आवरण नहीं बनना चाहिए, है 160

 मनुष्य द्वारा प्रकटित, है 136

 के उपासक (प्रेमी), है 30, 87, मु 110-111

नास्तिक, मु 60

नियति, देखें: भाग्य

निरर्थक (व्यर्थ, कपोल) कल्पनाएँ, है 8, 16, 103, 109, 117, 120, 157, 184, 186, 270, मु 84, 116

निश्चयात्मकता, है 53, 103, 200

निष्पक्षता, है 56, 58, 95, 157, 208, 249, 276, ल र 18-19, मु 18, 30, 90, 97

निष्ठा, अखंडता, देखें: चरित्र

नेतृत्व, मु 110

 की लालसा, है 30

 के फंदे, है 82

नेपोलियन तृतीय (फ्रांस का सम्राट), है 131-157, मु 17

 अपना राज्य (महल, धन-दौलत) त्यागे, है 143

 के लिए बहाउल्लाह की भविष्यवाणी, है 138

 क्रीमिया के युद्ध के बारे में निर्णय, है 137

 की ताकत, है 156

 ईश्वर को पहचानना, है 155

 प्रभुधर्म का संदेश देना, है 145

 का मन्दिर (शरीर), है 134

 यदि वह ईश्वरीय धर्म में सहायता दे तो सबका राजा बन जाएगा, है 133

नैतिकता, देखें: चरित्र, आचरण, कर्म

**प-म**

परोपकार, है 231

पवित्रता, है 219, 223, 224, 237

पवित्र परिवार, देखें: बहाउल्लाह, का परिवार

पवित्र भूमि, है 129

पवित्र चेतना, देखें: चेतना

पवित्र युद्ध, देखें: युद्ध, पवित्र

पावनता, है 8, 24, 63, 65, 139, 227, 240, मु 1, 2, 33, 51, 52, 108, 109

पवित्र ग्रंथ, देखें: ग्रंथ/पुस्तक, पहले के धर्मों के पवित्र ग्रंथ

परम महान शांति, देखें: शांति

परम महान कारागार, देखें: अक्का

परम महान/महानतम चेतना, देखें: चेतना

परित्याग, है 144, 218-219, 234

पश्चात्‍ताप, है 129, 188, मु 54, 85, 105

पवित्र दिवस (सहभोज, उत्सव)

 बाब का जन्मदिन, है 153

 बहाउल्लाह का जन्मदिन, है 153

 बाब की घोषणा, है 153

 रिज़वान, है 153

प्रेरणा, है 42, 124

परीक्षाएँ, देखें: संकट और परीक्षाएँ

पश्चिम, है 133, 233, 246

प्रगतिशील प्रकाशन, देखें: प्रकटीकरण, प्रगतिशील

प्रेम, है 92, 99, 122, 194, 221, स र 21, 34, मु 72

प्रेमी अपने प्रियतम से पुनर्मिलन चाहता है, मु 49

 संसार का, है 146

प्रौढ़ता, है 69, 76, ल र 11, 29, मु 39, 40

प्रकटीकरण, है 33, 35, 47, 53, 76, 80, 97, 110, 127, 130, 143, 172, 175, स र 2, 13, 14, 18, मु 94

 नए प्रकटीकरण के संवाहक, है 247

 का जन्म, है 6-7, 192, 258

 की बयारें/के समीरण, है 156

 के दिवास्रोत (उदय-स्थल), है 91, 109, 146, 185, 232

 पहले के, है 97

 के सहचर, है 42, 49

 की घड़ी, है 86, 92

 का साम्राज्य (की परिधि), है 2, 7, 31, 37, 63, 72

 का सम्राट, है 103, 167

 की विधियाँ, है 51

 की लेखनी, है 129 ए स र 8 दृ 9 ए 23

 प्रगतिशील, है 241

 यह भी देखें: ईश्वर के प्रकटावतार

 के प्रमाण, है 221

 प्रमाण भी देखें

 के कोषालय/कोषागार, है 197, 242

 के मधुर आलाप, है 20

 श्लोकों के, है 59

प्रकटीकरण की विधियाँ, है 51

पेरिस, फु 2, मु 17

पारसमणि, है 232

पियूस नवम (पोप), है 102-130

 अपना राज्य (महल, सम्पदा) त्याग दे, है 103, 118

 उसे ईश्वर के पथ पर धन खर्च करना चाहिए, है 118

 उसे ईश्वर की ओर उन्मुख होना चाहिए, है 103

पोप, देखें: पियूस नवम

प्रभुधर्म का संदेश देना, है 71, 145, 148, 150, स र 20

प्रार्थना (याचना), है 268, 274, मु 83

 जार की, है 158

 रानी विक्टोरिया के लिए, है 185

पुरोहित, देखें: धर्मगुरु

प्रमाण, है 9, 10, 35, 51, 54, 56, 102, 110, 139, 194, 197, 219, 221, 255, ल र 25, फु 6, मु 3, 25, 52, 82, 87, 103

प्रश्न, है 58, 79, 271, स र 29, 36

प्रतिनिधि, निर्वाचित, देखें: सरकार

पुनरुत्थान, स र 1, फु 16, मु 101, 107

 धरती का, है 255

 प्रकटावतारों द्वारा, ल र 1

 आत्मा का, है 167, स र 32

पुनर्मिलन, स र 13, मु 49, 100

पुरस्कार और दंड, है 98, 138, 172, 237, मु 46, 98

पाखंड, है 257, मु 89-90

पाप, मु 53

 अनुयायी इससे मुक्त, पवित्र, है 131

 का छिपाव, है 151

 कौंस्टैंटिनोपल के नागरिकों की, मु 39

 की क्षमाशीलता, मु 51

 ईश्वर द्वारा निर्णीत, है 271

 राजाओं और शासकों के, मु 54

पाती (पातियाँ), है 31, 33, 43, 92, 96, 110, 129, 141, 155, 173, 182, 184, 202, स र 26, 36, 38, ल र 24, मु 1, 6, 12, 56

 रक्षित, है 158

 स्पष्ट, है 189

 मुहम्मद की, स र 6

 सुस्पष्ट, है 132

 संरक्षित, है 10, 25, 30, 46, 48, 186, मु 4

 वजनदार/महत्वपूर्ण, स र 8

 सु-संरक्षित, है 4

 लिखित, है 41

फज़ल (कृपा), देखें: मन्दिर, के अक्षर

फातिमा, है 79, 224

फायहा, देखें: डैमेस्कस

फराओ, स र 7, फु 11, मु 87

फरीसी लोग, है 102, 108, 123

फारस

 कौस्टेंटिनोपल स्थित राजदूत (हाजी मिर्जा हुसैन खान), स र 2, मु 17, 84-107

 बगदाद स्थित कौंसुल-जनरल (मिर्जा बुजुर्ग खान), है 206, मु 103

 के धर्माधिकारी, मु 3

 के सरकारी अधिकारी, है 206-208, 236, स र 2, मु 84-107

 की जनता, मु 96

फुआद पाशा, फु 1-21

बकवास/फालतू बातचीत (चुगली), है 229, मु 34-35

बिंदु, देखें: बाब

बगदाद (जावरा), है 103, 252, 261

 में फारस के कौंसुल-जेनरल, देखें बुजुर्ग खान, मिर्जा

बच्चे, ल र 11, 25-26, मु 51

 अनाथ, मु 88

 जिनकी हत्या कर दी गई, है 220

 की यातनाएँ, ल र 2, 5

बहाई धर्म (प्रभुधर्म, ईश्वर का धर्म), है 61, 71, 92-93, 126, 149, 160, 162, 176, 218, 229, 238, मु 17, 27

 की नियति, स र 4, मु 84, 86

 के प्रति राजाओं की कर्तव्‍य-विफलता, मु 54

 का प्रकाश, है 250

 गलत ढंग से पेश किया जाना, है 235

 की रक्षा, है 250, 268 मु 106

 का प्रसार, स र 14

 का ऊँचा स्थान, है 191, मु 23

 की विजय, फु 14

 को नास्तिकों से कोई हानि नहीं, मु 95

बहाई लोग (धर्मानुयायी, चुने हुए लोग, सच्चे अनुयायी, निष्ठावान लोग)

 प्रभु-साम्राज्य को निहारते हैं, है 123

 दूसरों के पाप छिपाते हैं, है 151

 का साहस, है 16

 का सौजन्य, ल र 24

 ईश्वर पर उनकी निर्भरता, है 14, 32, 218, 274, स र 1, 37

 की अनासक्ति, है 214, स र 13

 की हत्या, मु 88

की निष्ठा, है 14-16, 145, 218

 को संघर्ष और विवाद करना मना है, है 210-213

 की विनम्रता, है 263

 का प्रकाशन, है 12, 35, 48, 64

 का कारावास, ल र 18, 27, फु 6

 राजाओं को उनकी रक्षा करनी चाहिए, मु 63

 बहाउल्लाह के नामालंकरणों के दर्पण हैं, है 64, 82-84

 मानव की नई प्रजाति हैं, है 8, 13, 23-25, 30, 34, 41, 48, 61, 64, मु 53

 का धैर्य, है 27-28, 208

की यातनाएँ, है 204, 206, 208, 215, 216, 220, 230, 235-236, 252, स र 5, 11-15, 26-27, 39-40, ल र 2-6, 8, 18, मु 20

 का उद्देश्य, है 211-214, स र 41, फु 14

 का पुरस्कार, स र 41

 अपने जीवन का बलिदान करते हैं, है 16, 218-219, 222

 पावन, है 48, 240

 की निःस्वार्थता, है 212-213

 की निष्ठा, है 222-223

 की आत्माएँ, मु 94

 की दृढ़ता, है 13, 61, स र 41

 के अशोभनीय कार्य, है 239

 का विवेक, है 150

बहाउल्लाह

 का गृह, है 103, 167

 एड्रियानोपल में घर, मु 75

 के खिलाफ आरोप (निन्दा), है 196-197, मु 35, 100, 115

 ईश्वर द्वारा प्रतिनियुक्त, है 63, 72, 81, 192

 कौस्टेंटिनोपल में आगमन, मु 24

 का प्राधिकार, है 58, 81, 139

 मिर्जा याहिया द्वारा विश्वासघात, है 25-29

 का जन्म, है 153

 का बचपन, ल र 11-16

 की घोषणा (रिज़वान), है 153

 के शत्रु, है 5, 25-29, 117, मु 100

 का निर्वासन, है 139-141, 216, 267, स र 11-14, 39-40, मु 30, 74-75

 ईसाईया द्वारा प्रशंसित, है 164

का परिवार, है 196, स र 22, 27, ल र 11, मु 75, 101

 की नियति, है 5

 की निडरता, है 193, 258, मु 23, 33, 38

 की सद्कृपा, है 270

 की कृपा, है 46-48, 52, 61, 65, 102

 का आभार, है 5, 273, मु 80

का कारावास, है 114, 140-141, 156, 158, 162, 167, 177, 188, 267-268, स र 37, ल र 18, 27, मु 95

की स्वनिर्भरता, है 23, 115, 166, स र 38, मु 25, 33, 55

की निर्दोषता, मु 102

का निर्णय, है 52, 81, मु 111

का ज्ञान, है 21, 43, 65-66, 192, मु 24, 39

का प्रकाश, है 57

ईश्वर के प्रति प्रेम, है 142

का प्रेम, है 52

विदेशी ताकतों के पास कोई प्रतिनिधित्व नहीं किया, है 206

राजाओं और शासकों से कोई निवेदन नहीं करते, है 216, मु 105

ईश्वर के प्रकट रूप, है 44, 81

की दया, है 122, स र 23

 ज़ार के प्रति, है 158

की आज्ञाकारिता

 ईश्वर के प्रति, है 203

 राजाओं और शासकों के प्रति, मु 31-32, 34, 55, 82, 95, 102, 104

का धैर्य, है 4-5, 125, 162, 268, मु 46, 80

को उत्पीड़ित कि या जाना, है 112, 115-116, 139-140, 150, 177, 204, 249, 273, स र 2, 16, 39-40, मु 29, 33, 95, 97, 103

की सामर्थ्‍य, है 162

की उपस्थिति, है 57

के प्रमाण, है 221, 223, ल र 25

ईश्वर द्वारा संरक्षित, है 23, 27

का उद्देश्य, है 5, 13, 44, 64, 72, 81, 107, 114, 123, 164, 177, 186, 202, 209, 266, 268, स र 10, 27, ल र 28, मु 38, 72

सृष्टि को स्फूर्ति से भरते हैं, है 57, 131

का परिधान, है 48, 116, स र 3

को खारिज किया जाना, है 49, 54, 60, 62, 80, 177, मु 100

 बाबियों द्वारा, है 8-11

 ईसाइयों द्वारा, है 108-109, 127-28

मुसलमानों द्वारा, है 115

 नेपोलियन तृतीय द्वारा, है 137

ईश्वर पर निर्भरता, है 251, मु 38, 80

ईश्वर के उद्देश्य के कोषागार, है 37

धर्माधिकारियों से मुलाकात का निवेदन करते हैं, है 221

सुल्तान से मुलाकात का निवेदन करते हैं, ल र 25-26

अतीत के अवतारों के रूप में वापस आए

 बाब, है 96-97

 ईसा मसीह, है 102, 113, 127, 129, 159, मु 15

के प्रकटीकरण, है 10, 120

 के स्वरूप, है 51

 (प्रकटीकरण भी देखें)

के अधिकार, मु 53

कष्टों की चाह करते हैं, है 187

सत्य कहते हैं, मु 56

की चेतना (आत्मा) है 116, 162, मु 38

का दर्ज़ा/उच्च स्थान, है 21, 23, 29, 62, 141, 144, स र 38, मु 101

के कष्ट (यातनाएँ, विपत्तियाँ), है 4-5, 25, 29-30, 115, 142, 156, 162, 186-187, 192, 194, 196, 204, 265, 268, 272-273, स र 14, ल र 18, 23, 27-28, फु 1, मु 16-17, 20, 22, 32, 46, 48, 53, 73-81, 84, 95, 98

सैन्य-टुकड़ियों से घिरे हुए, स र 10, ल र 25

की उपाधियाँ

 प्राचीनतम सौन्दर्य, है 55, 57, 97, 123, 177

 ईश्वर के सौन्दर्य, है 7

 परम प्रियतम, है 7, 96, 100, स र 3, 16, 39

 पावनता के विहग, मु 33

 ईश्वर की मुखमुद्रा, है 143

 प्रकटीकरण के उदयस्थल, है 146

 ईश्वर के दिवस, है 63, 127

 प्रकटीकरण के दिवास्रोत, है 109

 अभिलषित (लोकों की अभिलाषा), है 104, 116, 156, 134

 दिव्य विश्लेषक, है 126

 ईश्वर के मुखड़ा, है 134

 पिता, है 112-113, 122

 मार्गदर्शक, है 134

 ईश्वर की भुजा, है 33

 आनन्द के संवाहक, है 274

 गरिमा के सम्राट, है 128

 प्रकटीकरण के सम्राट, है 103, 167

 जीवनदाता, ल र 2

 सामर्थ्‍य के प्रकटीकरण, है 176

 अनन्तता के चन्द्र, मु 4

 परम महान नाम, है 118, 123, 131, 177, 200, मु 7

 परम महासागर, है 33, 152, 255, 274, स र 16

 परम महान घड़ियाल, है 131

 ईश्वर के रहस्य, है 7

 बुलबुल, है 130, 199, स र 38

 ईश्वर के पथ, है 1

लेखनी, है 24, 30, 53, 102, 107, 110, 123, 129, 130, 150, 152, 169, 178, 182, 184, 192, 193, 195, 199, स र 8, 23, 35, 37, 38, ल र 1, 2

 आराध्य-बिंदु, है 163

ज्ञान के बिंदु, मु 4, 112

नामों के स्वामी, है 118

प्रतिज्ञापित अवतार, है 93, 104, 121

स्फूर्तिदाता, है 274

स्मरण, है 143

सर्वोच्च सम्प्रभु, है 159

मन्दिर, है 12-13, 17-18, 31, 36, 43, 44, 48-49, 62-63, 65, 72, 81, 84, 100, 268, 276

प्रमाण, है 134, मु 4

गरिमा की वाणी, स र 30

प्रकटीकरण की वाणी, है 118

ईश्वर के कोषालय, है 7

विश्व सुधारक, है 177, ल र 2

प्रवंचित, है 137, 179, ल र 5, 20, मु 109

युवा, है 22, 25, 34, 62, 187, 194, 196, 267, 270, स र 8, 14, 22-23, ल र 1, 3, 5, 16, 18, 23-25

मानवजाति को एकता के सूत्र में बाँधते हैं, है 131

की वाणी, है 192, 249, ल र 7

की इच्छा, है 31, 58-59, 68, 74, 152, 276

ईश्वर के पास लौट जाना चाहते हैं, मु 101

की लिखित पुस्तकें

 निगूढ़ वचन, है 224-228

 सूरा-ए-हैकल, है 43, 110

 सूरा-ए-मुलूक, है 182, मु 1, 6, 12, 56

 सूरा-ए-रईस, स र 36

बयान, है 21, 95-96, 121

 के लोग - देखें: बाबी लोग

बाइबिल

 ईशवाणी (इवैंजेल), है 109, 140, 164, 247-249, मु 16

 यह भी देखें: ईसाई, यहूदी, टोराह

बाथा (मक्का), है 171, 198, 253

बाब (बिंदु, अली), है 60, 73, 80

 का जन्म, है 153

 की घोषणा, है 153

बहाउल्लाह के समान, है 96-97

की शहादत, है 163, स र 7, मु 3, 89, 91

राजाओं द्वारा अस्वीकृत, मु 3

जॉन दि बैपटिस्ट की वापसी, है 121

बाबी लोग (बयान के लोग)

 शाह की जान लेने की कोशिश, है 188, मु 91

 के रूप में बहाइयों का इन्कार, है 235

 की आसावधानी, है 10-11, 15

 बहाउल्लाह को खारिज करना, है 8-9

 बयान द्वारा अवरोधित, है 95

बिशप, है 122

बीमारी, (व्याधि, रोग, प्लेग), है 49, 131, 174-176, ल र 9

 जेल में बन्द बहाइयों की, ल र 27

बुजुर्ग खान, मिर्जा (बगदाद में फारस के कौंसुल-जनरल), है 206, मु 103

बुद्धि, देखें: ज्ञान और विवेक

बॉसफोरस, फु 5

भय, डर, है 18, 31, 34, 41, 77, 93, 123, 125, 129, 137, 149, 166, 179, 193, 220, 258, मु 23, 33, 37, 42, 68, 69, 112, 113

 यह भी देखें: ईश्वर, का भय

भव (आज्ञा), है 2, 3, 8, 36, 46, 60, 276

भविष्यवाणी, है 129, 263, मु 15, 87

 बहाउल्लाह की, है 139, 267, स र 4-5, 21

 तराजू, तुला, मु 11

 शांतिदाता, है 122, 248

 पिता का आगमन, है 112, 113, 122, 159

 बहाउल्लाह द्वारा पूरी की गई, मु 15

 ईशवाणी (गॉस्पेल), है 171

 सत्य की चेतना, मु 15

 मन्दिर, है 276

भ्रष्टता, है 8, 89, 144, 150, 188, स र 6, मु 15, 29, 34, 59, 86, 103

 पवित्र पाठों की, है 249

भाग्य (नियति), है 5, 270, स र 11, मु 61, 84

भोजन, सर 11, ल र 4, मु 13

मक्का, है 171, 198, 253

मछुआरा, देखें: पीटर, संत

मन्दिर, है 43-44

 का वक्षस्थल, है 64

 के कान, है 20

 की आँखें, है 19

 के चरण, है 61

 के हाथ, है 31

 का आंतरिक हृदय, है 67

 के अक्षर,

 फजल (करुणा), है 46

 हुविय्या (दिव्यता का सारतत्व), है 37

 करीम (सर्वदयालु), है 39

 कादिर (सर्वशक्तिमान), है 38

 की वाणी, है 21

 यह भी देखें: बहाउल्लाह, उपाधियाँ, मन्दिर

मसीहा, है 122

 यह भी देखें: ईसा मसीह

मस्तिष्क, है 4, 6, 149, 157, 197, मु 97

 निष्पक्ष, है 157, 187, 249

 नाशवान, है 87

 की तुच्छता, है 157

 की शक्ति, स र 35

ठीक वैसे ही जैसे आत्मा, चेतना, देखने और सुनने की शक्ति, स र 35

 प्रशान्त, मु 8

महल, है 103, 143, 156, 167, 179, 270, फु 5

मृत्यु, भौतिक, है 157, 168, 260-262, ल र 1, फु 11, मु 27, 37, 88, 115

 में समानता, है 259

 अपरिहार्य, ल र 16-17, 20-21, मु 107

 के दूत, है 270

 सम्पन्न (शक्तिशाली) लोगों की समाधियाँ, है 156

 धन की ताकत से नहीं बचा जा सकता, है 259

 की कामना निष्ठा की कसौटी है, है 222

मृत्यु, आध्यात्मिक, है 94, 136, 143, 167, ल र 1, मु 27, 108

मृत्यु के बाद जीवन (अनन्तता, परा विश्व), है 131, 270, मु 33, 94

मर्यादा, मु 8, 19, 66

मार्गदर्शन, है 111, 113, स र 22, ल र 29, मु 5, 18, 35, 45, 108, 112

मानवजाति (मानवता)

 बहाउल्लाह को स्वीकार करना, है 47, 85, 107

 की दायित्वशीलता, है 271

 प्रभु-साम्राज्य में स्वीकृत, है 123

 को दी गई चेतावनियाँ, ल र 17, मु 45, 117

 का आह्वान किया. है 100, 152, 186, मु 41

 स्वच्छ बनाया, है 34, 92

 की अनासक्ति, है 80, 111, 154

 की समानता, है 151, मु 77

 ईश्वर के निकट रहने में ही गरिमा है, मु 5

 का आरोग्य, है 152

 की असावधानी, है 76, 157, 266, स र 26, ल र 22

 की हिचक, है 101

 का ज्ञान, है 104

 ईश्वर द्वारा सृजित, है 52

 ज्ञान-सम्पन्न लोग, है 260

 की नाशवानता/क्षणभंगुरता, है 269-270, मु 37, 40, 42, 106-107

 बहाउल्लाह को अस्वीकार किया जाना, है 7

 के परिणाम, है 85

 ईश्वर को अस्वीकार किया जाना, है 75

 ईश्वरीय अवतारों को अस्वीकार किया जाना, है 160, 243-248

का पुनरुत्थान, है 271, स र 1, ल र 1, मु 107

 का दर्जा, है 91, 146, 156-157

 राजाओं और शासकों के प्रति समर्पित होना, मु 9, 12

 ईश्वर के प्रति समर्पण, है 71, 113, 166, 214, स र 1, मु 86

 की एकता, है 142, स र 8

 की सांसारिकता, मु 39

 नामों की आराधना करता है, है 157

मांस, से कोई परहेज नहीं, है 154

मुज़ाहिद, देखें: हाजी सैयद मुहम्मद अल-मुकन्ना (खुरासान के), मु 113

मुहम्मद, है 243-245, मु 87

 (सैय्यद) के वंशज, मु 89

 के परिवार, दमिश्क में कैद करके रखे गए, है 252-257

 एक नए धर्म को प्रकट करने के दोषी, है 140

 के विलाप, स र 2

 इस दिवस के लिए लालायित थे, स र 18

 के उत्पीड़न, स र 6

 को अस्वीकृत किया जाना, है 198, 243

मुहम्मद शाह, स र 7

मुक्ति, मोक्ष, मु 57

मुसलमान, है 79

 यह दावा करते हैं कि टोराह और गॉस्पेल भ्रष्ट थे, है 249

 बाब के बारे में उनसे पूछताछ, है 79

 बाब को अस्वीकार किया, है 55, 79

 शिया लोगों ने हुसैन की मौत का बदला लिया, मु 52

 की परम्पराएँ, है 243

 बहाउल्लाह के निर्वासन पर रो पड़े, स र 12

मूर्तिपूजक, है 78, 99, 117, 266, स र 19

 नाम, है 157, मु 110-11

 मुहम्मद की उच्च स्थिति पर सवाल उठाते हैं, है 79

 उज़्जा (मक्का स्थित मूर्ति), है 87

मूसा/मोसेज, है 246, स र 3

 फराओ के घर से, स र 7

 इस दिवस के लिए लालायित थे, स र 18

 ने एक नए धर्म को प्रकट किया, है 140

मंसूरिया, है 235

मेहदी-ए-रश्ती, मिर्जा, फु 15-20

मोसुल (हज़बा), है 252

**य-व**

यहूदी,/ यहूदियों

 यह कहते हैं कि मूसा (मोसेज) के बाद नए विधान लेकर कोई स्वतंत्र अवतार नहीं आएगा, है 246

 से ईसा मसीह के बारे में पूछे जाने पर, है 79

 ने फारीसियों का अनुगमन किया, है 123

 ने ईसा मसीह को अस्वीकार किया, है 123, 135

 ने मुहम्मद को अस्वीकार किया, है 243

याचना, देखें: प्रार्थना

यातना, उत्पीड़न, देखें: बहाउल्लाह, की यातनाएँ, बहाइ(यों), की यातनाएँ

याहिया, मिर्जा, बहाउल्लाह का सौतेला भाई, है 25-29, 55

युद्ध (संघर्ष), है 137, 182, स र 5, ल र 17-18

 समाप्त किया, है 42

 पवित्र, है 42, 219

युनाइटेड किंगडम, देखें: विक्टोरिया, इंग्लैंड की महारानी

रक्ताभ पर्वत, मु 2

रहस्य (भेद), है 66, 162, 192, 198, 229, मु 50-51

 लोगों के हृदय में छुपे हुए, फु 14

 दिव्य कल्याण भावना के, मु 1

 ईश्वर जानता है, है 39, मु 46

 ईश्वर के नाम का, है 250

 ज़ार की गुप्त प्रार्थनाएँ, है 158

 की मदिरा, स र 24

 इमामों के साथ, है 255

रहस्यमय मिलन, मु 49-50

राष्ट्र/ राष्ट्रों, है 112, 134, 242, 254

 के प्रभु (रचयिता), है 152, 268

 ईश्वर की ओर उनका आह्वान किया गया, है 160

राज्य के मंत्री, देखें: सम्राट और शासक, मंत्री/मंत्रिगण

राजद्रोह (विद्रोह), है 13, 86, 125, 188, 213, 216, 245, 258, 261, ल र 2, 7, मु 55, 74-75, 82

रूस, है 137, 219

 मंत्रियों ने बहाउल्लाह को मदद दी, है 158

 यह भी देखें: अलैक्जैंडर द्वितीय (रूस का जार)

रूस-फारस युद्ध, दूसरा (1825-1828), है 219

लघु शांति, देखें: शांति

लालच/लोभ, मु 40

लांछन, कलंक, मु 97, 102

लालसा, है 98, मु 18, 103

 यह भी देखें: नेतृत्व, की लालसा

लालसा(एँ), है 137, 183, 196, 201, 212, 224, 266, 269, स र 34, ल र 20, 23, मु 32

वफादारी/निष्ठा, देखें: दृढ़ता

वहब इब्न-ए-राहिब, है 243

व्यभिचार, है 135

व्यवहार, देखें: चरित्र, आचरण, कर्म

वाणी (वचन, ध्वनि, आवाज), है 20, 22, 191, स र 24

 बहाउल्लाह के विरुद्ध, है 223

 बाब की, है 96

बहाउल्लाह की, है 133, 138, 162, 192, 232, 238, 249, 258, मु 54, 58, 62, 99

 ज्वलंत झाड़ी से, है 133-134

 निंदा, है 146, मु 34-35

 झूठी (असत्य वचन), है 149

 ईश्वर की, है 20, 99, 103, 158, 171, स र 1, 10, 25, मु 2

 ईश्वर सबसे परे और पावन, है 214

 ईसाइया की, है 164

 विलाप की, स र 5, 12

 स्वर्ग की परी की, है 6-7

 मूसा (मोसेज) की, स र 18

 लेखनी की, है 107

 की शक्ति, है 21, 150, स र 17

 ईश्वर का गुणगान, है 21, 23, 134, 216

 की तलवार, है 42, 150, 212

 के माध्यम से धर्म का प्रसार, है 150, स र20

 यह भी देखें: शब्द

विधान (आज्ञाएँ, निर्णय, उपदेश), है 71, 87, 152-154, 179, 189, 237, 239, 246, 247, 254, मु 14, 21, 26, 28-29, 47, 71, 74, 76, 83, 88, 104, 106, 112, 116

 मानवीय, मु 25

विनम्रता, है 107, 263, मु 77

विपत्ति, देखें संकट और परीक्षाएँ

विवाद, देखें: लड़ाई/युद्ध

विवाह, ल र 11

 संन्यासियों और पुरोहितों का, है 136

विद्रोह, देखें: राजद्रोह

विवेक, देखें: ज्ञान और विवेक

विक्टोरिया (इंग्लैंड की महारानी), है 171-185

 सांसारिक वस्तुओं को त्यागने का आह्वान, है 171

 ईश्वर की ओर उन्मुख होने का आह्वान, है 172

 ने प्रतिनिधियों को परामर्श का कार्य सौंपा, है 173

 गुलामी का निषेध, है 172

 को पुरस्कृत किया जाएगा, है 172

विश्वासपात्रता, है 149, मु 103

विज्ञान, है 66-67, मु 114

**ष-ह**

श्लोक, देखें: शब्द, ईश्वर के, बहाउल्लाह के

शक्ति, देखें: ईश्वर, की शक्ति/सामर्थ्‍य, सम्राट और शासक, की ताकत

शब्द, है 55, 60, 65, स र 19, मु 100, 115

 हृदयों को आकर्षित करते हैं, है 148

 बहाउल्लाह के, है 56, 80, 137, स र 17, मु 35, 39, 71, 72, 105

 आज्ञा के, है 46

 और कर्म, है 56

 यह भी देखें: कर्म, शब्द (कथनी) के अनुसार

 मूर्खतापूर्ण, है 11

 ईश्वर के, है 24, 26, 33, 74, 200, 238, स र 3, 13, ल र 19, मु 17, 99

 को जादू-टोना कहा, है 54, 56

 आत्मा से आह्वान करते हैं, स र 32

 रचनात्मक हैं, है 23, ल र 16

 विकृत नहीं करते, है 32

 पर ध्यान देना, है 20

 वाणी के सम्राट, है 53

 मानव रूपी मन्दिर में प्रकट, स र 1

 की क्षमता, है 50

 को अस्वीकार करना (में अविश्वास), है 49

 बहाउल्लाह के प्रति प्रकटित, है 81

 विश्व को प्रज्वलित करता है, स र 1

 के प्रति समर्पण, है 88

 सुस्त, निष्क्रिय, है 54

 ईसा मसीह का, है 247

 यह भी देखें: ईसा मसीह, शब्द

 द्वारा निगूढ़

अविश्वासियों/नास्तिकों के दिल में आतंक पैदा करता है, है 251

 व्यर्थ, है 242

शर्म, लज्जा, है 261, ल र 22, मु 84

शहादत, है 163, 200, स र 10, मु 49

 इमाम हुसैन की, मु 97

 आत्महत्या द्वारा, स र 13, ल र 5

शांति (प्रशांति), है 18, 178, 208, स र 18, मु 8

 आंतरिक, मु 94

 लघु, है 180-182

 परम महान, है 180

 यह भी देखें: सामूहिक सुरक्षा

शांतिदाता, है 122, 248

शाह सुल्तान सलीम, देखें: नाटक

शासक, देखें: सम्राट और शासक

शिल्प, है 67, 153

शेख काजिम-ए-समंदर, फु 1

शेख मुर्तजा-ए-अंसारी, है 234

शैतान, देखें: दुष्ट

शोक, है 5, 27, 131, 220, मु 17, 78, 88, 92, 99

स्वर्ग, है 22, 79, 100, 213, स र 24, मु 5, 51

 सर्व-गरिमामय, स र 8

 के देवदूत, है 102

 बहाउल्लाह का निवास-स्थान, है 158

 के सहचर, है 88, 161, स र 9

 उदात्त, स र 2, 32

स्वर्ग, है 2, 15, 19, 31, 40, 106, 116, 125, 131, 184, 185, 220, ल र 27, मु 3

 ईश्वर के साथ वार्तालाप का, मु 33

 धरती उसपर गर्व करती है, स र 15

 ईसा मसीह और बहाउल्लाह का आविर्भाव वहीं से, है 102, 127

 ईसा मसीह ने जगाया, है 245

 की सीढ़ी, है 244

 बिल्कुल मध्य, मु 4, 108

 के स्तम्भ, फु 11

 के रहस्य, मु 46

 की छाया, है 233

 के खजाने, मु 65

 रो पड़ा, मु 89

स्वर्ग की परी, है 6-7, 22, 100

स्व/आत्म/अहं, है 27, 201, 212, 232, 269, स र 34, ल र 20, 23

 की गुलामी/दासता, है 167, 196, 224

 ईश्वर या बहाउल्लाह का, है 17, 21, 43, 44, 45, 54, 60, 63, 64, 69, 70, 72, 75, 81, 82, 87, 90, 108, 126, 164, 169

स्वतंत्रता, है 169

स्वतंत्र इच्छा, देखें: भाग्य

संकट और परीक्षाएँ, है 226, स र 14, ल र 28, मु 47

 यह भी देखें: बहाई लोगों, की यातनाएँ, बहाउल्लाह, की यातनाएँ, के उत्पीड़न

सत्य, सत्यता, सत्यवादिता, है 151, 198, 218-219, फु 14, मु 35, 38, 39, 60, 79, 87, 94, 97, 99, 108

 बाब के मिशन की, है 163, मु 3

 बहाउल्लाह के मिशन की, है 221, ल र 25

 प्रभुधर्म की, है 135, 218, मु 17

 विवाद करना, है 242

 झूठ से अलग, है 229, मु 16

 ईश्वर है. है 258, 276

 की भाषा, मु 76

 की शक्ति, है 139, स र 7, 14

 रक्षा (संरक्षण), है 160

 अस्वीकार करना, मु 5, 23, 99

 के लिए प्रयत्न करना, मु 103

 की चेतना, मु 15

 का आदर्श, है 233

 मृत्यु की कामना इसे झलकाती है, है 222

समझदारी, देखें: ज्ञान और विवेक

सद्गुण/सच्चरित्रता, है 72

सम्पदाएँ, देखें: अनासक्ति, धन

सृष्टि (अस्तित्व), है 13, 40, 145, 158, 166, मु 114

 की पुस्तक, है 99, 118

 हिसाब लिया जाएगा, है 18

 राजाओं को सौंपना, है 210

 की आँख, है 99, 186, मु 88-89

 भयभीत, है 18

 पर सुरभि प्रवाहित की गई, है 144

 ईश्वर को गौरवान्वित (प्रशंसित) करती है, है 21, 132का हृदय, स र 4

 का साम्राज्य, है 7, 12, 158, 197, 210, 238

 का लाभ ग्रहण कर सकते हैं, है 171

 प्रकटीकरण के प्राप्तकर्ता, है 47

 आंदोलित कर दिया, है 84

समदर्शिता, निष्पक्षता, है 252, मु 17, 19, 22, 32, 68

सहज प्रकृति (अंतर्निहित, बिना सिखाए, जन्मजात), है 49-50, 52, 80

समृद्धि, देखें: धन

सद्रतुल-मुन्तहाँ, देखें: कल्पतरु

सनाय, ल र 22

सम्राट एवं शासक, है 130

 अपनी सम्पदाएँ त्याग दें, मु 2

 अपने कर्मों का हिसाब देंगे, मु 27

 का अधिकार/प्राधिकार (साम्राज्य), है 195, ल र 19, फु 7, मु 4

 चलायमान, क्षणभंगुर, ल र 10, मु 18

 पहचान को रोकें नहीं, है 159, 161, 170

 त्यागने से मना किया, है 223

 बहाउल्लाह ने इसके लिए कोई निवेदन नहीं किया, है 216

 बहाउल्लाह को निर्वासित करते हैं, है 267

 ईश्वर के धर्म की सहायता के लिए उन्हें साम्राज्य मिला है, है 143

 दयालु, मु 68

 व्यय का भार प्रजा के ऊपर डाला, है 179, मु 9

 ईसाई, मु 15-16

 को सृष्टि सौंपी गई, है 210

 के कर्म, मु 46

 ईश्वर का विधान लागू करते हैं, मु 63

 शांति स्थापित करते हैं, है 178

 इथोपिया के, है198

 के खर्च, है 179, मु 8

 की असफलता, मु 15, 54

 अपनी ही इच्छाओं (भ्रष्ट कामनाओं) का अनुसरण करते हैं, मु 28-29

 की उदारता (कृपा), मु 70

 अपने अवतारों के वंशजों का सम्मान करते हैं, मु 92

 के पाखंड, मु 89

 केवल दावेदारों की बात सुनना अपर्याप्त, है 229

 न्यायी, है 217, 259

 ईश्वर की सामर्थ्‍य के प्रकटीकरण, है 210

के मंत्री, है 158, ल र12, 15, मु17-18, 24, 26, 30, 31, 55, 59, 61, 68, 73-74, 76, 82, 97, 102, 103

 ने बहाउल्लाह के साथ दुर्व्‍यवहार किया, मु 73

 की क्षणभंगुरता, है 261, 269-270, ल र 19, मु 15, 36, 79, 98, 106-107

 को समदर्शी होना चाहिए, है 118

 को न्यायनिष्ठ होना चाहिए, मु 9-13, 21, 66, 68

 को शांति स्थापित करनी चाहिए, मु 8

 को तथ्यों की जाँच-पड़ताल करनी चाहिए, मु 103

 को ईश्वर की आज्ञाओं का पालन अवश्य करना चाहिए, है 118, मु 7, 12-14, 21, 26, 62

 को अन्याय से अवश्य रक्षा करनी चाहिए, मु 13, 20, 63

 द्वारा अत्याचार, मु 71

 के महल कब्र जैसे हैं, है 167

 लोगों के खर्च पर बनाए गए, है 179

 अतीत के (राजाओं ने) बहाउल्लाह को पहचाना होता, मु 109

 की शक्ति, मु 10, 18

 के अहंकार, मु 107

 शरणागतों की रक्षा करते हैं, है 182

 द्वारा प्रकटावतार की पहचान, है 210, मु 107

 बहाउल्लाह को पहचानने के लिए, मु 1, 6, 13

 परम महान शांति को अस्वीकार कर दिया, है 180

 बहाउल्लाह को अस्वीकार कर दिया, मु 16

 मुहम्मद को अस्वीकार किया, स र 6

 पश्चात्ताप के लिए, मु 54

 अपना ही लाभ तलाशते हैं, है 175

 धरती पर ईश्वर की छाया, है 194, 217, मु 72

 उन्हें विश्वासपात्र लोगों को बहाल करना चाहिए, मु 59, 61, 67

 निष्ठावान लोगों के प्रति विनम्र और आदरपूर्ण होना चाहिए, मु 43, 77, 107

 उन्हें बहाउल्लाह के प्रति न्यायपूर्ण व्यवहार करना चाहिए था, मु 32

 दूसरों को दायित्व नहीं सौंपना चाहिए, मु 61, 67, 71

 फिजूलखर्ची को बढ़ावा नहीं देना चाहिए, मु 66

 की प्रभुसत्ता, देखें: का प्राधिकार/की सम्प्रभुता

 को पाती/पातियाँ, है 141, मु 1-118

 की समाधियाँ, है 156

 अपनी (गरीब) प्रजा के न्यासी, है 143, 149, मु 11-12

के अत्याचार, है 252, ल र 2

 की एकता, है 182

 चेतावनियों से लाभ मिल सकता है, मु 34

 जो बहाइयों की मदद करेंगे, स र 21

सहभोज, देखें: पवित्र दिवस

सरकार, मु 21, 61, 102

 निर्वाचित प्रतिनिधि, है 173-174

 के प्रति आज्ञाकारिता, ल र 3

स्वार्थ, है 60, 94, 143

स्वास्थ्य, है 174-176, मु 8

सामूहिक सुरक्षा, है 182, मु 8

साधु/संत, देखें: ईसाई, साधु

साधक, स र 16, मु 40, 49

साम्राज्य (ईश्वर का), सृष्टि, नाम, धरती और स्वर्ग, शासकों का, इत्यादि), है 22, 103, 112, 123, 124-125, 128-129, 140, 145, 156, 159, 162, 170, 171, 190, 197, 199, ल र 20, मु 36, 55

सिद्धान्त और आदर्श, है 136, मु 29, 32, 74, 76

 दावे के लिए वांछित, है 223, 242

सिनाय, है 93, 133, 142, 159

स्त्रियाँ (दासियाँ), है 172, 185, ल र 2, 26

स्थिरता, देखें: दृढ़ता

सीरिया, है 171

सुनना, है 14, 20, 23, 57, 66, 77, 78, 96, 99, 138, 238, 262, स र 9, 17, 30, फु 6, मु 15

 कान, है 158, 171, 195, 199, 265, स र 10, मु 62, 81

 हृदय का, है 132, 165, मु 99

 ठीक वैसे ही जैसे आत्मा, चेतना, मस्तिष्क, दृष्टि, स र 35

सुनहला नियम, है 143, 179, 275, मु 32, 44

सूदखोरी (ब्याज पर कर्ज देना), मु 35

सेवा, है 62, 133, 235

 यह भी देखें: ईश्वर को सहायता देना

सेविका, दासी - देखें: स्त्रियाँ

सैयद खान-ए-अंसारी, मिर्जा (फारस के विदेश मंत्री), है 207

सैयद इस्माइल-ए-जवारिह, स र 13

सौजन्य/शिष्टाचार, है 137, ल र 24

संघर्ष (विवाद, मतभेद, शत्रुता, इत्यादि), है 53, 147, 152, 188, 207-208, 213, ल र

17-18, मु 8, 34, 37, 90

ईश्वर को सहायता देने के साधन के रूप में इसका निषेध है, है 210-214

संरक्षण, है 182, 207, 236, 241, मु 8

संसार

 मानवीय शरीर की तरह, है 152, 174

 यह भी देखें: धरती, सृष्टि

संघर्ष, देखें: लड़ाई/युद्ध

संतुष्टि, स र 30, 34

संदेह, है 49, 68, स र 24, फु 11

संसद, देखें: सरकार

संत पीटर, है 106, 113

हत्या (रक्तपात), है 188

 मना है, है 147

 युद्ध भी देखें

हाजी जफर-ए-तबरीजी, स र 13

हाजी मुहम्मद इस्माइल-ए-कशानी, देखें: ज़बीह

हाजी सैयद मुहम्मद (आका सैयद मुहम्मद-ए-तबाताबाय-ए-इश्फहानी, मुज़ाहिद), है 219

हिजाज, है 243

हीरोड, है 160

हुसैन (इमाम), मु48-52, 90, 97

हुविय्या (दिव्यता का सार-तत्व), देखें: मन्दिर, के अक्षर

**क्ष-ज्ञ**

क्षमाशीलता, है 131, 219, स र 13, मु 51, 54, 99

त्रुटि, भूल, है 113, 123, 176, 188-189, 243, 269, मु 21, 73

ज्ञान और विवेक, है 33, 42, 47, 65, 73, 75, 104, 135, 150, 158, 201-202, 212, स र 30, मु 6, 39, 114

 बहाइयों को सच्चे ज्ञान की तलाश है, है 221

 के सभी दावेदार विश्वसनीय नहीं हैं, है 232

 दिव्य, व्यक्ति को स्वतंत्र करता है, है 66, मु 115

 ईश्वर प्रदान करता है, मु 114

 ईश्वर का, है 65, मु 100, 114

 हृदय ईश्वर के ज्ञान के कोषालय हैं, है 211

 विद्वान, है 89, 225, मु 113

ईश्वर के ज्ञान की हम थाह नहीं पा सकते, है 43

 बहाउल्लाह को पाने में विफल रहे, मु 115

 गिर गए हैं, है 135

 बहाइयों के बारे में राजा को परेशान किया है, है 221

 विश्वास करते हैं या अविश्वास, मु 114

 की क्षणभंगुरता, है 260, मु 113

 ईश्वर से अधिक विवेकी नहीं, मु 114

 की अनिवार्य बातें, है 232

 ने लोगों को मद्यपान से मना किया, है 240

 ने ईसा मसीह को अस्वीकार किया, है 135

 मुहम्मद को अस्वीकार किया, है 198, स र 6

 उन्हें जानना चाहिए कि सच्चा विवेक ईश्वर से डरने में है, मु 113

 उन्हें लोगों के तौर-तरीकों पर ध्यान नहीं देना चाहिए, मु 116

 उन्हें अवतारों की पहचान करनी चाहिए, मु 113

 बहाउल्लाह की पहचान, है 66, 105-106

 पर्दा, है 88

\*\*\*\*\*